अर्थमानव

[मूल रूसी से अनूदित]

मक्सिम गोर्की

सम्पूर्ण तथा असंक्षिप्त


प्रभात प्रकाशन दिल्ली

प्रकाशक
प्रभात प्रकाशन
२०५, चावड़ी बाजार
दिल्ली

**

अनुवादक
महाव्रत विद्यालंकार

**

सम्पूर्ण तथा असंक्षिप्त
संस्करण

**

फरवरी १९५९ ई०

**

**

मुद्रक
सुभाष प्रिन्टिंग प्रेस
छिलकढार
मथुरा

**

मूल्य :
छ: रुपया

अनुवादक की ओर से—

हमें प्रसन्नता है कि विश्व विश्रुत रूसी-साहित्यकार गोर्की के एक महान् अक्तूबर-क्रान्ति-उत्तरवर्ती प्रसिद्ध उपन्यास का हिंदी रूपान्तर पाठकों के सामने उपस्थित कर रहे हैं। रूसी भाषा में इसका नाम वच लो मार्तामानोविज़ है परन्तु हिन्दी भाषा की बहुअर्थता के कारण इसके दो सार्थक अभिप्राय होते हैं—१—'आर्त मानव' (दुखी मानव) तथा २—'अर्थमानव' (धन सञ्चय रत मानव)। इससे रूसी हिन्दी की ध्वनिसमानता और अर्थसमानता से इस उपन्यास का नाम 'अर्थमानव' ही उचित समझा गया है।

गोर्की के शब्दों में इस उपन्यास के प्रारम्भ की गाथा इस प्रकार है—एक बार जब वे स्वयं टाल्स्टाय से वार्तालाप कर रहे थे उन्होंने अपने एक परिचित रूसी व्यापारी परिवार का जिक्र किया जिससे मनुष्य-जीवन के मनोवैज्ञानिक विकास पर सम्पत्ति के प्रभाव की झलक पड़ती थी। स्वयं टाल्स्टाय ने उन्हें बाँह से हिलाते हुए कहा—'हाँ, हाँ, बिल्कुल ठीक! मैं भी एक ऐसे परिवार को जानता हूँ जो तुलामगर में रहता था। इस सम्बन्ध में सुतथ्यत एक विस्तृत उपन्यास अवश्य लिखा जाना चाहिए।'

उनकी आँखें चमक उठीं—'वही परिवार जिसका एक व्यक्ति सब के पापों का प्रायश्चित करने को गिरजे में जाता है। निस्सन्देह बड़ा उत्तम विचार है। यह एक नई चीज होगी। जिस परिवार का एक व्यक्ति भ चे और धन-सञ्चय म फँसा हुआ है।

इस वार्तालाप के बारे में गोर्की ने ब्लादिमीर इल्यच लेनिन से भी जिक्र किया और उपन्यास की रूप-रेखा सामने रखी, और बताया कि वे प्रतीक रूप एक ऐसा उपन्यास लिखना चाहते हैं जिसमें एक रूसी व्यापारी परिवार का सौ वर्ष का संक्षिप्त सारगर्भित इतिहास हो।

फलत १९२५ में गोर्की का यह नवीन उपन्यास संसार के सामने आया जो एक प्रकार से रूसी पूँजीवाद के जन्म और पतन का संक्षिप्त इतिहास है।

जीवन में शान्ति-पूर्ण श्रम के लिए मानवीय स्वतंत्रता समाजवादी-क्रांति की एक महान् देन है। मानवीय-व्यक्तित्व उसकी सम्पूर्ण शक्तियों और सम्भावनाओं के विकास और प्रस्फुटन के लिए उसका होना परमावश्यक है। गोर्की ने अपने इस विचार को कैपिटलिज्म, सरमायादारी या पूँजीवाद के विकास में भी प्रदर्शित किया है और बताया है कि पूँजीवादी परिस्थितियों में मनुष्य का विकास किस प्रकार होता है।

गोर्की ने इस प्रश्न को अपनी अन्य कृतियों में भी उपस्थित किया है। 'कल्याग' तथा 'फोमा गार्देयेव' (व्यापारी का बेटा) में उन्होंने इस प्रश्न को पृथक घटना के रूप में चित्रित किया है परन्तु प्रस्तुत उपन्यास 'अर्तामानव' में उसे क्रमबद्ध एक ही रूसी पूँजीपति परिवार का पतन-गुण्ठन तथा शोषण सम्पन्न-पूँजीपति समाज में उसकी तीन पीढ़ियों के वैय्यक्तिक जीवन का अनुशीलन किया है। इस प्रकार गोर्की ने पूँजीपति-समाज के गढ़ पर आक्रमण किया है।

इस उपन्यास में गोर्की ने बताया है कि एक व्यक्ति और उसके परिवार के लोग जब दूसरों के श्रम के शोषण के आधार पर सम्पत्ति सञ्चय करने लगते हैं, तो वे किस प्रकार दान दान मनुष्यता या मानवता से हीन होने लगते हैं और इस प्रकार के हीन धन-सञ्चय से वे

किस प्रकार शारीरिक आत्मिक और मानसिक रूप से पतित और लुंठित होने लगते हैं। पर-श्रम-लुण्ठन से जिसके बिना पूंजीपतियों का समाज खड़ा ही नहीं रह सकता मनुष्य कितना पतित और जघन्य हो जाता है! पूंजीवाद जो अपने कल कारखानों व्यापार और व्यवसाय के बल पर खड़ा है वही पूंजीपति और फलत पूंजीपति समाज को भी मनुष्यता के सब उत्तम गुणों से वञ्चित कर देता है। मार्क्स के शब्दों में पर-श्रम-शोषण से मनुष्य अमानव और पिशाच बन जाता है।

श्रम का महत्त्व

गार्की के उपन्यासों को समझने के लिए श्रम-महत्व को समझना बहुत आवश्यक है। अपने एक भाषण में गोर्की ने कहा था—

यदि मैं एक आलोचक होता और मक्सिम-गार्की के विषय में लिखता तो बताता कि वह शक्ति जिसने गोर्की को जैसा कि आज वह आप के सामने है बनाया है यह है कि वे रूसी साहित्य में हो सकता है कि जीवन में ऐसे प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने, श्रम के उस महत्व को भलीभांति समझा है जिसके द्वारा मनुष्य में नाना अमूल्य पदार्थों और सुन्दरताओं को जन्म मिलता है।"

उन्होंने एक अन्य स्थान पर लिखा है—'मेरा विश्वास है कि हमारे जीवन का रहस्य और सब दु खान्त नाटक इस श्रम से ही होते हैं।'

इसी श्रम से मनुष्य दूसरे मनुष्य का दास बनाता है, उसके श्रम को लूटकर धन-सञ्चय करता है और इसी धन-सञ्चय से नाना व्यसनों में पड़कर शारीरिक मानसिक और आत्मिक दृष्टि से पतित हो जाता है। वह मनुष्य नैतिक पतन से ही धन-सञ्चय करता है और पुन उससे भी अधिक नैतिक पतन में धन का अपव्यय करता है। यही पूंजीपति और पूंजीपतियों के समाज का अनवरत-चक्र है। अब

समाज श्रमलुण्ठन का पूर्ण शिकार हो जाता है, तो उससे मुक्ति पाने के लिए वह विप्लव करता है और एक नवीन समाजवादी-क्रांति के रूप में इसी श्रम द्वारा समाजवादी-समाज का सूत्रपात करता है। वही श्रम जो सरमायादार समाज में वैयक्तिक समृद्धि और पतन का कारण बना हुआ था अब साम्यवादी समाज में सामाजिक श्रम में रूपान्तरित होकर सार्वजनिक उन्नति और समृद्धि का कारण बन जाता है। पूंजीवादियों व्यक्तिवादियों और उनकी स्वतन्त्रता के पक्षपातियों का इससे अधिक मुँहतोड़ जवाब और क्या हो सकता है ?

दूसरों के श्रम-लुण्ठन से श्रम रहित हो जीवन भी निस्सार और शून्य हो जाता है और मनुष्य में नाना प्रकार के नैतिक पतन होने लगते हैं जैसा कि हम प्योत्र उसकी पत्नी नतास्या और उसके लड़के याकोव में देखते हैं। इस परिवार का पूर्वज इल्या अर्तामोनोव एक किसान परिवार का पुत्र है। वह अपने साहस से संसार में अपना स्थान बनाता है। उसमें अनेक उत्तम गुण हैं। वह निर्भीक है प्रबल इच्छायुक्त और विशाल हृदय है। अपनी परिपक्व आयु तक भी उसका श्रमिक-जनता के जीवन से पार्थक्य नहीं हुआ है। बल्कि उसमें उदास सा रही होती है। वह बुद्धिमान है श्रम और जीवन का प्रेमी है और दूसरों को भी श्रम और जीवन का अवसर देना चाहता है। इन्हीं मानवीय गुणों के कारण लोग उसके सामने झुकते हैं। वह शरीर से बलवान् है अकेला तीन डाकुओं का मुकाबिला कर सकता है। और भाले से रीछ का शिकार करता है। और उसके सहवास में ही उसकी विधवा समधिन उल्याना बाइमाकोवा अपने को वस्तुतः सुखी और सौभाग्यवती अनुभव करती है।

पूंजीपति-समाज में भी प्रायः ऐसा ही होता है। प्रायः प्रत्येक पूर्वजा में सब उत्तम गुण होते हैं। परन्तु जब इन गुणों का दुरुपयोग कर वे दूसरों के श्रम का लुण्ठन और उनका शोषण करने लगते हैं समाज को ठग कर सम्पत्ति-संचय करने लगते हैं वही गुण उनके

और समाज के अहितकारी शत्रु बन जाते हैं। इल्या अर्तामानोव जिस अनुपात से जनता से दूर होता जाता है उतना ही वह अधिक शोषक और समाज का शत्रु बनता जाता है।

धीरे-धीरे इल्या अर्तामानोव को अपने कारोबार में सफलता मिलती है। जैसे-जैसे उसके परिवार की सम्पत्ति बढ़ती जाती है, उसका कपड़े का कारखाना और अधिक उन्नति करता है और वह श्रमजीवियों के 'अतिरिक्त-श्रम' पर जीवन-यापन करने लगता है। उसका जीवन-स्तर साधारण लोगों से ऊपर उठ जाता है जनता से सम्पर्क क्षीण होता जाता है और क्रियाशक्ति के साथ उसका आत्मिक-ह्रास भी बढ़ने लगता है।

प्योत्र अर्तामानोव

फिर भी उसके पुत्र प्योत्र में पिता के गुण बहुत कुछ विद्यमान रहते हैं। परन्तु जैसे-जैसे उसका कारखाना श्रमजीवियों की शक्ति से उन्नति करता जाता है उसमें ये सब गुण क्षीण पड़ते जाते हैं। मन और आत्मा में वह नीरस और विचारों में कुण्ठित पड़ता जाता है।

उसकी पत्नी नताल्या में भी धीरे-धीरे परिवर्तन हो जाता है। प्रारम्भ में वह सीधी-सादी सुन्दर और कोमल स्वभाव की तरुणी है। विवाहित जीवन में नताल्या का अपनी माँ देवर निकिता और अलक्सेई के प्रति व्यवहार उसकी जिन्दादिली तथा कोमल और भावुक स्वभाव को प्रदर्शित करता है। परन्तु, धनवृद्धि के साथ-साथ उसमें निष्क्रियता बढ़ने लगती है। उसका सीधा-सादा चेहरा कठोर हो जाता है होंठ भिंचने लगते हैं और आँखों में एक फीकापन दैन्यापन आ जाता है। ईर्ष्या आलस्य धनतृष्णा और स्वार्थवश वह प्योत्र से पूछती है—

'अब बैंक में हमारा कितना रुपया जमा है? तुम्हें विश्वास है कि यह बैंक अच्छी है और कहीं दिवाला तो न निकाल बैठेगी?'

वह दिनभर खाने-पीने में ही व्यस्त रहता है। भूल से यदि

यह कभी कोई गंभीर बात कहना या पूछना भी चाहती है तो उसका अपना ही बेटा मखौल में कहता है—

'माँ अच्छा हो कि तू कुछ और खा।"

और वह अविश्वासपूर्वक झेंपती हुई कहती है—

'क्यों मैं समझती हूँ कि मुझे अधिक नहीं खाना चाहिए।"

और फिर खाने लगती है।

इस नतास्या में जो उपन्यास के प्रारम्भ में सुन्दर और सरस स्वभाव की स्त्री थी अब कुछ नहीं रह जाता। नतास्या का अन्त कुण्ठित बुद्धि, मूढ़ता और निरर्थक बुढ़ापे में होता है। उसकी आँखों में रिक्तता आ जाती है हाथ बेकार पड़ जाते हैं चेहरा लाल लाल सूजा-सा हो जाता है जिस पर आँसू ढलकते रहते हैं जिन्हें देख ऐसा प्रतीत होता है कि वे आँखों से नहीं बल्कि गालों की फूली खाल के सब रोम कूपों से चू रहे हैं।

उसका पति प्योत्र जो पहले एक सहृदय नवयुवक था अब कारोबार के कोल्हू में पड़ कर कुण्ठित और निस्सार हो जाता है। उनके कपड़े के कारखाने की चर्खियाँ ज्यों-ज्यों तेजी से घूमती हैं, उसका भय और चिंताएँ भी बढ़ती जाती हैं। अपने को कारखाने का मालिक देख कर उसे प्रसन्नता होती है और कभी-कभी वह अभिमान की पराकाष्ठा तक विस्मित भी होता है। परन्तु फिर भी कभी-कभी उसे अपने बचपन के दिन, पुराना गाँव रात नदी का शान्त स्वच्छ और सुन्दर तट, विस्तृत खेत और किसानों के सरस जीवन की याद आती है। इन घड़ियों में वह अपनी अन्तरात्मा में कहता है— 'मित्र का यह काम हमारे करने का नहीं हमें तो मैदानों में ही जमीन खरीद कर खेती-बाड़ी करनी चाहिए थी। वहाँ हाय-तोबा कम होती और काम अच्छा।

इन घड़ियों में वह अनुभव करता कि कोई अदृश्य हाथ उसे

मशीनों में थकते रहे हैं। कारखाने के घोर-शराबे में उसका दिमाग सोचने-समझने के लिए बेकार हो जाता। कारखाने की चिमनी से निकलते, चक्कर खाते हुए धुँए की भाँति उसे कारखाने के विनाश के भय का अंधकार अपने चारों ओर दिखता। अब प्योत्र जीवन और सम्पत्ति की रक्षा की चिन्ताओं से घिरा शराब और व्यभिचार की धुम्मरघरिया में गोते खाने लगता है। वह जीवन की सार्थकता से शून्य हो जाता है।

उसके भाई अलक्सेई के जीवन का भी यही पथ है। इस सबल, स्वस्थ सुन्दर आकर्षक फुर्तीले और दृढ़ व्यक्ति के जीवन के अन्त में कुछ शेष नहीं रह जाता। उसमें भी मानवीय गुण धीरे-धीरे लुप्त भ्रष्ट और नष्ट हो जाते हैं।

तीसरे कुबड़े भाई निकिता का जीवन भी पथ भ्रष्ट है। जीवन में विफलता के कारण लज्जा निराशा से साधुगृह में प्रविष्ट, धर्माडम्बर के शिकार इस पादरी को ईश्वर, धर्म और किसी चीज में आस्था नहीं रह जाती। उसके जीवन का विकास भी उसमें अतृप्ति, और अपूर्णता के कारण भ्रष्टता पैदा करता है।

इस प्रकार अर्तामानोव परिवार जो उपन्यास के प्रारम्भ में सबल दृढ़ तरुण और परिश्रमी होता है अन्त में विरूप श्रांत और खोखले पेड़ के समान रह जाता है—एक ऐसा पेड़ जिसे सूर्य की धूप न मिली हो। वह निर्माणिक श्रम और जनता से दूर हो जाता है।

अब तीसरी पीढ़ी में अर्तामानोव परिवार को एक अनिवार्य भ्रष्टता और पतन आ घेरता है। उसके पोते पोतियाँ बचपन से ही उपहास्यास्पद बेकार,मूर्ख और निस्तेज हो जाते हैं। एलीना तरयाना याकोव और मिरोन सब बेकार निठल्ली मनुष्यता के नमूने हैं। इस प्रकार इस परिवार का ह्रास बढ़ता जाता है।

रूसी पूँजीपति-समाज के विकास और ह्रास चक्र भी सब वर्गों

के पूँजीपति-समाज के विकास और ह्रास पक्ष के समान ही हैं। गोर्की लिखते हैं—

सब कल-कारखानेदार जहाज बनाने वाले व्यवसायी और व्यापारीवर्ग जो कल सामन्तवादी काल में अधिकार रहित थे अब बड़े साहस और उत्साह के साथ सरदारों दरबारियों और सरकारी अफसरों के साथ अपना स्थान पैदा करने लगे। किसानों से ही ये लोग पैदा हुए थे। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि किसानों में कैसी प्रतिभा, बुद्धि और शक्ति छिपी हुई है।'

यही शक्ति और प्रतिभा अर्तामानोव वंश के प्रवर्तक इल्या में छिपी हुई थी जिन्हें उसके पूँजीवादी कारखाने या 'धंधे' ने तीन पीढ़ियों में निचोड़ लिया।

यही इस उपन्यास का मौलिक भाव है और इसी में उसकी मानवीय-गम्भीरता गर्भित है।

पूँजीवादी समाज का पतन अनिवार्य है क्योंकि वह मानव को मानवता से रहित बना देता है। मार्क्स के शब्दों में, 'पूँजीवाद अपनी कब्र अपने आप खोदता है। प्योत्र नताल्या और उनके बच्चों और प्योत्र के भाइयों के अस्त का चित्रण गोर्की ने बड़े कलात्मक तरीके से किया है और उपरोक्त सत्य को सिद्ध किया है।

इल्या अर्तामानोव (कनिष्ठ)

परन्तु यह समझना भी भ्रमात्मक होगा कि पूँजीवादी-जीवन और उसकी परिस्थितियों में मनुष्य का पतन अनिवार्य है। विवेक-बुद्धि और प्रबल इच्छा से मनुष्य इस 'धंधे' पर विजय प्राप्त कर सकता है। परन्तु इसके लिए आवश्यक है कि वह 'धन्धे' के बन्धनों से दूर हो जाय। निर्भय मनुष्य अपने विकास की अनुकूल अवस्थाओं में अपने आत्मिक-गुणों की रक्षा कर सकता है। परन्तु इन्हें खोकर वह जीवन की कठिनाइयों से पार नहीं पा सकता। प्योत्र और नता

ल्या भी यदि वे अपने धन्धे और सम्पत्ति के आकर्षण का मुख सिला कर सकते तो शायद इस पतन से बचे रहते। परन्तु वे निवश थे और जीवन-धारा में बह गए।

परन्तु प्योत्र का पुत्र इल्या अर्तामानोव इस पतन से बच गया। इल्या अर्तामानाव के रूप में गोर्की ने एक ऐसा पात्र उपस्थित किया है जो अपने परिवार की पूँजीवादी परिस्थितियों में पला होते हुए भी उससे कटकर परिस्थितियों के घातक प्रभाव पर विजय प्राप्त कर सका है और सार्वजनिक स्वातन्त्र्य प्रगति के सिपाही के रूप में जनता की ओर चला जाता है।

मार्क्स ने 'कम्युनिस्ट-घोषणा' में कहा है—

इस विनाशोन्मुख पूँजीवादी-समाज के अनेक दूरदर्शी प्रतिनिधि जो पूँजीवाद के अनिवार्य ऐतिहासिक ह्रास और अन्त को समझ लेंगे प्रगतिशील-श्रेणियों के पक्ष में आ जाएँगे।

गोर्की ने लेनिन सम्बन्धी संस्मरणों में बताया है— 'लेनिन ने भी पूँजीवाद और शासक-समाज के प्रतिनिधियों का समाजवादी क्रान्ति में भाग को स्वीकार संकेत किया है। गोर्की इन्हें 'सफ़ेद कौवों' के नाम से पुकारते हैं। वे कहते हैं— 'कभी-कभी पूँजीवादी-समाज में भी सफ़ेद-कौवे पैदा हो जाते हैं जो अपने वर्ग और समाज की घृणित भ्रष्ट व्यापार और व्यवसाय की बारीकियों को देखते और समझते हुए, पूँजीवादियों के समाज के अनिवार्य-पतन को सूक्ष्मता और मार्मिकता से समझते हुए उसे छोड़ जाते हैं।

यह कोई नवीन बात नहीं। आज हम अपने पूँजीपतियों के समाज को देखते हैं जिसमें छोटे बड़े सब पूँजीपति समाज और शासन के साथ धोखा करते हैं, जीवन की आवश्यक चीजों को मण्डियों में घेरते और छिपाते हैं और समाज में बनावटी सकटों से पैसा पैदा करते हैं। और कानून के शिकंजों से बचने के लिए—(जो पूँजीपतियों पर कभी न कभी कसता ही है) नाना प्रकार की भ्रष्टता

तट पर प्रभात के अर्धान्धकार में अर्तामानोव को जाता देखता है उसके हृदय में अपने भाई के घातक से बदला लेने की प्रतिहिंसा जाग उठती है। वह अर्तामानोव परिवार के सब कुकर्मों और संकटास्पद घटनाओं के समय—जब कुबड़ा भाई निकिता फाँसी लगाकर आत्मघात करने लगता है या प्योत्र अपने पुत्र इल्या को बिगाड़ने के सम्बन्ध में लड़के निकोनाव को मार देता है सदा 'धर्मभानव' की बुराइयों के निरीक्षक के रूप में उपस्थित रहता है। चिढ़ कर प्योत्र कह उठता है— कहाँ है तिखान ? उससे कोई शुभ बात सुनने की आशा नहीं।

अत तिखोन व्यासोव की अनिरंजनात्मक पात्रता से उपन्यास की घटनाओं का मूल्यांकन बढ़ जाता है। तिखोन अर्तामानोव के धन्धे का कोई स उपमा देता है। उपन्यास का उपसंहार भी तिखान व्यासाव के शब्दों स ही होता है, जो उसने प्योत्र को उसकी पूँजीवाद के अवसान के दिनों में कहे हैं—

' यह तुम्हारे ही खिलाफ लड़ाई है प्योत्र इल्यच !'

"मैं बेवकूफ जरूर हूँ परन्तु सच्चाई को सबसे पहले समझ गया था। देखो! जिन्दगी ने क्या पलटा खाया है। मैं पहले ही कहता था—तुम सब को कठोर कारावास मिलेगा। और ऐसा ही हो गया। तुम्हें कुराने की तरह रगड़ा जा रहा है जैसे कि रंदे से लकड़ी छीली जाती है। प्योत्र इल्यच! क्यों ठीक नहीं ? हाँ हाँ शैतान सेवी से रंदा चलाता रहा—और तुमने उसे मदद की। और यह सब किसलिए ? तुम पाप करते गए—पाप करते गए और इन पापों का कोई हिसाब भी है ? मैं यह सब देखता था—अचम्भा करता था! इस सब का कब अन्त होगा ? आखिरकार तुम्हारा ऐसा अन्त आ गया और अब तुमसे उसी तरह बन्सा लिया जा रहा है। गाड़ी का पहिया गुम हुआ।

धर्मभानव का यथा वैसा ही होता है जैसा प्राय पाप कर्मा

चार और शोषण से कमाए धन का होता है। अर्थमानव का परिवार भ्रष्ट हो जाता है और क्रान्तिकारी जनता अपने पुराने उत्पीड़क के सब धंधे पर सार्वजनिक अधिकार कर लेती है।

'अर्थमानव' पूँजीपति-समाज की एक विशद आलोचना के रूप में एक उत्कृष्ट उपन्यास है जिसका संसार के साहित्य में बड़ा आदर है। यह रूसी क्रान्ति से पूर्ववर्ती काल के रूसी पूँजीवादियों का एक सुन्दर चित्रण है।

हिन्दी में यथार्थवाद की रीति की आवश्यकता

प्रस्तुत उपन्यास के सब पात्र ऐसे हैं जो संसार के किसी भी देश में पाए जा सकते हैं। अर्थमानवों के रूप में अपने देश में ही अनेक 'अर्थमानवों' को देख सकते हैं जिनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य येन-केन प्रकारेण धन-संचय करना है, चाहे वह श्रमजीवियों और किसानों के शोषण से हो या सूदखोरी ठेकेदारी सरकारी नौकरी से—वे सर्वत्र देश की सामाजिक सम्पत्ति की चोरी धोखा दही रिश्वत भ्रष्टाचार दुराचार और अन्यान्य सब असामाजिक और अवैध तरीकों से पैसा बटोरने में ही लगे रहते हैं। यह पूँजीवादी समाज का एक घृणित रूप है। यह निस्सीम स्वार्थपूर्ण धनलिप्सा मनुष्य को समाज के शत्रु, चोर और ठग के रूप में बदल देती है जिसके भारतीय पूँजीवादियों में अनेक जीवित और ज्वलंत उदाहरण मिल सकते हैं। ये सब एक दूषित पतनोन्मुख और मुमूर्षु समाज के लक्षण हैं। समष्टि के मुकाबिले में व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि के लिए राज्यशक्ति पर अधिकार करना इनका ध्येय है जिसके लिए चुनावों के अवसर पर असीमित धनराशि का निरर्थक व्यय एक व्यापार के रूप में ही किया जाता है। भारत के प्रगतिशील लेखकों का कर्तव्य है कि वे अपने समाज के ऐसे पूँजीपतियों का वर्णन करें जो मजदूरों की तनख्वाहें काट 'लक्ष्मी' के मन्दिर और धर्मशालाएँ बनवाते हैं जो अपने महलों की दीवारों पर

वैराग्य और त्याग के श्लोक अङ्कित करवाते हैं, दलालों द्वारा स्टाक एक्सचेन्ज में धनतृष्णा और 'स्वर्ण-चपटी' के बल पर कामवासना तृप्त करते हैं, जो गीता, धर्म, पुराण, स्मृतियों और संस्कृति का नाम ले लेकर समाज की प्रवंचना करते हैं, जो सब धर्मों और देशों को धन्धा देते हैं परन्तु स्वार्थ सिद्धि और धन-संचय के अतिरिक्त जिनकी किसी में आस्था नहीं, जो धर्म, शासन, साहित्य और संस्कृति को स्वार्थ सिद्धि के लिए ही समझते हैं, जिनके लिए हत्या, देशद्रोह और विश्वघात में कोई पाप नहीं, इस सब तथा उनके उपजीवी सामाजिक स्तरों के बीच अन्तर-सम्बन्ध इत्यादि सब का साहित्यिक कलात्मक वर्णन करें।

अभी तक भारती साहित्य पौराणिक गाथा-साहित्य अथवा बहुत-कुछ कल्पना से अनुप्राणित होता रहा है। परन्तु अब आवश्यकता है कि हम अपने देश और दूसरे देशों में 'विश्वमेव कुटुम्बकम्' की व्यापी क्रान्तिकारी नवीन दृष्टि से वर्तमान जर्जरित समाज का खण्डन और नव समाज निर्माण के लिए नवीन क्रान्तिकारी-मानव, उसकी नवीन भावनाओं और प्रयत्नों का सजग चित्र उपस्थित करें और भारत को विश्व व्यापी प्रगति की धारा में उन्नति के पथ पर ले जाएं।

आज हमारा देश सदियों के संघर्षों और वैदेशिक शासन की दासता का कर समाजवादी निर्माण की ओर अग्रसर हो रहा है। अतः यह और भी आवश्यक है कि सब प्रगतिशील लेखक कमर कस कर आगे आयें और वस्तुवादिता के आधार पर नवीन वस्तुवादी प्रगतिशील साहित्य का निर्माण करें। अपने देश और समाज को नवीन मार्ग की ओर पर्यालोचन करते हुए जनता को नवीन मार्ग की ओर प्रेरित करें। इस दिशा में हमें ऐसा साहित्य से बहुत-कुछ लेना है।

अनुवाद-साहित्य का महत्त्व

अब तक हमारे शिक्षित वर्ग और साहित्य पर अंग्रेजी भाषा

साहित्य और विचारों का आधिपत्य छाया हुआ है। अंगरेज भारत से गया परन्तु अँगरेजियत नए सिरे से अपने अधिकार के लिए समय कर रही है। हमें इसे परास्त करना है। हमारा कर्तव्य है कि हम अँगरेजी की खिड़की से ही विश्वदर्शन न करें परन्तु अन्य प्रगतिशील समृद्ध भाषाओं की खिड़की से भी जिनमें वर्तमान रूसी साहित्य सांस्कृतिक और वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है। इंग्लैण्ड और अमेरिका में रूसी भाषा से अनुवाद को निरन्तर अधिकाधिक महत्व दिया जा रहा है। हमें भी हिन्दी में रूसी तथा अन्य भाषाओं के अनुवाद को महत्व देना चाहिए।

हम आशा है कि हिन्दी साहित्य के नाना भाषाविद् साहित्यकार इस दिशा में अग्रसर होंगे और विश्व की महान् कृतियों के अनुवाद से हिन्दी साहित्य को सम्पन्न बनाएँगे। मौलिक साहित्यकारों का भी कर्तव्य है कि वे हिन्दी साहित्य में विदेशी भाषाओं के अनुवाद का गम्भीर अध्ययन और आलोचना करें और भारत के भावी उत्कर्ष और गौरव के लिए अपनी प्रतिभा के चमत्कार दिखाएँ।

अन्त में हम 'प्रभात प्रकाशन' के संचालकों को बधाई देना चाहते हैं जिन्होंने मूल भाषाओं से हिन्दी में अविकल-अनुवाद का सराहनीय प्रयत्न शुरू किया है। हम आशा है इस दिशा में अन्य साहित्य सेवी भी आगे आएँगे। अनेक त्रुटियों के होते हुए भी हमें आशा है इस उपन्यास का हिन्दी प्रेमियों द्वारा स्वागत होगा।

—महाव्रत विद्यालंकार

अनुवादक—

श्री महावस विद्यालङ्कार—गुरुकुल विश्वविद्यालय काँगड़ी के योग्य स्नातक, योरोप एवं एशिया के चिरकालिक यात्री, सोवियत संघ में इतिहास, राजनीति एवं अर्थशास्त्र की शिक्षा प्राप्त दैनिक 'समाचार' के प्रवर्तक एवं 'नेताजी' के भूतपूर्व सम्पादक, संस्कृत, हिन्दी अंग्रेजी तथा रूसी के श्रेष्ठ ज्ञाता एवं स्वातन्त्र्य संग्राम के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। अबतक अट्ठारह ग्रन्थों का मूल रूसी से हिन्दी में अनुवाद कर चुके हैं।



१

मुक्ति के दो वर्ष पश्चात मुक्ति-दिवस की प्रार्थना के दिन संत निकोला के गिरजे के इलाके में एक परदेसी आया। वह सम्पन्न लोगों की भीड़ को उपेक्षापूर्वक धक्का देते हुए आगे बढ़ा और द्रयमोव की इकोन[1] के सम्मुख उसने एक बड़ी मोमबत्ती रखी। द्रयमोव शहर में इस इकोन की बड़ी प्रतिष्ठा थी। यह विशालकाय व्यक्ति बहुत ही बलिष्ठ था। उसके सिर पर खानाबदोशों जैसे काले और सफेद बालों के घुंघराले गंगा-जमुनी गुच्छे थे और थी खुरदरी और घुमती हुई दाढ़ी। उसकी नाक बड़ी और लम्बी तथा भारी घनी भौंहों के नीचे उसकी नीली-भूरी-सी आँखें थीं, जिनसे वह निर्भयतापूर्वक निहार रहा था। लोगों ने यह भी देखा कि जब इस व्यक्ति की बाँहें स्वच्छन्दतापूर्वक लटकी होती थीं तो उसकी चौड़ी हथेली घुटनों तक जा पहुँचती थी। नगर के नामी-गरामी आदमियों

[1] इकोन—देवमूर्ति।

को धकेलता हुआ वह सबसे पहिले क्रास पर पहुँचा तो सब उसके इस व्यवहार से क्रुद्ध हो गए। और प्रार्थना के बाद ग्रयमोव-वासी इस अजनबी व्यक्ति के बारे में विचार करने के लिए गिरजे के बरामदे में रुक गए। कुछ का विचार था कि वह घोड़ों का व्यापारी है। मसिफ और एक अन्य शांतिप्रिय दुबल किन्तु साफ हृदय के व्यक्ति मेयर यम्मेई धाइमाकोव ने खाँसते हुए कहा—

'ऐसी बात नहीं। यह पहले सामन्ती जागीर में अर्ध गुलाम था। कहा जाता है कि यह अच्छा शिकारी और भद्र परिवारों के आमोद प्रमोद का काम करने वाला आदमी रहा है।

तुनुक-मिजाज दुराचारी और ईर्ष्यालु शब्दों के प्रेमी बजाय पम्पालोव ने, जो चेचक के दागों के कारण कुरूप हो चुका था तथा जिसका उपनाम 'रंगुका कोगर' था खिन्नता से कहा—

'तुमने उसकी बाँहें देखी—कितनी लम्बी है? और जरा देखो तो—चलता कैसे है! मानो गिरजे के घण्टे उसके लिए ही बजते हों।'

चौड़े कन्धों और लम्बी नाक वाला यह मनुष्य नगर-पथ पर ऐसे विश्वास और दृढ़ता से चला जा रहा था जैसे वह अपनी जमींदारी में से गुजर रहा हो। उसने बढ़िया कपड़े का नीला कोट और स्पंजी चमड़े के बढ़िया बूट पहन रखे थे। उसके हाथ जेबों में थे और उसकी बाहनी शरीर से सटी हुई थी। उन्होंने पुलिस्टिस्ट की बिस्तुर पकाने वाला यार्देन्स्काया को बुलाकर इस मनुष्य की जानकारी करने के लिए कहा। तत्पश्चात् गिरजे की घण्टियों के बजते ही वे पाम्यालोव के बगीचे में साँझ की चाय के निमन्त्रण के साथ त्योहार का भोजन करने के लिए अपने अपने घरों को चल पड़े।

दोपहर के भोजन के बाद अन्य नगरवासियों ने भी इस परदेशी को नदी के पार रात्स्की के राजकुमारों की जमींदारी में

गोजिब्ह्रा' बिन्दु पर देखा। तब वह झाड़ियों के बीच अपने चौड़े-यकसार कदमों से रेतीली भूमि को नापता हुआ चल रहा था। अपने हाथों से आँखों पर छाँह करके उसने शहर ओका नदी और उसको चक्कर खाती हुई दलदली सहायक नदी बत्राक्षा की ओर भी मुड़ कर देखा। द्रयमोव नगरवासी बहुत चौकन्ने और डरपोक थे। उनमें से किसी को साहस नहीं हुआ कि कोई उससे जा कर पूछे कि वह कौन है और किसलिए इधर आया है? अन्त में उन्होंने पुलिसमैन मात्का स्तूपा को जो शहर का विदूषक और शराबी था सही जानकारी प्राप्त करने के लिए अपना प्रतिनिधि बनाया। स्तूपा ने सब लोगों के सामने स्त्रियों की उपस्थिति से भी न झेंपते हुए अपनी पतलून उतार फेंकी और सिर पर तुड़ी-मुड़ी टोपी रख ली।

दलदली बत्राक्षा में घुटने भर पानी को पार करते हुए और शराब से भरे पेट को फुला कर वह अजनबी की तरफ बड़े उपहास्यास्पद कदमों से आगे बढ़ा तथा अपना साहस समेट उसने ऊँची आवाज में पूछा—

'तुम कौन हो ?'

परदेशी का उत्तर किसी ने नहीं सुना किन्तु स्तूपा तुरन्त ही अपने लोगों के पास लौट पड़ा और सारा किस्सा कह सुनाया—

'वह जानना चाहता था कि मैं अपनी लज्जा कहाँ खो आया हूँ। उसकी आँखें डाकुओं की तरह बड़ी भयंकर हैं।'

विस्कुट बनाने वाली यार्देन्स्काया ने, जो गलराज से पीड़ित थी तथा नगर में भाग्य-परीक्षक एवं समझदार होने के नाते प्रसिद्ध थी उसी साँझ पम्यालोव की बगीची में भद्र नागरिकों को भय से नेत्र विस्फारित करते हुए सूचना दी—

''उसका नाम दस्या और गोत्र का नाम अर्तामानोव है।

कहता है कि वह कारोबार के लिए यहाँ ससन आया है। मैं सिर्फ उसके कारोबार का पता नहीं लगा सकी। वह बगोगोरद के मार्ग से आया था और आज दुपहर तीन बजे याव वापिस भी चला गया है।'

बस, इतना ही। उन्हें इस नवागन्तुक के बारे में कुछ और मनोरंजक बातें न पता लग सकीं। यह ऐसा ही अप्रिय था जैसा कि कोई रात में खिड़की को खटखटा कर आने वाली आपत्ति के विषय में निःशब्द भाव से चुनौती देकर अन्तर्ध्यान हो जाय।

तीन सप्ताह गुजर गए और नगरवासियों की स्मृति से उसका प्रभाव मिट-सा गया कि अचानक वही अर्तामामोव अपने तीन लड़कों के साथ फिर आ धमका और सीधा याइमाकाव के घर जाकर कुल्हाड़े म काटती-सी ध्वनि में बोला—

अलेई मिनिच यह लो ! कुछ नए लोग आपके बुद्धिमत्ता पूर्ण राज्य म वरान आए हैं। कृपया उन्हें अपने नव-जीवन के निर्माण म सहायता कीजिए !

उसन बहुत सक्षेप में सारी बात कह सुनाई। बताया कि वह पहले राजकुमार रास्की क अर्ध-गुलामों में था और राती नदी पर उनकी कुर्स्क की जमींदारी में रहता था। उन दिनों वह राजकुमार गियार्गी के विशेष परिचारकों में से था। मुक्ति के बाद उसे एक अच्छी धन राशि मिल गई है और उसने कपड़े की एक मिल लगाने का निश्चय किया है। वह विधुर है। उसके लड़कों के नाम हैं—सबसे बड़ा-प्योत्र, दूसरा निकिता और तीसरा अल्यो मेरा भतीजा है, परन्तु उसने उसे गोद ले लिया है।

'हमारी ओर के किसान कपास कम बोते हैं—' बाइमा काव ने सोच कर कहा।

"हम उनसे इसकी अधिक खेती कराएँगे।"

मर्तामानोव की आवाज भारी और कठोर थी। उसका स्वर एक बड़े ढोल की आवाज-जैसा था। वाइमाकोव जीवन में हर कदम फूँक-फूँक कर चला था। वह बहुत ही धीरे बोलता था जैसे कि किसी भयंकर जीव को जगाने से डरता हो। अपनी धोकार्त गुलाबी आँखों को झपकाते हुए उसने मर्तामानोव के लड़कों की ओर निहारा जो दरवाजे के पास पत्थर की तरह खड़े थे। वे तीनों ही अलग अलग नमूने के थे बड़ा—बाप जैसा विशाल-वक्ष सघन भौंहें और रीछ जैसी छोटी आँखों वाला मझले निकिता की उसकी कमीज के रंग के समान ही लड़कियों जैसी नीली बड़ी-बड़ी आँखें थीं अलक्सई—घुँघराले बाल और परमश्वेत-गुलाबी गालों वाला सुन्दर युवक था जिसकी दृष्टि में आनन्द और स्पष्टता झलकती थी।

एक सिपाही बनने के लिए ? वाइमाकोव ने पूछा।

"नहीं मुझे ये बच्चे अपने लिए ही चाहिए। मेरे पास मुक्ति-पत्र है।

मर्तामानोव ने लड़कों की ओर संकेत किया और आज्ञा दी—"बाहर चले जाओ।"

जब वे तीनों चुपचाप एक के बाद दूसरा आयु के क्रम से कमरे के बाहर चले गए तब उसने वाइमाकोव के घुटने पर अपना भारी हाथ रखा और बोला—

"यव्मेई मित्रिच ! मैं अपने आप तुम्हारा समधी बनना चाहता हूँ अपनी लड़की मेरे ज्येष्ठ लड़के को दे दो।

वाइमाकोव वस्तुतः डर गया वह बेंच से हिला और हाथ हिलाता हुआ बोला—

"तुम कैसे हो ? परमात्मा तुम पर दया करे। मेरी

तुम्हारी पहली मुलाकात है ? मुझे पता नहीं कि तुम कौन हो ? और, तुम एकदम ऐसी बात पर आगए हो ! मेरी एक ही लड़की है, अभी शादी के लिए भी वह बहुत छोटी है । और इसके अलावा तुमने उसे अभी देखा भी नहीं है । वह कैसी है यह तुम जानते भी नहीं । तुम कैसे आदमी हो ?

परन्तु, धर्मात्मा अपनी घुंघराली दाढ़ी में सिर्फ मुस्करा कर बोला —

'मेरे बारे में तुम इस्प्रावनिक[१] से पता लगा सकते हो । वह हमारे राजकुमार का बहुत ॠणी है और उसने उसे मुझे मेरे कारोबार में सब तरह की मदद देने के लिए भी लिखा है । मैं पवित्र इकोनों की शपथ खा कर कहता हूँ कि तुम मेरी कोई शिकायत नहीं सुनोगे । मैं तुम्हारी कन्या को भी जानता हूँ । तुम्हारे इस नगर के बारे में भी मुझे सब कुछ पता है । मैं यहाँ पहले चार बार आ चुका हूँ और सब पता लगा गया हूँ । मेरा बड़ा लड़का भी यहाँ आ चुका है और उसने तुम्हारी कन्या को भी देख लिया है । इस बात की चिन्ता न करो !'

अपने को ठीक एक रीछ के आलिंगन में अनुभव करते हुए वाइमानोव ने आगन्तुक से कहा—'तुम थोड़ी प्रतीक्षा करो ।'

'मैं प्रतीक्षा कर सकता हूँ परन्तु देर तक नहीं देर तक नहीं—उम्र का कोई भरोसा नहीं' आगन्तुक ने कठोरता से कहा । खिड़की से बाहर झाँकते हुए वह आँगन की ओर चिल्लाया । 'आओ गृहस्वामी से नमस्कार करो ।'

जब वे विदाई लेकर चले गए, वाइमानोव उसी समय इकोनों की ओर मुड़ा और तीन बार छाती पर क्रास का निशान बनाकर धीरे से गुनगुनाया —

---

१ इस्प्रावनिक—जिला पुलिस का अध्यक्ष ।

'प्रभु हमारी रक्षा करो ! पता नहीं कैसे लोग हैं ये ? इस सङ्कट से हमारी रक्षा करो !

लकड़ी के सहारे वह बगीचे की ओर गया जहाँ उसकी पत्नी और लड़की पीस वासक्छाय* के नीचे मुरब्बा पका रही थीं। उसको पीवरकाय रूपवती स्त्री ने पूछा—

'पीछे के आँगन में ये कौन लोग थे मित्रिच ?'

'पता नहीं। नतास्या कहाँ है ?

'ग्रोग्राम से चीनी लेने गई है।

चीनी लेने गई है !' वाइमाकोव निराशापूर्वक घास के टीले पर बठते हुए बोला— चीनी ! हाँ लोग ठीक ही कहते हैं दासों की मुक्ति से लोगों पर आपत्तियाँ ही आएँगी !

उसकी ओर तीक्ष्ण दृष्टि-क्षेप करते हुए पत्नी ने भयपूर्वक पूछा—

"क्या बात है ? तबियत फिर खराब है ?"

हृदय को बहुत बेचैनी है। मुझे ऐसा दिख रहा है कि यह मनुष्य ससार में मेरा स्थान लेने आया है।

उसकी पत्नी ने उसे सांत्वना देने का प्रयत्न किया।

'क्या बात है ? आजकल गाँवों से शहर में थोड़े लोग आरहे हैं ?'

'ठीक है आ रहे हैं। खैर, अभी मै तुम्हें कुछ नहीं बता ऊँगा। मुझे कुछ देर सोचने दो।"

फिर पाँच दिन बाद उसने बिस्तर पकड़ लिया और बारह दिन बाद वह मर गया। उसकी मृत्यु से अर्तामानोव और उसके लड़कों पर एक काली छाया-सी गिर गई। बीमारी के दिनों में

* वासक्छाय—एक वृक्ष।

मर्तामानोव मेयर के पास दो बार आया था और वे देर तक आपस में बातें करते रहे। दूसरी बार याइमाकोव ने अपनी पत्नी को बुलाया और बड़ी थकान से छाती पर हाथों को बाँधकर बोला—

"तो इससे बात कर लो! दिखता है कि मुझे सांसारिक मामलों में अब नहीं पड़ना चाहिए। मैं तब तक थोड़ा आराम कर लूँ।

"उल्याना इवानोव्ना, इधर आओ। मर्तामानोव ने आज्ञा-सी दी और यह देखे बिना कि गृहस्वामिनी उसके पीछे आ रही है कि नहीं, वह कमरे से बाहर चला गया।

'आओ उल्याना! लगता है कि हमारे भाग्य में ही यह लिखा है।' मेयर ने आगन्तुक के पीछे जाने में झिझकते देख पत्नी को शान्त भाव से सलाह दी। वह दृढ़ आचार की बुद्धिमती स्त्री थी जो प्रत्येक काम को खूब सोच-समझकर करती थी। और ऐसा हुआ कि एक घण्टे बाद वह पति के पास वापिस आई और अपनी सुन्दर लम्बी पलकों से आँसू टपकाती हुई बोली—

'अच्छा मित्रिच! दिखता है कि हमारे भाग्य में यही बदा है। अपनी कन्या को आशीर्वाद दो।'

उसी साँझ वह अपनी कन्या को खूब सजा धजा कर सुन्दर वस्त्र और आभूषण पहनाकर पति के बिस्तर के पास ले गई। मर्तामानोव ने अपने लड़के का आगे कर दिया और लड़के-लड़की ने एक दूसरे से नजर बचाकर पाणिग्रहण किया और दोनों ही घुटनों के बल झुक गए। उन्होंने अपना सिर झुका दिया और याइमाकोव ने साँस लेने का प्रयत्न करते हुए मोतियों से मण्डित प्राचीन पारिवारिक इकोन को उनके ऊपर थामा—

पिता और पुत्र के नाम पर प्रभु मेरी इवानोनी कन्या

भी कभी मत छोड़ना ।

धर्तामानाव ने उसने कठोरता से कहा—

याद रखना । परमात्मा के सामने मेरी कन्या के जुम्मेदार तुम रहोगे ।

धर्तामानोव भूमि की छाया से छूते हुए बोला—

समझता हूँ ।

अपनी भावी पुत्र-वधु से किसी प्रकार के दयापूर्ण शब्द कह बिना उसने उसकी और अपने पुत्र की ओर निहारा, और फिर दर्वाजे की ओर इशारा किया ।

'बस जाओ ।

जब दोनों वाग्दत्त कमरे से बाहर चले गए तो वह बिस्तर के किनारे पर बैठ गया और दृढ़तापूर्वक बोला—

'शान्त रहो । सब ठीक होगा, वैसा ही होगा जैसा होना चाहिए । मैंने अपने राजकुमार की सैंतीस वर्ष सेवा की है—और कभी बाधा नहीं आई । मनुष्य परमात्मा नहीं मनुष्य दयालु भी नहीं उसे प्रसन्न रखना बड़ा कठिन है । और समझिन उस्त्याना आपको इस बारे में कभी अफ़सोस न होगा । तुम मेरे लड़कों की माँ होकर रहोगी और उन्हें इस बात की आज्ञा होगी कि वे सदा तुम्हारा आदर करें ।

वाइमाकोव यह सब कुछ सुनता रहा और चुपचाप कान में इकाना की ओर निहारता हुआ आँसू ढलकाता रहा । उस्त्याना भी सिसकती रही और यह पुरुष अपनी दुःखद बातें करता रहा—

"एह ! यम्मेई मित्रिच ! आप बहुत जल्दी जा रहे हैं । और, यह सब, जब मुझे आपकी बहुत जरूरत है । यह तो मेरे गले पर छुरी चलाने के समान है ।

उसने अपनी दाढ़ी पर चाँटता हुए हाथ मारा और बड़े ज़ोर से आह भरी—

"मुझे तुम्हारे बारे में बहुत पता है तुम ईमानदार हो, अच्छा दिमाग रखते हो। तुम और मैं मिलकर आने वाले पाँच सालों में क्या कुछ नहीं कर सकते थे ? परन्तु, हमारे बस की बात नहीं। परमात्मा की इच्छा !

उल्याना ग्रोवार्ना रुदन करती हुई बोली—

'तुम कौवे की तरह काँव काँव करके हमें क्यों डरा रहे हो ? हो सकता है अभी '

परन्तु, मर्तामानोव एकदम खड़ा हो गया कमर झुका कर बाइमाकोव का अभिवादन किया—जैसे कि दिवंगतों का किया करते हैं।

"इस अमानत के लिए धन्यवाद। अच्छा नमस्कार ! मुझे अभी नदी पर जाना है वहाँ नाव से मेरा सामान आ रहा है।

जब वह चला गया तो उल्याना बाइमाकोवा रोषपूर्ण रुदन करती रही।

'देहाती गँवार ! एक भी मधुर शब्द अपने पुत्र की सान्त्वना को न कह सका !

परन्तु उसके पति ने उसे टोका।

नाराज़ न हो मुझे व्याकुल मत करो।

कुछ मापकर वह बोला।

'मुम इसम सम्बन्ध रखो। मुझे लगता है कि यह मनुष्य हमारे यहाँ के लोगों से बहुत अच्छा है।'

सारे शहर न और पाँचों गिरजों क पादरियों ने बाइमा

मोव का अन्त्येष्टि-संस्कार प्रतिष्ठापूर्वक किया। अर्तामानोव और उसके बेटे—दिवंगत की पत्नी और कन्या के पीछे-पीछे चल जिससे नगरवासी नाराज हो गए। कुबड़े निकिता ने जो अपने पिता और भाइयों के पीछे चल रहा था भीड़ में लोगों की नाना प्रकार की आलोचनाओं और कानाफूसियों को सुना।

'पता नहीं यह कौन है और एकदम सबसे आगे चला रहा है?'

अपनी भूरी-लाल रङ्ग की गोल-गोल आँखों को घुमाकर पम्पामोव बोला—

'दिवंगत बग्गई और उल्यामा मानों बड़े समझ-बूझ कर काम करने वाले थे। वे कभी कोई काम बिना कारण नहीं करते थे। उनके इस काम में कोई न कोई भेद जरूर है। इस बात ने उन्हें किसी-न किसी तरह फुसला लिया होगा अन्यथा वे इसे अपना सम्बन्धी बनाने वाले नहीं थे।'

'हां—सा काम म काला जरूर है।'

'मैं भी कहता हूँ दाल में काला है। बिल्कुल खाली सिक्का भीपता है। मेरा माथा तो—आइमामोव कैसा सत था?'

निकिता ने ये सब बातें सुनीं वह अपनी कुब्ब को उभार सिर नीचा किए चलता रहा जैसे कि वह मार की प्रतीक्षा कर रहा हो। उस दिन आँधी चल रही थी और सैकड़ों फीट के गर्द के धुंधले बादल भीड़ के पीछे दौड़ रहे थे तथा लोगों के चिकने चुपड़े नङ्गे सिरों पर धूल बुरक रहे थे।

'जरा देखो तो अर्तामानोव गर्व से कैसा अकड़ा हुआ है। वह त्सिगान* अब भूरा पड़ गया है।'

* त्सिगान—खानाबदोश जाति जो रूस में किसी कदर छोबसी होती है। ये लोग अपना सम्बन्ध भारतवासियों से जोड़ते हैं। रूस और पूर्वीय मध्य योरोप में ये गाड़ियों द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूम २ कर चलते रहते हैं।

पानी चढ़ा हुआ था तो मुन्ने का पाँव कहीं फँस गया या गड्ढे में फिसल गया—और वह पानी में लुप्त हो गया। शहर के शराबी पदीसाज की तेरह वर्षीय लड़की मोल्या अर्तोवा बड़े ज़ोर से चिल्लाई—

'आह ! आह ! अरे ! वह डूब गया !

लोगों ने उसका हाथ मजबूती से पकड़ा और बोले—

क्यों फिज़ूल चिल्ला रही है ?

अलक्सेई ने जा सबसे पीछे था डुबकी लगाई और अपने भाई को पकड़ कर खींचा और उसे पाँवों पर खड़ा कर दिया। भीगे और कीचड़ से काले वे दोनों किनारे पर पहुँचे तो अलक्सेई सीधा शहरी लोगों की ओर गया। वे उसके लिए रास्ता छोड़ एक तरफ हो गए। उनमें से किसी ने डरते हुए कहा—

कैसा जानवर का बच्चा है।

'य लोग हमें चाहते नहीं, प्यात्र ने कहा। तब उसके बाप ने बिना रुके पीछे देखकर कहा—

'ज़रा मौका दो ये हमें चाहने लगेंगे।

उसने निकिता को झिड़क दिया।

मिट्टी के पुतले अपनी आँखों को गुमा रहा कर अपने को हँसी का पात्र मत बना, हम भोंदू नहीं ! मूर्ख कहीं के !

अर्तामानोव-परिवार अपने में ही सीमित रहा उन्होंने किसी से मेल-मुलाकात नहीं की। उनकी घर-गृहस्थी का काम एक नामी पानाव वाली मोटी औरत करती थी जो सिर पर रूमाल इस तरह बाँधती थी कि उसके दो छोर सिर पर सींग की तरह खड़े रहते। वह बहुत कम बोलती और शब्दों को ऐसे

बताती कि जिससे कोई समझ न सकता,—जैसे कि वह रूसी ही न हो। उसके द्वारा मर्तामानोव-परिवार के बारे में पता लगाना कठिन था।

"ये डाकू, साधु बनना चाहते हैं।" लोग कहते।

यह पता चला कि बाप और बड़ा बेटा प्राय आस-पास के देहातों में जाकर किसानों को कपास बोने के लिए प्रेरित करते हैं। एक ऐसे ही दौरे पर भगोड़े सिपाहियों के एक गिरोह ने मर्तामानोव पर हमला किया। उसने अपने एकमात्र हथियार—सेर भर वजन के लोहे के डण्डे से जिसे कि वह एक चमड़े की पेटी से बांधे रहता था एक को मार दिया दूसरे का सिर फोड़ दिया और तीसरा भाग खड़ा हुआ। इस्प्रावनिक ने मर्तामानोव की प्रशंसा की और मुखमरी के इलिन्स्क इलाके के गिरजे के नौजवान पादरी ने नर-हत्या के लिए चालीस रात गिरजे में प्रार्थना करने का प्रायश्चित निश्चित किया।

पतझड़ की रातों में निकिता अपने पिता और भाइयों के सामने सन्तों की जीवनियां और गिरजे के पितरों की धार्मिक प्रार्थनाएँ पढ़ता, परन्तु पिता प्राय उसे टोकता हुआ कहता—

ऊँचे ज्ञान की ये बातें हम लोगों की बुद्धि से परे हैं। हम तो सीधे-सादे श्रमजीवी लोग हैं हमें इन मामलों से क्या वास्ता! हम सीधी-सादी बातों के लिए ही पैदा हुए हैं। दिवगत राजकुमार यूरी ने सात हजार पुस्तकें पढ़ीं और उनमें इतना उलझ गया कि परमात्मा में विश्वास ही खो बैठा। उसने सारे ससार की यात्रा की सब राजाओं ने उसे दरबारों म सम्मानित किया। बड़ा प्रसिद्ध पुरुष था वह! परन्तु, जब एक कपड़े की मिल लगाई तो वह उससे दाम न कमा सका। हाँ जिस किसी भी काम म वह हाथ डालता—वही घाटे का काम हो जाता। इसलिए जीवन भर उसने किसानों पर ही अपनी गुजर की।

उम्मवग के लोग इससे भी बुरी बात करते हैं, और परमात्मा सब सहन करता है। यह मेरी जरूरतों में से है। और प्योत्र को गृहणी की जरूरत है।

फिर उसने पूछा कि उसके पास कितना पैसा है।

उस्त्याना वाइमाकोवा ने उत्तर दिया—'लड़की को दहेज में पाँचसौ से अधिक नहीं दूंगी।

"तुम दोगी—और अधिक दोगी"—भूभिक ने आत्मविश्वास और उपेक्षापूर्वक सीधे उसकी आँखों में घूरते हुए कहा। वे मेज पर एक दूसरे के आमने-सामने बैठे रहे। मतवियानोव दोनों कोह-नियाँ झुकाए और दोनों हाथ अपनी दाढ़ी की उलझी उन में फँसाए बैठा था। और उसके सामने रुखी भौंहें चढ़ाए उससे सकती हुई डरी-सी बैठी थी। वह तीस बरस के करीब थी, परन्तु दिखती बहुत कम उमर की थी। गुलाबी चेहरे में उसकी भूरी आँखों से एक हठ बुद्धिमत्ता झलक रही थी। मतवियानोव अपने कन्धों को पीछे फेंक कर उठ खड़ा हुआ।

उस्त्याना इवानोव्ना तुम एक सुन्दरी हो।

और भी कुछ कहना है? क्रोध और व्यंग्यपूर्वक उसने पूछा।

'नहीं और कुछ नहीं कहना।'

वह अनिच्छापूर्वक भारी कदम भरता हुआ चला गया। वाइमाकोवा ने उसे जाते हुए पीछे से देखा और फिर उसकी नज़र रंगीन कठे शीशे पर टिक गई। वह विषाद पूर्वक बोली—

दरिद्रम शैतान! तू चाहता क्या है?'

इस पुरुष के प्रति आशंकित भाव लिए वह अपनी लड़की के शयनागार की ओर ऊपर गई। परन्तु, नताल्या वहाँ नहीं थी। खिड़की से झांक कर उसने देखा कि लड़की

बाहर आँगन में फाटक के पास है, और उसके बराबर में प्योत्र खड़ा है। वाइमाकोवा लपक कर जीने में नीचे आई और वहीं खड़े होकर चिल्लाई—

नताल्या घर आओ!

प्योत्र ने उसका अभिवादन किया।

' नौजवान! यह कोई तरीका नहीं कि माँ की अनुपस्थिति में लड़की से बातचीत की जाय। आगे कभी ऐसा न हो!

यह तो मेरी वाग्दत्ता है! प्योत्र ने स्मरण कराया।

कोई बात नहीं। यह हम लोगों का अपना रिवाज है। वाइमाकोवा ने जवाब में कहा। परन्तु, उसने विस्मय से अपन से ही प्रश्न किया—

मैं व्यर्थ में क्यों आपे से बाहर हो रही हूँ? युवक युवतियों को आपस में प्रेम करना ही चाहिए। यह ठीक नहीं। लगता है कि मैं अपनी लड़की से ईर्ष्या करने लगी हूँ।

फिर भी कमरे में पहुँचने पर उसने लड़की की चोटी पकड़ कर उसे खूब झटकाया और उसे अपने भावी पति से बातें न करने की कठोर चेतावनी दी।

'ठीक है वह वाग्दत्त है परन्तु कौन जानता है—बरसात हो या बरफ पड़े शादी हो या इन्कारी। उसने कठोरता पूवक कहा।

कभी दुश्चिन्ताओं ने उसके विचारों में गड़बड़ पैदा करदी थी। कुछ दिनों के बाद भविष्य के बारे में जानने के लिए वह गल मण्ड की शिकार, घड़ियाल जैसी गोल-मटोल ओमन—यार्वेस्काया के पास गई जिसके पास शहर की सब स्त्रियाँ अपने पापों, घड़ाओं और शंकाओं को लेकर आती थीं।

"इस बारे में ताश के पत्तों को देखने की क्या जरूरत है" यार्देम्स्काया ने कहा—"प्यारी मैं तुमसे साफ-साफ कहती हूँ कि तुम इस पुरुष से सम्बन्ध बनाए रखो। मेरी आँखें बेकार नहीं—मैं ताश के पत्तों की तरह उनसे आर-पार देखती हूँ। तुम्हीं देखो वह कितना भाग्यवान है। जिस काम में हाथ डालता है, उसी में सफल होता है। हमारे लोग तो ईर्ष्या से जलते हैं, तुम उनकी परवाह मत करो। यह पुरुष लोमड़ी नहीं—रीछ है।"

'हाँ यह ठीक है वह रीछ जैसा ही है।' विधवा ने साँस भर कर सहमति प्रगट की और उसने थोमस को बताया—

"मैं उसी दिन से—जिस दिन से वह मेरी लड़की की मंगनी के लिए आया था उससे डर गई हूँ। पता नहीं कब आसमान से यह अजनबी अचानक आ टपका और हमारा सम्बन्धी बन बैठा। कभी ऐसा भी होता है क्या? मुझे याद है वह अपनी ही कहता रहा था और मैं उसकी निडर आँखों की ओर निहारती रही उसकी सब बातों पर ऐसे हाँ-हाँ करती गई, जैसे कि उसने मेरा गला दबा रखा हो।'

इसका अभिप्राय है कि उसे अपनी शक्ति पर भरोसा है। दूरदर्शिनी थोमस बोली।

परन्तु इस बात से बाइमाकोवा को तसल्ली नहीं हुई। यद्यपि गूँजती हुई जड़ी-बूटियों की गन्ध से भरे अन्धेरे कमरे से बाहर पहुँचाते हुए थोमस ने उसे विदा करते समय कहा था—

याद रखना भूत परियों की कहानियों में ही काम याबी समझत है।

उसने मर्नामामोव की सन्देहपूर्ण प्रशंसा के पुल बाँध थे—जैसे कि उसे ज़िन्दगी मिल गई हो। परन्तु विमालराय, काली और घृणा मद्‌दमी के समान कठोर और निष्ठुर मात्रयोम्ना यारमाया ने और ही बात कहे—

"उस्याना ! सारा शहर तेरे लिए आहें भर रहा है मुझे इन परदेशियों से डर नहीं लग रहा ? जरा सोच तो एक बेटा कुबड़ा है ! यह फिजूल नहीं यह माँ-बाप के बड़े पापों का फल है।'

विधवा आह्माकोवा के लिए यह सब बड़ा कठिन हो गया और वह प्राय अपनी लड़की को इस कारण मारने-पीटने भी लगी, परन्तु साथ ही वह यह भी अनुभव करती थी कि वह उस पर व्यर्थ में गुस्सा करती है। वह अपने किराएदारों से बहुत कम मिलती-जुलती और वे लोग प्राय उससे भी कतराते—और उसके जीवन में एक काली छाया डाल देते।

सर्दी शहर पर बिना सूचना दिए भयङ्कर तुमुल तूफानों और तीक्ष्ण तुषार लिए उतर आई। गलियों घरों को उसने घुमचीनी जैसे बर्फानी टीलों से ढक दिया पक्षियों के घोसले गिरजों के गुम्बदों को फली-फली रुई की टोपियाँ उढ़ाईं नदियों को जेलखाने में और मलिन दलदलों का सफेद चमकीले लोह की बेड़ियों में जकड़ दिया। छुट्टी के दिन नगरवासी बरफ से जमी ओका नदी पर आस-पास के गाँवों के किसानों से मुष्टि-युद्ध के लिए एकत्रित होते और अलक्सेई प्रत्येक युद्ध में भाग लेता तथा प्रत्येक बार गुस्से में भरा हुआ घायल घर वापिस आता।

'अल्योशा ! क्या बात है ? अर्तामानोव पूछता—'क्या यहाँ के लोग हमारे यहाँ से अच्छा लड़ते हैं ?

अलक्सेई अपनी चोटों को पीतल के सिक्के या बरफ के टुकड़े से रगड़ अपनी बाज जैसी आँखों को चमकाता हुआ निराश हो चुप ही रहता।

एक दिन प्योत्र ने कहा —

"अलक्सेई लड़ता बहुत अच्छा है। परन्तु अपनी ओर के ही लोग इसे घायल कर देते हैं।"

मेज पर मुट्ठी मारते हुए इल्या अर्तामानोव ने पूछा—
'क्या ?

"घृणा के कारण।'

"वे इससे घृणा करते हैं ?'

'नहीं हम सबसे हो—सम्मिलितरूप मे।"

बाप ने फिर मेज पर मुक्का मारा तो मेज पर खड़ी मोम बत्ती लुढ़क गई। अन्धेरे में से एक झिझकती गुरगुराहट सी आई—

घृणा और प्यार! तुम लड़कियों की तरह बातें करते हो। आगे से मेरे सामने कभी ऐसी बातें न करना!

मोमबत्ती जलाते हुए निकिता ने धीरे से कहा—

अल्योशा को इन मुक्केबाजियों में आना ही नहीं चाहिए।'

अच्छा! ताकि लोग हमारी हँसी करें और कहें कि अर्तामानोव-परिवार डरता है। चुप रह रौंदल, भौंगर, कहीं के!'

इस प्रकार झिझकन और गाली गुफ्तार करते के कुछ दिन बाद सान्ध्य भोजन के समय अर्तामानोव ने भारी आवाज में प्यार से कहा—

लड़को! तुम्हें रीछ के शिकार के लिए जाना चाहिए। यह एक अच्छा मनोरंजन है। मैं राजकुमार गियार्गी के साथ यार्कान के जङ्गलों में जाता था हम लोग बरछा का प्रयोग करते थे। बहुत आनन्द आता था!

उत्साहवश उसने अपने कतिपय कारनामों के बारे में बताया। एक सप्ताह बाद वह प्योत्र और अलक्सेई के साथ शिकार के लिए गया और एक पुराने रीछ को मारा। उसके बाद दोनों

भाई अकेले गए और एक रीछनी को जगाया। रीछनी ने गुस्से में प्रसकसेई की मेज की खास की जाकेट फाड़ दी और उसकी जांघ में पञ्जे की खरोंच मारी। परन्तु अन्त में दोनों भाइयों ने उसे मार गिराया। मरे जानवर की लाश जङ्गल में भेड़ियों के लिए छोड़कर वे रीछ के दो बच्चे साथ ले आए।

"क्यों ? तुम्हारे अर्तामानोव-परिवार का क्या हाल है ?" नगरवासी बाइमाकोवा से पूछते।

क्यों ? क्या बात है ? वे सब ठीक हैं।'

अब तक सर्दी है सूपर शान्त हैं।' पम्यालोव ने कहा।

विधवा को विश्वास न होता था परन्तु उसे अनुभव होता कि कुछ समय से अर्तामानोव के विरुद्ध लोगों के विरोध भाव से वह स्वयं भी नाराज होने लगी थी। उसके प्रति सर्वसाधारण की अरुचि से वह उनकी उपेक्षा और नाराजगी की ठण्डी हवाएँ अपनी तरफ भी आती अनुभव करती। उसने देखा कि अर्तामानोव-परिवार गम्भीरता संयम और मित्रतापूर्वक रहता है तत्परतासे अपने काम में लगा रहता है और बुराई का कोई काम नहीं करता। अपनी लड़की और प्योत्र का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने के बाद वह इस परिणाम पर पहुँची, और उसे विश्वास हो गया कि यह स्थूल और शान्त नवयुवक अपनी आयु की दृष्टि से कहीं अधिक गम्भीर और शान्त है। उसने कभी भी नतास्या को दबाने उससे छेड़खानी करने अथवा अश्लील कानाफूसी करने की कोशिश नहीं की, जैसा कि शहरी वर प्राय किया करते हैं। नताशा के प्रति प्योत्र के अजनबी, रूखे और सर्तक व्यवहार से बाइमाकोवा डर गई, यद्यपि उसके इस भय में एक प्रकार की ईर्ष्या थी।

"यह अपनी पत्नी के प्रति भावुक नहीं रहेगा।

एक दिन जीन से नीचे आते हुए उसने दरवाजे पर अपनी लड़की की आवाज सुनी

फिर रीछ का शिकार करने जा रहे हो क्या ?"

"हाँ, सवारियाँ तो कुछ ऐसी ही है क्यों ?

'खतरनाक है। पिछली बार जामसर ने अस्पताल को पायस कर दिया था।'

'यह उसका अपना दोष था। उसने बहुत जल्दी की थी अच्छा। तुम मेरे लिए चिंतित हो ?

'मैंने तुम्हारे बारे में तो कुछ भी नहीं कहा।

तू—छोटी-सी लोमड़ी। मुस्कराकर गहरी साँस भरते हुए माँ ने सोचा 'और वह कितना भाता है।'

इत्या मर्तामानाव ने कई बार उसे टोका—

"अब शादी जल्दी करदो नहीं तो व अपने आप जल्दी कर लेंगे।

वह भी देख रही थी कि अब जल्दी करनी ही चाहिए। लड़की ठीक मां नहीं पाती थी और अपने आग्रह की बचैनी को छिपाने में असमर्थ रहती थी। ईस्टर के दिनों में वह अपनी लड़की को पुन: साधु-गृह में ले गई और एक महीने बाद उसने लौटकर देखा कि उसके घर का बगीचा बहुत बढ़िया तरीके से कटा-छँटा हुआ है पगडण्डियों से घास काटी हुई है। पेड़ों को गाड़ा हुआ है और भाड़ इत्यादि किसी कुशल हाथ द्वारा काटे और बाँधे हुए हैं। नदी की ओर पगडंडी पर मुड़कर उसने निकिता को देखा। वह बाड़े की मरम्मत कर रहा था—जिसे बसन्त की बाढ़ ने खराब कर दिया था। दयनीयरूप से ऊपर को उभरी हुई उसकी अभ्यिल कुब्ज लम्बी-मूंगी कमीज में से साफ चमक रही थी जिसके कारण वह अपने बड़े सिर और उसके गड़े मानों

ा भी छिपा रही थी। अपने चेहरे से बालों को हटाने के लिए निकिता ने उन्हें सफेद रस्सी से बाँध रखा था। इस सरस हरित वनस्पति के बीच भूरे रङ्ग में वह ऐसा लगता जैसे अपनी साधना में खोया हुआ कोई प्राचीन तपस्वी हो। खूटे की नोंक बनाते समय उसका कुम्हलाया सूर्य के प्रकाश में चाँदी की तरह चमचमा रहा था। मक्खियों की सी पतली आवाज में वह धीरे-धीरे एक धार्मिक भजन गा रहा था। बाड़ से परे नदी का जल हरित-कौषेय के समान झिलमिल कर रहा था और सूय की किरणों का प्रतिक्षेप दौड़ती हुई सुनहरी मछलियों के समान खिलवाड़ कर रहा था।

"परमात्मा तुम्हारा सहायक हो" स्त्री ने अनासक्त प्रसभाव से कहा। नीली आँखों के हल्के प्रकाश की झलक उस पर डालते हुए निकिता ने धीमे से कहा—

परमात्मा तुम्हारी रक्षा करे!

क्या तुमने ही यह सारा बगीचा सवारा है?

'जी हाँ।

'तुमने बहुत बढ़िया तरीके से यह किया है। क्या तुम बगीचे के शौकीन हो?

अपने काम पर झुके हुए उसने संक्षेप में बताया कि नौ साल की आयु से अपने स्वामी राजकुमार के माली से वह यह काम सीखता रहा है और अब उसकी आयु उन्नीस वर्ष की है।

"कुबड़ा है परन्तु स्वभाव का तेज नहीं।" स्त्री ने मनमें सोचा।

सन्ध्या समय जब वह अपनी कन्या के साथ ऊपर के कमरे में चाय पी रही थी निकिता हाथ में फलों का गुलदस्ता लिए दरवाजे में प्रकट हुआ। उसके पीले चेहरे पर असुन्दर और

प्रसन्नता रहित एक हल्की-सी मुस्कान थी।

क्या मैं यह गुलदस्ता भेंट कर सकता हूँ ?"

किसलिए ? वाइमाकोवा ने सुन्दर फलों और पत्तियों के गुच्छे को देख सदेह से पूछा। निकिता ने बताया कि जब वह भद्र लोगों के यहाँ काम करता था तो उसका कर्तव्य था कि प्रति दिन प्रातःकाल वह राजकुमारी को एक गुलदस्ता भेंट करे।

अच्छा यह बात है' —वाइमाकोवा ने कहा। और फिर किसी कदर झेंपते हुए परन्तु अभिमानपूर्वक सिर उठा कर पूछा 'क्या मैं राजकुमारी जैसी हूँ ? वह तो बहुत ही सुन्दर होनी चाहिए ?

आप भी वैसी ही हो।

और अधिक झेंपते हुए वाइमाकोवा ने सोचा— 'कहीं बाप ने तो लिखा कर इसे नहीं भेजा ?

इस सम्मान के लिए धन्यवाद।" उसने उत्तर दिया। परन्तु निकिता को चाय के लिए आमन्त्रित नहीं किया। उसके जाने के बाद वह कहती हुई सोचने लगी—

'उसकी आँखें सुन्दर हैं किन्तु बाप जैसी नहीं। हो सकता है माँ पर गई हों।

उसने एक गहरी साँस ली।

दीखता है हमारे भाग्य में इन लोगों के साथ ही रहना लिखा है।

उसने भर्तोमामोव पर अपनी बर्तत तक विवाह स्थगित करने के लिए बहुत ज़ोर नहीं दिया। तब उसके पति का स्वर्गवास हुए एक वर्ष हो रहा था। परन्तु, उसने दृढ़तापूर्वक उससे कहा—

'इल्या वसिलिविच ! बस आप इसमें हस्तक्षेप न करें। आप हमारे यहाँ के अच्छे और पुराने रिवाजों के अनुसार मुझे ब्याह रचाने दें। इससे आपको ही लाभ होगा। आप एकदम हमारे अच्छे लोगों के बीच अच्छा स्थान प्राप्त कर लेंगे और सब लोगों की नजर में आ जायेंगे।

'खैर' अर्तामानाव ने अभिमान से कहा— इसके बिना ही मैं दूर से नजर में आ जाता हूँ।

"यहाँ के लोग मुझे पसन्द नहीं करते।

'पसन्द नहीं करते तो करेंगे।

वह कन्धे हिलाकर खिसखिसाया।

और वह व्यापारी भी सदा चाहता है के बारे में ही गाता है। तुम सब पागल हो।

"ठीक है परन्तु इस अप्रियता का कुछ भाग तो मुझे भी सहन करना पड़ता है।

"समधिन ! आप इस बात की जरा भी परवाह न करें।

अर्तामानाव ने अपनी लम्बी बाँह उठाई और मुट्ठी का इस प्रकार बार में भींचा कि वह लाल पड़ गई। वह बोला—

मैं लोगों का तोड़ना भी जानता हूँ। मेरे आस-पास कोई दूर तक उछल-कूद नहीं सकता। मैं लोगों की चाह के बिना भी गुजारा कर सकता हूँ।

स्त्री ने कुछ नहीं कहा। भयपूर्वक काँपते हुए वह सोचने लगी

"कैसा जङ्गली जानवर है।

और इस प्रकार वह दिन भी आ गया जब उसका सुन्दर गृह

लड़की की कुलीन सहेलियों से भर गया। उन्होंने प्राचीन तर्ज के सफेद सूती कपड़े की लम्बी-लम्बी बाहों वाले चोगे धारण किए हुए थे जिनके कन्धों पर रङ्गीन रेशमी तागे की मर्दोंबी[५] कढ़ाई की हुई थी—और पाँवों में मखमल की लाल कै सलीपर पहिने हुए थे तथा जिनकी लम्बी-लम्बी वेणियों में रङ्ग-बिरङ्गे फीते सज रहे थे। भावी वधू सुनहरी ज़री की जाकेट भी कन्धों पर पहने थी, तथा चाँदी की ज़री के चोगे में कालर से ज़मीन तक चाँदी के बटन लग रहे थे। वह एक कोने में बरफानी मूर्ति की तरह बैठी थी। उसके बालों में मीन फीते गुंथे थे और वह जालीदार रूमाल से अपने चेहरे का पसीना पोंछती हुई गीत गा रही थी।

हरियावल भरित घाटियों पर
चमचमाती-नोक पर्वतों पर
जाता है बसन्त की बाहें—
जिनमें बहता है शीतल जल।

कन्या क्रन्दन की इस दुखती सिसकन को सहेलियों ने उठा लिया और मिलतापूर्वक पकड़ लिया—

मुझ कन्या को भेज दिया है,
बाहर से जन आये को,
मग्न-पाँव हिमजल प्रवाह में,
मग्न और निकलना को।

कन्याओं की भीड़ में छिपा हुआ यमबसेई जोर से ठहाका मारता हुआ चिल्लाया—

'यह तो बड़ा ही हास्यास्पद गाना है। आपने लड़की को तो

---

५ मर्दोंबी कढ़ाई=मर्दोंबिया इलाके की विशेष कढ़ाई।

परी के कपड़ों मे गुड़िया की तरह टीन के रङ्ग-बिरंगे मखोल से सजा रखा है और चिल्लाती हैं कि वह नग्न है निर्वसना है। '

निकिता नीला कपड़े की जाकेट पहन दुलहिन के पास बैठा था। उसकी जाकेट कुब पर बड़े मनोरम और हास्यास्पद ढङ्ग से ऊपर उभर रही थी। उसकी नीली आँखें विचित्र भाव-भंगिमा के साथ नतास्या पर गड़ी हुई थीं। जैसे कि उसे भय हो कि कहीं यह कन्या अन्तर्ध्यान न हो जाय। पास ही मात्र्योना वास्कीया सारे दरवाजे को घेरे हुए खड़ी थी और आँखों को मटका कर भारी स्वर से कह रही थी —

'छोकरियो ! तुम्हारे इस गीत में करुणा और शोक की अभिव्यक्ति नहीं है।

घास की तरह लम्बे दम भरती हुई वह कमरे में पहुँच कर लड़कियों का बताने लगी कि गीत गाने का पुराना तरीका क्या है और विवाह से पूर्व कन्या के हृदय का भय और रुदन से कैसे भरा जा सकता है।

कहा जाता है— विवाह पत्थर की दीवार के समान है यही तुम्हें भी समझना चाहिए। यह 'दीवाल' बड़ी दृढ़ है—जिस तोड़ा नहीं जा सकता। यह ऊँची इतनी है जिसे उछल कर फाँदा नहीं जा सकता।

परन्तु लड़कियों न उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। कमरे में भीड़ और गरमी थी। बुढ़िया को बुरी तरह बकलती हुई लड़कियाँ बाहर बगीचे की ओर दौड़ पड़ीं। अलक्सेई उनके बीच पीली रेशमी जाकेट और ढीला पाजामा पहने उन्मत्त भौंरे की तरह कन्या-पुष्पों पर बड़े आनन्द से मँडराने लगा।

वास्कीया के ओठ क्रोध से सूखे रहे थे, आँखें बाहर को निकलीं

पड़ रही थीं—उसने सामने से अपने पायरे को उठा कर धूएँ के भारी बादल की तरह उल्याना के पास आकर भविष्यवाणी की—

"तेरी लड़की तो बहुत खुश है! यह ठीक नहीं है। यह हमारे रीति रिवाजों के विरुद्ध है। शादी का आनन्द अन्त का दुःख होता है।

घुटनों के बल झुकी बास्माकोवा लोहे की पत्तियों से बंधे हुए सन्दूक में कुछ टटोल रही थी। पलंग तथा फ़र्श पर चारों ओर मेले की दूकान की तरह चमकते टिप्पेटा, बड़े रूमाल, काश्मीरी शाल और फ़ीते बिखरे पड़े थे। इन रंग-बिरंगे कपड़ों पर सूर्य की एक विस्तृत किरण पड़ रही थी और उससे सूर्यास्त के समय के बादलों की-सी रंगीन आभा फूट रही थी।

'शादी से पहले दूल्हा दुलहिन के घर में रहे यह कोई तरीका नहीं। अच्छा तो यह था कि वर्तमानोव-परिवार कहीं और रहता।

"तुमने पहले क्यों नहीं बताया? अब यह कहना व्यर्थ है।" उल्याना ने शिकायत से चिंतित चेहरे को सन्दूक में झुका कर छिपाते हुए कहा।

वास्कोया ने धीमे स्वर में उत्तर दिया—

लोग तुम्हें सदा से बुद्धिमती मानते आए हैं, इसीलिए मैं भी चुप रही। सोचती थी कि तुम इतनी तो समझदार हो ही, मुझे क्या? मुझे तो तुम्हें सच्चाई से वाकिफ़ कराना था सो करा दिया। यदि लोग भी इस बात पर ध्यान नहीं देते तो परमात्मा इसका साक्षी रहेगा।

वास्कोया प्रस्तर-मूर्ति के समान खड़ी थी और उसने अपने दोनों हाथों से सिर को ऐसे थाम रखा था जैसे कि वह बुद्धि से लबालब भरा एक प्याला हो! जब उसे कोई उत्तर न मिला तो

वह दरवाजे से बाहर निकल गई। उन चमकीले रंगों के कपड़ों के बीच घुटनों के बल झुकी उस्ताना दु:ख और चिन्ता से व्यथित होकर फुसफुसाने लगी—

'हे परमात्मा, रक्षा करो! मुझे सद्‌बुद्धि दो।

दरवाजे में फिर सरसराहट-सी हुई तो उसने अपने आँसुओं को छिपाने के लिए अपने सिर को जल्दी से सन्दूक के अन्दर कर लिया। यह निकलवा था।

'मुझे नतास्या ने आपसे यह पूछने भेजा है कि आपको किसी तरह की सहायता की आवश्यकता तो नहीं।

'धन्यवाद, प्यारे बच्चे।

'रसोई में छोटी ओल्गा ओर्लोवा ने अपने ऊपर चाशनी गिरा ली है।

''ऐसा न कहो! वह तो एक बहुत अच्छी लड़की है तुम्हारी दुलहिन बनने के योग्य।'

''मुझ से कौन शादी करेगी?'

बगीचे में बाहर नए तयार की हुई जौ की शराब (बीयर) पी जा रही थी। एक गोल मेज के इर्द-गिर्द 'लिंडाऊ' वृक्ष की छाया में इग्ना अर्तामानोव, गावरीला बारकी, वधू का धर्मपिता पम्पालोव छोटी-छोटी आँखों वाला चर्मकार मिलेई किन, रथ-निर्माता बोरोयेपोनाव बैठे हुए थे। पास ही 'लिंडाऊ' वृक्ष के तने के पीछे से प्योत्र खड़ा झाँक रहा था। वह अपने काले बालों में खूब तेल लगाए था जिससे उसका सिर लोहे की तरह चमक रहा था। वह बड़े आदरभाव से अपने बुजुर्गों का वार्तालाप को सुन रहा था।

''आप लोगों के रीति-रिवाज भिन्न हैं", अर्तामानोव ने

सोचते हुए कहा ।

उत्तर में पम्यासाव ने डींग मारी—

'इस महान रूप के असली वासी तो हम हैं ।

'और, हम भी कोई परदेसी नहीं ।

"हमारे रीति-रिवाज बहुत प्राचीन हैं ।"

'उनमें सुवास और मार्वोलियम की महक है ।

इसी समय अचानक हँसती-खिलखिलाती और एक दूसरे को धक्का देती हुई कन्याओं ने बगीचे पर आक्रमण कर दिया । वे रङ्ग-बिरङ्ग चमकीले कपड़ों और फीतों में सजी हुई थीं । उन्होंने गोल मेज को चारों तरफ से घेर कर वर के पिता के स्वागत में स्तोत्र-गान शुरू किया—

अजी, हमारे महा समधी जी
हो सुना इल्या औ, वासिल्यविच !
प्रथम चरण में टूटे इक टाँग
और द्वितीय में दूसरी टाँग
फिर गर्दन टूटे तृतीय चरण में ।

यह तो तुम्हारा अभिनन्दन किया जा रहा है ।' अपने बेटे की ओर मुड़कर अतामानोव विस्मित होकर चिल्लाया ।

लेकिन प्यात्र कनजिया स लड़कियों की ओर घूरता हुआ असमञ्ज हँसी हँसता रहा ।

'लो, यह और सुनो ।' वह वर बाक्यों ठहाका मार कर हँस पड़ा ।

हमारी महलों का भूटकर न जाने वाले, समधाजी !
तुम्हारे प्रति हम फिर भी बड़ा कृपालु हैं ।

'हाँ, बहुत कृपालु है! कुछ कसर भी छोड़ी है!'' अर्तामानोव उत्तेजित होकर कह उठा और अप्रसन्न होकर मेज पर उँगलियाँ मारने लगा।

लड़कियाँ जोर-जोर से गाती रहीं—

हल के फलों के नीचे गिरा तुम
पर्वत-शिखर से चट्टानों पर—
धोखा हमको न दे जाए
सम्मान-विजय की प्राप्ति हेतु तुम
अनजाने दुर्गम पथ में
दूरवर्ती वीरान गाँव में —
भाग्य हो सुख-व्यथा उगाए—
सींच-सींच कर मधुधार से।

'तो यह बात है!' अर्तामानोव क्रोध में चिल्लाया। 'छोकरियो, मैं तुमको अप्रसन्न नहीं करना चाहता लेकिन साथ ही अपने देश की प्रशंसा करने से भी न चूकूँगा। हमारे यहाँ के रीत-रिवाज तुम्हारे यहाँ से अधिक सहृदयता लिए हुए हैं, और हमारे यहाँ के आदमी यहाँ से अधिक सभ्य हैं। हमारे यहाँ इस पर एक लोकोक्ति भी है — स्वास्थ्य और दासता सिर में आ मिलती है। परमात्मा की कृपा है कि आफ़त उससे नहीं मिलती।'

"जरा रुको! तुम्हें हमारे बारे में अभी कुछ नहीं मालूम!" मास्की ने कहा। यह कहना कठिन है कि उसने धमकी दी थी अथवा शेखी बघारी थी—'अच्छा छोकरियों का इनाम तो दो!'

"मुझे क्या देना चाहिए?
"जितना तुम खुशी से दे सको।"

लेकिन, जब अलीमामोव ने लड़कियों को पार्टी में से व्यक्त निकाल कर दिए तो पम्यासोव नाराजगी प्रगट करता हुआ बोला—

"तुम अधिक दे रहे हो! क्या दिखावा करते हो।"

"तुम्हें समझना टेढ़ी खीर है।" इल्या ने भी तेज होकर नाराजगी के साथ कहा। बार्सी ने जोर का ठहाका लगाया और मिलेईकिन की तेज खिलखिलाहट गूंज उठी।

बचपन की हमजोलियां न बहू से बड़े मुहूर्त में मिल ली। मेहमानों के चले जाने के बाद प्रायः सारे का सारा परिवार निद्रा में ऐसा निमग्न हुआ कि मानो घोड़े बेच कर सोया हो। अलीमामोव, प्योत्र और निकिता के साथ बगीचे में बैठा हुआ था। उसने पेड़-पत्तों और आकाश में तैरते हुए गुलाबी रंग के बादलों की ओर एक बार देखने के बाद अपनी दाढ़ी में उँगलियां फिराईं और तब धीमे स्वर में कहा—

"ये लोग मुंहफट हैं प्रेमी और सज्जन नहीं। बेटा प्योत्र! जैसा तुम्हारी सास कहे वैसा ही करो। यद्यपि यह सब औरतों की बकवास है लेकिन फिर भी आवश्यक है। अलेक्सेई कहां है? क्या लड़कियों को घर पहुंचाने गया है? लड़कियां उसे पसन्द करती हैं लेकिन उसके साथ के लड़के नहीं। बार्सी का लड़का उसे नाराजगी के साथ वैसा देखता था हो निकला। तुम उनके बीच सभ्य और मधुरभाषी बने रहना। तुममें ये गुण मौजूद भी हैं। जहां-कहीं सूक्ष्म दरार पड़ जाय तुम उसे भर देना। इस प्रकार विनम्र होकर तुम अपने पिता की सेवा करो।

फिर उसने लकड़ी के पीपे में झांक कर देखा और रोष के साथ बोला—

'सब गटक गए ! घोड़ों की तरह पीते हैं ! बेटा प्योत्र तुम क्या सोच रहे हो ?

अपनी व्यग्रता से भट में मिली पेटी में उँगली फिराते हुए बेट ने धीमे स्वर में कहा—

'देहात का जीवन शान्त और सरल होता है।

'हूँ इस से बढ़कर सरलता क्या ? दिन भर सोते रहते हैं।

ये लोग विवाह के कार्यक्रम को टाल जा रहे हैं।'

जरा धैर्य रखो।

और आखिरकार वह दिन भी आ गया जो प्योत्र के लिए एक अनिश्चित और दुरूह दिन था। इकोन के चरणों में बैठे प्योत्र ने अनुभव किया कि उसकी भृकुटियाँ निराशा और क्रोध के उद्वेग से खिंची-खिंची सी हैं। वह जानता था कि यह कोई अच्छी बात नहीं और उसकी वधू इसे पसन्द नहीं करेगी। लेकिन इसके लिए वह लाचार था। उसे अनुभव हो रहा था कि उसकी भौंहें किसी मजबूत धागे से बाँधकर खींची जा रही हैं। उन भौंहों के नीचे की आँखों से उसने अतिथियों की ओर निहारा। उसने माला का पीछे की ओर फेंका तो हॉप[१] के फूल उससे भड़कर मेज और नताल्या के घूँघट पर आ गिरे। वह भी अपने सिर को झुकाए बैठी थी। उसकी पलकें थकान के कारण झुकी जा रही थीं। एक बच्चे की तरह वह भय से पीली पड़ी हुई थी और शर्म के मारे काँप-काँप उठती थी।

कुछ नहीं !" जामुनी वस्त्र धारण किये बड़े बालों वाले

---

१ हॉप—एक प्रकार की लता जिसका फल सुगन्धि के लिए बीयर में डाला जाता है।

बोपसे पादरी ने बीसवीं बार इन शब्दों का उच्चारण किया था।

बिना गर्दन झुकाए ही ब्योत्र ने भेड़िए की तरह झुककर मदालस्या के घूँघट को उठाया और मद-कम्प में उसके गालों पर अपने शुष्क अधर रख दिए। उस समय उसने उसकी रेशम जैसी चिकनी और कोमल त्वचा की शीतलता को भी अनुभव किया। वह मदालस्या के लिए दुःखी था और साथ ही उसे हर्ष भी अनुभव हो रहा था। इसी समय सुरा-मग्न अतिथियों की ओर से एक आवाज उठी—

लड़के को इतना भी पता नहीं !

कि ओठों पर निशान कैसे डाला है !

'यदि मैं उसकी जगह पर होता तो उसे ठीक-ठीक चूम लेता !'

'मैं भी तुम्हें चूम सकती।' शराब के नशे में चूर एक स्त्री भराए हुए स्वर में चिल्लाई।

कितनी बुरी बात है ! बाग्दी बोला।

अपने होठों का भीगा पर ब्योत्र ने लड़की के आतंक-कम्पित अधरों का स्पर्श किया तो प्यार के आवेग में वह धूप के प्रकाश में बर्फ की तरह विलुप्त होने को तैयार हो गई। हो उठी। दूल्हा और दुल्हिन दोनों ही पूरे दिन किसी प्रकार का आहार न मिलने के कारण भूखे थे। उपस्थित गन्धयुक्त दार शराब के दो गिलास पीने के बाद ब्योत्र ने एक आतंरिक उत्तेजना का अनुभव किया। उसे भय हुआ कि मदिरा की तीव्र गन्ध और उसकी उन्मत्त अवस्था उसका भय वधू को अवगत न हो जाय। उसे लग रहा था जैसे कि उसके

चारों ओर की सभी वस्तुएँ घूम-फिर कर एक रंग-बिरंगी वस्तु में समाती जा रही थीं। फिर भी उस पास-पास फैले कुरूप चेहरों की कतारें दिखाई देने लगतीं। बेटे ने पिता की ओर क्रमशः प्रार्थना और रोष के भावों के साथ देखा। लेकिन इल्या अर्तामोनोव बिखरे हुए बालों का चेहरा लिए आवेग में बाइमाकोवा के गुलाबी चेहरे की ओर देखता हुआ उसके पास जा पहुँचा और बोला —

'प्यारी समधिन! मैं तुम्हारे स्वास्थ्य के लिए तुम्हारे मधु का पान करता हूँ। यह मधु अपनी निर्माणकर्त्री के समान मधुरता लिए हुए है।'

बाइमाकोवा ने अपनी एक पुष्ट-सुडौल बाँह ऊपर उठाई। अनमोल रत्नों और रंग-बिरंगे हीरे-जवाहिरातों से अंकित वक्ष पर लटकते हुए मुक्ताहार पर धूप की किरणें पड़ीं तो वह झिलमिला उठा। औरों की तरह उसने भी मदिरा-पान किया था। उसकी भूरी-भूरी आँखों में एक हल्की मुस्कान खिल उठी और उसके चुस्त होंठों की फड़कन किसी को बहकाने के लिए काफी थी।

इन दोनों ने अपने-अपने गिलासों को टकराया और बाइमाकोवा ने अपने गिलास को तुरन्त खाली कर देने के बाद अपने समधी का झुक कर अभिवादन किया। उसके समधी इल्या अर्तामोनोव ने अपने बड़े-बड़े बालों वाले सर को पीछे झटकार कर बड़े उत्साह और आनन्द से कहा—

'आपके शिष्टाचार के क्या कहने समधिन! ये गालियाँ जैसे शिष्टाचार! परमात्मा मेरी मदद करो।'

प्योत्र ने अनिश्चयता के साथ अनुभव किया कि उसके

पिता का व्यवहार ठीक नहीं है। मदिरापान में मस्त प्रतिथियों के मध्य बठे हुए उसन पम्यालोव का ईर्ष्यापूर्ण विस्मय बास्काया की मन्द स्वर में भरसना प्रौर भिन्नध्वनि की हल्की खिलखिलाहट स्पष्ट रूप से सुनी।

"यह विवाह नहीं एक प्रवासस है। उसन विचार किया। उसन फिर सुना—

तनिक देखो! वह नवान उत्साना की ओर कैसे घूर रहा है? ओह मेरे।

'पादरी के बिना ही यहाँ एक शादी और होने को है।'

कुछ क्षणों तक तो य शब्द उसके कानों में प्रवेश कर उसे पीडित करते रहे लेकिन जैसे ही उसने नताल्या की जाँघ या कुहनी का स्पर्श अनुभव किया तुरन्त ही वह पीड़ा न जाने कहाँ लुप्त हो गई। उसके स्थान पर शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्गों में एक गहरी मन्दहासी? एक भारी परेशानी के रूप में फैल गई। वह अपने से जिद करके अपने सिर को दूसरी ओर घुमाए रहा। लेकिन वह अपनी आँखों को वश म रख सका। व बरबस ही नताल्या की ओर बार-बार मुड मुड़ जाती।

'यह कार्यक्रम कब तक चलता रहेगा? उसने फुसफुसा कर पूछा।

'पता नहीं। उत्तर में नताल्या फुसफुसाई।

मुझे तो बड़ी मजा अनुभव हो रही है।

'यही हाल मेरा भी है। उत्तर मिला तो उसे बहुत प्रसन्नता हुई कि उस जैसी हालत उसकी भी है।

ग्रसक्सई अगीप में लड़कियों के साथ दावत खा रहा था और निकिता भीगा हुई दाढ़ी थाम तक पादरी के साथ बैठा था।

उस पादरी की ताँबे जैसे रङ्ग की आँखें चेचक के धब्बों वाले एक चेहरे में जड़ी हुई थीं। मैदान और गली की ओर खुलने वाली खिड़कियों से बस्ती के लोग झाँक रहे थे। आकाश की नीलिमा में दर्जनों सिर दिखाई देते और फिर विलीन हो जाते और इस तरह यह सिलसिला बराबर जारी रहा। वे गले फाड़ फाड़ कर गप-शप करते थे और एक दूसरे पर चिल्ला-चिल्ला कर आवाजें कसते। लगता था कि खिड़कियाँ खुले मुँह की बोरियों के समान हैं और उनमें से निकल निकल कर ये शोर करते हुए सिर कमरे में तरबूजों की तरह बिखर कर लुढ़कने लगेंगे। विशेष रूप से निकिता की नजर बाई खोदने वाले तिखोन व्यासोव के सिर की ओर लगी रही। उसका सिर खास-खास धब्बों से युक्त था और गालों की हड्डियाँ ऊपर को उभरी हुई थीं मानो जैसे कि वे खास ढंग में गढ़ दी गई हों। उसकी आँखें, जिनकी नजर बेरङ्ग थी सहसा ही अलौकिक रूप में हिलीं जैसे कि झपक रही हों। लेकिन यह झपकन आँख की पुतलियों की नहीं—स्थिर बरौनियों की थी। पतले मजबूती के साथ बन्द अधरों पर घुंघराली स्थिर मूँछों की छाया थी। उसके कान यह ढङ्ग से कपाल से सटे हुए थे। वह खिड़की की दहली से अपनी छाती अड़ाए खड़ा था। दूसरे लोगों की धक्का-मुक्की के बावजूद भी वह किसी को कोस नहीं रहा था। वह सिर्फ अपनी कोहनी अथवा कन्धे से धीमे से उन लोगों को हटा देता। उसके वे चौड़े कन्धे ढालू और गोल थे और उसकी गर्दन उसमें धँसी हुई थी। लगता था कि उसका सिर सीधे-सीधे सीने में से निकला है। यही कारण था कि वह भी कुबड़ा-सा दिखाई पड़ता था। निकिता ने उसके चेहरे पर एक प्रकार की आत्मीयता और दया का भाव अनुभव किया था।

इसी समय एक काने नवयुवक ने अचानक 'तम्बोरिन' पर हाथ दे मारा और उसके चमड़े पर उङ्गलियाँ चलाना शुरू कर

दिया। तम्बोरिन[७] में ढप-ढप की। किसी ने तेज सीटी बजाई और दूसरे ने अकार्डियन[८] पर राग छेड़ दिया। मोटा, घुंघराले बालों वाला मझोला-सा स्त्योपा कमरे के बीच नृत्य के लिए पाँव चलाता हुआ चक्कर काटने लगा और बजते हुए साजों के साथ उसने गाना शुरू कर दिया—

हे, तरुणियो! हे प्यारे बिरादरो
नाचते गाते प्रमुदित साथियो!
किसकी जेबें भरा स्वर्ण से—
छन-छन करतीं? केवल मेरी!
आओ, आओ रंगमंच पर
स्पर्धा कर-स्वर्ण छीन लो।

असाधारण आकृति वाला उसका पिता गरज उठा—

'स्त्योपका! अपने शहर की नीची न होने देना इन कुल्की मुर्गों को कुछ कौशल तो दिखाओ!'

इस पर इल्या अलीमिनोव एकदम उछल पड़ा। उसका चेहरा तमतमा उठा था मानो अंगारे के समान लाल-जामुनी रंग की हो गई था। उसने अपने रूखे-सूखे सिर का पीछा मल काया और तभी जोर्की चीख उठा—

कुल्की मुर्गे कौन कहता है? हम भी देखते हैं कि नाचना किसको आता है। अल्याशा!

अकस्मात् इल्या चेहरे पर मुस्कराहट लिए अलक्सेई इल्यान नगर के नर्तक का एक क्षण देखता रहा और फिर अचानक ही वह अप्रत्याशित गति से घेरे में सहनिया की-सी आवाज में चीखता हुआ चक्कर काटने लगा।

---

७ तम्बोरिन—एक वाद्य यन्त्र डफ।
८ अकार्डियन—एक वाद्य यन्त्र जो हारमोनियम की तरह होता है।

"वह गाने का एक शब्द भी नहीं जानता !" द्रुमग्राम के बासिन्दे चिल्लाए। इस पर मर्तामानोव राय के साथ गरज उठा—

"मल्योशा ! मैं तुम्हें मार डालूँगा।"

अपने पाँवों को ठुमक-ठुमक कर रखते हुए अलक्सेई ने होठों पर अपनी दो उंगलियाँ रखीं और कानों को फाड़ देने वाली सीटी बजाकर स्पष्ट स्वरों में गाना शुरू कर दिया—

या मुर्गा जब सरदार,
मूछ निकाले सबक मार।
आज ज़माना ऐसा बन्ना
नहीं मुर्गे आज परोस—
अपने लिए चावल-दाल।

"अब सुनो !" मर्तामानोव विजय पाने की खुशी में मूसर की तरह चिल्लाया।

"अहा !" पादरी ने साभिप्राय चीख कर कहा और सिर को एक झटका देकर एक उंगली उठाई।

"अलक्सेई तुम्हारे नर्तक से बाजी मार ले जाएगा।" प्योत्र ने मतान्या से कहा तो वह उत्तर में धीमे स्वर में बोली—

"हाँ उसका पाँव बड़ा हल्का है।"

दोनों लड़कों के पिताओं ने अपने-अपने पुत्रों को लड़ते हुए मुर्गों की तरह उत्साहित किया। दोनों ही नाच में चुस्त कन्धे से कन्धा भिड़ाए एक स्थान पर खड़े थे। उनमें से एक बर्फ़ के ढेर की तरह विशाल और भद्दी आकृति का था उसकी लाल-लाल आँखों में उत्सुक प्रसन्नता के आँसू भर रहे थे।

दूसरा व्यक्ति गठीले और कसे हुए शरीर का था जैसे कि वह अपने पूर्ण यौवन में हो। उसकी लम्बी भुजाएँ फड़क रही थीं और मुट्ठियों से वह अपने जबड़ों को थपथपा रहा था। उसकी आँखें एक उन्माद से भरी हुई थीं। अपने पिता के जबड़ों की हरकत और हिलती हुई दाढ़ी को देख कर प्याम ने गम्भीर रूप से विचार किया—

'वह दाँतों को पीस रहा है। हो सकता है वह किसी पर चोट कर बैठे।'

"नाच तो बड़ा बेढंगा है मर्तामामोव !" मास्याम्ना वाम्कीया ने किसी चाकू के गिरने जैसी आवाज में कहा "पाँवों की थिरकन नहीं ताल-स्वर में मिलान नहीं। कुछ नहीं बहुत भद्दा है।"

तब जैसे गाय और पक्के रंग के चेहरे वाला इल्या मर्तामामोव खूब जोर से हँसा। मास्याम्ना वाम्कीया की मोटी भोंडी नाक पर उसे हँसी आई थी। वास्कों का लड़का लड़खड़ा कर दरवाजे के निकट आ गिरा और मामकसई सचमुच वहाँ से भाग ले गया। इल्या मर्तामामोव ने बाइमाकोवा की भुजा को बड़े भद्दे तरीके से पकड़ कर भावनात्मक स्वर में कहा—

"मामा ममचिन ! अब आपकी बारी है।"

बाइमाकोवा पीली पड़ गई उसने दूसरे हाथ से उसे धकेलने का प्रयत्न करते हुए राष और विस्मय के साथ कहा—"क्या पागल तो नहीं हो गए ? तुम्हें पता नहीं कि यह उचित नहीं है ?"

उपस्थित महमान एकदम चुप पड़ गए और फिर धूर्तता पूर्वक गिरगिराने लगे। पम्यामोव ने वाम्कीया की ओर देखा।

उसके शब्द तेल की धार की तरह सिस-सिस करते हुए निकले—

'कोई बात नहीं उत्थाना ! हमारी खुशी के लिए ही तुम नाचो ! ईश्वर तुम्हें क्षमा कर देगा ।

"इस पाप का जिम्मेवार तो मैं रहूँगा । मर्तामानोव बोला ।

लगता था कि उसका नशा बढ़ गया है । वह त्यौरियाँ चढ़ाए आगे बढ़ा जैसे कि वह युद्ध करने जा रहा हो, जैसे कि वह अनिच्छा से आगे बढ़ रहा हो । तभी किसी ने बाहमाकोवा को आगे की ओर धकेल दिया । मन्मत्त महिला झिझकती हुई लड़खड़ाते कदमों से आगे बढ़ गई । उसने अपने कन्धों को झटका देकर पीछे फेंका और फिर अपने सिर को हिलाते हुए वह घेरे में नृत्य करने लगी । प्योत्र ने काँपती और भयभीत आवाज में लोगों की कानाफूसी सुनी—

'परमात्मा तू ही रक्षा कर ! अभी पति को मरे एक साल भी नहीं हुआ कि इसने अपनी पुत्री का विवाह रचा दिया और फिर शादी की खुशी में खुद नाच भी रही है !

प्योत्र ने अपनी पत्नी की ओर नहीं देखा था लेकिन फिर भी उसे अनुभव हुआ कि वह अपनी माँ के आचरण के कारण लज्जित है । वह धीमे से बुदबुदाया—

पिताजी को नाचना नहीं चाहिए था !

मैं माँ को भी उसने शोक के साथ धीमी आवाज में कहा । वह बेंच पर खड़ी लोगों के सिरों के ऊपर से दृष्टि डालती हुई उस रंगरूपसी की ओर देख रही थी । सहसा ही उसने घबरा कर प्योत्र के कन्धों को पकड़ लिया ।

"सावधान रहो ! उसने अपना दुलार बिखेरते हुए और अपने हाथ से उसकी कोहनी को सहारा देकर कहा ।

सूर्यास्त की रक्तिम प्रकाश छनती हुई खिड़की से निकल कर लोगों के सिरों पर बिखर रहा था। और इसी प्रकाश में पंखविहीन प्राणियों की तरह एक पुरुष और एक महिला नृत्य करते हुए घर में चक्कर काट रहे थे। दरवाजों के बाहर बरोंठे, आँगन और गली में लोग ठहाके लगा कर हँस रहे थे। किन्तु उस कमरे में भ्रम पालने वाली शान्ति छाई थी। तम्बोरिन पर मञ्जिरा धीमे मन्द स्वर में थप-थप ध्वनि निकाल रहा था और अकार्डियन की कर्कश ध्वनि तीव्रता से उठ रही थी और तरुण तरुणियों से घिरे वे दोनों उन्मत्त होकर नृत्य करते चक्कर काट रहे थे। नई उम्र के लोग बड़ी तन्मयता से बैठे उस नृत्य को देख रहे थे जैसे कि वह एक असाधारण महत्व रखता हो। अधिकांश बुजुर्ग लोग बाहर आँगन में चले गए थे और वहाँ सिर्फ नशे में धुत्त पड़े व्यक्ति ही रह गए थे।

अचानक ही अतामानाव धरती पर पाँव पटक कर खड़ा होगया— बस उस्ताना स्पानाव्ना तुमने मुझसे बाजी मार ली!

स्त्री चौंक उठी। वह भी भौचक्की होकर खड़ी हो गई जैसे कि उसके सामने कोई पत्थर की दीवाल आ गई हो। दर्शकों के घेरे की ओर अभिवादन के लिए झुकती हुई वह बोली—

आप लोग मुझे शाप न दीजिएगा। और इतना कह कर वह तुरन्त ही अपने रूमाल से हवा करती हुई कमरे से बाहर निकल गई।

अब बाल्कोया के मैदान में उतरने की बारी थी। उसने घोषणा की—

दूल्हा और दुल्हन अलग अलग किए जाँय। प्यारे तुम मेरे साथ चलो। दूल्हे के रसका तुम लोग इस बाँहों से पकड़ना।

तभी दुल्हे के रखवाले को एक ओर हटा कर उसके पिता ने अपने भारी हाथों को बेटे के कंधों पर रखते हुए आशीर्वाद दिया—

'आमीन ! परमात्मा तुम्हें सुखी रखे।' और इतना कह कर उसने उसे अपने आलिंगन में कस कर अलग कर दिया।

दुल्हे के रखवाले ने प्योत्र की भुजाओं को थाम लिया। बार्कोया दाँए-बाँए थकती हुई गुनगुनाने लगी—

'धू धू ! न बीमारी न दुःख न ईर्ष्या और न अप्रतिष्ठा। धू ! आग और पानी—समय और स्थान देखकर ही दुर्भाग्य और सुख का सृजन करते हैं।'

उसके पीछे चलकर जब प्योत्र नताल्या के कमरे में पहुँचा तो उसने वहाँ सामने गद्दादार पलंग बिछा हुआ देखा। वह बुढ़िया कमरे के बीच पड़ी एक कुर्सी पर सारा वज़न डाल कर बैठ गई।

'सुनो और याद रखना।' उसने गम्भीर धार्मिक भाव से कहना शुरू किया— 'आधे रूबल के ये दो सिक्के अपने जूतों की एड़ी में रख लो। जब नताल्या आए और तुम्हारे जूतों को उतारने को झुके तो तुम उसे उतारने न देना।'

'यह सब किसलिए ?' प्योत्र ने म्लानमुख से पूछा।

'यह तुम्हारे समझने की बात नहीं। तीन बार उसे उतारने से रोकना और चौथी बार उसे उन्हें उतार लेने देना और तब वह तुम्हें तीन बार चूमेगी और तभी तुम उसे आधे रूबल के ये सिक्के दे देना। और कहना मेरी दासी मेरे नाम्य यह मैं तुझे देता हूँ। इसे सुयोग का नहीं ! अच्छा फिर तुम अपने कपड़े उतार डालना और उसकी ओर पीठ करके लेट जाना। तुमसे वह रात भर पास सोने की याचना करेगी।

लेकिन तुम चुप पड़े रहना और जब वह तीसरी बार निवेदन कर तो अपना हाथ बढ़ाकर उसके हाथ को थाम लेना—समझ गए ? अच्छा और फिर ।

प्यात्र विस्मित होकर काले रंग के चौड़े चहर वाली उपदेशिका की ओर घूरता रहा । वह अपने हाथों को पाउडी नाखूनों को फुलाती और रूमाल से चिकनी गर्दन और गालों के पसीने को पोछती हुई वहाँ बैठी रही वह देहाती भाषा में निर्लज्ज होकर बड़ी चतुराई और बारीकी के साथ उसे उपदेश देती रही थी । चलते समय उसने फिर दुहराया—

उसके चोभन-बिल्लान और आँसुओं का ख्याल न करना । और यह कह कर वह अपने पीछे शराब की मादक गन्ध छोड़ती हुई लड़खड़ाते हुए कदमों से कमरे से बाहर निकल गई । प्योत्र एक उन्मादपूर्ण क्रोध से भर गया । उसने अपने जूतों को उतार कर फेंक दिया और जल्दी से कपड़े उतार कर वह उछलता हुआ बिस्तर पर चढ़ गया जैसे कि वह घोड़े पर सवार हो रहा हो । अपने हृदय में अपमान के कारण उठते हुए रुदन को दबाने के लिए उसने अपने होंठों को जोर से भींच लिया था ।

'दमदमा शैतान !'

जब रोएँदार कोमल बिस्तर उसे गरम अनुभव हुआ तो वह उसे छोड़कर खिड़की के निकट आ पहुँचा । उसने खिड़की को खोला तो बगीचे की ओर से गाने का बहरा कर देने वाला शराबियों का शोर, खुशी के तेज ठहाके और लड़कियों की-सी खिलखिलाहटें उसे सुनाई दीं । नील-श्याम अन्धकार में पड़ा के नीचे काली छायायें घूम-फिर रही थीं । गन्दे गिरजाघर की पतली मीनार तीव की एक उंगली की तरह आसमान को थाम रही थी । उस समय उसका पवित्र 'क्रास दिखाई नहीं दे रहा था क्योंकि उसे सुनहरी पानी चढ़ाने के लिए उतार लिया

गया था । घरों की छतों के ऊपर से जाती हुई उसकी दृष्टि ढलते हुए चन्द्रमा के पीले प्रकाश में झिलमिलाती हुई पतली नदी और उसके पार दूर तक फैले जङ्गलों के काले रेखा-चित्र तक जा गई । और तब उसे एक दूसरे घर की याद आ गई—एक निवास देश की जो सुनहरी फसलों से भरे मैदानों के कारण सुप्रसिद्ध था । वह एक आह भर कर रह गया । बेहूदगी लिए हुए हँसी की खिलखिलाहट और पाँवों की ध्वनि ध्यान में सुनाई दी । वह फिर अपने बिस्तर पर आकर लेट गया । दरवाज़ा खुला और रेशमी फीतों की सरसराहट और जूतों की चरमर हुई । किसी ने एक आर्द्र दीर्घ श्वास लिया दरवाज़े की साँकल खटखटाई क्योंकि वह बन्द किया हुआ था । प्योत्र ने सावधानी के साथ अपने सिर को ऊपर उठाया । दरवाज़े के ठीक भीतर की तरफ कमरे के आधे तमावृत भाग में एक शुभ्र-मूर्ति खड़ी थी जिसने लगभग ज़मीन तक झुककर क्रास का चिह्न बनाया ।

'वह प्रार्थना कर रही है । मैंने तो की नहीं । यद्यपि प्रार्थना करने की उसकी इच्छा भी नहीं थी ।

नताल्या यफ्सेना उसने बड़े कोमल स्वर में कहा "डरो नहीं मैं स्वयं भयभीत और थका हुआ हूँ ।

उसने दोनों हाथों से अपने बालों को यथास्थान किया और उन्हें कानों पर घुमाते हुए वह ज़ोर से बड़बड़ाया—

जूतों को उतारने और ऐसे ही अन्य काम करने की आवश्यकता नहीं । यह सब कोरी मूर्खता है । मेरे हृदय में पीड़ा होती है और वह औरत मूर्खतापूर्ण बकवास कर गई है । देखो चीखना नहीं ।

एक ओर हटते हुए वह सावधानी से कमरे को पार करती हुई खिड़की के निकट आ पहुँची और बाहर देखती हुई वह कोमल स्वर में बोली—

'लोग अभी भी आनन्दोत्सव मना रहे हैं।'

'हाँ।'

बहुत देर तक वे इसी तरह निरर्थक बातचीत करते रहे। दोनों थके हुए और किसी कारण लज्जित-से थे और एक-दूसरे के निकट पहुँचने का निश्चय दोनों में से कोई न कर पा रहा था। भोर के समय सीढ़ियों पर पदचाप सुनाई दिया और दीवार को किसी ने थपथपाया। नताल्या द्वार के निकट आ पहुँची।

"यदि वास्कीया हो तो उसे अन्दर न आने देना।" प्योत्र ने फुसफुसाते हुए कहा।

"यह तो माँ है।" नताल्या ने साँकल खोलते हुए कहा। प्योत्र पलंग पर पाँव को झटका कर बैठ गया। वह स्वयं अपने से असन्तुष्ट था और उदासीन होकर विचारों में खोया हुआ था—

"मैं भला नहीं हूँ। मुझमें साहस नहीं है। वह मुझ पर हँसेगी। अभी तक मैं प्रतीक्षा ही कर रहा हूँ।"

तभी दरवाज़ा खुला और नताल्या धीरे से बोली—

"माँ तुम्हें बुलाती है।"

नताल्या ने अँगीठी के ऊपर से झाँका। सफ़ेद टोपी में बनी उस दीवाल के सहारे खड़े होने से वह लगभग अदृश्य-सी हो गई थी। प्योत्र बाहर चला गया। दरवाज़े के बाहर माँ घुसकर में क्रोधित और भयभीत आडम्बरपूर्ण तर्जों के साथ फुसफुसा रही थी—

"प्योत्र इलिच, तुम क्या कर रहे हो? मुझे और मेरी बेटी को धब्बा लगाना चाहते हो क्या? अब सुबह होने को है और शीघ्र ही वे लोग तुम्हें जगाने को यहाँ आने वाले हैं। मैं अपनी लड़की की रात की कमीज़ दिखाना चाहती हूँ जिससे कि वे लोग जान लें कि मेरी लड़की अच्छी है।"

यह कह कर उसने एक हाथ से प्योत्र के कंधे को पकड़ा और दूसरे से उसे दूर धकेल कर विषादपूर्वक कहा—

"यह क्या है ? तुम दुर्बल हो क्या ? अथवा तुममें उत्साह नहीं है ? जवाब दो ! मुझसे डरो नहीं !

प्योत्र मूर्खतापूर्वक कह उठा—

"मुझे उस पर दया आती है और मैं डरता भी हूँ ।'

यद्यपि उसने अपनी सास के चेहरे की ओर दृष्टि भी नहीं उठाई थी फिर भी उसे प्रतीत हुआ कि वह धीमे से हँस दी थी ।

'तुम जाओ और मर्द की तरह अपना काम करो । संत क्रिस्तॉफर की प्रार्थना करना । जाओ ! अरे जरा ठहरना तो, चूम तो लूँ ।

अपनी बाँहों में उसे कसकर आलिंगन करते हुए उसने मधुर चिपचिपे अधरों से उसे चूमा । उन अधरों से मदिरा की उत्तेजक गन्ध निकल रही थी ।

प्रत्युत्तर में अभी वह चुम्बन लेना ही चाहता था कि वह चली गई । उसके सशब्द चुम्बन की ध्वनि वायु में विलीन हो गई । प्योत्र कमरे में वापिस आया और कमरे का दरवाजा बन्द कर देने के बाद उसने अपनी बाँहों को पूर्व निश्चयानुसार फला दिया । लड़की आगे बढ़ कर उसके आलिंगन में बँध गई और काँपते हुए स्वर में बोली—

'माँ अत्यधिक मदिरा-पान किए हुए थी ।"

ये ऐसे शब्द नहीं थे जिनके मुखरित होने की आशा प्योत्र ने की थी । पलंग की ओर पीठ करता हुआ वह धीमे स्वर में बोला—

"डरो नहीं । हो सकता है कि मैं सुन्दर न लगूँ लेकिन मैं दयालु तो हूँ ही ।'

वह उससे और अधिक सटत हुए फुसफुसाई—

"अब मेरी टाँगों में दम नहीं रहा, मैं गिर रही हूँ।"

द्रयमोव वासी आनन्दोत्सव और दावतों के बड़े शौकीन थे। विवाह का वह उत्सव पाँच दिन तक चला। नगरवासी सुबह से लेकर आधी रात तक झूमती-झामती भीड़ के रूप में गलियों में यहाँ-वहाँ घूमते रहे। सबसे शानदार विवाह-भोज बास्की-परिवार ने दिया था। लेकिन ओल्गा ओर्लोवा का अपमान करने के कारण अलक्सेई ने उनके लड़के की मरम्मत कर डाली। उसके माँ-बाप ने जब शिकायत की तो मर्तामानोव अत्यधिक अचम्भित होकर बोला—

"किसने सुना है कि लड़के आपस में नहीं लड़ते झगड़ते ?'

उसने लड़कियों को रंग-बिरंगे फीते और भरपूर मिठाई दी और लड़कों को पैसे दे कर खुश किया। माता पिताओं को भरपूर मदिरा-पान करा के वश में कर लिया और जो भी सामने आया उसका अभिवादन करते हुए कहा—

क्यों बादशाहो, यह जीवन भी कुछ है न ?'

इन दिनों मर्तामानोव का आचरण बहुत उद्दाम और कोलाहल पूर्ण था। वह बेधड़क हो कर अपरिमित मदिरा-पान किया करता जैसे कि वह अपनी आन्तरिक अग्नि को बुझा रहा हो। वह पीता था परन्तु मदमस्त नहीं हो पाता था। स्पष्टतः वह पिछले दिनों की अपेक्षा किसी कदर दुबला हो गया था। यद्यपि वह उत्पाती बाडमाकोवा से दूर ही दूर रहा करता था, परन्तु उसके पुत्रों ने भाँप लिया कि वह उसको भार क्षुब्ध और संतप्त दृष्टि से देखा करता है। अपनी शक्ति की डींग मारते हुए उसने नगर की रक्षार्थ तमात मैनिकों के विरोध में डंडा उठा

लिया । दूसरी बार फिर एक फायर-मैन और तीन रावों को भी परास्त कर दिया । इस पर आई खादने वाला तिखोन ब्यालोव एक प्रस्ताव न लेकर अपितु चुनौती के साथ सामने आया—

अब आओ मेरे साथ !

उसके कहने के ढङ्ग से अचम्भित होकर मर्तामानोव ने भारी बलिष्ठ खंदक खोदने वाले की ओर सिर से पाँव तक विस्मय से देखा और बोला—

'तू बलवान भी है या सिर्फ अभिमानी हो !'

'मैं यह नहीं जानता !' उसन उत्तर दिया ।

एक दूसरे को कमर से पकड़े हुए वे दोनों कुछ समय तक बिना किसी परिणाम के खींचा-तानी करके जोर आजमाते रहे । ब्यालोव के कंधों के ऊपर से देखता हुआ कल्या निर्लज्जता से स्त्रियों की ओर आँखें मारता रहा । वह खंदक खोदने वाले से लम्बा किन्तु पतला-दुबला और शारीरिक गठन में कुछ अच्छा था । ब्यालोव ने उसकी छाती से अपना कंधा भिड़ाया और अपने प्रतिद्वन्द्वी को अपने पीछे उलटना चाहा । लेकिन चुस्त और सावधान कल्या तुरन्त समझ गया और बोला

'यह कोई काम नहीं, भाई ! यह बहुत ही मामूली है ।'

अचानक दाँत भींचते हुए उसने ब्यालोव का अपने सिर से ऊपर उठाकर ऐसे जोर से फेंका कि गिरते ही खदक खोदन वाले की टाँगें मुड़ पड़ गई । घास पर बैठ कर अपने गालों से पसीना पोंछते हुए ब्यालोव ने लज्जित होकर कहा—

'बलवान् तो है ।'

"यह तो हम भी देख रहे हैं" दर्शकों ने मखौल करते हुए कहा ।

"यह बहुत बलवान् है' ब्यालोव ने दुहराया ।

इल्या ने उसकी ओर एक हाथ बढ़ाते हुए कहा—

'खड़ा हो जा !"

सड़क खोदने वाले ने बढ़े हुए उस हाथ को अस्वीकार करते हुए स्वयं खड़ा होने का प्रयत्न किया—परन्तु विफल रहा। वह फिर टाँगें फैलाकर करुणाभरी आँखों से भीड़ की ओर देखने लगा। निकिता उसके पास आया और सहानुभूतिपूर्वक बोला—

"दर्द है क्या ? मैं सहायता करूँ ?"

सड़क खोदने वाला नीरस हँसी हँसा—

"मेरी हड्डियों में दर्द है। यद्यपि तेरे बाप से मैं अधिक बलवान् हूँ परन्तु वह किसी कदर फुर्तीला भी है। आओ, सरस हृदय, निकिता ! चलो, इनके पीछे-पीछे चलें।

और, वह मित्रतापूर्वक बूढ़े निकिता की बाँह पकड़कर भीड़ के पीछे-पीछे चल दिया। बीच-बीच में वह चार छः पाँव पटकता जाता—शायद टाँगों में दर्द था वह इस प्रकार ही शान्त करना चाहता था।

नवयुवक दम्पति कई रातों की अनिद्रा और थकान से चूर होने पर भी प्रदर्शन और मुलाकात के लिए लोगों के घर जाते रहे। वे, गलियों में कोलाहल करती मदमस्त रंग-बिरंगी भीड़ के पीछे अनिच्छापूर्वक चलते और जगह-जगह खाते-पीते, बेहोशी में नाना प्रकार के निर्लज्जतापूर्ण अश्लील परिहासों को सुनते। उन्हें कोशिश करनी होती थी कि वे एक-दूसरे की ओर न देखें, और न बात चीत ही करें। बाँह में बाँह डाले और सदा एक-दूसरे के बराबर बैठे व अजनबी की तरह अपने आप से ऊबे हुए रहते। मार्योम्ना बाम्बर्गिया उनके इस आचरण से प्रसन्न थी। वह इल्या और उल्याना से साभिमान पूछने लगती—

"तेरे बेटे को मैंने अच्छी तरह सिखाया-पढ़ाया है न ? मैं तो ऐसा ही सोचती हूँ ! नत्याना, देखो तो ! तेरी बेटी को मैंने कैसी शिक्षा दी है ! और, तुम जमाई के बारे में क्या कहती हो ? मोर की तरह कैसा चलता है । कहता है मैं—मैं नहीं हूँ और यह—मेरी पत्नी भी नहीं' !

परन्तु अपने शयन-कक्ष में पहुँचकर प्योत्र और नतास्या दोनों ही अपने भ्रमन कपड़ों के साथ उन पाबन्दियों को भी उतार फेंकते जिन्हें कि वे जनसाधारण के बीच कर्तव्य-रूप में स्वीकार कर लेते थे । परस्पर बैठकर वे दोनों फिर दिन भर के अपने-अपने अनुभवों को सुनने-सुनाने में व्यस्त हो जाया करते ।

'तुम्हारी ओर के लोग तो पीते भी खूब हैं ?' प्योत्र आश्चर्य के साथ कहता ।

'और तुम्हारी ओर के क्या कम पीते हैं ? उसकी पत्नी पूछने लगती ।

'किसानों को क्या इस प्रकार पीना चाहिए ?

'तुम तो किसान प्रतीत नहीं होते ।

"हम भू-स्वामियों में से हैं अर्थात् हम एक प्रकार के कुलीन लोग हैं ।

कभी वे परस्परालिङ्गन में बँधे खिड़की के पास बैठे बगीचे से आने वाली सुगंधित वायु का चुपचाप सेवन करते रहते ।

'तुम चुप क्यों हो ? पत्नी धीरे से पूछती । पति भी उसी प्रकार धीमे से ही उत्तर देता—

"साधारण बातचीत की इच्छा नहीं ।

"कोई खास बात तो न को है नहीं ।"

वह असाधारण बातें सुनना चाहता था । परन्तु नतास्या

यह जानती नहीं थी। जब वह स्वयं ही उसके सामने सुनहरी मरुभूमि की निःसीम निरामसता का वर्णन करता तो वह पूछती—

"तो वहां अंगूर वगैरह कुछ नहीं थे ? ओह, वह कितना भयानक होगा !

"मय तो अंगूरों में है" प्यारे न उठते हुए कहा 'मरुभूमि म किसका भय हो सकता है ? वहां इसी तरह की भूमि है, आकाश है और मैं ।

एक बार जब वे दोनों खिड़की के पास तारोंभरी रात में मूक-आनन्द के साथ निहार रहे थे उन्होंने स्नानागार के समीप बगीचे में किसी की आहट सुनी। कोई दौड़ रहा था रसभरी की झाड़ियों में भटक रहा था। इसके बाद एक क्रोध पूर्ण हंसकी आवाज भी सुनाई दी—

"शैतान कहीं का यहां क्या कर रहा है ?'

भयभीत मतास्या एकदम उछल पड़ी।

'यह तो मां है।

प्यारे न खिड़की म अपनी चौड़ी छाती को भिड़ाते हुए उचक कर बाहर को झांका। स्नानागार के पास उसका पिता खड़ा था और उसकी मां का दीवार की ओर भींचकर उस भूमि पर गिराने की कोशिश कर रहा था। स्त्री गपप करती हुई उसके सिर पर चोट कर रही थी और हांफती हुई फुसफुसा रही थी—

'मुझे छोड़ नहीं तो मैं चिल्लाऊंगी।"

फिर बड़े आवेग म वह बोली—

"प्यारे मुझे मत छूना ! मुझ पर दया करो।"

प्योत्र ने खिड़की को धीरे से बन्द कर दिया और अपनी पत्नी को बाँहों में जकड़कर उसे अपनी जाँघों पर बैठा लिया।

"तुम बाहर मत झाँको।"

वह उसके आलिङ्गन में बँधी बल खाती हुए चिल्लाती रही—

"क्या बात है? वह कौन है?"

"पिताजी हैं।" उसे कसकर पकड़े हुए प्योत्र ने उत्तर दिया, "क्या इतना भी नहीं समझती?"

"ओह! वे कैसे?" वह भय और लज्जा से बोली। पति उसे बिस्तर पर ले आया और धीमे से बोला—

"यह हमारा काम नहीं कि हम माँ-बाप की त्रुटियों को देखें।"

अपने सिर को दोनों हाथों में थामे हुए जोर से हिलती हुई आकान्त भाव से बोली—

"यह पाप है, एक भीषण पाप!"

"परन्तु हमारा नहीं?" प्योत्र बोला। फिर अपने पिता के शब्दों को स्मरण करता हुआ कहने लगा, "सभ्य समाज हम से भी अधिक बुरे-बुरे कृत्य करता है। इसके अलावा अच्छा तो यही रहा कि वे तुम्हें परेशान न करेंगे। वे बुर्जुआ हैं, सीधे-सादे हैं। लेकिन पुत्र-वधू से छेड़खानी करना उनकी निगाह में पाप नहीं। देखो अब चीखो-चिल्लाओ नहीं।"

आँखों से अश्रु छलकाती हुई पत्नी बोली—

"मैं तो तभी समझ गई थी जब वे साथ-साथ नाचने लगे थे। यदि वे उससे जबर्दस्ती करते हैं तो हम क्या कर सकते हैं?"

अपने मानसिक आवेग से थक कर वह कपड़े उतारे बिना

ही गाढ़ी नींद में सो गई। प्योत्र ने बगीचे की ओर वाली खिड़की खोली, वहाँ कोई नहीं था, सिर्फ प्रभातकालीन वायु बह रही थी और महकते हुए धुँधलके में वृक्षों की डालियाँ परस्पर हिल रही थीं। खिड़की का शीशा छोड़ वह आँख खोले पत्नी के निकट ही लेट गया और पिछली घटना पर सोच-विचार करने लगा। कितना अच्छा हो यदि नतास्या और मैं—दोनों किसी ग्राम्य फार्म पर जीवन-यापन करें।

नतास्या जल्दी ही जग गई। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी माँ के प्रति दया और उसके अपमान के प्रति सहानुभूति से जाग उठी है। नंगे पाँव सिर्फ रात की कमीज में ही वह सीढ़ियों से नीचे पहुँच गई। माँ के कमरे का दरवाजा जो रात के समय सदा अन्दर से बन्द रहता था आज बिल्कुल खुला पड़ा था। इससे वह और भी डर गई। परन्तु किसी तरह ठीक कर कोने में पड़े माँ के पलंग की ओर उसने देखा तो चादर के नीचे एक सफेद उभार-सा था और तकिए पर उसके काले-काले बाल बिखरे हुए थे।

फिराया और इस प्रकार अपने चेहरे को ताजा कर उसमें लाल पाक-मदरी[1] इकट्ठी करने के लिए झुकी और बिना किसी नाराजगी के अपने ससुर के बारे में सोचने लगी। भारी हाथ से उसकी पीठ थपथपाते और हँसते हुए पूछने का उसका एक तरीका था।

'क्यों जीवित है ? सांस ले रही है ? अच्छा-जी !'

स्पष्ट था कि उसके पास उसके लिए दूसरे शब्द नहीं थे। वह उसकी प्रेमपूर्ण थपकियों से जो घोड़े को ही शोभा देतीं थोड़ी-सी नाराज थी।

कैसा डाकू-सा है' वह सोचती और ससुर के प्रति वैमन स्यतापूर्ण भावों के लिए अपने को रोक न पाती।

चिड़ियाँ चारों ओर चहचहा रही थीं और पेड़ों के पत्तों से रेशमी सरसराहट हो रही थी। शहर के सुदूर छोर पर एक गड़रिए ने बाँसुरी बजानी शुरू की और श्मशान के स्पष्ट प्रवाहमान नीरव तट से जहां मिल लगाई जा रही थी मानवीय ध्वनियाँ अलसता लिए वायु में तरने लगीं। अचानक एक आहट हुई तो नताल्या न चौंकर होकर अपना सिर उठाया। ठीक उसके ऊपर सेव के पेड़ पर एक चिड़िया फंदे में फँसी छुटकारे के लिए बुरी तरह फड़फड़ा रही थी।

यह किसने जाल बिछाया ? निकिता न ?

तभी बगीचे में कहीं सूखी डाल के टूटने की आवाज आई।

अब वह घर की ओर लौटी और उसने अपनी माँ के कमरे में झाँका था विधवा आँख खोले कमरे के बल पड़ी हुई थी। उसकी एक बाँह सिर के नीचे थी और भौंहें आश्चर्यभाव से तनी हुई थीं।

---

[1] पाक मदरी—अंगूर जैसा एक फल।

ही गाढ़ी नींद में सोगई। प्योत्र ने बगीचे की ओर वाली खिड़की खोली, वहाँ कोई नहीं था, सिर्फ प्रभातकालीन वायु बह रही थी और महकते हुए घुँघलके में वृक्षों की डालियाँ परस्पर हिल रही थीं। खिड़की को खुला छोड़ वह आँख खोले पत्नी के निकट ही लेट गया और पिछली घटना पर सोच-विचार करने लगा। कितना अच्छा हो यदि नतास्या और मैं—दोनों किसी छोटे-से फार्म पर जीवन-यापन करें।

नतास्या जल्दी ही जाग गई। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अपनी माँ के प्रति दया और उसके अपमान के प्रति सहानुभूति से जाग उठी है। नंगे पाँव सिर्फ रात की कमीज में ही वह सीढ़ियों से नीचे पहुँच गई। माँ के कमरे का दरवाजा जो रात के समय सदा अन्दर से बन्द रहता था आज बिल्कुल खुला पड़ा था। इससे वह और भी डर गई। परन्तु किसी तरह झाँक कर कोने में पड़े माँ के पलंग की ओर उसने देखा कि चादर के नीचे एक सफेद उभार-सा था और तकिए पर पर काले-काले बाल बिखरे हुए थे।

'वह सो रही है। वह कैसी रोई होगी और कितना दुःख हुआ होगा!'

माँ की अपमानित आत्मा को शांत करने के लिए उसे कुछ-न-कुछ करना चाहिए था। वह बगीचे में गई। ओस में गीली घास ने उसके पाँवों में अपनी शीतलता से गुदगुदी की, सूर्य अभी अभी वृक्ष-पंक्ति के शिखर पर आया ही था लेकिन उसकी तिरछी किरणों ने उसकी आँखों को चकाचौंध कर दिया। ये किरणें तनिक उष्ण भी थीं। उसने घास में उगे कष्ट-मीनाक्ष[1] के पत्ते को तोड़ कर पहले अपने एक गाल पर और फिर दूसरे पर

[1] कष्ट-मीनाक्ष– एक प्रकार का पौधा जो ऊसर जमीन में होता है।

फिराया और इस प्रकार अपने चेहरे को ताजा कर उसमें लाल पाक-बदरी[1] इकट्ठी करने के लिए झुकी और बिना किसी नाराजगी के अपने ससुर के बारे में सोचने लगी। भारी हाथ से उसकी पीठ थपथपाते और हँसते हुए पूछने का उसका एक तरीका था।

'क्यों जीवित है ? सांस ले रही है ? अच्छा-जी !'

स्पष्ट था कि उसके पास उसके लिए दूसरे शब्द नहीं थे। वह उसकी प्रेमपूर्ण थपकियों से जो घोड़े को ही शोभा देतीं थोड़ी-सी नाराज थी।

कैसा डाकू-सा है' वह सोचती और ससुर के प्रति वमन स्पृहापूर्ण भावों के लिए अपने को रोक न पाती।

चिड़ियाँ चारों ओर चहचहा रही थी और पेड़ों के पत्तों से रेशमी सरसराहट हो रही थी। शहर के सुदूर छोर पर एक गड़रिए ने बाँसुरी बजानी शुरू की और वत्राक्षा के स्पष्ट प्रकाशमान नीरव तट से जहां मिल अगाई आ रही थी मानवीय ध्वनियाँ असलसा लिए वायु में तैरने लगीं। अचानक एक आहट हुई तो मताल्या न चौंक होकर अपना सिर उठाया। ठीक उसके ऊपर सेव के पेड़ पर एक चिड़िया फंदे में फँसी छुटकारे के लिए बुरी तरह फड़फड़ा रही थी।

"यह किसने जाल बिछाया ? निकिता ने ?

तभी बगीचे में कहीं सूखी डाल के टूटने की आवाज आई।

अब वह घर की ओर लौटी और उसने अपनी माँ के कमरे में झाँका ता विमना आरा लोस कमर के बल पड़ी हुई थी। उसकी एक बाँह सिर के नीचे थी और भौंहें आश्चर्यभाव से तनी हुई थी।

---

[1] पाक बदरी—अंगूर जैसा एक फल।

कौन है ? वह विस्मित हो भय से चिल्लाई। "क्या बात है ?"

'कुछ नहीं। मैं तुम्हारी चाय के लिए कुछ पाव भर्दारियाँ चुन कर लाई हूँ।

बिस्तर के निकट रखी मेज पर शीशे का एक लगभग खाली बरतन रखा था जो कास[11] के भरने के काम में लाया गया था। उसका ढक्कन फर्श पर गिर पड़ा था। मेजपोश पर कास के धब्बे लगे हुए थे। माँ की हल्की और कठोर आँखों के चारों ओर नीली-नीली छाया-सी थी परन्तु जैसी कि नताल्या को आशा थी वे आँसुओं से भूजी हुई नहीं थीं। व अब किसी कदर काली और गहरी दिख रही थीं। उसकी नजर जो सदा एक रौब लिए होती थी इस समय अजीब तरीके से भटकी हुई और खोई-खोई सी लग रही थी।

सारी रात मच्छरों ने सोने नहीं दिया। मुझे अब झोंपड़ी में सोना पड़ेगा। माँ ने चद्दर को गर्दन तक खींचते हुए कहा— सारा शरीर मच्छरों ने काटा हुआ है। तू इतनी जल्दी कैसे उठ आई ? तू नंगे पाँव घास पर क्यों गई ? तेरी कमीज भी भीगी हुई है ? तुझे ठंड लग जायगी ?'

माँ उदासीनता और कठोरता से कहती गई जैसे कि वह अपने किन्हीं विचारों में निमग्न हो। धीरे-धीरे बेटी की चिंता अब एक स्त्री की दूसरी स्त्री के प्रति की रोषपूर्ण उत्सुकता में बदल गई।

मैं जल्दी ही जाग उठी थी सो मुझे तुम्हारा ख्याल आया और फिर मुझे तुम्हारे बारे में सपने भी आते थे।"

"तुम्हें मेरे बारे में कैसे-कैसे ख्याल आए ? माँ ने छत की ओर देखते हुए पूछा।

---

11 कास—राई से बनी हल्की शराब।

"यही कि तुम मेरे बिना अकेली सो रही होगी।'

नतास्या को ऐसा लगा कि उसकी माँ के कपोलों पर सुर्खी आ गई है और मुझे किसी बात का डर नहीं। कहते हुए उसके चेहरे पर जो मुस्कराहट आई थी उसमें कृत्रिमता थी।

जाओ अब तुम जाओ! तुम्हारा प्यारा जाग गया है। तू उसके पाँवों की आहट नहीं सुन रही क्या? माँ ने आँखें बन्द कर कहा।

सीढ़ियों पर धीरे धीरे चढ़ते समय नतास्या ने क्रोधित होते हुए उसके विरोध में बहुत-कुछ सोचा—

'इसने रात उसके साथ बिताई है। काश उसी के लिए थी। इसकी गर्दन में जो निशान हैं—वे मच्छरों के काटने के नहीं, उसके चुम्बनों के हैं। पेत्या को मैं कुछ नहीं बताऊँगी। वह अब झोंपड़ी में सोने जा रही है और रात को चिल्लाती थी।

"कहाँ गई थी? ध्यानपूर्वक पत्नी की ओर देखते हुए प्योत्र ने पूछा तो उसकी आँखें नीची हो गईं। वह अपने को अपराधी-सा अनुभव करने लगी—और समझ नहीं पा रही थी ऐसा क्यों है।

"मैंने कुछ पाव बदरियाँ चुनी थीं और फिर माँ को देखने चली गई थी।

'अच्छा वे कैसी हैं?

'वे तो चंगी प्रतीत होती थीं।'

"ठीक! प्योत्र ने सिर को नीचे झुका कर दुहराया—'ठीक।

वह अपने चेहरे को टेढ़ा करके मुस्कराया और एक दीर्घ श्वास खींचते हुए उसने एक आह भरी। फिर ठोड़ी पर उठे हुए

लाल-लाल बालों के ठूँठों को रगड़ते हुए बोला—

'लगता है कि मूर्ख स्त्री बास्तीया ने ठीक ही कहा था कि चीखने और चिल्लाने तथा वायु के प्रवाह की परवाह न करना।

फिर उसने कर्कश स्वर से पूछा—

"तुमने मिकिला को देखा था क्या ?'

'नहीं।

'इस 'नहीं' से तुम्हारा क्या मतलब ? वह तो बगीचे में ही चिड़ियों को जाल में फंसा रहा है।

'ओह मेरे परमात्मा !' नतास्या भयभीत होकर चिल्लाई, 'और मैं रात के इन वस्त्रों में ही बाहर आ पहुँची !

'तो तुम वहीं थीं ?

'लेकिन वह सोता कब होगा ?

अपने जूतों पर झुकते हुए व्याघ्र मूसर की तरह भुन भुनाया। उसकी पत्नी ने तिरछी निगाहों से उसे देखते हुए और एक हलकी मुस्कराहट के साथ कहा—

तुम तो जानते ही हो कि वह कुबड़ा जरूर है लेकिन धमकमाई करते हुए वह अधिक सुन्दर है।

पति एक बार फिर भुनभुनाया—परन्तु पहले की तरह ज़ोर से नहीं।

प्रतिदिन सूर्योदय के समय जब चरवाहा हाथी का इकट्ठा करने को अपनी लम्बी बाँसुरी पर करुण राग छेड़ देता तो नदी के पार कुम्हारों के चमन की आवाज़ आने लगती और नगरवासी अपनी गायों को हाँकते हुए एक दूसरे से मशोरा करते—

"सुनो तो ! अभी सूरज निकला भी नहीं और इन्होंने अपना काम शुरू कर दिया।

"सालच, शांति का घोर शत्रु है।"

इल्या अर्सामानोव को अब दिखने लगा कि उसने नगर वासियों की अलग शत्रुता पर विजय प्राप्त करली है। क्योंकि ड्रयमोववासी उसके सामने से टोपी झुकाकर गुजरते और राजकुमार रात्सकी के बारे में उसकी कहानियों को बहुत ध्यान से सुनते। परन्तु प्राय कोई-न-कोई दृढ़ता के साथ अभिमान करता हुआ भी कह उठता—

"यहाँ हमारी ओर के भद्र लोग सीधे-सादे और गरीब हैं, परन्तु वे तुम्हारी ओर वालों से अधिक कठोर हैं।

किसी छुट्टी के दिन सन्ध्या समय ओका नदी के किनारे बास्कीं की सराय के सघन-सुन्दर बगीचे में वह ड्रयमोव के धनी और बलवान् लोगों से कहता—

"मेरे कारोबार से तुम सबको लाभ होगा।

'परमात्मा ऐसा ही करे। पम्यालोव अपने होठों को चबाता हुआ नीच मुस्कान के साथ उत्तर देता। और यह कहना असम्भव होगा कि वह किसी का कुत्ता काटना चाहता था या काटना। उसका झुर्रीदार अस्पष्ट चेहरा उसकी फेनिल दाढ़ी में बुरी तरह छिपा हुआ था और उसकी नीली-सी नाक हमेशा प्रत्येक चीज को देखकर सन्देह के साथ सिकुड़ती रहती, और उसकी भूरी गेहुँआ आँखों में ईर्ष्या की झलक होती थी।

"परमात्मा ऐसा ही करे।' उसने दुहराते हुए कहा—"तुम्हारे बिना पहले भी हम गुजारा कर ही लेते थे परन्तु हो सकता है कि अब तुम्हारे साथ से दशा और अच्छी हो जाय।'

साथ-साथ बालों के ठूँठों को रगड़ते हुए बोला—

"लगता है कि मूर्ख स्त्री वास्कोवा ने ठीक ही कहा था कि चीखने और चिल्लाने तथा अश्रु के प्रवाह की परवाह न करना।'

फिर उसने कर्कश स्वर से पूछा—

'तुमने निकिता को देखा था क्या ?'

नहीं।

'इस 'नहीं' से तुम्हारा क्या मतलब ? वह तो बगीचे में ही चिड़ियों को जाल में फँसा रहा है।'

'ओह मेरे परमात्मा !' मतास्या भयभीत होकर चिल्लाई, 'और मैं रात के इन वस्त्रों में ही बाहर आ पहुँची !

"तो तुम वहाँ थी ?

लेकिन वह सोता कब होगा ?

अपने खूना पर झुकते हुए प्याज मूसर की तरह भुन भुनाया। उसकी पत्नी ने तिरछी निगाहों से उसे देखते हुए और एक हलकी मुस्कराहट के साथ कहा—

'तुम तो जानते ही हो कि वह कुबड़ा जरूर है लेकिन असफाई के देखते हुए वह अधिक सुन्दर है।

पति एक बार फिर भुनभुनाया—परन्तु पहले की तरह जोर से नहीं।

प्रतिदिन सूर्योदय के समय जब चरवाहा ढोरों का इकट्ठा करने को अपनी मस्तों बाँसुरी पर करुण राग छेड़ देता तो नदी के पार कुम्हारों के भवन की आवाज आने लगती और नगरवासी अपनी गायों को हाँकते हुए एक दूसरे से मखौल करते—

बस करो, बस करो ! गिरजे के स्तारोस्त[१९], चर्मकार मित्रइकिन ने उसे टोका—"किधर बहक रहे हो ?

वरोपानाव चुप हो गया उसके भूरे भूरे काम हिलते रहे। इल्या ने चर्मकार से पूछा—

"अच्छा तुम्हें मेरे काम के बारे में भी कुछ पता है ?

मुझे जरूरत ही क्या है ?

मित्रेइकिन सच्चाई और ईमानदारी से विस्मय में बोला—"अपना काम तुम खुद समझो। बड़ा अजीब है ! तुम्हें तुम्हारा काम, मुझे मेरा काम।

पेड़ों के बीच से ओका के गँदले रंग के फीते की ओर जाती हुई मर्तामामोव की दृष्टि—दूर पर बेंतों के झुरमुट और दलदल के बीच सरकती हुई वत्राक्षा के हरित-सर्पाकार मोड़ की ओर लगी हुई थी। वह उधर देखता हुआ गाढ़ी बीयर पीता रहा। रवों की बिखरी छिलकने बालू की सुनहरी जरी के समान चिकनी आभा दे रही थीं। ईंटों के ढेर से लाल रङ्गीन आभा निकल रही थी। फटी झुकी और पददलित झाड़ियों के बीच से नई लम्बी इमारत जिसमें मिल बननी थी एक लुसे साबुत के समान रक्तपूर्ण गोमांस वर्ण में फन्न रही थी, जिसकी बिना रङ्ग रोगन हुई साहे की छत पर पड़े सूर्यास्त के मन्द प्रकाश से ऐसा प्रतीत होता था जैसे कि किसी गोदाम में आग लग गई हो। सूर्य की तिरछी किरणों से मजदूरों के निवास की दुमंजिला इमारत की दीवारें, धुँटे वायुमण्डल पूर्ण आकाश की ओर ऊँची उभरी, लम्बी तनी सुनहरी शहतीरें पीले पिघले मोम से बनी दीख रही थीं। अलक्सेई ने ठीक ही कहा था कि

१९ स्तारोस्ता—प्रधान कार्यकर्ता।

मर्सामानाव भौंहें चढ़ाकर बोला—

'तुम मित्रा की तरह नहीं वरन् विधर्मी बातें करते हो।"

वास्की हँसते हुए चिल्लाया—

'यही तो इसकी विशेषता है।

जहाँ वास्की का चेहरा होना चाहिए था वहाँ प्रसादमामी से थपथपाए हुए कुछ गुलाबी मांस पिण्ड थे। उसका विशाल सिर—उसकी गरदन गाल बाहु और उसका सारा शरीर रीछ जैसे मोटे-मोटे बालों से ढका हुआ था। उसके कान दिखाई नहीं पड़ते थे और उसकी अनावश्यक आँखें गद्दार मोटे मांस में छिपी हुई थीं।

"मुझे चर्बी की अधिकता ने शक्तिहीन बना दिया है।' वह बोला और अपने बड़े-बड़े गुच्छे दाँतों की पूरी पंक्तियों को चमकाता हुआ मुँह फाड़कर खिलखिला पड़ा।

रसनिर्माता वरोपोनोव ने अपनी मूर्खी और हृस्व-ध्वनि से भर्त्सना करते हुए कहा—

"कारोबार तो होते ही रहते हैं परन्तु परमात्मा के काम को भी नहीं भूलना चाहिए। क्या ऐसा कहा नहीं गया 'मार्था! मार्था! तुम्हें बहुत बातों की चिन्ता है परन्तु जरूरी उनमें से एक ही है।

उसकी करुण और लगभग भावशून्य आँखों से प्रतीत होता था कि वरोनानाव वास्तविक गुप्त आशय को समझ गया है और किसी भी समय वह कोई असाधारण घोषणा करने वाला है। कभी-कभी वह ऐसे बोलता था जैसे वह ईश्वरीय ज्ञान का प्रकट करने वाला ही हो।

'निस्संदेह ईसा मसीह ने भी रोटी माँगी जिससे कि मार्था।

बस करो बस करो ! गिरजे के स्तारोस्त[१२], चर्मकार मिलेइकिन ने उसे टोका— किधर बहक रहे हो ?'

बरापानाव चुप हो गया उसके भूरे भूरे कान हिलते रहे। इल्या ने चर्मकार से पूछा—

'अच्छा तुम्हें मेरे काम के बारे में भी कुछ पता है ?

'मुझे जरूरत ही क्या है ?'

मिलेइकिन सच्चाई और ईमानदारी से विस्मय में बोला— 'अपना काम तुम खुद समझो। बड़ा अजीब है ! तुम्हें तुम्हारा काम मुझे मेरा काम।

पेड़ों के बीच से ओका के गँदले रंग के फीते की ओर जाती हुई अर्तामानोव की दृष्टि—दूर पर खेतों के झुरमुट और दलदल के बीच सरकती हुई बनाखा के हरित-सर्पाकार मोड़ की ओर लगी हुई थी। वह उधर देखता हुआ गाढ़ी बीयर पीता रहा। रवों की बिखरी छितरने बालू को सुनहरी जरी के समान चिकनी आभा दे रही थीं। ईंटों के ढेर से लाल रङ्गीन आभा निकल रही थी। कटी फूटी और पददलित झाड़ियों के बीच से नई लम्बी इमारत जिसमें मिल बननी थी एक भुने तावूत के समान रक्तपूर्ण गोमांस वर्ण में फब रही थी, जिसकी बिना रङ्ग रोगन हुई लोहे की छत पर पड़े सूर्यास्त के मन्द प्रकाश से ऐसा प्रतीत होता था बस कि किसी गोदाम में आग लग गई हो। सूर्य की तिरछी किरणों से मजदूरों के निवास की दुर्मंजिला इमारत की दीवारें घुटे वायुमण्डल पूर्ण आकाश की ओर ऊँची उभरी, लम्बी तनी सुनहरी शहतीरें पीले पिघले मोम से बनी दीख रही थीं। अलक्सेई ने ठीक ही कहा था कि

१२ स्तारोस्ता—प्रधान कार्यकर्ता।

उठा – "कितनी शक्ति है ! तुम्हारे और बच्चे क्यों नहीं हुए ?' "

"नताल्या के अलावा-दो और भी बच्चे हुए थे, लेकिन वे कमजोर और बीमार थे थे इसीसे मर गए ।'

'इसका मतलब यह है कि तुम्हारा मर्द कुछ नहीं था ।'

'तुम मानोगे नहीं," वह फुसफुसाकर बोली "सच मानो, तुम्हारे आने से पहले मुझे यह भी नहीं पता था कि प्यार किसे कहते हैं । कभी-कभी औरतें, सहेलियाँ इसकी चर्चा भी करती थीं, परन्तु मैं उनकी बातों पर विश्वास नहीं कर पाती थी । सोचती थी कि वे बढ़ाचढ़ाकर झूठी बातें बनाती हैं । मैं कुछ नहीं जानती थी । हाँ, अपने मर्द से मुझे बड़ी लज्जा आती थी । उसके साथ सोने के लिए जाने पर मुझे ऐसा अनुभव होता था जैसे मैं फाँसी के तख्ते पर जा रही होऊँ । मैं परमात्मा से यही मनाती थी कि वह सो जाय और मुझे छेड़े नहीं तो अच्छा है । वैसे वह एक अच्छा आदमी था । वह शांत प्रकृति का और बुद्धिमान पुरुष था । परमात्मा ने केवल प्यार करने की कला उसे नहीं दी थी ।

उसकी कहानी ने अहंभाव को उत्तेजित और साथ ही आश्चर्यान्वित भी किया । उसके प्रशस्त उन्नत वक्षस्थल को अपने सुदृढ़ आलिंगन में कसते हुए वह मुस्कराया—

तो यह बात हुई ! मैं कभी ऐसा विचार भी नहीं कर सकता । मैं तो सोचता था कि स्त्रियों को सभी पुरुष मधुर लगते हैं ।

वह जानता था कि दिन में यह औरत स्थिर-स्वभाव शांत और बुद्धिमान् रहती है और मगरवासी अपनी सूझ-बूझ और निर्लिप्त होने के कारण आदर करते हैं । किंतु जब वह इसके बगल में होता तो अपने को बलवान् और अधिक बुद्धिमान् समझता । एक बार उसकी तरुणाई के सहज दुलार से प्रभावित होकर वह बोला—

'मैं जानता हूँ कि तुम क्या चाहती हो ? हमने नाहक बच्चों की शादी कर दी । सबसे पहले मुझे तुमसे विवाह करना चाहिए था ।

तुम्हारे लड़के बहुत भले हैं । यदि उन्हें यह सब पता भी लग जायगा तो कोई हानि नहीं । परन्तु, यदि शहर जान गया तो । यह कह कर आक्साकोवा का सारा शरीर कांप उठा ।

तुम इसकी परवाह न करो । इल्या ने धीरे से कहा ।

फिर एक दूसरे दिन वह उत्सुकता से पूछ उठी—

'यह तो बताओ कि जिस मनुष्य को तुमने मारा था क्या तुम्हें उसके सपने आते हैं ?

अपनी दाढ़ी पर शान्त भाव से हाथ फेरते हुए इल्या ने उत्तर दिया—

बिल्कुल नहीं । मैं तो खूब गाढ़ी नींद में सोता हूँ । कभी किसी प्रकार का सपना नहीं देखता और मुझे उसके सपने भी क्यों आने लगे ? मैंने तो उसे देखा तक भी नहीं । किसी ने मुझ पर चोट की तो मैं एकदम उछल कर दूर हो गया । फिर कमर में बंधे बटखरे को जोर से घुमाकर एक-एक कर दो आदमियों के सिरों पर चोटें की थीं और तीसरा भाग खड़ा हुआ ।"

उसने आह-सी भरी और नाराजगी से बोली—

"न जाने कहां कहां के मूर्ख तुमसे आ टकराते हैं और परमात्मा के सामने जवाबदेही तुम्हें करनी पड़ती है ।'

जब एक क्षण वह कुछ बोला नहीं तो उसने पूछा—

'सोते हो क्या ?'

'नहीं तो ।

'अब तुम्हें यहाँ से जाना चाहिए। अब भोर होने वाली है। कहाँ जाओगे मिस में? आह! मेरे कारण ही तुम्हें परेशान होना पड़ेगा।'

"इसकी चिन्ता न करो। जब बुरे दिन बिता दिए तो त्यौहारों की क्या बात है?' उसने कपड़े पहनते हुए गर्व के साथ कहा।

प्रभात की प्रथम मोतियाई छाया की कोमलता में अपने स्थान पर पहुँचकर कोने में पीछे की ओर हाथ डाले और उस मुर्गे की पूँछ की तरह फसाए, रेत को छीलन और लकड़ी के टुकड़ों का रौंदता हुआ वह विचार करने लगता—

मैं अल्योशा को जगसों की बान की थोड़ी आजादी दिए देता हूँ—अच्छा है उसका कुछ वासा निकल जाय। लड़का जरा उद्दंड जरूर है परन्तु है अच्छा।'

रेत या छीलन के ढेर पर लेट कर वह जबतक गाढ़ी नींद में सो भी न पाता कि हरे आसमान में अरुणोदय की किरणें फैल जातीं। गर्वीले मयूर की तरह अंशुमाली अपने रंग-बिरंगे किरण जाल को परों की तरह फैलाते हुए अपने पीछे सोना बिखरते जाते। मजदूर लोग जाग उठते और एक विशालकाय व्यक्ति को जमीन पर पाँव जमाए देखकर एक दूसरे को सावधान करते हुए कहते—

'वह यहाँ पर है!'

चौड़ी, ऊँची गण्डास्थि वाला तिरछा म्यासाव हाथ में लोह का कुल्हाड़ा लिए अर्द्धनिर्मित की ओर ऊपर से नीचे अपनी टिमटिमाती आँखों से निहारता जैसे कि वह उसे लाँघकर निकलना चाहता हो परन्तु उसे साहस ही न होता था।

मजदूरों की सहस्र-सहस्र चीख-पुकारों या हथौड़ों की रट

सर्प आदि किसी से भी इस विशाल मनुष्य की नींद नहीं टूट पाती थी। वह आसमान की ओर ऊपर मुँह किए ज़ोर-ज़ोर से खर्राटे भरता रहता। उसके खर्राटों की आवाज़ किसी भोंपरे भारे की आवाज़ से मिलती थी। चंदन खोदने वाला बार-बार पीछे को देखता हुआ दूर चला जाता और अपनी आँखों को ऐसे झपकाता जैसे कि उसके सिर पर चोट हुई हो। झकझकेई सफ़ेद सूती कमीज़ और ढीली पतलून पहन घर से निकलता। धीमे-धीमे वह नदी की ओर स्नान करने जाता। मामा के निकट पहुँचने पर घास पर इस तरह पाँव रखता कि कहीं हल्की आवाज़ से भी उनकी नींद न उचट जाय। निकिता भोर से पहले ही घर से निकल जाता था। लगभग प्रतिदिन वह जंगल से एक-दो गाड़ी खाद भर कर लाता और अपने बगीचे के लिए साफ़ की हुई ज़मीन में उसे फैलाता रहता। अभी तक उसने बस मेग्नस रावस और बड़ बेरी के पौधे ही लगाए थे और अब वह फलों के पेड़ों के लिए ज़मीन तैयार कर रेत में गड्ढे खोद उन्हें खाद नदी की मिट्टी और कीचड़ से भर रहा था। छुट्टी के दिन विक्साम व्यासाव भी उसकी सहायता कर देता था।

'छुट्टियों के दिन पौधे लगाना कोई गुनाह नहीं।' वह कहा करता।

ध्यान वर्वामानोव अपने कामों को सावधान रख कर काम को देखता हुआ बनती हुई इमारत की ओर जाता जहाँ सारा बड़े आह्लाद के साथ लकड़ी काट रहा होता रन्दे आगे-पीछे सर्र-सर्र कर रहे होते कुल्हाड़े स्पष्टता से खट-खट की आवाज़ करते होते तो कहीं राजगीरी पर गरम गारा भी थोपा जा रहा होता और कुन्द कुल्हाड़े की धार से सान का पत्थर सिसकता होता। बढ़ई लोग किसी शहतीर को उठाते हुए 'दुबिनुश्का' का राग

छिड़ते तो कहीं से किसी नवयुवक के भावपूर्ण गान की ध्वनि गूँज उठती—

मगी के घर गए जवारी ।
दू कपोल करनी मन प्यारी ॥

'कितना भद्दा गीत है' प्यात्र ने ब्यासोव से कहा। घुटनों तक रेत में धँसे ब्यासोव ने जवाब में कहा—

'तुम्हारे गीत भी तो इसी तरह के होते हैं।

'क्या मतलब तुम्हारा ?

"शब्दों में कोई जान तो होती नहीं।'

'इस मनुष्य का समझना भी कठिन है।' प्यात्र ने मुड़ते हुए सोचा। उसे स्मरण आया कि उसके पिता ने ब्यासोव को मजदूरों के निरीक्षण का काम देना चाहा था परन्तु इस मनुष्य ने अपनी नजर जमीन पर गड़ाए जवाब दिया था—

"नहीं मैं इस काम के लिए योग्य नहीं। मैं लोगों पर हुक्म नहीं चला सकता। तुम मुझे चौकीदार ही रहने दो।'

इस पर बाप ने उसे बहुत गालियाँ सुनाई थीं।

ठण्डी और भीगी शरद-ऋतु आई। बगीचों में रस्त[11] लग गया, और उसने जङ्गलों की श्यामलता पर धब्बे डाल दिए। सीली हवा नदी के किनारे सी-सी कर चलती तो लकड़ी की पानी छीलन नदी में जा गिरती। प्रत्येक सुबह को पत्थर चाहा द्वारा खींची जाने वाली सन से भरी गाड़ियाँ गोदाम के सामने आकर रुकती थीं। प्योत्र सारे माल का सावधानी से निरीक्षण करता ताकि कहीं ये दढ़ियल किसान उसमें बोझ बढ़ाने के लिए पत्थर-ईंट गीली सन मिलाकर अथवा लम्बी रस्सी डालकर की जगह पटिया

11. रस्त—पेड़-पौधों का एक रोग।

जिस्म की सन देकर ठग न ले जाय । किसानों के साथ व्यवहार करना बड़ा कठिन काम था । अलक्सेई उनमें प्राय बहुत लड़ता-झगड़ता रहता था । उसका पिता मास्को चला गया था और उसकी सास जैसा वह कहा करती थी साधुनी-गृह में प्रार्थना के लिए गई हुई थी । कभी-कभी साँझ को चाय के समय अलक्सेई खीझकर शिकायत कर उठता—

'यह जीवन भी बड़ा नीरस है । मैं यहाँ के लोगों को पसन्द नहीं करता ।

इस पर ल्योव प्राय क्षुब्ध होकर कहता—

तुम क्या उन लोगों से अधिक भले हो ? सबसे लड़ते झगड़ते रहते हो । तुम घमण्डी भी बहुत हो ।

"मेरे पास कुछ है तभी तो घमण्ड करता हूँ ।

अपने घुंघराले बालों और कन्धों को पीछे को फेंकता हुआ छाती फुलाकर वह घृणा से अपने भाई और नतालिया की ओर स्थिर आँखों से घूरने लगता । नतालिया उससे बहुत डरती थी और सदा उससे नम्र-सा व्यवहार ही रखती थी । लगता था कि वह उससे किसी कारण भयभीत रहती है ।

दोपहर के भोजन के बाद जब उसका पति और अलक्सेई फिर काम पर चले जाते तो वह निकिता के छोटे-से साधारण कमरे में अपने सीने-पिरोने के सामान के साथ खिड़की के पास आराम कुर्सी पर आ बैठती । कुबड़े ने स्वयं इस कुर्सी को कुशलता के साथ बर्च की लकड़ी से बनाया था । कुबड़ा यहीं बैठा-बैठा सुबह से साँझ तक मिलाई और हिसाब के खाते आदि और दफ़्तर के दूसरे कामों को किया करता था लेकिन जब वह आ जाती तो थोड़ी देर के लिए अपना काम छोड़कर वह उसे अपने राजकुमारों के बारे में सुनाता कि वे कैसे रहते थे, उनके

दिड़ते तो कहां से किसी नवयुवक के भावपूर्ण गाने की ध्वनि गूंज उठती—

मेरी के घर गए जवारी।
छू कपोल करदी लुप प्यारी॥

"कितना भद्दा गीत है" प्योत्र ने म्यालोव से कहा। घुटनों तक रेत में धँस म्यालोव ने जवाब में कहा—

"तुम्हारे गीत भी तो इसी तरह के होते हैं।

'क्या मतलब तुम्हारा ?

'शब्दों में कोई जान तो होती नहीं।'

'इस मनुष्य को समझना भी कठिन है।" प्योत्र ने मुड़ते हुए सोचा। उसे स्मरण आया कि उसके पिता ने म्यालोव को मजदूरों के निरीक्षण का काम देना चाहा था परन्तु इस मनुष्य ने अपनी नजर जमीन पर गड़ाए जवाब दिया था—

नहीं मैं इस काम के लिए योग्य नहीं। मैं लोगों पर हुकुम नहीं चला सकता। तुम मुझे चौकीदार ही रहने दो।

इस पर बाप ने उसे बहुत गालियाँ सुनाई थीं।

ठण्डी और भीगी शरद-ऋतु आई। बगीचों में रस्ल[11] लग गया, और उसने अन्नूनों की श्यामलता पर धब्बे डाल दिए। सीली हवा नदी के किनारे मौजी कर बसती ता लकड़ी की पीलीं खीमन नदी में जा गिरतीं। प्रत्येक सुबह का गजर थोड़ा सारा गाँव की शाम वाली मन में नदी गाड़ियों गोदाम के सामने लाकर रखती थी। प्योत्र सारे माल का सावधानी से निरीक्षण करता ताकि कहीं ये दरियम किसान उसमें ओम बढ़ाने के लिए 'पसीनदार' मीमी मन मिलाकर अथवा सस्ते रसगर का जगह घटिया

---

11 रस्ल—पेड़-पौधों का एक रोग।

किस्म की सन देकर टग म से जाँय । किसानों क साथ व्यवहार करना बड़ा कठिन काम था । असक्सेई उनम प्राय बहुत लड़ता-झगड़ता रहता था । उसका पिता मास्को चला गया था और उसकी सास जसा वह कहा करती थी साधुनी-गृह में प्रार्थना क लिए गई हुई थी । कभी-कभी साँझ का चाय क समय असक्सई खीझकर शिकायत कर उठता—

'यह जीवन भी बड़ा नीरस है। मैं यहाँ क लोगों को पसन्द नहीं करता ।

इसम प्योत्र प्राय क्षुब्ध होकर कहता—

'तुम क्या उन लोगों स अधिक भले हो ? सबम सदा अलग रहत हो । तुम घमण्डी भी बहुत हो ।

'मेरे पास कुछ है तभी तो घमण्ड करता हूँ ।

अपने घुँघराले बालों और कन्धों का पीछे का फेंकता हुआ छाती फुलाकर वह धृष्टता म अपने भाई और भावज की ओर स्थिर आँखों से घूरने लगता । नतास्या उससे बहुत डरती थी और सदा उसम रूखा-सा व्यवहार ही रखती थी । लगता था कि वह उससे किसी कारण भयभीत रहती है ।

दोपहर क भोजन क बाद जब उसका पति और असक्सई फिर काम पर चले जाते तो वह निकिता क छोटे-स साधारण कमरे में अपने सीन पिरोने क सामान क साथ खिड़की के पास आराम कुर्सी पर आ बैठती । कुबड़े न स्वय इस कुर्सी को कुशलता क साथ बर्च की लकड़ी से बनाया था । कुबड़ा यहाँ बैठा-बैठा सुबह से साँझ तक सिलाई और हिसाब क खाते आदि और दफ्तर के दूसरे कामों का किया करता था लेकिन जब वह आ जाती तो थोड़ी देर के लिए अपना काम छोड़कर वह उसे अनम राजकुमारों क बारे में सुनाता कि वे कैसे रहत थे, उनके

महलों में कैसे-कैसे फल-पौधे होते थे इत्यादि । लड़कियों जैसी उसकी ऊँची आवाज़ में भारीपन और एक प्रकार की मधुरता रहती थी और उसकी नीली आँखें उस स्त्री के चेहरे को बचाती हुई खिड़की से बाहर झाँकती थी । अपने सीने-पिरोने पर झुकी विचारों में डूबी नताल्या एकाकी मनुष्य के समान स्वयं मूक बनी रहती । इस प्रकार घण्टे दो घण्टे वे दोनों पास-पास बैठे रहते और बड़ी कठिनाई से एक या दो बार ही एक दूसरे की ओर अनिच्छा और भीरुतापूर्वक देख पाते । निकिता अपनी भावज की ओर अपनी नीली आँखों से बड़ी कोमलता और दुलार के साथ देखता तो उसके कुत्ते जैसे बड़े कान स्पष्टतः लाल पड़ जाते । कभी प्रभावित होकर उसकी [illegible] दृष्टि से नताल्या भी उसकी ओर देखती और [illegible] मुस्कुराती । उसकी यह मुस्कान अनोखा हुआ करती थी । उस समय निकिता अनुभव करता कि उस मुस्कान में उसकी अस्पष्ट भावनाएँ छिपी हैं । और जब उसे प्रतीत होता कि यह उसके प्रति एक तिरस्कारमात्र है तो वह एक अपराधी की तरह अपनी नज़र नीची कर लेता ।

खिड़की के बाहर रिमझिम-रिमझिम पानी बरसता और ग्रीष्म की उष्णता घुमड़कर शान्त होती रहती । कमरे में बैठे वे दोनों अमरबेलों में कहीं पर झिल्ली उठने की आवाज़ सुनते । फूलदान में पानी दिया हुआ गीला सा बड़ा और सुगन्धित लगता । मिल की तरफ से एक हल्का और लाल धब्बा लगता जहाँ कि औरतें सन को भींच-भींचकर साफ कर रही होतीं । पानी से तर-बतर और कीचड़ से [illegible] और बचाता हुआ अन्दर आ पहुँचता । पीछे की ओर मुड़ा हुआ उसका टोप आज भी बसन्त के एक-एक दिन की स्मृति दिलाता रहता था । अन्दर आने पर वह हँसते हुए सन्देश सुनाता कि तिखोन [illegible] की एक उलझी बट गई है ।

"वह इसे एक दुर्घटनामात्र बताता है लेकिन यह स्पष्ट है कि उसने उसे जान-बूझकर फ़ौज की भर्ती से बचने के लिए ही काटी है। और मैं—अपनी मर्जी से फ़ौज में दाखिल हो जाऊँगा। चाहता हूँ कि यहाँ से कहीं दूर चला जाऊँ।

वह रीछ की तरह गुर्रा कर शिकायत करने लगा—

यहाँ से मीलों दूर शाह सलाम के पास ही क्यों न जाना पड़े।

फिर वह अपने हाथ को पसारते हुए कहने लगा—

मुझे थोड़े-से पैसे तो देना मैं बाहर जा रहा हूँ।

'क्यों ?

'तुम्हें इससे क्या मतलब ?

और जब वह बाहर जाने लगा तो गा उठा—

प्रियतम के हित चली नवेली किया पार मसान।
कर में व्यञ्जन लिए मसान अधरों पर मुस्कान॥

ओह ! किसी-न-किसी दिन यह मुसीबत में फँसेगा !' नवाल्मा ने कहा – 'मेरी सहेलियाँ इसे प्राय आल्मा असोंवा के साथ देखती हैं। उसकी उमर अभी चौदह साल की है माँ है नहीं और बाप शराबी है।

निकिता को उसके ये शब्द उचित नहीं लगे। उसे उन शब्दों में अफ़सोस भय और ईर्ष्या का हल्का पुट प्रतीत हुआ।

कुबड़ा खिड़की से बाहर मौन धारण किए झाँकने लगा। वहाँ नमी लिए हवा चीड़ के पेड़ की शाखाओं को झुला रही थी। उनकी हरी नुकीली पत्तियों से पानी की शुभ्र बूँदें बिखर उठती थीं। चीड़ के इन पेड़ों का लालन-पालन सघन हो किया

महलों में फँसे-फँसे फल पीले होते थे इत्यादि । लड़कियों जैसी उसकी ऊँची आवाज़ में भारीपन और एक प्रकार की मधुरता रहती थी और उसकी नीली आँखें उस औरत के चेहरे को बचाती हुई खिड़की से बाहर झाँकती थीं । अपने सीने-पिरोने पर झुकी विचारों में डूबी नताल्या एकाकी मनुष्य के समान स्वयं मूक बनी रहती । इस प्रकार घण्टे दो घण्टे वे दोनों पास-पास बैठे रहते और बड़ी कठिनाई से एक या दो बार ही एक दूसरे की ओर अनिच्छा और भीरुतापूर्वक देख पाते । निकिता अपनी भावज की ओर अपनी नीली आँखों से बड़ी कोमलता और दुलार के साथ देखता तो उसके कुत्ते जैसे बड़े कान स्पष्टत लाल पड़ जाते । कभी प्रभावित होकर उसकी क्षणिक दृष्टि से नताल्या भी उसकी ओर देखती और कृपालुतापूर्ण मुस्कुराती । उसकी वह मुस्कान अनोखी हुआ करती थी । उस समय निकिता अनुभव करता कि उस मुस्कान में उसकी अस्पष्ट भावनाएं छिपी हैं । और जब उसे प्रतीत होता कि यह उसके प्रति एक तिरस्कारमात्र है तो वह एक अपराधी की तरह अपनी नज़र नीची कर लेता ।

खिड़की के बाहर रिमझिम-रिमझिम पानी बरसता और ग्रीष्म की उष्णता घुलकर शान्त होती रहती । कमरे में बैठे वे दोनों प्रसबसेई के वहीं पर चिल्ला उठने की आवाज़ सुनते । किलहान में पालतू किया हुआ रीछ का बच्चा प्यार से गुर्राने लगता । मिल की तरफ से एक हल्का और शान्त लगता जहाँ कि औरतें सन का रेशा खींचकर साफ कर रही होतीं । पानी से तर-बतर और कीचड़ से सराबोर धमाचौकड़ी मचाता हुआ अन्दर आ पहुँचता । पीछे की ओर मुड़ा हुआ उसका टोप आज भी बसन्त के एक-एक दिन की स्मृति दिलाता रहता था । अन्दर आकर वह हँसते हुए सन्देश सुनाता कि तिखोन कसाबाव की एक उँगली कट गई है ।

"वह इसे एक दुर्घटनामात्र बताता है लेकिन यह स्पष्ट है कि उसने उसे जान-बूझकर फ़ौज की भर्ती से बचने के लिए ही काटी है। और मैं—अपनी मर्जी से फौज में दाखिल हो जाऊँगा। चाहता हूँ कि यहाँ से कहीं दूर चला जाऊँ।

वह रीछ की तरह गुर्रा कर शिकायत करने लगा—

यहाँ से मीलों दूर चाहे शतान के पास ही क्यों न जाना पड़े।

फिर वह अपने हाथ को पसारते हुए कहने लगा—

मुझे थोड़े-से पैसे तो देना मैं बाहर जा रहा हूँ।

क्यों ?

तुम्हें इससे क्या मतलब ?

और जब वह बाहर जाने लगा तो गा उठा—

प्रियतम के हित चली नवेली किया पार मैदान।
कर में व्यंजन लिए सलोने अधरों पर मुस्कान।।

'ओह ! किसी-न-किसी दिन यह मुसीबत में फँसेगा ! नताल्या ने कहा - 'मेरी सहेलियाँ इसे प्राय ओल्गा अर्सोवा के साथ देखती हैं। उसकी उमर अभी चौदह साल की है, माँ है नहीं और बाप शराबी है।

निकिता को उसके ये शब्द उचित नहीं लगे। उसे उन शब्दों में अफ़सोस भय और ईर्ष्या का हल्का पुट प्रतीत हुआ।

कुबड़ा खिड़की से बाहर मौन धारण किए झाँकने लगा। वहाँ नमी लिए हवा चीड़ के पेड़ों की शाखाओं को झुला रही थी। उनकी हरी नुकीली पत्तियों से पानी की शुभ्र बूँदें बिखर उठती थीं। चीड़ के इन पेड़ों का लालन-पालन उसने ही किया

था। घर के चारों ओर के सब पेड़ उसने ही अपने हाथों से लगाए थे।

तभी थका-मांदा ध्योम घर में आया।

"चाय का समय होगया नताल्या!

'तुम जल्दी आ गए हो।"

'मैं कहता हूँ समय होगया!" वह जोर से चिल्लाया—और जब उसकी पत्नी बाहर चली गई तो उसकी जगह पर बैठ कर वह भी उलाहना देता हुआ कहने लगा—

इस कारोबार का सारा बोझ पिताजी ने मेरे ही कन्धों पर डाल दिया है। मैं पहिए की तरह घूम रहा हूँ—और मुझे पता नहीं कि मैं किधर मुड़क रहा हूँ। अगर उनके मन-माफिक काम नहीं होता तो खबर भी मेरी ही ली जाती है।'

निकिता ने अलक्सेई और अलौंचा के बारे में दबी जबान व सावधानी के साथ चर्चा छेड़ दी। परन्तु उत्तर में ध्योम बात का अनसुनी करके सिर हिलाता हुआ बोला—

"लड़कियों की प्रेम-चर्चाएँ सुनने को मेरे पास समय नहीं है। मैं अपनी पत्नी को भी रात के अलावा कभी देखता तक नहीं और वह भी तब—जबकि मैं अर्द्धनिद्रित अवस्था में होता हूँ। दिन में तो मैं उल्लू की तरह अंधा बना रहता हूँ। तुम्हारा ही दिमाग ऐसी मूर्खताओं से भरा पड़ा है।'

कानों के पास से सिर को पकड़ कर उसे हिलाते हुए वह जरा दबी जबान से बोला—

मिल का यह काम हमारे करने का नहीं, हमें तो मैदानों में ही जमीन खरीद कर खेती-बाड़ी करनी चाहिए थी। यहाँ हाय-तोबा कम होती और काम अच्छा।'

इस बार जब धर्मानाथ अपनी यात्रा पर से वापिस लौटा तो वह अपूर्व उत्साह से भरा हुआ एक नौजवान-सा दिखाई देता था। उसकी दाढ़ी कभी से तराशी हुई थी और उसके कंधे पहले से अधिक चौड़े तथा आँखें अधिक चमकीली प्रतीत होती थीं। एक मग्न व्यक्ति की तरह आराम से अपने सोफे पर पाँव फैलाते हुए वह बोला—

'हमारा यह काम फौज की तरह आगे ही-आगे बढ़ना चाहिए। तुम्हारे बेटों पोतों और पड़पोतों के लिए काम और कमाई बहुत होगी। आने वाले तीन-सौ सालों में देश के कारोबार और आर्थिक जीवन में हम धर्मानाथों का बड़ा हाथ रहेगा।

पुत्रवधू की ओर ध्यानपूर्वक देखते हुए वह बोला—

'क्यों नताल्या अब तो गाम-मटोल होती जा रही है। यदि लड़का हुआ तो मैं तुझे एक उत्तम उपहार दूँगा।

रात को सोने से पहले नताल्या पति से बोली—

'देवसुरजी अब भी प्रसन्न होते हैं बहुत अच्छी तरह बात करते हैं।

पति ने तिरछी आँखों से देखते हुए नाराजगी से कहा—

'बेशक वे अच्छे हैं तुमसे तो उपहार का वायदा कर ही दिया है न ?

दो तीन सप्ताहों के बाद ही धर्मानाथ की वह जिन्दादिली न जाने कहाँ गई और वह किसी कारण चिन्तित रहने लगा। इस पर नताल्या ने निकिता से पूछा—

'बापूजी किस बात पर नाराज हैं ?

"मैं नहीं जानता। उन्हें समझ पाना बड़ा कठिन है।

और उसी दिन साँझ को चाय पीते समय अचानक अलकसई साफ-साफ ऊँची आवाज में बोला—

"बापू आप मुझे फौज में भर्ती होने को भेज दें!"

"क्या क्या कहा?" गुस्से में काँपते हुए अर्तामानोव ने पूछा—

"मैं यहाँ रहना नहीं चाहता।"

'बाहर निकल जाओ।' अर्तामानोव ने उन सबको आदेश दिया। लेकिन जैसे ही अलकसई भी दरवाजे से बाहर निकलने लगा वह चिल्लाया—

"अल्योशा! तुम इधर ही रहो।"

अपने हाथों को कमर पर बाँध वह लड़के को भर देर तक देखने के बाद बोला—

"और मैं तो तुमसे बड़ी-बड़ी आशाएँ किए बैठा था। मैं समझता था कि तू मेरा बहादुर 'बाज' है।"

"नहीं मैं अब यहाँ नहीं रह सकता।"

'भूल मेरी जगह यहीं है। तेरी माँ ने अपनी इच्छा से रखने के लिए तुझे दिया था। अच्छा जाओ!'

अलकसई ने अभी झिझकते हुए कदम बढ़ाया ही था कि उसके मामा ने उसके कंधों पर भारी हाथ रखते हुए उसे फिर रोक कर कहा—

"मैं बाप से कठोरता का व्यवहार नहीं करता यदि मेरा बाप होता तो तुमसे मुक्कों से ही बात करता। अच्छा, अब जाओ।"

फिर भी उसने लड़के को एक बार और रोका। और भी अधिक कठोर होकर बोला—

'तुम्हें बड़ा आदमी बनना है, समझे ? आगे मैं तुमसे ऐसी बकवास न सुनूँ ।'

जब वह अकेला रह गया तो देर तक खिड़की के पास दाढ़ी को मुट्ठी में थामे नीली-पीली बर्फ को जमीन पर गिरते हुए खड़ा देखता रहा । और जब रात का अंधकार तहखाने जैसा हो गया तो वह शहर की ओर चल पड़ा । बाईमाकोवा के दरवाजे पहले ही बन्द हो चुके थे । उसने खिड़की खटखटाई तो उल्यामा स्वयं उसे अन्दर ले जाने के लिए आई । उसने किसी कदर नाराजगी के साथ पूछा—

'तुम इस समय कहाँ से टपक पड़े ?'

बिना कोट उतारे और किसी प्रकार का जवाब दिए बिना ही वह कमरे में अन्दर आ पहुँचा । अपने हैट को कोने में फेंककर वह कुर्सी पर बैठ गया और मेज पर कोहनियों को टेककर अपनी उंगलियों को दाढ़ी में फँसाते हुए, वह मलक्येई के बारे में बताने लगा—

'आखिर वह पराया ही तो है मेरी बहिन राजकुमार से फंस गई—और नतीजा यह हुआ । आखिर, खून का असर तो होना ही चाहिए ।'

इस बीच स्त्री ने उठकर दरवाजे की चिटकनियों को देखा कि वे ठीक से बन्द हैं या नहीं और फिर मोमबत्ती को बुझाकर वह बैठ गई । चाँदी के 'स्टैंड' पर देवमूर्तियों के नीचे नीला प्रकाश देती हुई एक लैम्प जल रही थी ।

'उसका विवाह कर उसे बंधन में जकड़ दो न !' वह बोली ।

ठीक है, ऐसा ही करना होगा । परन्तु इतना ही काफी नहीं । प्यान में उत्साह और स्फूर्ति नहीं है । यह भी बड़े दुःख की बात

और उसी दिन साँझ को चाय पीते समय अचानक असलसई साफ-साफ ऊँची आवाज़ में बोला—

"बापू आप मुझे फौज में भर्ती होने को भेज दें !"

"क्या क्या कहा ? गुस्से में काँपते हुए मर्तामामोव ने पूछा—

"मैं यहाँ रहना नहीं चाहता ।"

"बाहर निकल जाओ । मर्तामानाव ने उन सबको आदेश दिया । लेकिन जैसे ही असलसेई भी दरवाजे से बाहर निकलने लगा वह चिल्लाया—

"अस्याशा ! तुम इधर ही रहो ।

अपने हाथों को कमर पर बाँधे वह लड़के की ओर देर तक देखने के बाद बोला—

"और मैं तो तुमसे बड़ी-बड़ी आशाएँ किए बैठा था । मैं समझता था कि तू मेरा बहादुर बाज़ है ।

"नहीं मैं अब यहाँ नहीं रह सकता ।

"झूठ तेरी जगह यहीं है । तेरी माँ ने अपनी इच्छा से रखने के लिए तुझे दिया था । अच्छा जाओ !

असलसई ने अभी झिझकते हुए कदम बढ़ाया ही था कि उसके मामा ने उसके कंधों पर भारी हाथ रखते हुए उसे फिर रोक कर कहा—

"तेरे साथ मैं कठोरता का व्यवहार नहीं करता यदि मेरा बाप होता तो तुमसे मुक्कों से ही बात करता । अच्छा, अब जाओ ।

फिर भी उसने लड़के को एक बार यों रोका । और भी अधिक कठोर होकर बोला—

'मास्को में कारागार बढ़ते ही आ रहे हैं !" यह कह कर वह खड़ा हो गया और उसको प्रगाढ़ आलिंगन में कस कर बोला—"क्या ही अच्छा होता कि तुम भी पुरुष होतीं ।

'आओ, प्यारे आओ । नमस्कार ।'

अपने प्यार का एक चिह्न अंकित कर वह चला गया ।

क्रिस्मस के दिनों से पूर्व मार्येन्स्काया बुरी तरह घायल और बेहोश अलक्सेई को बरफ-गाड़ी में डाल कर घर लाई । उसके सब कपड़े फटे हुए थे । मार्येन्स्काया और मिकिता उसके बदन पर मूली और वोदका की मालिश करने लगे । बहुत देर के बाद वह कराहा परन्तु बोल न सका । अर्तामानोव जंगली जानवर की तरह अपनी कमीज की बाँहों को ऊपर चढ़ाता और फिर उन्हें नीची कर लेता । इस तरह वह दाँत पीसता हुआ कमरे में चक्कर काटता रहा । जब अलक्सेई को कुछ होश आया तो मुक्का घुमाता हुआ वह उससे पूछने लगा—

"तुझे किसने मारा है ? बता तो सही ? अलक्सेई ने सूजी और चोट से नीली पड़ी एक आँख को खोल कर देखा । वह क्रोध से हाँफ रहा था । खून थूकते हुए वह सिर्फ इतना ही बोला—

बस, मुझे खतम कर दो ।

नताल्या डर से सिसकने लगी । इस पर अर्तामानोव बड़े रोष में चहलकदमी करता हुआ चिल्लाया—

निकल जा यहाँ से ।

अलक्सेई ने अपना सिर पकड़ा—जैसे कि वह उसे धड़ से उखाड़ना चाहता हो और फिर कराहने लगा ।

इसके बाद अपनी बाँहें फेंक कर वह करवट बदल कर चुपचाप

है। बिना संघर्ष के न तो जीवन है और न मरण ही। वह ऐसे काम करता है जैसेकि आज भी वह किसी मालिक के लिए कर रहा हो अपने लिए नहीं जबकि वह एक गुलाम हो। इच्छा, स्वतन्त्रता तो उसमें है ही नहीं, समझीं! निकिता के बारे में क्या कहूँ वह अपाहिज है उसके दिमाग में तो बस फल-फूलवारी ही घूमते रहते हैं। मैं सोचता था कि कम-से-कम अलबर्ट इस काम में रुचि लेगा।'

बाइमारोवा ने उसे सान्त्वना देने का प्रयत्न किया—

'तुम व्यर्थ में ही इतनी जल्दी चिन्तित हुए जा रहे हो धैर्य रखो। जब मिल के पहिए तेजी से घूमने लगेंगे तो वे स्वयं उन्हें अपने ध्यान इधर खींच लाएंगे।'

वे दोनों आधी रात तक कंधे-से-कंधा मिलाए कमरे की उष्णता में बैठे रहे। दक्षिणी वाले कोने में हल्का नीले प्रकाश का एक बादल-सा लैम्प की मद्धीमी लौ पर मंडराता रहा। बच्चों में व्यावसायिक उत्साह की कमी के बारे में शिकायत करते हुए सर्गेयेविच ने नगरवासियों का भी नहीं छोड़ा—

''ये लोग तो बड़े मोटे दिमाग वाले हैं।'

वे तुम्हें चाहते नहीं क्योंकि भाग्य का चक्र तुम्हारे लिए सीधा घूम रहा है न! हम स्त्रियाँ तो पुरुषों को इस बात के लिए प्यार करती हैं परन्तु एक पुरुष की सफलता दूसरे की आँखों में खटकने लगती है।

उल्याना बाइमारोवा उस समय बड़े आत्मविश्वास से बातें करती थी। इल्या सर्गेयेविच जोश में जब नाराजगी से चिल्लाया तो वह बोली—

बस एक बात से मैं मौत की तरह ही डरती हूँ—वह है बिना बच्चे का जन्म।

"मास्को म करावार बढ़ते ही आ रहे हैं। यह कह कर वह खड़ा हो गया और उसको प्रगाढ़ आलिंगन में कस कर बोला—"क्या ही अच्छा होता कि तुम भी पुरुष होती।

"जाओ, प्यारे जाओ। नमस्कार।

अपने प्यार का एक चिह्न अंकित कर वह चला गया।

क्रिसमस के दिनों में पूर्व यार्देन्स्काया बुरी तरह घायल और बेहोश अलक्सेई को बरफ-गाड़ी में डाल कर घर लाई। उसके सब कपड़े फटे हुए थे। यार्देन्स्काया और निकिता उसके बदन पर मूली और वोदका की मालिश करने लगे। बहुत देर के बाद वह कराहा परन्तु बोल न सका। अर्तामानोव जंगली जानवर की तरह अपनी कमीज की बाँहों को ऊपर चढ़ाता और फिर उन्हें नीची कर लेता। इस तरह वह दाँत पीसता हुआ कमरे में चक्कर काटता रहा। जब अलक्सेई को कुछ होश आया तो मुक्का घुमाता हुआ वह उससे पूछने लगा—

"तुझे किसने मारा है? बता तो सही? अलक्सेई ने सूजी और चोट से नीली पड़ी एक आँख को खोल कर देखा। वह क्रोध से हाँफ रहा था। खून थूकते हुए वह सिर्फ इतना ही बोला—

'बस, मुझे खतम कर दो।

नताल्या डर से सिसकने लगी। इस पर अर्तामानोव बड़े ताप में चहलकदमी करता हुआ चिल्लाया—

निकल जा यहाँ से।

अलक्सेई ने अपना सिर पकड़ा—जैसे कि वह उसे धड़ से उखाड़ना चाहता हो और फिर कराहने लगा।

इसके बाद अपनी बाँहें फैला कर वह करवट बदल कर चुपचाप

है। बिना संघर्ष के न तो जीवन है और न मरण ही। वह ऐसे काम करता है जैसेकि काम भी वह किसी मालिक के लिए कर रहा हो, अपने लिए नहीं जैसेकि वह एक गुलाम हो। इच्छा, स्वतन्त्रता तो उसमें है ही नहीं, समझीं! निकिता के बारे में क्या कहूँ वह अपाहिज है उसके दिमाग में तो बस फन-फूलवारी ही घूमते रहते हैं। मैं सोचता था कि कम-से-कम अलवसेई इस काम में रुचि लेगा।

बाइमाकोवा ने उसे सान्त्वना देने का प्रयत्न किया—

'तुम व्यर्थ में ही इतनी जल्दी चिन्तित हुए जा रहे हो, धैर्य रखो। जब मिल के पहिए तेजी से घूमने लगेंगे तो वे स्वयं उन्हें अपने आप इधर खींच लाएंगे।'

वे दोनों आधी रात तक कंधे-से-कंधा मिलाए कमरे की उष्णता में बैठे रहे। देवमूर्ति वाले कोने में हल्के नीले प्रकाश का एक बादल-सा लैम्प की मजीली लौ पर मंडराता रहा। बच्चों में व्यावसायिक उत्साह की कमी के बारे में शिकायत करते हुए अर्तामानोव ने नगरवासियों का भी नहीं छोड़ा—

"ये लोग तो बड़े खाऊ किस्म वाले हैं।

'वे तुम्हें चाहते नहीं क्योंकि भाग्य का चक्र तुम्हारे लिए सीधा घूम रहा है न! हम स्त्रियाँ तो पुरुषों को इस बात के लिए प्यार करती हैं परन्तु तब पुरुष की सफलता दूसरे की आँखों में खटकने लगती है।'

उल्याना बाइमाकोवा उसे शान्त कर आश्वासन देना जानती थी। इन्या अर्तामानोव ग्रीष्म में जब नाराजगी से चिल्लाया तो वह बोली—

'बस एक बात में मैं मौत की तरह ही डरती हूँ—वह है किसी बच्चे का जन्म।

'खूब खाओ !' मर्तामानोव ने सलाह दी और अपनी दाढ़ी में भुनभुनाया—'इसके लिए उनकी खाल खींची जानी चाहिए—उनके पर्तों को भूना जाना चाहिए ।

अब पलक्सेई की ओर से वह सतर्क हो गया और कहना चाहिए कि वह अब रुखाई के साथ उसे प्यार भी करने लगा था। अपने लड़कों को काम करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से वह श्रम के लिए अपनी प्रेम भावनाओं को व्यक्त कर प्रदर्शनीय कठोर परिश्रम करने लगा ।

'जो चाहे जो करो, लेकिन किसी काम से नाक-भौंह मत सिकोड़ो । और वह बहुत-सी ऐसी बातें जिनकी कोई जरूरत नहीं थी, किया करता। किसी भी काम को जिसे वह हाथ में लेता था उसमें तत्परता फुर्ती और पशुप्रवृत्ति से लग जाता, जिससे उसे पता लग जाय कि कहाँ से प्रतिरोध होगा और उस पर कैसे विजय प्राप्त की जा सकेगी ।

उसकी पुत्रवधू की प्रसूति असाधारण रूप से लम्बी लटक गई थी। आखिरकार, नतात्या ने जब दो दिन की पीड़ाएँ झेलने के बाद एक कन्या को जन्म दिया तो वह अप्रसन्नतापूर्वक बोला—

'इससे क्या लाभ ?'

"परमात्मा को उसकी कृपा के लिए धन्यवाद दो उल्याना ने दृढ़ होकर सलाह दी—'आज 'एलीना सिम्यानिस्का का दिन है ।

"अच्छा !'

उसने गिरजे का पञ्चाङ्ग उठाया और बच्चों की तरह उत्सुकता से तारीख देखने लगा ।

"मुझे बाड़ी की धार ले चलो ।"

पड़ गया । हाँफता हुआ उसका मुँह खून से सना हुआ पड़ा था । एक मोमबत्ती मेज पर टिमटिमा रही थी और उसके घायल शरीर पर उसकी रोशनी पड़ कर उसके शरीर को और भी अधिक भूखा तथा काला बना रही थी । उसके दोनों भाई चुपचाप बिस्तर के पायते की ओर खड़े थे, जब कि बाप कमर में पकड़ कर काटता हुआ किसी अदृष्ट व्यक्ति से पूछ रहा था —

'क्या सचमुच यह अब जीवेगा या नहीं ?

परन्तु सात-आठ दिनों में अमस्मई फिर उठकर खड़ा हो गया यद्यपि वह कभी-कभी खाँसता रहता था और उसके मुँह से खून भी आता था । स्नानागार में वह अपने शरीर को भाप देता और मसालेदार वादका भी पीता । उसकी आँखों में निराशा पूर्ण कामी आग सुलग रही थी जिस से वह और भी अधिक सुन्दर प्रतीत होता था । वह यह बताना नहीं चाहता था कि उसे किसने मारा है । परन्तु, यार्देम्स्काया ने सब कुछ पता भी लगा लिया । उस पर हमला करने वालों में स्तेपान वास्की का नाम बुक्कन वाले और एक बरोपोनोव का मर्जोबियम दरबान था । जब मर्तामानोव ने अमस्मई से पूछा—

'क्या यह ठीक है ? तो उसने उत्तर दिया— 'मुझे कुछ पता नहीं ।

'झूठ बोलता है ।

मैंने उन्हें दगा कहा । क्योंकि मेरे ऊपर बात या कोई ऐसी दूसरी चीज हाथ आ गई थी ।

'तू कुछ-न कुछ छिपा रहा है । मर्तामानोव ने कहा ।

अमस्मई ने अस्वस्थ अर्धनिमीलित आँखों से देखते हुए कहा—

मैं ठीक हो जाऊँगा ।

"खूब खाओ !' मर्तामानोव ने सलाह दी और अपनी दाढ़ी में भुनभुनाया—'इसके लिए उनकी खाल खींची जानी चाहिए—उनके पर्यों को भूना जाना चाहिए ।

अब अलक्सेई की ओर से वह सतर्क हो गया और कहना चाहिए कि वह अब रुखाई के साथ उसे प्यार भी करने लगा था । अपने लड़कों को काम करने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से वह अब के लिए अपनी प्रेम भावनाओं को व्यक्त कर प्रदर्शनीय कठोर परिश्रम करने लगा ।

जो चाहे जो करो लेकिन किसी काम से नाक-भौंह मतो सिकोड़ो ! और वह बहुत-सी ऐसी बातें जिनकी कोई जरूरत नहीं थी, किया करता । किसी भी काम को जिसे वह हाथ में लेता था उसमें तत्परता फुर्ती और पशुप्रवृत्ति से लग जाता जिससे उसे पता लग जाय कि कहाँ से प्रतिरोध होगा, और उस पर कैसे विजय प्राप्त की जा सकेगी ।

उसकी पुत्रवधू की प्रसूति असाधारण रूप से लम्बी लटक गई थी । आखिरकार, नतात्या ने जब दो दिन की पीड़ाएँ झेलने के बाद एक कन्या को जन्म दिया तो वह अप्रसन्नतापूर्वक बोला—

'इसके क्या नाम ?'

'परमात्मा को उसकी कृपा के लिए धन्यवाद दो' उल्याना ने दृढ़ होकर सलाह दी—'आज 'एलीना लिम्पानित्सा' का दिन है ।

अच्छा !

उसने गिरजे का पञ्चाङ्ग उठाया और बच्चों की तरह उत्सुकता से तारीख देखने लगा ।

"मुझे बड़ी की ओर से बचो ।'

अपनी पुत्रवधू की छाती पर काना के नीलमजड़ित झुमके और पाँच सुनहरी चेर्वोनित्स[14] रखते हुए उसने कहा—

'लो! यद्यपि लड़का तो पैदा नहीं किया, फिर भी कोई बात नहीं, सब ठीक है।

और प्यार से पूछा—

"क्या पुरानी मछली तू तो खुश है न? जब तू पैदा हुआ था तो मुझे भी बहुत खुशी हुई थी।

अपनी पत्नी के रक्तहीन पीड़ित और लगभग अपरिचित चेहरे की ओर ल्योव घूर घूर कर देखता रहा। उसकी पत्नी गड्ढों में धँसी आँखें वहाँ से ऐसे देख रही थीं जैसेकि वे चिरविस्मृत लोगों और चीजों को स्मरण करने की कोशिश कर रही हों। उसकी पत्नी ने अपने फटे होंठों पर धीमे-धीमे जीभ को फिराया।

यह कुछ बोलती क्यों नहीं? प्यार से अपनी सास ने पूछा।

'यह पहले ही बहुत चीत्कार कर चुकी है—' उस्ताना ने उसे कमरे से बाहर धकेलते हुए कहा—

दो दिन और दो रात तक उसने पत्नी की चिल्लाहटें सुनी थीं। पहले तो उसे उस पर दया आई और फिर डर लगा कि कहीं वह मर न जाय। फिर उसकी चीख-पुकार और घर की गहमा-गहमी ने उसे बुरी तरह थका दिया, वह परेशान हो उठा। उसकी इच्छा होती थी कि वह कहीं दूर चला जाय, जहाँ उसे ये सब कुछ सुनाई भी न पड़े। परन्तु इन चिल्लाहटों में दुःख भरा लगा था क्योंकि वे उसकी अन्तरात्मा में भी हो रही थीं। जहाँ कहीं वह जाता फावड़ा और कुल्हाड़ी लिए ग्राम्य-नाटे और [illegible]

१४ चेर्वोनित्स—रूसी सोने का सिक्का।

की तरह इधर-उधर निःशब्द भागते हुए निकिता से उसकी भेंट हो जाती।

"लगता है कि वह इस आपे से खड़ी नहीं होगी" प्योत्र ने अपने भाई से कहा था। अपना फावड़ा रेत में गाड़ते हुए कुज़के ने पूछा—

"दाई क्या कह रही है ?"

"वह कहती है कि फ़िकर की कोई बात नहीं। ठीक हो जायगी। लेकिन तू क्यों इतना काँप रहा है ?"

"मेरे दाँत में दर्द है।"

बच्ची के पैदा होने के बाद साँझ के समय निकिता और तिखान के साथ छज्जे पर बैठे प्योत्र ने विचारपूर्ण मुस्कान से कहा—

"सास ने बच्ची को मेरे हाथों में डाल दिया। और मैं इतना खुश था कि मुझे उसका जरा भी बोझ नहीं लगा। उसे मैंने छत तक उछाल ही तो दिया। आश्चर्य है कि इतनी छोटी-सी चीज़ और उसके कारण इतना कष्ट !

तिखोन ख़ामोश से अपने गालों को चुपचाप रगड़ते हुए सदा की भाँति अपने शान्त स्वर में कहा—

"मनुष्य का सब कष्ट छोटी-छोटी चीज़ों से ही होता है।"

"यह क्या कहा ?" निकिता ने पूछा।

दरबान ने जँभाई लेते हुए उदासीनता से कहा—

"बात ऐसी ही है।"

तभी घर से साँझ के भोजन का बुलावा आ गया।

वह बच्ची बड़ी और स्वस्थ थी, परन्तु पाँच महीनों के

बाद ही कोयल भी जहरीली गैस से दम घुट जाने से वह मर गई। माँ को भी उस जहरीली गैस का असर हुआ था लेकिन बड़ी मुश्किलों से वह बच सकी थी।

"अब क्या हो सकता है!" बाप ने कब्रिस्तान में ग्योव को सान्त्वना देते हुए कहा था— बच्चे तो और भी पैदा होंगे। और अब हमारी यहाँ पर एक कब्र भी हो गई। इससे हमारा स्थायित्व और भी गहरा हो गया है। जब किसी मनुष्य के सगे सम्बन्धी उसके चारों ओर जमीन पर और जमीन में बीच भी हो जाते हैं तभी वह सुदृढ़ और प्रबल रूप से स्थापित हो पाता है।

ग्योव ने सिर हिलाया। वह अपनी पत्नी मतास्या को देख रहा था। झुक कर खड़े होने उसका बच्चू मासूम कर देने को काफी था। वह अपने पाँव के पास मिट्टी के एक छोटे-से ढेर पर अपनी आँखें गड़ाए थी। जिसको सावधानी के साथ उस ढेर का फावड़े से चिकना रहा था। वह अपने गालों से आँसुओं को इस कदर घबराहट और जल्दबाजी के साथ पोंछती थी कि लगता था जैसे वह अपना मुझी हुई लाज भाव से उकुला को जलने से बचाना चाहती हो। वह फुसफुसा कर कह उठी—

'हे परमात्मा! हे परमात्मा!'

मसकमेई कब्रिस्तान में क्रासों के बीच सिर पकड़ता हुआ घूम रहा था। वह बहुत दुबला हो गया था और उसके किनारे चेहरे पर अब बुढ़ापे के चिह्न उभर उठे थे। उसके गालों और ठोड़ी पर काले रोंए आने लगे थे जिनसे उसका सुन्दर मुखड़ा मुनसा मुरसा और धूँए-सा काला लगता था। उसकी वे पुष्ट आँखें आज अपनी काली भृकुटियों में छिपा धरोहर और अनिष्ट्री में गार लगाए को निहार रही थीं। वह धीमी आवाज में अधिकार और रौब जमाते हुए सरकता के साथ घूम रहा

और जब लोग उसकी बात को समझ न पाते तो वह उनको गाली दकर कहता—

"नहीं समझे !"

अपने भाइयों के प्रति उसका व्यवहार अद्भुतापूर्ण रहने लगा। नताल्या का वह एसे पुकारता जैसे कि वह कोई नौकरानी हो।

एक बार निकिता ने उसे झिड़क दिया—

नताल्या पर व्यर्थ ही गुस्सा क्यों किया करता है रे !'

'मैं बीमार आदमी हूँ।" उत्तर में उसने कहा था।

'वह तो बड़ी शान्त प्रकृति की है।"

'कोई बात नहीं वह सब सह लेगी।

अपनी बीमारी के बारे में प्रायः असमझाई अभिमान से ऐसी बातें किया करता जैसे वह बीमारी उसकी कोई विशेषता हो और उसके कारण वह अन्य दूसरे साधारण नश्वर प्राणियों से विभिन्नता लिए हो।

कब्रिस्तान से घर की ओर लौटते समय उसने अपने मामा से कहा था—

'हमें अपना कब्रिस्तान भी अलग बनाना चाहिए। एसे लोगों के साथ अपनी मृतात्माओं को सिटाना भी कितना अपमानजनक है !"

अर्तामानोव ने हल्की हँसी में उत्तर दिया—

"जरूर बनाएँगे। हमारे गिरजाघर कब्रिस्तान विद्यालय और अस्पताल सब अपने अलग हो जाएँगे। लेकिन इसमें कुछ समय भी तो लगेगा।

मस्त्रावा नदी का पुल पार करते हुए वे एक भिसमये जैसी मनुष्यमूर्ति के सामने से गुजरे जो फटी-पुरानी भूरी पोशाक पहन रेलिंग पर झुकी हुई खड़ी थी। प्रतीत होता था कि मदिरा-पान के कारण यह कोई बिगड़ा हुआ छोटा सरकारी अफसर है। उसके अस्त-व्यस्त भद्दे चेहरे पर भूरे भूरे मोटे बालों की दूँठियाँ चमक रही थीं और हिलते हुए होठों से काले दाँतों की झलक थी। अर्तामानोव ने ऊपर से अपना मुँह फेरते हुए थूका। लेकिन यह देखकर कि अलक्सेई ने इस तुच्छ मनुष्य को और विशेष आदर से सिर झुकाया है उसने पूछा—

'यह कौन है ?'

'यह पक्षोलाव अर्लोव है।'

यह तो मैं भी देख रहा हूँ कि अर्लोव है।

'यह एक बुद्धिमान और स्थिर मनुष्य है।' अलक्सेई ने कहा— इसके साथ बड़ा अत्याचार हो रहा है।

अर्तामानोव ने अपने भान्जे की ओर तेज निगाहों से देखा और चुप हो रहा।

गरमी का मौसम अपने साथ भयानक गर्मी और धूल लाया। ओका के पार जंगलों में जब-तब आग लग जाती। दिन में आसमान में दौड़ लगाते हुए चमकीले बादलों की छायाएँ पृथ्वी पर पड़तीं और रात में चन्द्रमा भद्दे लाल रंग का होकर क्षीण प्रकाश और तांबे के पत्तरों के समान लगनेवाले सितारों के बीच पृथ्वी पर झाँकने लगता। धुँधले आकाश का यह रूप नदी में प्रतिबिम्बित होता तो ऐसा मालूम पड़ता कि भूगर्भस्थित धुँआ किसी रंगहीन धारा के रूप में प्रवाहित हो उठा है।

एक उमसभरी शाम को भोजन के बाद अर्तामानोव-परि

चार बगीचे में चाय पी रहा था। मेपुल के वृक्षों के एक झुण्ड से वे लोग चारों ओर से घिरे हुए थे। यद्यपि मेपुल के वे वृक्ष अच्छी तरह बढ़ गए थे लेकिन उनकी पत्तियो क छत्रों की मेज पर कोई छाया नहीं पड़ रही थी। उस समय झींगुरों की झंकार और भौंरों की गुञ्जन सुनाई दे रही थी। समोवार[१२] अंगीठी पर चढ़ा हुआ सन सन शब्द कर रहा था और नतालिया चाय डालने के काम में शान्तिपूर्वक लगी हुई थी। उसके ब्लाउज के ऊपर काले बटन लगे हुए थे और उसमें म उसका बादामी रंग का गम्भीर उभार झलक रहा था। कुबड़ा निकिता सिर झुकाए पक्षियों के पिंजड़ों के लिए तीलियाँ छील रहा था। तभी प्योत्र बहुत धीमे स्वर में बोला—

'लोगों को नाराज करने से कोई फायदा नहीं हो सकता है। लेकिन पिताजी सदा ऐसा ही करते रहते हैं।

अलक्सेई शहर की ओर मुँह किए बैठा सूखी खाँसी खाँस रहा था। लगता था कि वह किसी के आने की प्रतीक्षा में लगा है।

अचानक धीमी आवाज में एक घण्टी टनटना उठी।

आग की घण्टी है?" अलक्सेई अपने हाथ को सिर तक उठाते हुए चीख उठा।

"तुम्हें हो क्या गया है? यह गिरजे की घण्टी के बजने का समय है।

अलक्सेई वहाँ से उठ कर चला गया। कुछ समय वहाँ खामोशी रही, निकिता ने बड़े कोमल स्वर में उस शान्ति को भङ्ग किया—

इसे सब जगह आग ही आग दिखती है।'

---

१२ समोवार—एक प्रकार का बर्तन जिसमें चाय का पानी उबाला जाता है

"तो हमें मिल के मजदूरों को बुलाना चाहिए।"

परन्तु तिग्राम ने उन्हें पहले से ही बुला लिया था और वे सब शोर मचाते हुए नदी की ओर दौड़े आ रहे थे।

'चढ़ कर मेरे पास तो आओ!' पाँवों को कम्पा कर छत की मुंडेर पर बैठे हुए चलचलोई ने उसे बुलाया।

कुबड़ा भी आज्ञाकारी की तरह ऊपर जा पहुँचा और बुदबुदाया—

मुझे उम्मीद है कि महात्मा डरेगी नहीं।

मुझे यह डर नहीं कि ज्योंही तेरी मरम्मत करके एक दूसरी कुब भी निकाल दूँगा।

क्यों? निकिता ने बीच में पूछा।

उसकी पत्नी की ओर निगाह उठाना छोड़ दे।' उत्तर मिला।

बड़ी देर तक तो कुबड़ा कोई जवाब न दे सका। उसे ऐसा लगा कि वह छत से नीचे की ओर मुड़क रहा है और दूसरे ही क्षण वह जमीन पर ढेर हो जायगा।

तुम्हारे कहने का क्या मतलब है? कहने से पहले कुछ सोच तो लेना चाहिए। वह बोला।

'बहुत अच्छा! बहुत अच्छा! मैं अन्धा नहीं हूँ। मगर कोई बात नहीं।' चलचलाई ने यह बात ऐसे विनोद से कही जैसे कि वह बहुत देर से कुछ बोला ही न हो। अपनी आँखों पर हाथों से छाया करके वह उस भयंकर आग की लपलपाती हुई लपटों को बड़ी देर तक देखता रहा जिन्होंने रात की निस्तब्धता को भंग कर, चारों ओर हाहाकार-सा मचा दिया था।

गहरी दिलचस्पी लेकर वह फिर कहने लगा—

यह आग तो बास्कों के यहाँ लगी है। उसके आँगन में कई एक कोडी तारकोल के पीपे पड़े हैं। लेकिन आग पड़ोसियों तक नहीं पहुँचेगी क्योंकि बीच में बगीचा है।

'मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिए' निकिता ने आग से छिन्न भिन्न अन्धकार की ओर देखते हुए विचार किया। लाल वायुमण्डल में पेड़ तप्त लोहे के बने हुए से खड़े थे और भूमि पर लोग खिलौनों के समान दौड़ धूप करते प्रतीत हो रहे थे। यहाँ तक कि उन लोगों को पतले और लम्बे कुन्दों को आग में झोंकते हुए भी वह देख रहा था।

'आग शानदार जल रही है' अलक्सेई ने आनन्दित होते हुए कहा।

'मैं स्नानगृह में चला जाऊँगा।' कुबड़े ने सोचा।

आँगन में सोते हुए प्योत्र की शिकायतभरी आवाज उन्होंने सुनी। तिखान व्यालोव ने उत्तर में असमान से कुछ कहा था। उस समय नताल्या खिड़की में खड़ी ऐसी लग रही थी जैसे चौखटे में जड़ी वह कोई एक तस्वीर हो।

काली-काली चिमनियों के चारों तरफ अंगारे झिलमिला रहे थे। आग ने वहाँ सब कुछ स्वाह कर दिया था और जब तक वहाँ आग की स्वर्णिम छाया-सी न जम गई निकिता तब तक छत पर ही बैठा रहा। फिर वह नीचे उतरा और द्वार से बाहर निकलने को घूमा तो पानी से तरबतर और धूएँ से काले पड़े पिता से उसकी मुठभेड़ हो गई। उसका पिता बग़ैर टोपी के और चिथड़े-चिथड़े हुए कोट को पहने हुए था।

'तू कहाँ जा रहा है?' अर्तामानोव ने गुस्से में पूछा और निकिता को फिर आँगन में ही धकेल दिया। छत पर

उसकी किसी सफेद आकृति को देख कर उसने भयंकर गुस्से में अलक्सेई को आवाज दी—

'और इस पर तू क्या कर रहा है ? नीचे उतर कर आ ! मूर्ख तुझे स्वयं सावधानी के साथ रहना चाहिए ।'

निकिता बगीचे में पहुँच कर पिता के कमरे की खिड़की के नीचे बेंच पर बैठ गया । लेकिन जल्दी ही उसने दरवाजा भिड़ने का खटाका और पिता अर्तामानोव को ऊपर वाले कमरे में अधिकारपूर्ण शब्दों में कहते हुए सुना—

'क्या तू अपने को बरबाद कर मेरे सिर बुराई लादना चाहता है ? तुझे मैं सिखा दूँगा कि ।'

अलक्सेई पतली आवाज में चीखा—

'आपने ही तो मुझे यह मार्ग बताया है ?'

'चुप रह ! परमात्मा को धन्यवाद दे कि अब वह बदमाश बात भी नहीं कर सकता ।'

बिना किसी आहट के निकिता दीर्घता से अपने स्थान से उठा और ग्रीष्म-कुटीर में वापिस जा पहुँचा ।

अगले दिन सुबह चाय के समय बाप ने बताया—

वह अग्निकाण्ड था और उस शराबी घसीसाज ने उसे किया था । इस पर लोगों ने उसे खूब मारा-पीटा है । लगता है अब वह मर ही जायगा । कहा जाता है कि आर्मी ने उसे बरबाद कर दिया है और अलोशा से भी उसका कोई पुराना झगड़ा है । लगता है इसके पीछे कोई रहस्य छिपा हुआ है ।

अलक्सेई शान्ति के साथ दूध पी रहा था । निकिता के हाथ और टाँग में जितना उसने घुटनों के बीच रख कर चार से

दबा लिया था। उसकी इन हरकतों को देख कर बाप ने पूछा—

"क्यों रे, तुझे क्या हो गया है?

'मैं कुछ अस्वस्थता अनुभव कर रहा हूँ।'

"तुम सभी बीमार हो। तन्दुरुस्त तो अकेला मैं ही हूँ।"

और चाय को समाप्त किए बिना ही प्याले को वहीं रखकर वह गुस्से में वहाँ से चला गया।

अर्तामानोव के मिल में लोगों की संख्या बढ़ती जा रही थी। मिल से दो वेर्स्त[17] दूर तक छितरे बिखरे खड़े चीड़ के पेड़ों के बीच घास से ढकी पहाड़ियों के दोनों ओर छोटी-छोटी झोंपड़ियाँ खड़ी हो चुकी थीं जिनके चारों ओर न कोई बगीचा था और न कोई चहारदीवारी ही। दूर से देखने पर वे मक्खी के छत्तों के समान दिखाई देती थीं।

एक उथले नाले में जो कभी किसी अज्ञात नदी का तल था, अर्तामानोव ने बिना परिवारों के मजदूरों के लिए बरकें बनवा दी थीं। यह लम्बी इकमंज़िला इमारत जिसमें तीन चिमनियाँ और गरमी से राहत पाने के लिए छोटी-छोटी खिड़कियाँ लगी थीं एक तबेले के समान दिखाई देती थी। इस इमारत को मजदूरों ने 'चोरों का महल' नाम दिया हुआ था।

इल्या अर्तामानोव अब बढ़-चढ़ कर शेखी मारता शोर-शराबा किया करता। परन्तु उसमें अभी वह अकड़ पैदा नहीं हुई थी जो प्राय धनिकों में आ जाती है। मजदूरों से वह सदा मिल-जुलकर रहता। उनके ब्याह शादियों में सम्मिलित होता उनके बच्चों का धर्मपिता बनता और छुट्टी के दिन उनके बीच बैठकर गपशप लड़ाता। उन्होंने उसके सामने सुझाव रखा कि ग्राम के

१७ वेर्स्त—एक रूसी दूरी माप जो आधे मील के बराबर होता है।

साफ हुए जङ्गलों और फालतू कमज़ोर ज़मीन में सन बोने के लिए किसानों से कहा जाय। इसका परिणाम भी बहुत अच्छा निकला। मजदूर अपने दयालु मालिक की प्रशंसा में गीत गाते और उसे अपने जैसा ही एक भाग्यवान किसान भाई समझते थे। वे अपने नौजवान लड़कों के सामने इसका उदाहरण रखकर कहा करते—

'उससे सीखो कि कारोबार कैसे किया जाता है।'

इधर इल्या भी अपने लड़कों से कहा करता—

'किसानों और मजदूरों में नगरवासियों की अपेक्षा अधिक समझ होती है। नगरवासी हड्डियों से कमज़ोर तो अवश्य होते हैं लेकिन उनके मस्तिष्क अधिक शक्तिशाली होते हैं। नगरवासी लालची होते हैं और उनमें साहस और हौसला नहीं होता। उनका कारोबार सुदृढ़ आधारों पर खड़ा न होने के कारण चिरस्थायी नहीं होता। नगरवासियों को किसी वस्तु के मापने का ज्ञान नहीं। किसान और मजदूर अपने पर काबू रखते हैं सचाई की सीमा में रहते हैं और सचाई उनके लिए सीधी-सादी चीज़ है उदाहरण के तौर पर धर्म और राजा ही उनके ईश्वर हैं। किसान बहुत सरल स्वभाव का होता है और तुम्हें उनका ही सहारा रखना है। प्योत्र तू मजदूरों के साथ कठोर है। तू कारोबार के अलावा उनसे कोई बातचीत ही नहीं करता। यह अच्छी बात नहीं। तुम्हें कभी कभी मजाक़ भरी हल्की बातचीत भी करनी चाहिए। उनके साथ हँसी-मज़ाक भी करनी चाहिए। हँसी मज़ाक के साथ कही गई बातें जल्दी समझ में आ जाती हैं।

मुझे ऐसा महसूस करना नहीं आता प्योत्र ने कहा और स्वभाववश उसने अपना काम [illegible]।

"तो सीखा। मिनट भर की मखौल घण्टे भर के लिए शक्ति से भर देती है। प्रसकर्ई भी उन लोगों के साथ उचित व्यवहार नहीं करता। वह उन पर बहुत चिल्लाता है और छोटी छोटी बातों पर उनसे झगड़ा कर बैठता है।

'वे सब ढोलबाज और आलसी हैं। —प्रसकर्ई ने बाद में कहा।

मर्तामानोव ने उसे कड़ी आवाज से झिड़क दिया—

'तू उन लोगों के बारे में जानता ही क्या है ? और इतना कह लेने के बाद उसके दाढ़ी-मूँछ से छिपे अधरों पर मुस्कराहट खेल गई। उसे छिपाने के लिए उसने होठों पर हाथ रख लिया और तभी उसे स्मरण आया कि किस प्रकार साहस और समझ से प्रसकर्ई ने कब्रिस्तान में द्रयमोव-वासियों के साथ विवाद किया था। वे मर्तामानोव के मजदूरों को अपने यहाँ दफनाने नहीं देना चाहते थे। हारकर उसने पम्यालोव से भूर्जवृक्ष-वन का एक टुकड़ा खरीदा और उसे साफ कराके अपने प्रयोगार्थ एक कब्रिस्तान बनाया।

"कब्रिस्तान उस समय तिख़ोन व्यालोव ने निकिता के साथ पतले-पतले कमजोर पेड़ों को काटते हुए सोचा था। 'हम शब्दों का ठीक प्रयोग नहीं करते। यह कहलाता है—कब्रिस्तान परन्तु यह तो अनन्तकाल के लिए शाश्वत अतिथिशाला है—हमारा शाश्वत-वास है। यही है हमारा शाश्वत-घर और है एक शाश्वत-नगर।

निकिता देख चुका था कि तिख़ोन व्यालोव किस कुशलता और दृढ़ता के साथ काम में लगा रहता है। उसे व्यर्थ के कहने-सुनने में विश्वास नहीं, वह अपने श्रम पर भरोसा करके ही काम करता है। उसके पिता मर्तामानोव की तरह वह भी

साफ हुए मजदूरों और फालतू कमजोर जमीन में सन बोने के लिए किसानों से कहा जाय। इसका परिणाम भी बहुत अच्छा निकला। मजदूर अपने दयालु मालिक की प्रशंसा में गीत गाते और उसे अपने जैसा ही एक भाग्यवान किसान भाई समझते थे। वे अपने नौजवान लड़कों के सामने इसका उदाहरण रखकर कहा करते—

उससे सीखो कि कारोबार कैसे किया जाता है।

इधर इल्या भी अपने लड़कों से कहा करता—

'किसानों और मजदूरों में नगरवासियों की अपेक्षा अधिक समझ होती है। नगरवासी हड्डियों के कमजोर तो अवश्य होते हैं लेकिन उनके मस्तिष्क अधिक शक्तिशाली होते हैं। नगरवासी लालची होते हैं और उनमें साहस और हौसला नहीं होता। उनका कारोबार मुदृढ़ आधारों पर खड़ा न होने के कारण चिरस्थायी नहीं होता। नगरवासियों को किसी वस्तु के मापने का ज्ञान नहीं। किसान और मजदूर अपने पर काबू रखते हैं सचाई की सीमा में चलते हैं और सचाई उनके लिए सीधी-सादी चीज है, उदाहरण के तौर पर अन्न और राजा ही उनके ईश्वर हैं। किसान बहुत सरल स्वभाव का होता है और तुम्हें उसका ही सहारा रखना है। प्यात्र तू मजदूरों के साथ कठोर है। तू कारोबार के अलावा उनसे कोई बातचीत ही नहीं करता। यह अच्छी बात नहीं। तुम्हें कभी-कभी मनोरंजन की हल्की बातचीत भी करनी चाहिए। उनके साथ हँसी-मजाक भी करनी चाहिए। हँसी मजाक के साथ कही गई बातें जल्दी समझ में आ जाती हैं।

'मुझे हँसी-मजाक करना नहीं आता' प्यात्र ने कहा और स्वभाववश उसने अपने बाल ऊपर को खींचे।

"लो सीखो। मिनट भर की मशीन घण्टे भर के लिए शक्ति स भर देती है। मसकर्ई भी उन लोगों के साथ उचित व्यवहार नहीं करता। वह उन पर बहुत चिल्लाता है और छोटी छोटी बातों पर उनस झगड़ा कर बठता है।

"व सब धोखेबाज और आलसी हैं। —मसक्सई न आग म कहा।

मर्तामानोव न उस कड़ी आवाज स झिड़क दिया—

'तू उन लोगों क बारे में जानता ही क्या है? और इतना कह लन के बाद उसक दाढ़ी-मूँछ स छिपे अधरों पर मुस्कराहट खल गई। उस छिपान के लिए उसन होठों पर हाथ रख लिया और तभी उस स्मरण आया कि किस प्रकार साहस और समझ से मसक्सई ने कब्रिस्तान में ब्रयमाब-वासियो क साथ विवाद किया था। वे मर्तामानोव क मजदूरों का अपन यहाँ कफनाना नहीं देना चाहत थे। हारकर उसन पम्यालोव स भूखण्ड-खण्ड का एक टुकड़ा खरीदा और उसे साफ कराके अपने प्रयोगार्थ एक कब्रिस्तान बनाया।

'कब्रिस्तान, उस समय तिखोन म्यालाव न निकिता क साथ धतले-धतले कमजोर पड़ों का काटते हुए सोचा था। हम शब्दों का ठीक प्रयोग नहीं करते। यह कहलाता है—कब्रिस्तान, परन्तु यह तो अनन्तकाल के लिए शाश्वत-प्रतिपिण्डशाला है—हमारा शाश्वत-वास है। यही है हमारा शाश्वत-घर और है एक शाश्वत-नगर।

निकिता देख चुका था कि तिखोन म्यालाव किस कुशलता और दृढ़ता के साथ काम में लगा रहता है। उस व्यर्थ के कहने-सुनने में विश्वास नहीं वह अपन श्रम पर भरोसा करके ही काम करता है। उसके पिता मर्तामानोव की तरह वह भी

मारे ताकि वह चुप हो जाय। परन्तु तिखोन अपनी तिरछी आँखों से सुदूर में देखता हुआ, बिना घबराहट के सहज शान्त भाव से कहता रहा—

'और, यदि वह दयालु नहीं है तो दयालु होने का बहाना करती है। सभी स्त्रियाँ मनोरंजनप्रिय होती हैं। एक भी स्त्री ऐसी नहीं जो कि पर-पुरुष के लिए प्रयत्न न करती हो। व देखती हैं कि शक्कर से मधुर भी कोई और वस्तु है या नहीं ? भाई हम लोगों के लिए, इसकी कोई आवश्यकता नहीं—बस एक या दो में ही हमारा दिल भर जाता है। और तू इसी में सूखा जा रहा है। तू कोशिश तो कर—उससे बात कर ! हो सकता है कि वह सहमत हो जाय।"

निकिता को उसके शब्दों में मित्रतापूर्ण अनुकम्पा दिखाई दी, जैसी कि उसमें कभी देखी नहीं थी। उसे अपना गला भिंचता-सा लगा और साथ ही उसने ऐसा अनुभव किया कि तिखोन उसे नंगा कर उसकी पोल खोल रहा है।

'तुम व्यर्थ की बातें किए जा रहे हो।' उसने कहा।

शहर में गिरजे का घण्टा बज रहा था जो संध्या कालीन प्रार्थना के लिए लोगों को बुला रहा था। तिखोन ने अपने सिर पर के पौद के बोझ को ठीक किया और अपने लोहे के फावड़े से जमीन को टटोल-टटोल कर पहले जैसे शान्त स्वर में कहता हुआ आगे बढ़ने लगा—

'तू मुझ से डर मत। मुझे तुझ पर दया आती है। तू बहुत अच्छा नौजवान है—और बड़ा कुतूहलप्रिय है। तेरी पीठ पर कूब होने के बावजूद तेरा दिल झुका नहीं।"

निकिता का भय नैराश्य की तरङ्गों में घुल गया। उसकी आँखें धुँधली पड़ गईं और वह शराबी की तरह लड़खड़ाता

लगा। वह विश्राम के लिए भूमि पर गिरने-सा लगा। धीरे से उसने प्रार्थना के स्वर में कहा—

'इसे आप अपने तक ही सीमित रखें रखेंगे न ?"

"मैंने कहा न कि यह बात बिल्कुल सुरक्षित है।

इस बात को भूल जाँय और किसी से इस बारे में कुछ न कहें।'

'नहीं कुछ नहीं कहूँगा किसी से कहने की जरूरत भी क्या है ?'

इस प्रकार दोनों बाकी रास्ते चुपचाप चलते रहे।

कुबड़े की नीली-नीली आँखें और अधिक बड़ी, सोम और विषादपूर्ण हो गई। वह लोगों के कन्धों से परे शून्य में निहारता रहता और पहले से अधिक चुप और गूढ़ बन गया। परन्तु नताल्या भाँप गई कि कुछ-न-कुछ बात जरूर है।

आजकल तू उदास-सा क्यों रहने लगा है ?" वह पूछ बैठी।

"काम बहुत है' और इतना कह कर जल्दी ही दूर चला गया। स्त्री को इससे कुछ आघात पहुँचा। क्योंकि ऐसा पहली बार ही नहीं हुआ था—उसका देवर अब उसके साथ पहले जैसा प्रसन्न चित्त नहीं रहता था।

नताल्या भी घर में अकेली ही रहती थी। पिछले चार साल में वह दो लड़कियाँ पैदा कर चुकी थी और अब फिर उसके पाँव भारी हो चले थे।

"क्या मामला है तू लड़कियाँ ही पैदा कर रही है— इसका क्या किया जाय ?' ससुर ने चिढ़ते हुए कहा था, और जब दूसरी लड़की हुई तो उसने कोई भेंट भी नहीं दी। और

फिर व्योम से भी शिकायत करते हुए कहा—

"मुझे पोतों की जरूरत है न कि जमाइयों की । क्या मैं परायों के लिए कमाई कर रहा हूं ?'

उसके प्रत्येक शब्द से नतास्या अपने को अपराधिनी अनुभव किया करती । वह देखा करती कि उसका पति भी उससे अप्रसन्न रहने लगा है । रात को उसके बराबर में लेटी वह खिड़की से सुदूर आकाश में तारों को देखती और पेट पर हाथ फेरते हुए चुपचाप मनौती करती—

'हे परमात्मा ! एक बेटा !'

कभी-कभी उसका दिल चाहता कि वह अपने पति और ससुर पर चिल्लाए—

मैं जान-बूझ कर तुमसे बदला लेने के लिए ही लड़कियां पदा कर रही हूँ ।

उसकी इच्छा हुआ करती कि वह कोई असाधारण काम करके उन्हें दिखाए—एक ऐसा काम जिससे सभी आश्चर्य में पड़ जांय—एक अनोखा काम जिससे वे उसके प्रति दया का बर्ताव करने लगें अथवा कोई बुरा काम ही जिससे लोग भयभीत हो जांय । लेकिन वह अच्छी या बुरी कोई बात सोच नहीं पाती थी ।

भोर में ही उठ कर वह रसोई में जाती और नौकरानी के साथ चाय के साथ कुछ खाने के लिए तय्यार करती । फिर वह बच्चियों को दूध पिलाने को ऊपर जाती । ससुर पति और दवरों के साथ चाय पीती । बच्चियों को फिर दूध पिलाती । गृहस्थी के लिए कपड़े साफ करती सींती और मरम्मत करती । दुपहर के भोजन के बाद बच्चों के साथ वह बगीचे में जाती और वहां वह सांझ की चाय तक रहती । वहां गोसा बनाने वाली जिन्दादिल और हंसमुख मजदूर स्त्रियां, बगीचे में झाड़ कर

खुशामद के लहजे में बच्चियों की सुन्दरता की प्रशंसा करतीं। इस पर मतास्या मुसकरा देती। परन्तु, इन प्रशंसाओं में उसे कोई विश्वास न था क्योंकि बच्चियाँ उसे सुन्दर नहीं लगती थीं।

कभी-कभी उसे पेड़ों के बीच उसके साथ सहानुभूति रखने वाले देवर निकिता की आकृति की झलक दिखाई देती। लेकिन आजकल जब भी वह उससे कुछ क्षण अपने साथ बैठने का आग्रह करती तो वह अपराधी की तरह उत्तर देता—

'क्षमा करना मेरे पास समय नहीं।

धीरे-धीरे उसके मन में अस्पष्ट कटु विचार पैदा होते गए। कुबड़े की सहानुभूति उसे कृत्रिम अनुभव होने लगी। वह उसके पति का रखवाली करने वाला एक कुत्ता मात्र था, जो अलक्सेई तथा उसकी जासूसी करने के लिए बैठाया गया था। अलक्सेई से वह डरती थी क्योंकि वह उसे पसंद था। वह जानती थी कि यदि वह सुन्दर देवर उसे चाहे तो वह अपने को रोक न सकेगी। परन्तु, वह उसे चाहता ही न था। यहाँ तक कि वह उस पर नज़र तक न डालता था। इससे उसे चिढ़ हो गई थी और वह उस विनोदी, जिन्दादिल और साहसी नवयुवक के प्रति शत्रुता की भावना रखने लगी।

वे सब लोग शाम को पाँच बजे चाय पीते और फिर सात बजे भोजन किया करते थे। नतास्या बच्चों को फिर नहलाती, दूध पिलाती और उन्हें सुला देती। इसके पश्चात् घुटनों के बल झुक कर वह पति के निकट बड़ी देर तक प्रार्थना करते हुए पुत्र की कामना करती रहती। यदि पति की उसे अपने पास बैठाने की इच्छा होती तो वह उसकी ओर करवट बदल कर कह उठता—

''बस, बहुत हो गया। अब इधर आ!

इस पर वह जल्दी ही अपने वक्ष पर क्रास का चिन्ह बना कर प्रार्थना को अधूरा छोड़ देती और उसके पास आज्ञाकारिणी की तरह आकर लेट जाती । शायद ही कभी व्याज न ठिठोली करते हुए कहा होगा—

“इतनी लम्बी प्रार्थनाएँ किसलिए करती है ? यदि तुम्हें ही सब चीजें प्रार्थना से मिल जाँय तो दुनियाँ में औरों के लिए क्या रह जायगा ?

रात में जब कभी बच्चों के रोने से वह जाग उठती तो उन्हें चुप कर के फिर लिटा देने के बाद वह खिड़की के पास जा खड़ी होती । वहाँ न बगीचे और आसमान की ओर देखते हुए निःशब्द भाव से वह स्वयं अपने अपनी माँ, ससुर और पति के बारे में सोचने लगती । फिर वह सोचती उस कठोर परिश्रमपूर्ण दिन के बारे में जो इतनी जल्दी बीत कर उसकी आयु में एक दिन और बढ़ा देता था । उसे परिचित ध्वनियों को मजदूर कन्याओं के कभी आह्लाद से भरे और कभी विषादपूर्ण गीतों और मिल की खट-खट शोर-शराबा को सुन कर बड़ा अजीब-अजीब-सा वातावरण लगता । मिल में हमेशा बन्द बाजी से भरा और अनवरत रूप से होता । उस ओर की प्रतिध्वनियाँ सभी कमरों में फैलती रहतीं पेड़ों की सरसराहट से जा मिलतीं और खिड़की के शीशों से आ टकरातीं । श्रम की ये आवाजें उसके ध्यान को अपनी ओर खींच लेतीं और उसको कुछ भी विचार न करने को बाध्य करतीं ।

परन्तु, रात्रि की निस्तब्धता में जबकि सम्पूर्ण प्राणि-जगत शान्ति के साथ नींद में पड़ा होता तो वह निकिता द्वारा सुनाई हुई तातारा द्वारा पकड़ी स्त्रियों की डरावनी कहानियों, अनेक कठोर तपस्वियों और संतों की कष्टमय जीवनियाँ तथा मधुर

सौभाग्यशील जीवन की कहानियों का स्मरण करती। परन्तु उसे बहुधा दु:खद, डरावने विचार ही बार-बार आकर घेर लिया करते।

उसका ससुर उसकी ओर ऐसे देखता था जैसे कि वह वहाँ विद्यमान ही न हो। यह बात तो सबसे अच्छी थी ही परन्तु जब भी वह बैठक या कमरों में अकेला मिल जाता तो वह ऐसी निर्लज्जता से छाती से लेकर घुटनों तक देखता और ऐसी आवाजें करता कि उसे बड़ी घृणा हो जाती।

उसका पति रूखा और लापरवाह था। वह अनुभव करती थी कि जब कभी भी वह उसकी ओर देखता है जो ऐसे निहारता है, जैसे वह अपनी पीठ पीछे की किसी चीज को उसे देखने न दे रही हो। अक्सर कपड़े उतार कर वह तुरन्त लेटता नहीं था बल्कि देर तक बिस्तर के किनारे बैठा रहता। उसका एक हाथ रजाई में छिपा और दूसरा कान के पास रखा होता अथवा उससे वह दाढ़ी में छिपे घावों को ऐसे रगड़ता रहता जैसे कि उसके दाँत में दर्द हो रहा हो। उसका वह कुरूप चेहरा या तो नाराजगी से सूजा हुआ-सा रहता अथवा वह गुस्से में भरा हुआ होता था। ऐसे समय नतास्या उसके साथ बिस्तर में लेटने से बहुत डरती थी। वह बहुत ही कम बोलता था और कभी बोलता भी था तो सिर्फ घरेलू मामलों का ही जिक्र करता था कभी-कभी अपने कृषक-जीवन और जागीरदारों के जीवन की बातें याद करता रहता, जो नतास्या की समझ में बिलकुल नहीं आती थी। सर्दियों में बड़े दिनों की छुट्टियों में वह उसे गाड़ी में बैठा कर नगर में ले जाता। उस गाड़ी को एक बहुत विशाल काला घोड़ा खींचता था जो रोष के साथ बड़े आवेश में इधर-उधर सिर हिलाता था। नतास्या इस जानवर से बहुत

डरती थी और उसका यह डर तब और भी बढ़ जाता था जब तिखोन व्यासोव कहता—

"यह सरदारों का घोड़ा है इस पर साधारण आदमी तो काबू पा नहीं सकता।

नताल्या की माँ प्रायः उसके घर आती रहती थी। उसे अपनी माँ के स्वतंत्र जीवन और उसकी आँखों में प्रसन्नता की झलक देखकर ईर्ष्या होती। ईर्ष्या का यह भाव तब और भी उग्र हो जाता जब वह देखती कि उसका ससुर उसकी माँ के साथ नवयुवकों की तरह स्वच्छन्दता पूर्वक ठट्ठा करता है। और आत्मसंतुष्टि के साथ अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ अपनी सहवासिनी और प्रमिका की ओर प्रशंसात्मक दृष्टि से देखता है। उसकी माँ भी उसके सामने कूल्हों को मटकाती मंथर गति से निकलती और निर्लज्जतापूर्वक अपनी सुन्दरता और अङ्ग-सौष्ठव का प्रदर्शन करती। सारा नगर बाद्मायोवा और उसके समधी के सम्बन्धों के बारे में जान गया था और बुरी तरह निन्दा करने लगा था। लोग उससे घृणा करते थे। नताल्या की उच्च घरानों की पुरानी सहेलियाँ इस कारण उससे किनारा कर चुकी थीं, क्योंकि ऐसी पतित स्त्री की पुत्री, एक परदेसी पापी ससुर की पुत्र-वधू और अभिमान से चूर पति की पत्नी के पास उन्हें आने की मनाही कर दी गई थी। अब नताल्या को अपने बचपन की छोटी-मोटी आमोद प्रमोद की स्मृतियाँ बड़ी स्पष्टता से याद आती थीं।

उसे यह देखकर बड़ा दुःख होता था कि उसकी माँ जो पहले बहुत सीधी और सरल थी अब लोगों से प्रवंचना और असत्यतापूर्ण व्यवहार करने लगी थी। वह स्पष्टत व्योम से डरती थी, ताकि वह उसके सम्बन्ध को न समझ जाय। अतः उसके साथ वह घृणामद से बात करती और उसकी व्यवहार

कुमसवा पर विस्मय प्रकट करती। वह मलक्सई की परिहास पूर्ण आँखों से डरती थी और प्राय उसके साथ विनोदपूर्ण परिहास भी करती। उसके साथ गुप्त कानाफूसी भी करती और प्राय उसे उपहार भी देती। सन्त दिवस[18] पर उसने उसका चीनी की घड़ी भेंट की थी। उसमें चरती हुई बकरियों के बीच पुष्प मुकुट और हार से सुसज्जित एक स्त्री अंकित थी। इस सुन्दर उपहार की सब ने प्रशंसा की थी।

'कोई इसे मेरे पास धरोहर के रूप में रख गया था, वस तीन रूबल में। यह असली तो नहीं—बहुत पुरानी जो है। जब मस्याशा शादी करेगा तो घर को सजाने के लिए कुछ तो हो जायगा।'

मैं ही अपना घर सजा लूँगी। —नताल्या ने सोचा।

माँ, नताल्या से घर गृहस्थी के बारे में पूछती और उसे देर तक बहुत कुछ बताती और शिक्षाएँ देती।

'सप्ताह के बीच के दिनों में मेज पर नेपकिन न रखा करो। वे मर्दों की मूँछों और दाढ़ियों से जल्दी मैले हो जाते हैं।'

यद्यपि वह पहले लिदिया को चाहती थी परन्तु अब वह उसे देखकर मुँह सिकोड़ एक तरफ हो जाती। उसके साथ ऐसे बात करती जैसे नौकर चाकरों से करते हैं जिन पर बेईमानी का सन्देह हो। उसने अपनी लड़की को भी सावधान कर दिया—

"ध्यान रखना, इसे बहुत मुँह मत लगाना। छुटे बड़े चालाक होते हैं।

---

18 सन्त-दिवस—किसी भी सन्त के नाम पर यह दिन हो सकता है।

कई बार नताल्या न अपनी माँ से पति की शिकायत करने की सोची कि वह उस पर विश्वास नहीं करता और कुबड़े को उस पर निगरानी के लिए छोड़ा हुआ है। परन्तु, किसी न किसी कारण से वह झिझक जाती।

सब से बढ़ कर बुरी बात तब होती जब नताल्या की माँ इस बारे में चिन्ता करती कि वह लड़का क्यों नहीं पैदा कर सकती। वह उसके पति के रात्रि-सहवास के बारे में पूछती और निर्लज्जता से बिना कुछ छिपाए प्रश्न करती। उसकी सजग आँखें मुस्कराती और उसकी कोमल ध्वनि और अधिक मन्द और मधुर हो जाती। नताल्या के लिए माँ का कौतूहल असह्य हो उठता और जब उसका ससुर उसकी माँ को अपने पास बुलाता तो वह प्रसन्न हो उठती।

'समधिन ! सवारी के लिए घोड़ा तय्यार करा दूँ !

नहीं मैं पैदल ही चली जाऊँगी।'

'बहुत अच्छा मैं ही तुम्हें पहुँचा आऊँगा।

नताल्या का पति सोच कर कहा करता—

'तुम्हारी माँ बड़ी समझदार है पिताजी को वश में रखती है। जब वह यहाँ होती है तो पिता हम से बहुत नम्र रहते हैं। उन्हें अपना घर बेच कर हमारे यहाँ ही आ जाना चाहिए।

ऐसा तो नहीं होना चाहिए।' नताल्या कहना चाहती, परन्तु कहने का साहस न कर पाती और उलटी माँ पर ही नाराज़ होती—क्योंकि वह एक भूखी प्रेमिका थी।

वह बगीचे के तरफ की खिड़की के पास सीने-पिरोने का सामान लेकर बैठ जाती। और वहीं से वह स्नानागार के पास

बरियों के भ्रूरों के परे तिलोम और निकिता की आमोपर्वी बात चीतों को तथा कारखाने की ओर से आने वाले कोलाहल के बीच दरबान का शांत स्वर सुनती ।

"जब लोग दूसरों से ऊब जाते हैं तो वे एक-दूसरे से इकट्ठे ही ऊबते हैं और नतीजा होता है व्यापक असंतोष ।'

'कितनी सच बात है ?' नतास्या ने सोचा परन्तु निकिता ने मधुर ध्वनि में उसे झिड़का—

"षड्यन्त्र की बातें करते हो ? अच्छा तो नाच रंग, खेल कूद के बारे में क्या विचार हैं ? क्या बिना लोगों के आमोद प्रमाद सम्भव है ?'

हाँ यह भी ठीक है —वह विस्मित हो सहमति भाव से सोचने लगी ।

वह देख रही थी कि उसके आस-पास के सब लोग बड़े आत्मविश्वास से आपस में बातचीत करते थे सभी अच्छे जानकार थे । वह साफ़-साफ़ देख रही थी कि उनके शब्द कितने नपे-तुले और ठीक होते थे । वे एक-दूसरे से जुड़े निकलते आते थे और दूसरों की बातों की ठीक-ठीक काट करते, जैसे कि प्रत्येक के पास अपना-अपना कठोर सत्य हो । सब लोग अपने-अपने धर्मों में एक-दूसरे से विभिन्न थे । वे भलीभांति अलंकारों के साथ बोलते उनके वे शब्द धनी की चाँदी या सोने की जंजीरों के समान झनझनाते रहते । परन्तु उसके पास ऐसे शब्द नहीं थे जिनसे कि वह अपने विचारों का परिणाम पहुँचा सकती । उसके विचार पतझड़ की धुन्ध के समान अस्पष्ट थे और उसके लिए भार मात्र थे । इसी कारण वह मूर्ख बनी हुई थी । उसने बड़े विषाद और गहरी मनोवेदना से सोचा—

"बस, मैं ही निरी मूर्ख हूँ, न कुछ जानती हूँ, और न समझती हूँ।"

"रीछ को ही लो, वह जानता है और देखता भी है कि मधु कहाँ है। इसीलिए उसका नाम मधुविद् है[१५]।" तिखोन रस भरियों के झाड़ों के पीछे से बोला।

'बात भी ऐसी ही है' मतास्या ने सोचा और एक अंग कम्पन से उसे याद आया कि असक्सेई ने किस प्रकार उसके प्यारे रीछ के बच्चे को मार दिया था। तेरह महीने का यह रीछ का बच्चा उसके आँगन में पालतू कुत्ते की तरह चलता रहता था। रसोई में आकर वह पिछली टाँगों के बल खड़ा हो जाता, गुर्राता और अपनी छोटी-छोटी अजीब-सी आँखों को मटकाता रहता। उन आँखों को देख कर हँसी आती थी। वह सभी को खूब हँसाता था। वह बड़ा भला था और लोगों की कृपा को समझता था। सब उसे प्यार करते थे। निकिता तो उसे बहुत ही प्यार करता था। वह उसके मोटे-मोटे बालों को साफ करता कंघी करता और नदी पर अपने साथ नहलाने को ले जाता। वह भी निकिता को बहुत चाहता था और यदि निकिता कहीं दूर चला जाता या इधर-उधर हो जाता तो वह अपनी थुथनी उठाए बड़ी चाह के साथ उसकी गंध को टोहता हुआ आँगन में चक्कर काटता रहता। जब-तब खिड़की के शीशों से भी वह आ टकराता और एक बार तो उसकी चौखट भी तोड़ दी। मतास्या रस और रोटी से उसका आतिथ्य करती

---

१५ मधुविद्—रूसी भाषा में रीछ को मिद्वद् कहते हैं। और, इसी भाषा में मिद् (म्याद) मधु या शहद को भी तथा वेद—अर्थात् जानकार को भी कहते हैं। अतः रीछ का नाम मिद्वेद् या मधुविद् है—जो दो शब्दों से बना हुआ है।

और वह भी सीख गया था कि तश्तरी में पड़ी राब में कैसे रोटी भिगो-भिगो कर खाया करते हैं। खाकर वह बड़े आनन्द के साथ गुर्राता और अपने घने बालों के शरीर को पिछली टांगों पर तोलकर राब टपकती रोटी को पैम-पैने दाँतों वाल लाल-लाल मुँह में डाल कर राब से सन, चिपचिपे पंजों को चाटने लगता। उसकी सरल भाली भोली आँखें ऐसे समय आनन्द से चमक उठतीं। वह नताल्या के घुटनों से अपने बालों का कंधा रगड़ता और उसके साथ खेलने की चाह करता। ऐसे भोले भाले पशु के साथ बातचीत भी की जा सकती थी क्योंकि वह बहुत-कुछ समझता था।

परन्तु एक दिन अलक्सेई ने उसे इतनी वोदका[१०] पिलादी कि वह मदमस्त हो गया। रीछ बहुत नाचा कूदा और लोट पोट होता रहा। फिर, स्नानागार की छत पर चढ़ गया और चिमनी को ढाह कर उसकी ईंट-ईंट करके नीचे फेंकने लगा। उसे देखने के लिए मजदूरों की भीड़ इकट्ठी हो गई और सब रीछ की शरारतों को देख हंसी-मखौल करने लगे। अब ऐसा कोई ही त्यौहार जाता जब अलक्सेई उसे लोगों के विनोद के लिए शराब न पिला देता। धीरे धीरे रीछ शराब का इतना शौकीन हो गया कि यदि वह किसी मजदूर को शराब पिए देखता तो उसका पीछा करने लगता और अलक्सेई आँगन में उसका पीछा करते-करते दुखी हो जाता। उसे जंजीर में भी बाँध दिया गया परन्तु उसने अपनी जगह भी तोड़-फोड़ दी और गले में बंधी जंजीर से वह लकड़ी को खींचता। बाहों को फैला कर और शरीर को हिलाता हुआ वह

१० वोदका—एक प्रकार की धान से बनाई हुई शराब जो बहुत कड़वी और तेज होती है।

लेकिन चोट खाए हुए की तरह वह पीछे हट कर चिल्लाई—

"ओह! मुझसे वहाँ जाने के लिए न कहो। मैं जा नहीं सकूँगी, मुझे डर है ।"

'डर किस बात का?' प्योत्र ने जल्दी से पूछा।

'आत्मघात से! मैं नहीं जा सकूँगी, जो चाहे होता रहे मैं इससे डरती हूँ।"

'अच्छा तो चलो, सोने के लिए ही चलें।" मर्तामिनोव ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर खड़ा होकर बोला— 'आज हम बहुत परेशान हो चुके हैं।'

पत्नी के साथ धीरे-धीरे चलते हुए उसने अनुभव किया कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ सुख भी मिला है। प्योत्र मर्तामिनोव आज तक अपने को पहचानता नहीं था कि वह इतना बुद्धिमान और चालाक व्यक्ति भी हो सकता है। अभी अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो रही थी।

"निःसंदेह तू मेरे अति निकट है,' उसने अपनी पत्नी से कहा—"तुमसे अधिक समीप और कौन हो सकता है? सदा ध्यान में रखो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो तभी सब कुछ ठीक रहेगा।"

उस रात्रि से बारहवें दिन निकिता मर्तामिनोव को भोर होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और चमड़े का एक थैला कन्धे पर लटकाए देखा गया। वह ऊबड़-खाबड़ और रेतीले मार्ग पर जो रात को ओस के कारण काला-सा पड़ा हुआ था—तेजी के साथ कदम बढ़ाए जा रहा था। लगता था, वह परिवार से जुदा होकर पुरानी स्मृतियों से भी जल्द छुटकारा पाना चाहता है। रसोई के बराबर वाले कमरे में वे सब लोग नींद के कारण

भारी-भारी आँखों को लिए एकत्रित हुए थे। वे सबके सब निष्ठुर बने बैठे थे और निष्ठुरता से ही उन्होंने उससे बातें की थीं जैसे कि उनमें से किसी के भी हृदय में उसके लिए जगह न थी और किसी का भी उससे सहृदयता के साथ एक शब्द भी कहना नहीं था। प्यात्र बहुत खुश लगता था जैसे कि उसे अभी किसी सौदे में लाभ प्राप्त हुआ हो। उसने दो या तीन बार कहा था—

"ठीक है अब हमारे परिवार में भी हमारे पापों के शमन के लिए प्रार्थना करने वाला एक व्यक्ति होगया।

नस्तास्या ने उदासीनता के साथ चार खोए-खोए हुए चाय प्यालों में डाली। उसके चूल्हे जैसे छोटे-छोटे काम देखने योग्य लाल पड़े हुए थे। वह अत्यधिक घबराई हुई-सी लग रही थी। वह बार-बार कमरे से बाहर निकल जाती। उसकी माँ विचार-मग्न मुद्रा में मौन साधे बैठी थी और जब-तब अपनी उङ्गलियों को अपनी जीभ से लगा कर वह थूक से गीला कर लेती थी और फिर अपनी कनपटी पर लटके बालों को ऊपर कर उन पर उङ्गलियाँ फेरने लगती। कमन्न अत्यधिक ही असाधारण रूप से चञ्चल हो रहा था और अपने कन्धों को उचका कर बार-बार पूछ उठता—

"निकिता तुम्हें यह कैसे सूझा ? अरे, एकाएक ही ! यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है।!"

उसके बराबर ही छोटी और नुकीली नाक वाली ओलींबा बैठी हुई थी। उसकी काली भृकुटियाँ बिना किसी लिहाज के किसी ओर भी उठ जाती थीं।

निकिता को उसकी आँखें बिल्कुल पसन्द नहीं थीं। उसके चेहरे को देखते हुए वे ज्यादा बड़ी थीं और एक लड़की के लिए

लेकिन चोट खाए हुए की तरह वह पीछे हट कर चिल्लाई—

"ओह, मुझसे वहाँ जाने के लिए न कहो। मैं जा नहीं सकूँगी, मुझे डर है ।'

'डर किस बात का ? प्योत्र ने जल्दी से पूछा।

"आत्मघात से ! मैं नहीं जा सकूँगी, जो चाहे होता रहे मैं इससे डरती हूँ।'

'अच्छा तो चलो, सोने के लिए ही चलें।' मर्तामानोव ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर खड़ा होकर बोला—"आज हम बहुत परेशान हो चुके हैं।'

पत्नी के साथ धीरे-धीरे चलते हुए उसने अनुभव किया कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ सुख भी मिला है। प्योत्र मर्तामानोव आज तक अपने को पहचानता नहीं था कि वह इतना बुद्धिमान और चालाक व्यक्ति भी हो सकता है। अभी अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो रही थी।

"निःसंदेह तू मेरे अति निकट है,' उसने अपनी पत्नी से कहा—"तुमसे अधिक समीप और कौन हो सकता है ? सदा ध्यान में रखो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो तभी सब कुछ ठीक रहेगा।'

उस रात्रि से बारहवें दिन निकिता मर्तामानोव की ओर होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और कपड़े का एक थैला कन्धे पर लटकाए देखा गया। वह ऊबड़-खाबड़ और रेतीले मार्ग पर जो रात की ओस के कारण काला-सा पड़ा हुआ था—तेजी के साथ कदम बढ़ाए जा रहा था। लगता था, वह परिवार से जुदा होकर पुरानी स्मृतियों से भी जल्द छुटकारा पाना चाहता है। रसोई के बराबर वाले कमरे में वे सब लोग नींद के कारण

भारी भारी आँखों को लिए एकत्रित हुए थे । वे सबके सब निष्ठुर बने बैठे थे और निष्ठुरता से ही उन्होंने उससे बातें की थीं जैसे कि उनमें से किसी के भी हृदय में उसके लिए जगह न थी और किसी का भी उसके सहृदयता के साथ एक शब्द भी कहना नहीं था । प्याम बहुत खुश लगता था जैसे कि उसे अभी किसी सौदे में लाभ प्राप्त हुआ हो । उसने दो या तीन बार कहा था—

ठीक है अब हमारे परिवार में भी हमारे पापों के शमन के लिए प्रार्थना करने वाला एक व्यक्ति होगया ।

नतास्या न उदासीनता के साथ और खोए-खोए हुए आम ख्यालों में डाली । उसके चूहे जैसे छोटे-छोटे कान देखने योग्य लाल पड़े हुए थे । वह अत्यधिक घबराई हुई-सी लग रही थी । वह बार-बार कमरे से बाहर निकल जाती । उसकी माँ विचार मग्न मुद्रा में मौन साधे बैठी थी और जब-तब अपनी उङ्गलियों को अपनी जीभ से लगा कर वह थूक से गीला कर लेती थी और फिर अपनी कनपटी पर लटके बालों को ऊपर कर उन पर उङ्गलियाँ फेरने लगती । केवल अलक्सेई ही असाधारण रूप से प्रसन्न हो रहा था और अपने कन्धों को उचका कर बार-बार पूछ उठता—

"निकिता तुम्हें यह कैसे सूझा ? अरे, एकायक ही ! यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है । !

उसके बराबर ही छोटी और नुकीली नाक वाली ग्रोमोवा बैठी हुई थी । उसकी काली भृकुटियाँ बिना किसी लिहाज के किसी बार भी उठ जाती थीं ।

निकिता को उसकी आँखें बिल्कुल पसन्द नहीं थीं । उसके चेहरे को देखते हुए व ज्यादा बड़ी थीं और एक लड़की के लिए

लेकिन चोट खाए हुए की तरह वह पीछे हट कर चिल्लाई—

"ओह, मुझसे वहाँ जाने के लिए न कहो। मैं जा नहीं सकूँगी, मुझे डर है।"

"डर किस बात का?' व्योम ने जल्दी से पूछा।

'आत्मघात से! मैं नहीं जा सकूँगी, चा चाहे होता रहे मैं इससे डरती हूँ।"

'अच्छा तो चलो, सोने के लिए ही चलें।' मर्तामानोव ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर खड़ा होकर बोला—"आज हम बहुत परेशान हो चुके हैं।'

पत्नी के साथ धीरे-धीरे चलते हुए उसने अनुभव किया कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ सुख भी मिला है। व्योम मर्तामानोव आज तक अपने को पहचानता नहीं था कि वह इतना बुद्धिमान और चालाक व्यक्ति भी हो सकता है। अभी अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो रही थी।

'निःसंदेह तू मेरे अति निकट है' उसने अपनी पत्नी से कहा—' तुमसे अधिक समीप और कौन हो सकता है? ध्यान में रखो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो, तभी सब कुछ ठीक रहेगा।

उस रात्रि से बारहवें दिन मिकिता मर्तामानोव को भोर होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और चमड़े का एक थैला कन्धे पर लटकाए देखा गया। वह ऊबड़-खाबड़ और रेतीले मार्ग पर जो रात की ओस के कारण काला-सा पड़ा हुआ था—तभी से साथ कदम बढ़ाए जा रहा था। लगता था, वह परिवार से जुदा होकर पुरानी स्मृतियों से भी छुटकारा पाना चाहता है। रसोई के बराबर वाले कमरे में वे सब लोग नींद के कारण

भारी भारी आँखों को लिए एकत्रित हुए थे। वे सबके सब निष्ठुर बने बैठे थे और निष्ठुरता से ही उन्होंने उससे बातें की थीं बचे कि उनमें से किसी के भी हृदय में उसके लिए जगह न थी और किसी को भी उससे सहृदयता के साथ एक शब्द भी कहना नहीं था। प्योत्र बहुत खुश लगता था जैसे कि उसे अभी किसी सौदे में लाभ प्राप्त हुआ हो। उसने दो या तीन बार कहा था—

ठीक है अब हमारे परिवार में भी हमारे पापों के शमन के लिए प्रार्थना करने वाला एक व्यक्ति होगया।

नतास्या ने उदासीनता के साथ और खोए-खोए हुए चाय प्यालों में डाली। उसके पूरे जैसे छोटे-छोटे कान देखन योग्य लाल पड़े हुए थे। वह अत्यधिक घबराई हुई-सी लग रही थी। वह बार-बार कमरे से बाहर निकल जाती। उसकी माँ विचार मग्न मुद्रा में मौन साधे बैठी थी और जब-तब अपनी उङ्गलियों को अपनी जीभ से लगा कर वह थूक से गीला कर लेती थी और फिर अपनी कनपटी पर लटके बालों को ऊपर कर उन पर उङ्गलियाँ फेरने लगती। केवल अलमसेई ही असाधारण रूप से प्रसन्न हो रहा था और अपने शब्दों को उचका कर बार-बार पूछ उठता—

'निकिता तुम्हें यह कैसे सूझा? अरे, एकाएक ही! यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है।'

उसके बराबर ही छोटी और नुकीली नाक वाली ओलोंका बैठी हुई थी। उसकी काली भृकुटियाँ बिना किसी लिहाज के किसी ओर भी उठ जाती थीं।

निकिता को उसकी आँखें बिल्कुल पसन्द नहीं थीं। उसके चेहरे को देखते हुए वे ज्यादा बड़ी थीं और एक लड़की के लिए

लेकिन चोट खाए हुए की तरह वह पीछे हट कर चिल्लाई—

"ओह, मुझसे वहाँ जाने के लिए न कहो। मैं जा नहीं सकूँगी, मुझे डर है ।'

"डर किस बात का ?' प्योत्र ने जल्दी से पूछा ।

"पारमपात स । मैं नहीं जा सकूँगी, जो चाहे होता रहे मैं इससे डरती हूँ ।"

'अच्छा तो चलो, खाने के लिए ही चलें । अर्तामानाव ने कहा और वह अपनी मजबूत टाँगों पर खड़ा होकर बोला—"आज हम बहुत परेशान हो चुके हैं ।

पत्नी के साथ धीरे-धीरे चलते हुए उसने अनुभव किया कि उसे दुःख के साथ उपहार में कुछ सुख भी मिला है । प्योत्र अर्तामानोव आज तक अपने को पहचानता नहीं था कि वह इतना बुद्धिमान और चालाक व्यक्ति भी हो सकता है । अभी अभी उसने किसी को ठगा था इसीसे उसकी अन्तरात्मा उद्विग्न हो रही थी ।

"निःसंदेह तू मेरे अति निकट है' उसने अपनी पत्नी से कहा—"तुमसे अधिक समीप और कौन हो सकता है ? सदा ध्यान में रखो कि तुम मेरे सबसे अधिक निकट में हो, तभी सब कुछ ठीक रहेगा ।

उस रात्रि से बारहवें दिन निकिता अर्तामानोव को भोर होते ही हाथ में एक छड़ी लिए और चमड़े का एक थैला कन्धे पर लटकाए देखा गया । वह ऊबड़-खाबड़ और रेतीले मार्ग पर जो रात की ओस के कारण काला-सा पड़ा हुआ था—तेजी के साथ कदम बढ़ाए जा रहा था । लगता था, वह परिवार से जुदा होकर पुरानी स्मृतियों से भी जल्द छुटकारा पाना चाहता है । रसोई के बराबर वाले कमरे में वे सब लोग नींद के कारण

भारी-भारी आँखों को लिए एकत्रित हुए थे। वे सबके स[illegible]
निष्ठुर बने बैठे थे और निष्ठुरता से ही उन्होंने उससे बातें की
थीं जैसे कि उनमें से किसी के भी हृदय में उसके लिए जगह न
थी और किसी को भी उससे सहृदयता के साथ एक शब्द भी
कहना नहीं था। ज्योत्र बहुत खुश लगता था जैसे कि उसे अभी
किसी सौदे में लाभ प्राप्त हुआ हो। उसने दो या तीन बार
कहा था—

'ठीक है अब हमारे परिवार में भी हमारे पापों के शमन के लिए प्रार्थना करने वाला एक व्यक्ति होगया।'

मतात्या ने उदासीनता के साथ और खोए-खोए हुए चाय प्यालों में डाली। उसके बूढ़े जैसे छोटे-छोटे कान बेसन मोम्य लाल पड़े हुए थे। वह अत्यधिक घबराई हुई-सी लग रही थी। वह बार-बार कमरे से बाहर निकल जाती। उसकी माँ विचार मग्न मुद्रा में मौन साधे बैठी थी और जब-तब अपनी उङ्गलियां को अपनी जीभ से लगा कर वह थूक से गीला कर लेती थी और फिर अपनी कनपटी पर लटके बालों को ऊपर कर उन पर उङ्गलियां फेरने लगती। ज्यास अनकसेई ही असाधारण रूप से चञ्चल हो रहा था और अपने कन्धों को उचका कर बार-बार पूछ उठता—

निकिता तुम्हें यह कैसे सूझा? अरे, एकायक ही! यह मेरे लिए आश्चर्य की बात है!!

उसके बराबर ही छोटी और गुदीली नाक वाली ओलोंवा बैठी हुई थी। उसकी काली भृकुटियां बिना किसी सिहरन के किसी बार भी उठ जाती थीं।

निकिता को उसकी आँखें बिल्कुल पसन्द नहीं थीं। उसके चेहरे को देखते हुए वे ज्यादा बड़ी थीं और एक लड़की के लिए

इतनी छोटीसी आँखें जो बार-बार झपझपा उठें—शोभा नहीं देती थीं ।

उन लोगों के बीच निकिता को बैठना भारी पड़ रहा था—उसके मस्तिष्क में व्यग्रतापूर्ण विचार बार-बार आ जाते—

मान लो यदि प्योत्र सब को यह बात बतावे तो ? तो, अब यहाँ से छुट्टी ही ली जाय !"

प्योत्र ने सबसे पहले विदा ली । निकिता के पास आकर उसने उसको गले से लगाया और ज़ोर से कम्पित स्वर में बोला, 'अच्छा भैया विदा ।"

बाद्माकोवा ने उसे टोका "तुम कैसे हो जी ! पहले कुछ देर बैठने तो दो । शान्ति से बैठकर प्रार्थना करो तब विदा करेंगे ।"

तब ऐसा ही किया गया ।

प्योत्र पुन समीप आया और कहने लगा—"हमारी भूलों के लिए हमें क्षमा करना । धन-समर्पण के बारे में हमें बताओ हम उसी तरह तुम्हें भेज देंगे । कोई भारी प्रायश्चित करने को तैयार न होना । अच्छा विदा हमारे लिए प्राय प्रार्थनाएँ करते रहना ।'

बाद्माकोवा ने क्रास का पवित्र चिह्न उसके वक्ष पर बनाया और उसके मस्तक तथा कपोलों को चूमा । किसी कारण से वह रोने-बिलखने भी लगी । अलक्सेई ने उसको कसकर गले लगाया, और उसकी आँखों में झाँकते हुए वह बोला—

"अच्छा ईश्वर तुम्हारी सहायता करें । सब अपने अपने रास्ते जाते हैं । किन्तु मेरी समझ में नहीं आ रहा कि तुमने यकायक ही यह निश्चय कैसे कर डाला ?'

सबसे अन्त में मताल्या सामने आई। लेकिन कुछ दूर ही रह कर वह आदर के साथ झुकी और अपनी छाती पर हाथ रख कर धीमे स्वर में बोली—

'नमस्ते, निकिता इलाय !

यद्यपि वह तीन बच्चों को दूध पिला चुकी थी लेकिन फिर भी उसका वक्ष कुमारी कन्या की तरह उन्नत था।

तदोपरान्त सब समाप्त हो गया। बाद मार्मोवा फिर ी शेष थी। उसने अपने छोटे-से गम हाथ को बाहर निकाला ी तम्बे की तरह सीधा था। हाथों को देखते हुए उसका रा अधिक कुरूप लग रहा था। उसने मृदुतापूर्वक पूछा—

तो क्या सचमुच ही तुम साधु बनने जा रहे हो ?

बाहर आँगन में दस-बीस वृद्ध बुनकर विदा करने को आए हुए थे। बहुत बूढ़ा बोरिस मोराभारोव सिर को हिलाते हुए बार से बोला—

'सिपाही और साधु ये दोनों ही वर्ग संसार के सबसे बड़े सेवक हैं यह बिलकुल सच है ?

इसके पश्चात् निकिता अपने पिता की समाधि से विदा लेने के लिए कब्रिस्तान गया। उसके सामने झुकते हुए उसने कोई प्रार्थना नहीं की अपितु विचारों में ही खो गया।

जिन्दगी ने भी क्या पल्टा खाया था! जब सूरज उसकी पीठ के पीछे निकल रहा था तो उसके पिता की घास से ढकी हुई कब्र के उस भू भाग की विस्तृत तिकोनी छाया कुलुस को भरी कोठरी की तरह पड़ रही थी। निकिता ने अपने माथे को जमीन पर टेका और बोला—

पिताजी मुझे क्षमा करो।

प्रभात की उस अलस नीरवता के बीच उसका कर्कश-स्वर

सुनाई दिया। एक क्षण रुक कर वह फिर बोला, "पिताजी मुझे क्षमा करो।'

इतना कहते हुए ही वह फट पड़ा और बिलख-बिलख कर स्त्रियों की तरह रुदन करता रहा। भाज उसकी स्पष्ट और मधुर भावाज असहनीय रूप से नष्ट होगई थी।

जब वह कब्रिस्तान से लगभग एक वस्त दूर पहुँचा तो उसने रास्ते म चौकीदार तिखोन को देखा। एक सन्तरी की तरह सड़क के किनारे खाली भाड़ियों के बीच वह खड़ा हुआ था। उसके कन्धे पर बेलचा रखा हुआ था और पेटी म कुल्हाड़ी लटकी हुई थी।

तो तुम आरहे हो ?" तिखोन ने पूछा।

"हाँ मैं अब आ रहा हूँ। तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?

'मैंने विचार किया है कि मैं अपनी खिड़की के नीचे रोवन वृक्ष लगाऊँ। इसीलिए उसकी पौद लेने को आया हूँ।"

वे दोनों कुछ क्षणों तक एक-दूसरे की ओर देखते हुए खड़े रहे। तिखोन ने अपनी दमकती हुई आँखों को दूसरी ओर कर लिया।

'अच्छा चलो मैं तुम्हें सड़क तक पहुँचा आऊँ।'

दोनों चुपचाप चल पड़े। तिखोन ही पहले बोला—'कितनी अधिक ओस पड़ती है अब। यह लक्षण अच्छा नहीं है। इस तरह ओस पड़ने का मतलब है—सूखा और कम उत्पादन।'

'परमात्मा ही रक्षक है।

उत्तर म तिखोन अपमान न बड़बड़ाते हुए कुछ कहा।

"तुमने क्या कहा ? मिकिता ने पूछा। वह इस व्यक्ति से कुछ भयभीत रहता था क्योंकि वह अन्य लोगों की अपेक्षा

"अच्छा, नमस्कार निकिता इलइच !" वह बोला। अपने गालों को सहलाता और सोचता हुआ वह आगे कहने लगा, "मैं तुम्हें विनयी स्वभाव और कोमल हृदय के कारण पसन्द करता हूँ। तुम्हारे पिता की विशेषता उसके शरीर में थी लेकिन तुम—तुम्हारी विशेषता तुम्हारा हृदय है—तुम्हारी आत्मा है।'

निकिता ने अपने हाथ की छड़ी को पटक दिया, कमर पर रखे सन के थैले को ठीक किया और फिर चौकीदार को चुपचाप अपने गले से लगाया। तिखोन ने उस मिलन का उत्तर अशिष्टता के साथ उसे छाती से चिपटा कर और जोर-जोर से बोलते हुए दिया—

तो मैं जरूर आऊँगा।

'धन्यवाद।"

एक मोड़ से जहाँ कि सड़क चीड़ के जङ्गल में छिप गई थी निकिता ने पीछे मुड़ कर देखा। तिखोन सड़क के बीचो बीच अपने बेलचे पर झुका खड़ा था और उसने अपने टोप को बगल में दबा लिया था। प्रतीत होता था कि उसने यह निश्चय कर लिया है कि अब वह किसी को भी उस मार्ग से न निकलने देगा। सुबह की शीतल बयार उसके कुरूप सिर के बालों को इधर-उधर बिखेर रही थी।

किसी प्रकार तिखोन ने अपने मस्तिष्क में मूर्त अन्तोनुश्का को घुमाया। निकिता वर्तमानोव ने अपने कदम तेजी से बढ़ाए। उसके विचार इस वृद्ध व्यक्ति के बारे में ताना-बाना बुन रहे थे और बार-बार उसके कानों में आवाज आ रही थी—

आह, ईसा का अवतार हुआ, अवतार हुआ,
गाड़ी का पहिया गुम हुआ, गुम हुआ।



५

पिता के प्रथम निर्वाण दिवस से पूर्व अर्तामानोवों के गिरजे की इमारत किसी प्रकार पूरी न हो सकी थी। उन्होंने उसे सन्त इलियाह को समर्पित किया था। इमारत के निर्माण का कार्य सात साल से बराबर स्थगित होता आ रहा था इस सुस्ती का प्रमुख अपराधी अलक्साई ही था।

'परमात्मा तो प्रतीक्षा कर ही सकता है उसे जल्दी की क्या जरूरत है?' यह नास्तिकता पूर्ण उत्तर तुरन्त दे दिया करता था। उसने गिरजे के लिए तैयार हुई ईंटों का दो बार इधर-उधर खर्च कर दिया। तीसरी बार मिल के एक हिस्से के निर्माण में और फिर अस्पताल के बनवाने में उन्हें लगा दिया था।

शुद्धि-संस्कार और पिता एवं बच्चों की कब्रों पर संस्कार-पाठ के हो जाने के बाद भीड़ के छँट जाने तक अर्तामानोव परिवार कब्रिस्तान में ही रहा। फिर चतुरताई से उल्याना बाइमा कोवा को छोड़ कर वे धीरे-धीरे अपने घर की

ओर चल दिए। उस्पाना बाइमाकोवा परिवार के लिए निश्चित स्थान में एक देवदारु के वृक्ष के नीचे बम्ब पर बैठी थी। उन्हें जल्दबाजी करने की कोई आवश्यकता न थी क्योंकि समारोह के अवसर पर जो भोज पादरियों, परिचितों और कर्मचारियों को दिया जाने वाला था उसका समय तीन बजे का था।

वह बादलों से घिरा दिन था। आकाश ने लगभग शरद ऋतु का-सा रूप अपनाया हुआ था। नमी लिए हुए हवा वर्षा का वायदा करती और थके घोड़े की तरह हिनहिनाती चल रही थी। लालिमा लिए हुए रेतीले मार्ग पर काली मानव आकृतियां झूमती मामती हुई मिल की ओर जा रही थीं। एक सामान्य वृत्त के तीन व्यासों पर आधारित ईंटों की तीन दीवारें पृथ्वी को अपनी लाल-लाल उङ्गलियों में जकड़ना चाहती थीं।

अपनी छड़ी को हिलाते हुए अलक्सेई बोला 'आज हमारे स्वर्गीय पिताजी हमारे बढ़ते हुए कामों को देखते तो बहुत प्रसन्न होते।

'तब उन्हें ज़ार की हत्या का पता लगता तो व बहुत दुःखी होते" प्योत्र ने भाई के प्रति विरोध प्रकट करते हुए कहा।

"नर, वे दुःखी होना तो जानते ही न थे। वे ज़ार की अक्लमन्दी से नहीं, अपनी अक्लमन्दी म रहते थे।' अलक्सेई ने अपनी टोपी को माथ पर नीचे की ओर खींचते हुए औरतों की ओर निहारा। छोटे कद की दुबली-पतली भामे रङ्ग के सादा कपड़े पहने उसकी पत्नी रतीले मार्ग पर धीमे-धीमे कदम बढ़ाती अभ्यास स अपने कदम के चीनों का साफ करती हुई चल रही थी। लम्बी और स्थूलकाय नतास्या के बराबर में चलती हुई वह देहात के स्कूल की एक अध्यापिका-सी प्रतीत होती थी। नतास्या

ने काले रङ्ग का रेशमी चोगा धारण किया हुआ था, जिसमें बिगुल जैसे मनकों की माला लटकी थी और उसके मोटे लाल-लाल बालों से बँधा गहरे बाजुनी रङ्ग का रूमाल बहुत अच्छा फब रहा था।

'तेरी बच्ची तो बराबर सुन्दर होती जा रही है!

प्योत्र ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया।

"निकिता इस वर्षगाँठ पर भी नहीं आया। क्या वह हमसे अप्रसन्न है, या और कोई बात है?

मौसम में नमी होने के कारण अफनासेई की छाती और पोरों में दर्द होने लगता था। और वह छड़ी पर झुक कर संभलता हुआ-सा चलता था। वह संस्कार की प्रार्थना के अथाह प्रभाव और नमी लिए बोझिल काले दिन की उदासी को हटाने के लिए सदा की तरह आग्रहपूर्वक भाई की जबान को थामने का प्रयत्न करने लगा।

"तुम्हारी सास अभी कब्रिस्तान में रोने के लिए चली गई है। वह उसे भूल नहीं सकती। वह एक अच्छी बुढ़िया है। मैंने धीरे से तिखोन को कह दिया है कि वह वहाँ रुके और फिर उसे घर पहुँचा आए। वह शिकायत करती है कि वह साँस कठिनाई से ले पाती है और चलने में उसे कष्ट होता है।

ज्येष्ठ अर्तामानोव ने मजबूर होकर दोहराया—"हाँ, उसे चलने में जोर पड़ता है।"

तू सो तो नहीं रहा? किसका और क्या जोर पड़ता है?

'तिखोन का हिसाब कर उसे निकाल देना चाहिए," प्योत्र ने पास की पहाड़ी पर झूमते हुए नुकीले देवदारों के वृक्षों की ओर देख कर कहा।

"क्यों ?" भाई ने आश्चर्य से पूछा—'आदमी ईमानदार है काम ठीक करता है, मेहनती है ।'

"और मूर्ख भी है ' प्योत्र ने आगे कहा ।

स्त्रियाँ उनके पास आ चुकी थीं । मनोहर और छोटी-सी एक आकृति को देखते हुए ओल्गा अपने पति से आश्चर्यजनक ढङ्ग वाणी में बोली—

"नतास्या से कह रही हूँ कि वह इल्या को स्कूल भेजा करे, परन्तु वह डरती है ।"

गर्भिणी नतास्या मोटी बत्तख की तरह हर कदम को संभाल-संभाल कर रखती चल रही थी । वह बड़प्पन दिखाती सानुनासिक-ध्वनि में धीरे धीरे बोली—

"मेरे विचार में इन स्कूलों का तरीका बहुत खराब है । ऐलीना अपनी चिट्ठियों में ऐसे शब्द लिखती है जो समझ में ही नहीं आते कि वह कहना क्या चाहती है ।'

'पढ़ाई तो सबको करनी ही है !' अलक्सेई ने अपनी टोपी को उतारकर माथे का पसीना पोंछते हुए रौब से कहा । समय से पहले ही कनपटियों से सिर तक फैलते हुए गन्जेपन के कारण उसका चेहरा किसी क़दर अधिक लम्बा दिखाई देने लगा था ।

पति की ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देखते हुए नतास्या ने बहस छेड़ी—

"पम्फालोव ठीक कहता है—पढ़ने-लिखने से लोग जंगली बन जाते हैं ।'

हाँ, यह ठीक है," प्योत्र ने कहा ।

तो यही बात है न ! नतास्या ने प्रसन्नता से कहा, परन्तु,

उसका पति विचारपूर्वक बोला—

'फिर भी पढ़ना तो जरूरी है ही।

उसके भाई और ओल्गा एकदम हँस दिए। नेताल्या उन्हें झिड़कती हुई बोली—

'आप लोग हँस कैसे सकते हैं? याद करो, हम लोग कहाँ से लौट रहे हैं?''

उन्होंने उसको भुजाओं से पकड़ा और अधिक तेजी से चल पड़े। लेकिन प्योत्र ने अपने कदमों को धीमे कर दिया और कहने लगा—

"मैं माँ की प्रतीक्षा करूँगा।"

उसको अप्रिय तिख़ोन ब्यात्तोव ने नाराज कर दिया था। प्रार्थना से पहले कब्रिस्तान में खड़े हुए उसने दूर अपनी मिल की ओर देखा। और बिना किसी मतलब के केवल अपने विचारों को व्यक्त करता हुआ जरा ऊँचे स्वर से अपने से बोला—

"कारोबार खूब बढ़ गया है।"

और उसी समय अपने कन्धे के पीछे से उसने अपने सूत पूर्व खाई खोदने वाले की शान्त आवाज सुनी—

जिस प्रकार तहखाने में सीलन बढ़ती जाती है कारोबार भी उसी तरह अपनी सामर्थ्यानुसार बढ़ता जाता है।

प्योत्र ने उससे कुछ न कहा, और न उसकी ओर मुड़कर ही देखा। परन्तु यह स्पष्ट था कि दरबान की भसी न सपने वाली मूर्खता से वह बहुत दुःखी हो गया था। एक मनुष्य काम करके सौ के करीब आदमियों को रोटी देता है दिन रात कारोबार की चिन्ता में घुलता रहता है। अपने को भी उसने बिल्कुल भुला दिया है और फिर इसी समय अचानक कोई अज्ञान मूर्ख

वह उस बात को अवश्य जानता है, परन्तु कहना नहीं चाहता। वह किसी नई आपत्ति की आशंका भी करने लगा और उसकी आँखों ने सलाह दी—

"अपने हाथों को दूर ही रखो—तुम्हें मेरी ज़रूरत है !'

वह तीन बार निकिता के पास साधु-गृह हो आया था। कन्धे पर थैला लटकाए, हाथ में डण्डा लिए, धीरे धीरे ऐसे चल पड़ता था जैसे कि वह पृथ्वी पर अपने चरण रखने की कृपा कर रहा हो। वस्तुतः उसका प्रत्येक काम ऐसा ही होता था जैसे कि वह उसे बड़ी मेहरबानी से कर रहा हो।

वहाँ से लौटकर निकिता के हालचाल के बारे में किए गए प्रश्नों के उत्तर में वह सदा ऐसे उत्तर देता जिनसे पता लगता कि वह जो कुछ भी जानता है सब नहीं बता रहा।

"स्वस्थ है। सब उसका मान करते हैं सन्देश और उपहारों के लिए उसने धन्यवाद दिया है।

"उसने क्या कहा है ?"—प्योत्र फिर पूछ उठता।

"एक साधु और कह ही क्या सकता है ?'

"फिर भी, अलक्सेई अधीरता से पूछता।

"वह परमात्मा की चर्चा करता है। ऋतुओं में दिलचस्पी रखता है, कहता है कि बरसातें समय पर नहीं हो रही हैं। मच्छरों की वह शिकायत करता है, वहाँ मच्छर बहुत हैं। तुम्हारे बारे में भी पूछता था।'

"क्या ?'

"वह आप लोगों के लिए दु:खी और चिन्तित है।"

"हमारे बारे में ? ऐसा क्यों ?'

"हाँ, तुम सबके लिए। क्योंकि तुम लोग—बहुत उतावली

से जीवन गुजार रहे हो और वह वहीं का वहीं खड़ा है। उस तुम्हारी परेशानियों के लिए भी अफ़सोस है।"

असक्सेई जोर से ठहाका मार के हँसा और चिल्लाया—

'क्या बेवकूफ़ी है !"

तब तिखोन की पुतलियाँ स्थिर हो जातीं और आँखें भाव-शून्यता से निहारने लगतीं।

"बात यह है कि मुझे पता नहीं कि वह क्या सोचता है, मैं तो वही बता रहा हूँ जो उसने मुझसे कहा। मैं तो भोला-भाला आदमी हूँ।

'हाँ तुम बहुत भोले हो !' असक्सेई मखौल करते हुए बोला—'ठीक पागल अन्तोन की तरह।

प्योत्र अर्तामानोव को सुवासित उत्ताप में सराबोर करती हुई मन्द-मन्द हवा बह रही थी और दिन अत्यधिक प्रकाश से परिपूर्ण होता जा रहा था। बादलों के बीच नीलिमा ने गम्भीर रूप ले लिया था और उसकी निःसीम गहराई के बीच से सूर्य देव झाँक रहे थे। प्योत्र ने सूर्य की ओर देखा तो उसकी आँखें चकाचौंध हो गई और वह गम्भीर चिन्तन में डूब गया।

उसे इस बात से बहुत दुःख हुआ था कि निकिता ने साधु गृह में एक हजार रूबल जमा कराके अपने लिए जीवन पर्यन्त एक सौ अस्सी रूबल की वार्षिक राशि का वायदा करा लिया था। वह अपने उत्तराधिकार के हिस्से को अपने भाइयों के हक में छोड़ चुका था।

"ऐसा उपहार दे ही कौन सकता है ?" प्योत्र ने शिकायत की। परन्तु असक्सेई प्रसन्नता से बोला—

"उसे पैसे की क्या जरूरत ? उन निठल्ले मुफ्तखोर

साधुओं की चर्बी बढ़ाने के लिए ? नहीं उसने ठीक फैसला किया है। हमारे बच्चे हैं, कारोबार भी है।' इस बात म महात्मा के मर्म को छू लिया—

"हमारे प्रति किए गए अपराध को अभी उसने भुलाया नहीं है।' वह सन्तोष के साथ अपने गुलाबी गालों से आँसुओं को पोंछते हुए बोली, "यह ऐलीना के लिए दहेज होगा।

भाई क इस काम से प्योत्र के विचार कुचले पड़ गए, क्योंकि निकिता के साधु-गृह के आने के बाद शहर म अर्तामानोव परिवार के बारे में तरह-तरह की ईर्ष्यापूर्ण बुरी-बुरी अफवाहें फैल रही थीं।

जहाँ तक अलक्सेई का प्रश्न है, प्योत्र उसके साथ भली प्रकार निबाह किए जा रहा था। यद्यपि वह देख रहा था कि उसका हाजिरजवाब भाई हमेशा कारोबार का आसान भाग अपने हाथ में ले लेता था। वह निझनी नोवागारद क मेले में जाता और साल में दो-एक बार मास्को भी हो आता। वहाँ से लौट कर अलक्सई मास्को के निर्माताओं की शान-शौकत क बारे में बड़े-बड़े किस्से सुनाया करता था—

'वे लोग बड़ी शान के साथ भद्र लोगों की तरह रहते हैं।'

"भद्र लोगों की तरह साहबी ठाठ से रहना बड़ा आसान है," प्योत्र ने अपने भाई की ओर संकेत किया जो बड़े उत्साह के साथ कहता जा रहा था—

"जब वहाँ व्यापारी मकान बनाता है वह बिल्कुल गिरजे की तरह दिखता है। व अपने बच्चों को शिक्षित कराते हैं।"

यद्यपि वह अधिक आयु का हो गया था, परन्तु उसकी पत्नी की आनन्दप्रियता और आँखों में बाज की तरह चमक अभी भी विद्यमान थी।

"तेरे चेहरे पर हमेशा त्योरियाँ क्यों चढ़ी रहती हैं ?" वह भाई से पूछता। इससे भी अधिक वह भाई को उपदेश भी देने लगता— 'हमें अपने व्यवसाय को हँसते-हँसते करना चाहिए। व्यवसाय और क्लान्ति का मेल नहीं है।

प्योम जानता था कि अलक्सेई की यह बात पिता के कथन से मेल खाती थी फिर भी अलक्सेई की बात उसकी समझ में आना कठिन था।

'मैं बीमार आदमी हूँ" अलक्सेई परिवार के लोगों को याद दिलाता रहता था। परन्तु वह स्वयं अपने स्वास्थ्य का ध्यान न रखता था। वह डट कर शराब पीता सारी रात जुआ खेलता रहता और स्पष्ट था कि वह आवारा स्त्रियों के पास भी जाता था। उसके जीवन का उद्देश्य क्या था ? स्पष्ट था कि वह न तो अपने लिए था और न घर-बार के लिए ही। वाह्मारोवा के घर की बुरी हालत थी और उसकी मरम्मत कराना जरूरी था। परन्तु, अलक्सेई उसकी ओर कोई ध्यान ही न देता था। उसके बच्चे कमजोर पैदा होते थे और पाँच वर्ष के होने से पहले ही मर जाते थे। उनमें से सिर्फ मिरान ही जिन्दा रहा था। वह कुरूप भद्दा बड़ी-बड़ी हड्डियों वाला लड़का इल्या से तीन साल बड़ा था। अलक्सेई और उसकी पत्नी दोनों ही उपहास्यास्पद और निरर्थक वस्तुओं की तृष्णा के शिकार थे। उनके कमरों में नाना प्रकार का बनमेल फर्नीचर भरा हुआ था। कुलीनवर्ग के लोगों से खरीदे हुए उस फर्नीचर को वे अपने मित्रों को भेंट करके अत्यधिक आनन्द का लाभ करते थे। नताल्या को उन्होंने चीनी मिट्टी के खिलौनों से सजी अनोखी वार्डरोब[1] भेंट में दी थी। और उसकी माँ वाह्मारोवा को चमड़े की एक बड़ी

[1] वार्डरोब—कपड़ा लटकाने या रखने की अल्मारी।

आराम कुर्सी और करेलियन[1] देवदार की लकड़ी का बना पलंग दिया था जो कांस्य धातु से सजा हुआ था। ओल्गा मोती-मनकों की कढ़ाई करके तस्वीरें बनाने में कुशल थी, परन्तु उसका पति राज्य के भ्रमणों से लौटने पर वैसी ही तस्वीरें घर ले आया करता था।

"तू पागल है", प्योत्र को जब उसने एक बड़ी डेस्क भेंट की तो उससे कहा गया था। उस डेस्क पर बड़ी बारीक खुदाई की हुई थी और उसमें अनेकों दराजें बनी हुई थीं। लेकिन अन क्सेई अपनी डेस्क को थपथपाते हुए बोला—

'यही तो एक सौन्दर्य है। अब ऐसी वस्तुएं बनती ही कहाँ हैं। मास्को में ही इसके निर्माता हैं।"

'अच्छा हो कि तुम चाँदी खरीदो। सभ्य समाज में चाँदी बहुत है।'

'हाँ, मुझे अवसर दो। मैं सब कुछ खरीद लूँगा! मास्को में।'

यदि अनक्सेई की बातों पर विश्वास किया जाता, तो मास्को अजीब मूर्खों से भरा हुआ था, जहाँ लोग कारोबार सम्बन्धी कोशिशों की अपेक्षा रहन-सहन पर अधिक ध्यान देते थे, और इसके लिए वे सभ्य-समाज की तरह भद्रपरिवारों द्वारा बेची गई उन सभी चीजों को खरीदने में अपने मकानों से लेकर चाय के प्याले तक बेच दिया करते थे।

अपने भाई के घर पहुँच कर प्योत्र को एक प्रकार की दुखद ईर्ष्या होने लगती थी। वह अनुभव करता था कि अपने घर की अपेक्षा वह यहाँ अधिक सुखी है। लेकिन इसका कारण

---

[1] करेलियन—करेलिया का। करेलिया, फ़िनलैण्ड के पास का प्रदेश जहाँ का देवदार उत्तम होता है।

उसकी समझ से बाहर था। उसकी समझ में यह भी नहीं आता था कि प्रोस्या में उसने क्या विशेषता देखी है। नताल्या के मुकाबले में वह नौकरानी-सी दिखलाई देती थी। परन्तु मिट्टी के रस के लेम्प से ही भयभीत हो जाय यह इतनी भोली भी न थी। वह इस बात पर विश्वास नहीं करती थी कि आत्मघातियों की कब्रों में से विद्यार्थी मिट्टी का तेल निकालते हैं। उसकी शान्त मन्द आवाज बड़ी मधुर लगती थी। आँखें सुन्दर थीं और उनकी चमक चश्मे से नष्ट नहीं होती थी। परन्तु वह लोगों और उनके मामलों के बारे में उत्सुक बच्चा की तरह बात करती थी जैसे कि वह उन्हें दूर से देख रही हो। इससे प्योत्र किसी क़दर विस्मित और नाराज भी हो जाता था।

"क्यों तू समझती क्या है ? संसार में कोई अपराधी ही नहीं ? प्योत्र परिहास से पूछता। और वह जवाब देती—

'नहीं अपराधी तो हैं परन्तु मैं उनके बारे में फैसला करना पसन्द नहीं करती।'

प्योत्र उस पर विश्वास नहीं करता था।

अपने पति के साथ वह ऐसा व्यवहार करती थी जैसे कि वह उससे बड़ी हो। और वह अपने को उससे अधिक बुद्धिमान भी समझती थी।

अलक्सेई कोई विरोध नहीं करता था। वह उसे 'चाची' कहता था और शायद ही कभी वह उद्विग्नता का पुट लिए विस्मित स्वर से कहता—

"बस-बस चाची यह काफी है मैं ऊब गया हूँ। मैं एक रोगी व्यक्ति हूँ और मुझे थोड़ा लाड-प्यार हानि नहीं पहुँचाएगा।'

'लाड-प्यार तो तुम्हारा बहुत हुआ है !"

वह अपने पति की ओर देख कर मुस्कराने लगती। ऐसी

ही मुस्कराहट प्योत्र अपनी पत्नी के ओठों पर देखना चाहता था। नतास्या एक भावुक पत्नी और कुशल गृहणी थी। घीरे और मुरब्बों के अचार तथा गुरब्बे बनाने में वह बेजोड़ थी और उसके घर में नौकर घड़ी की सुई की तरह काम करते रहते थे। नतास्या अपने पति से प्रम करके न थकती थी। और उसका प्रम क्रीम जैसा गाढ़ा और गम्भीर रहता था। वह मितव्ययी भी थी।

"अब बैंक में हमारा कितना रुपया जमा है? चिन्तित हो वह पूछती 'तुम्हें विश्वास है कि यह बैंक अच्छी है और कहीं दिवाला तो न निकाल बठेगी?

जब वह पैसे का हिसाब किताब करती तो उसके सुन्दर चेहरे पर कठोरता आ जाती। वह रसभरी घसे अपने ओठों को भींचती और उसकी आँखों में एक तीव्र स्निग्ध प्रकाश झलक उठता। विभिन्न रंगों के कागज के टुकड़ों को गिनते समय वह सावधानी से उन्हें अपनी मोटी-मोटी उङ्गलियों में फंसा लेती थी जैसे कि उसे मक्खियों की तरह उनके उड़जाने का भय हो।

'अलक्सेई और तुम मुनाफे को ठीक से बाँटते हो न?' प्योत्र को अपने आलिंगनों से सन्तुष्ट करती हुई वह साथ समय पूछती, 'तुम्हें विश्वास है कि वह तुम्हें धोखा नहीं दे रहा—वह बड़ा चालाक है। वह और उसकी पत्नी दोनों ही बड़े लालची हैं। जहाँ कहीं भी उनका हाथ पड़ता है वे वहीं से सफाट लेते हैं।

उसे वहम था कि उसको चोर-उचक्कों ने घेर रखा है। कभी-कभी वह कह उठती—

'तिख़ोन के अलावा मैं किसी पर विश्वास नहीं करती।"

'तो फिर तुम एक मूर्ख पर विश्वास करती हो।' प्योत्र थकी हुई आवाज में बड़बड़ाता।

"वह मूर्ख भले ही हो मगर उसका दिल साफ है।"

जब प्योत्र उसे पहली बार निझनी नवगोरद के मेले में ले गया तो इस प्रसिद्ध रूसी मण्डी के विशाल आकार को देख कर विस्मय में पूछने लगा—

"क्यों, कसी है ?"

"बहुत अच्छी" वह बोली। हर चीज की भरमार है और हमारे यहाँ से सस्ती भी।

और उसने उन सब चीजों को गिनाना शुरू कर दिया जिन्हें कि उसको खरीदना था।

"आधा हण्ड्रवेट साबुन एक बक्सा मोमबत्तियाँ एक ढेरी चक्कर और एक बोरी दानेदार।"

सर्कस में जब नट अपना करतब दिखाने उपस्थित हुए तो उसने अपनी आँखों को ढकते हुए कहा था—

'ओह कितन निर्लज्ज जीव हैं! ओह, ये अद्ध नग्न हैं! अरे, मैं बच्चे को जन्म देने वाली हूँ—मुझे इनको ओर नहीं देखना चाहिए। तुम्हें ऐसी भयङ्कर जगहों पर मुझे साथ नहीं रखना चाहिए—हो सकता है मेरे गर्भ में लड़का ही हो।

ऐसे क्षणों में प्योत्र अर्तामानोव का अनुभव होता था कि किन्हीं उबा देने वाले नासमझों के बीच उसका दम घुट रहा है, वह मत्राखा नदी की ससमसी मिट्टी की तरह चिपचिपा है यहाँ कि बर्फी वाली मूर्ख टम्म मछली ही जीवित रह सकती है।

नतास्या आज भी नियमपूर्वक लम्बी प्रार्थनाएँ किया करतीं

थी। प्रार्थना के बाद वह बिस्तर में घुस जाती और बड़े यत्नों से पति को अपने कोमल-स्थूल शरीर के आनन्द को उपभोग करने के लिए उत्तेजित करती। उसकी त्वचा से भंडारघर की-सी गंध आती थी जहाँ कि अचार-मुरब्बे भुनी हुई मछलियाँ और सूअर का मांस रखा था। प्योत्र का यह अनुभव बराबर बढ़ता जा रहा था कि पत्नी की कामातुरता के आधिक्य ने ही उसकी शक्ति को क्षीण कर दिया है।

'मुझे मत छेड़ो। मैं थका हुआ हूँ', वह कहता।

अच्छा सो जाओ। परमात्मा तुम पर कृपा करें" वह आज्ञा मान कर उत्तर देती और आप भी जल्दी ही गहरी नींद में सो जाती। उसकी भौंहें विस्मय करती हिलतीं, उसके ओठों पर मुस्कान आती लगता था कि उसकी बन्द आँखें किसी अद्भुत आश्चर्यप्रद दृश्य को देख रही हैं।

ऐसी उदास घड़ियों में जबकि प्योत्र नतास्या के प्रति अपनी घृणा का विशेष स्पष्टता से अनुभव कर रहा होता, तो साथ ही अपने प्रथम पुत्र के आशंकापूर्ण जन्मदिन को याद करने को भी मजबूर हो जाता। प्रसव-वेदना के चौदह लम्बे घण्टों के बाद भय भीत और आँसुओं को टपकाती हुई उसकी सास उसे एक गंभीर और विचित्र वातावरण के कमरे में ले गई थी। उसकी पत्नी एक अस्त-व्यस्त सिमटे बिस्तरे में पड़ी तड़प रही थी। उसकी आँखें भयंकर वेदना से फटी जा रही थीं। शरीर पसीने से लथपथ हो रहा था और वह बड़ी मुश्किल से पहचानी जा रही थी। पत्नी ने एक भयंकर चीत्कार से उसका स्वागत किया था—

"प्यारे नमस्कार! मैं मर रही हूँ। लड़का पैदा होगा। प्यारे माफ करो।'

उसके फटे हुए सूजे ओठ मुश्किल से हिल पा रहे थे और

शब्द उसके गले से न निकल कर पेट से निकलते प्रतीत होते थे उसका वह पेट भी बहुत बुरी तरह फूला हुआ था लगता था कि अभी फटने वाला है। उसका नीला-सा चेहरा भी सूज रहा था। वह एक कुत्ते की तरह हाँफ रही थी और कुत्ते की तरह ही उसकी सूजी हुई जीभ बाहर निकली पड़ रही थी। वह लगातार ऐसे कराहती और चिल्लाती थी जैसे कि वह किसी को प्रेरणा दे रही हो अथवा अपनी बात को न मानने वाले व्यक्ति को वह तर्क से हराना चाहती हो।

"स-स—ब-का ।

उस दिन हवा बड़ी तेजी से चल रही थी। खिड़कियों के शीशों से चेरी की शाखाएँ टकरा रही थीं। खिड़की के बाहर उनकी सरसराहट हो रही थी और शीशों पर उनकी छायाएँ नाच रही थीं। प्योत्र ने शाखाओं की हलचलों को देखा और पत्तों की सरसराहट भी सुनी थी। वह आवेग में चिल्लाया—

परदे को नीचे गिरा दो ! क्या देख नहीं रहे ?

वह भय से कमरे के बाहर दौड़ गया जिसके पीछे औरतों की परिहास भरी चिल्लाहट आई—

किसी स्त्री की चीखों को सुन कर वह भय से उस ओर ही दौड़ पड़ा—

'ई—ई—उ—उ ..।'

डेढ़ घन्टे के बाद आनन्दातिरेक के कारण बोलने में असमर्थ उसकी सास पुन उसको पत्नी के बिस्तरे के पास ले गई।

नतास्या ने उसकी ओर अपनी दृष्टि उठाई। उसकी आँखों में शहीदों की आँखों में पाया जाने वाला गौरवपूर्ण तेज था। वह क्षीण स्वर में बोली—

"एक लड़का। एक पुत्र।"

वह उस पर पूरी तरह झुक गया और अपने गाल से उसका कन्धा दबाते हुए वह मुस्कुराया—

अच्छा माँ इस घटना को मैं जीते जी नहीं भूलूंगा। यह मैं तुम्हें दिखा भी दूंगा ! अच्छा धन्यवाद !'

आज पहली ही बार उसने अपनी पत्नी को 'माँ' कह कर पुकारा था। उसका सब भय और उसकी सब प्रसन्नता इस शब्द में ही निहित थी। नतास्या ने अपनी आँखें बन्द कर अपने दुबल और भारी हाथ से उसके सिर को थपथपाया।

'यह बड़ा पहलवान है माता के दागों वाली और बड़ी नाक वाली दाई ने बच्चे को दिखाते हुए कहा जैसे कि वह बच्चा उसने ही पैदा किया हो। परन्तु प्योत्र ने पुत्र को देखा भी नहीं। वह कमर में साग के समान चेहरे वाली अपनी पत्नी के अलावा और कुछ भी नहीं देख रहा था। पत्नी की वे आँखें काले गढ्ढों के समान लग रही थीं।

"क्या वह मर जाएगी ?"

"खूब ! माता के दाग वाली दाई तेजी से चिल्लाई। 'यदि लोग इसमें ही मरने लग जाँय तो दाइयों का क्या होगा ?"

अब वह पहलवान" नौ बरस का हो गया था। वह एक लम्बा उन्नत ललाट और नुकीली नाक वाला स्वस्थ लड़का था उसका चेहरा बड़ी-बड़ी दो गम्भीर स्पष्ट शालों-सीली आँखों से प्रकाशमान था। अलक्सेई की माँ और निकिता की ऐसी ही आँखें थीं। एक बरस के बाद याकोव का जन्म हुआ, परन्तु इल्या अपने जन्म के पाँच बरस बाद ही घर में बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति बन गया। उसे सबका लाड़-प्यार मिलता जब कि वह किसी की भी बात नहीं सुनता था। वह स्वतन्त्र जीवन व्यतीत

करता और लगातार बड़ी-बड़ी टेढ़ी और भयकर परिस्थितियों में पड़कर लोगों को विस्मित कर देता था। उसकी शरारतें लगातार असाधारण बनती गई और ये उसके बाप के अन्तर में अभिमान की एक अनुभूति जगा देती थीं।

एक दिन प्योत्र ने देखा कि उसका बेटा पहिया गाड़ी को लकड़ी के टब से जोड़ने की कोशिश कर रहा है।

'यह क्या हो रहा है ?

''एक स्टीमर।'

''नहीं, यह चलेगा तो नहीं।

''मैं इसे चलाऊँगा' बेटे ने अपने दादा की तरह जोश में कहा। अपने बेटे को उसके काम की निरर्थकता बताने में असमर्थ होने पर प्योत्र सोचने लगा—

'यह अपने दादा जैसा ही हठी है।

इल्या अपनी इच्छा की पूर्ति में ही लगा रहा। परन्तु वह लकड़ी के टब और पहिया गाड़ी से स्टीमर न बना सका। फिर उसने कोयले की गाड़ी को एक तरफ करके टब को नदी की ओर खींचना शुरू किया और उसे पानी में छोड़ उस पर चढ़ गया और दल-दल में जा फंसा। और भयभीत होने के बजाय वह नदी पर कपड़े धोती हुई औरतों की ओर चिल्लाया—

''ओरी औरतो! मुझे बाहर खींच लो, नहीं तो मैं डूब जाऊँगा!'

मताल्या ने इल्या की मरम्मत की और टब को तुड़वा कर अलाव के लिए उसकी लकड़ियाँ कटवा लीं। उस दिन के बाद से इल्या ने अपनी माँ की भी उपेक्षा करना शुरू कर दिया और वह उसे वैसे ही देखने लगा जैसे कि दो साल की अपनी बहिन तान्या को। वह बहुत व्यस्त लड़का था और हमेशा कुछ-न-कुछ

करता ही रहता था। कभी किसी चीज को काटता, तो कभी किसी को ठोकता या वैसे ही ठोका-पीटी ही करता रहता था। अपने पुत्र को काम में इस प्रकार लगा देख कर उसका बाप सोचता—

'यह बहुत होशियार है। किसी-न किसी दिन बड़ा निर्माता बनेगा।'

कभी इल्या अपने बाप की भी कई-कई दिनों तक उपेक्षा करता। और फिर अचानक उसके दफ्तर में जाकर उसके घुटनों पर चढ़ कर मांग करता—

'मुझे कोई कहानी सुनाओ।'

'मेरे पास समय नहीं।' बाप जवाब देता।

"और न मेरे ही पास है। इल्या कहता।

हंस कर पिता अपने कागजातों को एक तरफ रख देता और फिर सुनाना शुरू करता—

'अच्छा, तो एक समय की बात है।'

'मैं एक समय के बारे में सब-कुछ जानता हूँ मुझे तो कोई अजीब बात सुनाओ।

लेकिन बाप को कोई अजीब कहानी आती ही न थी।

"अच्छा तो तू अपनी नानी के पास जा।

'उसे तो जुकाम हो गया है।'

'तो फिर अपनी माँ के पास जा।

'वह मेरा मुँह धोने लगेगी।'

अर्तामानोव हँसा। अकेले उसके बेटे में ही सामर्थ्य थी कि उसे आसानी से हंसा कर उसे हल्का और प्रसन्न कर दे।

'अच्छा, तो मैं फिर तिख़ोन के पास जाता हूँ।' इल्या

कह कर उसके घुटनों पर से उतरने लगा। परन्तु प्योम ने उसे रोक लिया।

'तिखोम तुम्हें क्या सुनाएगा ?

'सब-कुछ।

फिर भी कुछ तो ?

'उसे सब-कुछ आता है। वह वसस्ना में रहा है। वहाँ लोग किश्तियाँ और जहाज बनाते हैं।

जब कभी इल्या कहीं ठोकर खाकर गिर पड़ता और चेहरे पर चोट खा कर आता तो माँ उसे मारती हुई चिल्लाती—

'छत पर मत चढ़ा कर, गिर जाएगा तो लँगड़ा-लूला या कुबड़ा हो जाएगा।'

लड़का गुस्से में लाल हो जाता और माँ को धमकी देते हुए कहता—

'अच्छा यह बात है ? तू ने अगर मुझे मारा तो मैं थककर मर जाऊँगा।

इल्या की दी हुई धमकियों के बारे में वह बाप को भी सुनाया करती था सुनकर खूब हँसता।

'उसे मारा मत कर, मेरे पास भेज दिया कर।'

बेटा उसके पास जाकर अपनी दोनों बाँहें कमर की तरफ बाँधे दरवाजे के बीच में खड़ा हो जाता। बाप सब कुछ भूलकर उसकी ओर उत्सुकता से देखता और उसके दिल में पुत्र के प्रति दुलार भर आता। वह उससे पूछता—

तुम अपनी माँ के प्रति असभ्य व्यवहार क्यों करते हो ?"

"मैं मूर्ख नहीं हूँ" लड़का गुस्से में जवाब देता।

"मूर्ख क्यों नहीं जब कि तू अपनी माँ से उचित व्यवहार नहीं करता ।"

"क्योंकि, वह मुझे मारती है । और सिम्योन कहता है कि मूर्ख ही पीटा करते हैं ।'

"सिम्योन ? सिमोन स्वयं ?'

परन्तु किसी कारण से प्योत्र दरबान को मूर्ख न कह सका । वह कमरे में चहलकदमी करने लगा और कमरे के दरवाजे से उस मानव प्राणी की ओर देखने लगा, लेकिन वह कुछ कह न सका ।

"तू अपने भाई याकोव को भी मारता है !'

"वह बेवकूफ है—उसे मारो तो भी तो उसके चोट नहीं लगती—वह तो मोटा है ।'

अच्छा यदि वह मोटा है तो इसका यह मतलब यह है कि तुम उसको मारो ?

वह बड़ा पट्ठ है ।'

प्योत्र ने अनुभव किया कि वह अपने लड़के को अपने अनुशासन में नहीं रख सकता । बेटा भी यह जानता था । यदि उसमें पहले ही से कान खींचे जाते तो शायद वह ठीक भी हो जाता और आज यह समय न आता । परन्तु वह इतने प्यारे घुँघराले बालों वाले बेटे पर हाथ भी नहीं उठा सकता था । उसको दंड देने के विचार मात्र से ही अपने प्यारे बेटे की नीली आसमानी पूर्ण आँखों को देखकर वह बड़ा बेचैन-सा हो जाता । और कभी सूरज भी बीच बिचाव कर देता था । प्रायः ऐसा होता था कि जिस दिन दस्या बहुत शरारत करता वह सब धूप वाला दिन होता । प्योत्र याद करता था कि कभी उसको भी ऐसे दण्ड सुनने पड़े होंगे । परन्तु उसे कुछ याद नहीं आता था । क्योंकि

उन डाँट फटकारों ने उसके हृदय को प्रभावित नहीं किया था। हाँ, उनसे वह ऊब और सखेद में, कुछ भय अवश्य का अनुभव किया करता था। लेकिन अच्छी तरह पड़ी मार आसानी से नहीं भुलाई जा सकती, प्योत्र वर्तमानोव यह अच्छी तरह जानता था।

दूसरा बेटा याकोव गोल-मटोल गुलाबी गालों वाला और मुखाकृति में अपनी माँ से मिलता था। कभी-कभी याकोव ऐसे चिल्लाता जैसे कि उसे इससे बड़ा आनन्द मिल रहा हो। आँखों से आँसू बहाने से पहले वह भौंकता गाल फुलाता और हथेली से आँखें मसने लगता था। वह बड़ा दब्बू और कायर था। पेटू की तरह वह भरपेट खाता और पेट भर जाने पर या तो सो जाता या शिकायत करता हुआ कहता—

माँ, मैं थका हुआ हूँ।

बड़ी लड़की एलीना गर्मियों में ही घर आया करती थी। वह अब जवान हो गई थी। एक लम्बे समय के बाद घर आने के कारण वह अपरिचिता और परदेसिन-सी हो गई थी। सात बरस का इल्या पादरी ग्लेब के यहाँ पढ़ने गया। परन्तु यह जान कर कि मिल के क्लर्क निकोनोव का लड़का बाइबिल की बजाय चित्रों वाली पुस्तक "हमारी मातृ भाषा" पढ़ता है वह अपने बाप से बोला—

"मैं अब पढ़ने नहीं जाऊँगा। मेरी जिह्वा में पीड़ा होती है।"

बहुत देर के सवाल-जवाबों के बाद उसने बताया—

'पाशा निकोनोव अपनी "मातृ भाषा' पढ़ता है जबकि मुझे किसी और की भाषा पढ़नी पड़ती है।'

कभी-कभी यह जिम्वादिल लड़का किन्हीं आन्तरिक बाधाओं में बँधा हुआ पहाड़ी पर चीड़ के पेड़ के नीचे घण्टा बैठा चलाता

नदी के कीचड़युक्त भूरे पानी में पत्थर फेंकता रहता।

"वह ऊबा हुआ है,' उसका बाप सोचता। स्वयं वह भी लगातार हफ्तों और महीनों कानों को बहरा बनाने वाले मिल के शोर-गुल को सुनते-सुनते यकायक ही विचारों के घन कुहासे से घिर कर एक प्रकार की अशान्ति से अन्धा-सा बन जाता था। उसको समझ में नहीं आता था कि इस अशान्ति का कारण क्या है। कारोबार की चिन्ताएँ अथवा घरबार की एक ही तरह की चकरी चिन्ताएं ? प्राय ऐसे दिन वह जिन लोगों से भी मिलता उन्हें नफरत की नजर से देखता—किसी को टेढ़ी नजर के कारण तो किसी दूसरे को अप्रिय शब्द कहने के कारण। ऐसे ही एक बादलों से घिरे दिन उसने तिखोन ब्यासोव के प्रति पूरी तरह घृणा प्रगट की थी।

ब्यासोव, प्योत्र की सास के साथ जा उसकी बाँह पर झुकी हुई थी, समीप आता जा रहा था। प्योत्र ने उसे कहते हुए सुना था—

"ब्यासोव-परिवार एक बहुत बड़ा परिवार है।

'तो फिर तुम अपने लोगों में क्यों नहीं रहते ?' प्योत्र ने सास की तरफ बढ़ कर उसकी मुक्त भुजा को थामते हुए प्रश्न किया। तिखोन एकदम चुप हो कर अलग हट गया। प्योत्र अर्तामानोव ने कठोरता और दृढ़ता से प्रश्न को दुहराया। दर बान ने अपनी भावशून्य आँखों को सिकोड़ कर उदासीनता से उत्तर दिया—

'क्योंकि अब उनमें स कोई रहा नहीं वे सब भाग गए हैं।

"भाग जाने का तुम्हारा क्या मतलब ? किसने उन्हें भाग जाने को मजबूर किया ?"

"दो भाई सेवास्तोपोल में भेज दिए गए जहाँ व म
गए। बड़ा भाई विद्रोहियों में जाकर मिल गया। उस सम
किसान लोग स्वतन्त्रता के लिए पागल हो उठे थ। उनका पिता
भी विद्रोह में शामिल था क्योंकि वह मांस नहीं खाना चाहता
था जबकि लोग उसे जबरदस्ती खिलाना चाहते थे। वह कोड़ों की
मार से बचने के लिए भागा लेकिन उसके पाँवों के नीचे की
बरफ टूट गई और वह पानी में डूब कर मर गया। मेरी माँ
के दूसरे पति व्यासोव से जो मछुआ था—दो सन्तान और
हुईं—एक मैं और दूसरा सर्गेई।

और अब वह तुम्हारा भाई कहाँ है? उस्याना ने अपनी आँसुओं से भारी आँखों को झपकाकर पूछा।

'उसे भी मार दिया गया।

'पू ये सब बातें ऐसे सुना रहा है जैसे कि मृतकों के लिए प्रार्थना कर रहा हो— प्योत्र अर्तामानोव न गुस्से में कहा।

'उस्याना इवानोव्ना मुझसे पूछ रही थीं। वह किसी कारण बेचैन-सी थीं और इसलिए मैंने अपने बारे में ।

अपनी बात को अधूरा ही छोड़ कर उसने झुककर एक टहनी को सड़क से उठाया और रास्ते के दूसरी तरफ फेंक दिया। एक-दो मिनट तक वे बिना बोले चुपचाप चलते रहे।

'तेरे भाई को किसने मारा? अर्तामानोव अचानक पूछ उठा।

'उसे कौन मार सकता था? मनुष्य ही मनुष्य को मारते हैं' व्यासोव न शान्त भाव से कहा। वाइमानोवा ने एक आह भरी और व्यासोव की बात को आगे बढ़ाया—

'बिजली के गिरने से भी तो मरते हैं।

मध्य ग्रीष्म के दिन अनेक परेशानियाँ लेकर आए

धीमे, धुँधले और भयभीत कर देने वाली नीरवता लिए आकाश के नीचे पृथ्वी पर चारों ओर झुलसान वाली निर्दय गर्मी छाई रहती थी। आग की लपटें जङ्गलों और यहाँ तक कि दल-दल में पड़ी सड़ी हुई लकड़ियों का चट कर जातीं। शुष्क उष्ण हवा अकस्मात् प्रचण्ड वेग से चल पड़ती—जङ्गलीपन से सीटियाँ सी बजाती—और करती वृक्षों के मुरझाए-सूखे पत्तों को प्रलय करती चीड़ की पुरानी पिछले साल से पड़ी सुइयों को इधर-उधर बिखेरती, रेत का बादल बना कर उसके साथ लकड़ी की छीलन बुरादा और मुर्गियों के पङ्ख लिए उड़ती और आदमियों से जा टकराती, उनके कपड़ों को फाड़ने का प्रयत्न करती और, अन्त में जङ्गल में जा छिपती और वहाँ भी दावानल को प्रचण्ड रूप से भड़का देती।

मिल में अत्यधिक अस्वस्थता व्याप्त हो गई थी। तकुओं की भू-भू और धरकी की चरमराहट के बीच अर्तामानोव ने सुनी, रह रहकर उठने वाली खाँसी का स्वर भी सुना। करघों के पास मुरझाए और थके चेहरे वाले मजदूरों की गति मन्द थी। उत्पादन घट गया और कपड़े की किस्म में भी फर्क पड़ गया। गैर हाजिरों की संख्या बढ़ती गई क्योंकि लोगों ने अत्यधिक शराब पीना शुरू कर दिया था और औरतें बीमार बच्चों की देखभाल करने को घर पर ही रह जाया करती थीं। ठिगने क़द का बूढ़ा बढ़ई सेराफिम जिसका चेहरा एक बालक की तरह गुलाबी था बच्चों के लिए छोटे-छोटे ताबूत बनाने में लगा रहता था और कभी ऐसा भी होता था कि उसे दफ्तर के पीले-पोले तख्तों को बड़े स्त्री-पुरुषों के लिए भी जोड़ना पड़ता था जो इस संसार में अपनी इहलीला समाप्त कर चुके थे।

'अब छुट्टियों की जरूरत है' अलक्सेई ने और दिया 'ताकि इन लोगों के हृदय उत्साह से भर जाँय और ये लोग प्रसन्न

थित हो जाँय '

उमने पत्नी-सहित मखे में आने से पहले इस सलाह को फिर दुहराया—

"मजदूरों को छुट्टी द दो य सब पुन जीवित हो जायंगे। तुम मेरी बात मानो आनन्द से जीवन बिताने पर बीमारियाँ दूर हो जाती हैं।

"तो इसका प्रबन्ध कर, प्योत्र ने अपनी पत्नी को आज्ञा दी। 'खूब अच्छी तरह असीमित रूप से।

नताल्या गुस्से में भुनभुनाने लगी। और उसने नाराजगी से पूछा—

"अब क्या बात है ?

नताल्या ने जोर से अपनी नाक साफ की और प्रतिवाद में अपने आँचल क सले में मुँह छिपाती हुई बोली—

सुन तो रही हूँ।"

छुट्टियों की दावत एक विशेष प्रार्थना से शुरू हुई। पादरी ग्लेब ने बड़ी गम्भीर धार्मिक प्रार्थना कराई। इन दिनों वह और भी दुर्बल हो चुका था। उसकी फटी आवाज अनभ्यस्त शब्दों का उच्चारण कर ऐसे उठ रही थी जैसे कि उसकी क्षीण होती हुई शक्ति प्रार्थना में ही चुक रही हो। क्षीणकाय मजदूर टकटकी लगाकर निहारते हुए भक्ति-भाव से स्थिर बैठे रहे। बहुत-सी स्त्रियाँ जोर से सिसकने भी लगीं। और जब पादरी ने अपनी शोकार्त आँखें धुए स भरे आसमान की ओर उठाई तो लोगों ने भी प्रार्थना और याचना भाव म धुँए के बीच धुंधले और मन्द प्रकाश वाले सूर्य की ओर देखा। शायद व सोचते थे कि इस गरीब पादरी को स्वर्ग में कहीं कोई परिचित दीख गया है वह इसकी प्रार्थना को सुन रहा होगा।

प्रार्थना के बाद औरतें बस्ती की गलियों में मेजें उठा लाईं और मजदूर मोटे-मोटे तख्तों के बादल और शाक से भरे लकड़ी के कठौतों के चारों तरफ दस-दस आदमी बैठे और प्रत्येक मेज पर एक पीपा घरेलू बीयर का और चौथाई पीपा वोदका का रक्खा हुआ था। इससे लोगों की उत्साह हीनता दूर हो गई और उनमें स्फूर्ति का संचार हो गया। एक प्रकार की गला घोंटने वाली चुप्पी खिन्न धरातल पर निराशा का आवरण डाला हुआ था अब हिली और दमदमों और जलते हुए चबूतरों की ओर भाग गई। बस्ती में आनन्द के गीत और लकड़ी के चमचों की खनखनाहट बच्चों के आमोद प्रमोद माताओं की झिड़कियाँ और नवयुवकों के परिहास की ध्वनियाँ सुनाई देने लगीं।

अत्यधिक भोज्य पदार्थों के कारण लोग तीन घण्टे तक मेजों पर डटे रहे। जब नशे से चूर लाशों को ढोकर घर पहुँचा दिया गया तो नौ-जवान लोगों ने साफ-सुथरे बढ़ई सराफिम को चारों तरफ से घेर लिया। उसने नीली सूती कमीज और पतलून पहन रक्खी थी जो अनेक बार की धुलाई के कारण फीकी हो गई थीं। बढ़ई की गुलाबी-गुलाबी नाक और शराब के नशे के कारण चेहरा किसी अजब आनन्द से चमक रहा था। पलकों की झपकनों के बीच उसकी आँखें प्रसन्नता से चमक रही थीं और उसकी प्रसन्नता के कारण उसकी उम्र के बारे में धोखा हो रहा था। इस प्रसन्नचित्त ताबूत बनाने वाले के चारों तरफ एक स्पन्दित करने वाला हल्कापन और उल्लास छाया था। उसके चेहरे पर स्वर्गिक आनन्द का रंग झलक रहा था जो उसके नाम के अनुरूप ही थी। एक बेंच पर वह अपने पतले घुटनों के साथ सिथरा[1] साज और अपनी काली गाँठदार मूलियों की जड़ों के समान उँगलियों से तारों से आवाज निकालता हुआ और

[1] सिथरा—यूनान का एक प्राचीन वाद्य यन्त्र।

एक अंधे भिखारी की तरह कृत्रिम करुण स्वर में नाक के स्वर से गा रहा था—

'लो, सुनो सज्जनो सुनो !
तुम्हें सुनाऊँ नई कहानी
बुद्धि का परिचय दो अपना
गूढ़ पहेली तुम्हें बुझानी !

उसने फिर वहाँ बैठी लड़कियों की ओर आँख से संकेत किया जिनके मध्य में सुन्दर मुखड़े उन्नत वक्ष और शोख आँखों वाली एक लड़की बड़ी शान के साथ बैठी थी। यह लड़की जिनन्दा सराफिम की पुत्री ही थी और मिल में बुनाई का काम करती थी। वह अब अधिक ऊँची आवाज में गाने लगा—

'प्रभु ईसा हैं स्वर्ग विराजित वातावरण सुरभित है सारा।
उज्ज्वल आभा मस्तक— कर हृदय बनाती अनुपम न्यारा ॥
खड़े हुए स्वर्णिम पुण्य से देवदार की ऊपर छाया।
रजत-सिंहासन बैठ लुटाएँ सोना-चाँदी-हीरा-माया ॥
धनवानों को गुण की खातिर क्योंकि होते बहुत भले हैं।
तकदीर के मार दीन-हीन भी उनकी कृपा-दृष्टि पले हैं ॥
भाई कह हम दीनजनों को प्यार से अपने गले लगाएँ।
निर्धन पशु, क्षुधा से पीड़ित है दया इन्हीं की रोगी पाएँ॥"

एकबार फिर उसने लड़कियों की ओर इशारा कर यकायक ही नाच का तराना छेड़ दिया। एक काँपती हुई आवाज के साथ उसकी लड़की भी आगे निकल आई। उसके हाथ सिर के पीछे—जिप्सियों की तरह बँधे थे—उसका उन्नत वक्ष काँप रहा था और अपने बाप के सुरीले गाने और बाजे के तारों की झन झनाहट से ताल से कर उसने नाचना प्रारम्भ कर दिया। उसका बाप गा रहा था—

'जिसको चाँदी मिल जाती है
बाँहें टाँगें उसकी थकतीं !

सोना या लेने की इच्छा,
अङ्ग-अङ्ग में आग लगाती!
हीरा-भामक पुरस्कार में—
मिलते हो आँखें चौंधियाती!

लड़कों ने ऊँचे स्वर से सीटियाँ बजाना शुरू किया, जिसमें सराफिम की सितारा की झनझनाहट और आनन्दपूर्ण गीत-ध्वनि डूब गई। अब लड़कियाँ और स्त्रियाँ द्रुत गति से नाचने लगीं—

'चीर-चीर सागर की छाती
व्यापारी पोत चले आते हैं।
सुन्दर बालाओं की खातिर
उपहार अमूल्य भर लाते हैं।"

और फिर नाचती हुई जिनैदा भी उनके गाने में अपने तीव्र स्वर से सम्मिलित हो गई—

'युवक नाविक ने है भेजा
प्यारी को कुछ गज टाट।
सी कमीज उसका वह पहने
व आएगा घर ठाट।
नरमोत्सा ने माश्यानका को
दी जोड़ी झुमकों की मढ़कर।
सब सुन के उत्सव में—
वे झुमके भी थे परम सुन्दर।"

इल्या मर्तामानाव गलीपरों के ढेर पर पावेल निकोलाय के साथ बैठा था। निकोलाव एक दुबला-पतला देखने में प्रौढ़-सा गंज सिर वाला लड़का था। उसकी लम्बी गरदन पर रखा सिर हमेशा हिलता रहता था और उसके बीमारों के से उदासीन चहरे

में चञ्चल भूरी आँखें थीं जिनमें कायरता की झलक थी। सामने नीली पोशाक पहने बुड्ढा सेराफिम इल्या को बहुत अच्छा लगा। उसे सेराफिम का सिपरा और उसका उल्लास तथा परिहासपूर्ण गीत भी बहुत पसन्द आया। परन्तु एकाएक वह गहरे लाल रङ्ग के ब्लाउज वाली की बीच में आकर नाचने लगी और बेसुरे गीत को उठाकर सारा मजा किरकिरा कर दिया। उसे इस स्त्री से बड़ी घृणा हुई—उसी समय निकोनोव ने धीमी आवाज में कहा—

'जिनैदा बड़ी असभ्य है। वह सब लोगों के साथ रह लेती है। तुम्हारे पिता के साथ भी—मैंने उसे आलिंगन करते हुए देखा है।'

'यह किसलिए", इल्या ने रूखता से कहा।

"तुम्हें इस बारे में बहुत-कुछ पता है!'

इल्या की आँखें नीची हो गईं। वह जानता था कि लड़कियों का आलिंगन क्यों किया जाता है। उसने अपने मित्र से इस बारे में पूछा ही क्यों, यह सोचकर उसे बड़ा दुःख हुआ।

"तुम झूँठ बोल रहे हो" उसने रुखता से कहा और फिर निकोनोव की बातों को सुनना बन्द कर दिया। वह इस कायर,-दब्बू खुशामदी लड़के को उसके भद्दे तरीकों, नीरस आवाज और मिल में काम करने वाली लड़कियों के बारे में किस्सों से बड़ी घृणा करता था। परन्तु जहाँतक कबूतरों की बात थी निकोनोव बड़ा पारखी था और इल्या कबूतरों का बहुत शौकीन था। और इसके साथ ही वह बस्ती के दूसरे लड़कों से इस कमजोर साथी की रक्षा करना भी अपना बड़ा महत्वपूर्ण अधिकार समझता था। सबसे बढ़कर निकोनोव में, देखी हुई अप्रिय और गंदी बातों को वर्णन करने की अपूर्व प्रतिभा थी—और वह प्रायः ऐसी

बातें ऐसा ही करता था। उसका कहने का लहजा इल्या के छोटे भाई याकोव के कहने के उस ढंग से मिलता था जिसे वह दुनिया की हर चीज के विरुद्ध शिकायत करने में प्रयुक्त करता था।

इल्या कुछ देर बिना कुछ कहे बैठा रहा और फिर उठकर घर चला गया। घर के बगीचे में धूल से भरे हुए पेड़ों के नीचे चाय की मेजें बिछ चुकी थीं। एक बड़ी मेज के चारों तरफ बहुत से लोग बैठे थे। वह शांत स्वभाव पादरी ग्लेब, साँवला घुँघराले बालों वाला जिप्सियों जैसा कुस्तोव और क्लर्क निकोनोव भी बैठा था। उसका चेहरा इतनी स्वच्छता से धुला हुआ था कि उस पर किसी तरह के भाव शेष नहीं थे। निकोनोव के गलमुच्छों वाली छोटी-सी नाक और उसके माथे पर चोट की सूजन थी, और उसके माथे पर की सूजन तथा नाक के बीच और आँखों के गड्ढों के चारों तरफ की त्वचा की सिकुड़नें फड़कती रहती थीं।

इल्या अपने बाप के बराबर जा कर बैठ गया। उसे विश्वास नहीं होता था कि यह आनन्द-विमुख पुरुष उस निर्लज्ज मजदूर लड़की के साथ किसी प्रकार का सम्बन्ध रख सकता है। बाप ने अपने भारी हाथों से बेटे के कन्धों को थपथपाया किन्तु कहा कुछ नहीं। सब लोग गर्मी के कारण मुरझाए हुए बैठे थे और उनके शरीर से पसीना चू रहा था। बोलने की कोशिश की जा रही थी। सिर्फ कुस्तोव की ऊँची आवाज ऐसे उठ रही थी जैसे कि सर्दियों की बर्फानी रात में स्पष्ट आवाज आती है।

क्या बस्ती की तरफ चलोगे ? माँ ने पूछा।

हाँ मैं चलता हूँ। कपड़े पहन आऊँ। बाप ने कहा। वह खड़ा हो गया और घर की ओर चल पड़ा। एक क्षण के बाद इल्या भी उसके पीछे-पीछे चला और ड्योढ़ी पर उसे पकड़ लिया।

'क्या बात है ?' बाप ने प्यार से पूछा। तो लड़के ने भी बाप की आँखों से सीधी आँखें मिलाकर पूछा—

"तुमने जिनदा का आलिंगन किया है या नहीं ?'

इल्या को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका बाप डर गया है। इससे उसे कुछ अचम्भा नहीं हुआ क्योंकि वह बाप को हमेशा से ही कायर और दब्बू समझता था जो सबसे डरता था और इसी कारण वह बहुत कम बोलता भी था। इल्या ने कई बार अनुभव किया कि स्वयं उससे भी उसका पिता डरता था। और, इस अवसर पर भी वह सचमुच ही भयभीत हो गया था। डरे हुए पिता को हौसला देने के लिए लड़का बोला—

मैं इस सब पर विश्वास नहीं करता। मैं तो सिर्फ पूछ ही रहा हूँ।'

बाप उसे दरवाजे में धकेल कर हाल में ले गया। और फिर अपने कमरे में पहुँच कर दरवाजा बन्द कर दिया। वह कमरे में एक कोने से दूसरे कोने तक भारी सांस लेता हुआ चहल कदमी करने लगा जैसा कि प्राय वह क्रोध में किया करता था।

"इधर आओ, बड़े अर्तामानोव ने डेस्क के बराबर रुक कर कहा तो छोटे अर्तामनोव ने उस आज्ञा का पालन किया।

'तुमने क्या कहा था ?

"मैंने नहीं पावलूशका ने कहा था। मैं इस पर विश्वास नहीं करता।

अच्छा ! तुम विश्वास नहीं करते। बहुत अच्छा ! अपने बेटे का ऊँचा माथा और हँसी रहित गम्भीर चेहरे को घूर लेने के बाद प्योत्र का गुस्सा ठण्डा हो गया। उसने अपने कानों को नोचा जैसे कि वह सोच रहा हो कि माथा यह ठीक है या बुरा कि उसका लड़का इस मूर्खता-पूर्ण अपवाद पर विश्वास नहीं

करता जिस एक ऐसे ही लड़के ने कहा है जो उसकी हीमायु का है। लड़के के विश्वास न करने से उसे कुछ शान्ति-सी मिली थी। परन्तु उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि बेटे को क्या और कैसे कहे, और न वह लड़के को ताड़ना देने का ही फैसला कर सका। परन्तु उसे कुछ-न-कुछ जरूर करना चाहिए, और इस लिए उसने सीधी समझ में आने वाली बात—अर्थात ताड़ने का ही फैसला किया। बड़ी अनिच्छा से उसने अपने भारी हाथों को बेटे के मोटे घुंघराले बालों में डालकर उंगलियां फंसाई और उसके सिर को झकझोर कर बोला—

'मूर्खों की बातें नहीं सुना करते समझे।

और फिर उसने बेटे को दूर धकेल दिया और आज्ञा दी—

जाओ अपने कमरे में जाओ। और वहीं रहना समझे।

बेटा दरवाजे की ओर चला गया उसका सिर एक तरफ झुका हुआ था जैसेकि वह कोई पराया भार हो। उसे देखकर पिता अपने को सन्तोष देता हुआ सोचने लगा—

अरे वह तो रोया भी नहीं। मैंने उसे मार नहीं लगाई।

उसने फिर नाराज होने का प्रयत्न किया—

"मूर्ख, जरा सोचो तो! वह विश्वास नहीं करता। अच्छा मैं अभी उसे बताता हूँ।

परन्तु, इससे अपने बेटे के प्रति दया और उसे मारने की भावना अथवा अपने प्रति असन्तोष और नाराजगी दूर नहीं हो सकी।

पहली बार ही मैंने उसे पीटा है। उसने घृणापूर्वक अपने लाल बालों वाले, हाथों को देख कर सोचा— और मैं, दस बरस की उम्र तक सैकड़ों बार पिट चुका था।

परन्तु इससे भी उसे सन्तोष नहीं हुआ उसने खिड़की से सूरज की ओर देखा जो गँदले पानी में तेल के धब्बे के समान दिखाई दे रहा था और फिर कुछ समय तक बस्ती से उठने वाले शोर को सुनने के बाद वह अनिच्छा से बस्ती में मनाए जाने वाले त्यौहार को देखने के लिए चल पड़ा। रास्ते में निकोनाथ से वह धीरे से बोला—

'तुम्हारा सौतेला लड़का मेरे इन्या से सब तरह की मूर्खतापूर्ण बातें करता रहता है।

'अच्छा मैं उसकी मरम्मत करूँगा' क्लर्क ने तपाक से प्रसन्न मुख से कह दिया।

'तुम उसकी जबान रोको' प्याव ने आँख की कोर से निकोनाथ के खाली चेहरे की ओर देखते हुए कहा और कुछ हल्कापन अनुभव कर सोचने लगा—

'यह और सब की तरह सरल है।

बस्ती के मजदूरों ने मालिक को देख कर जोर की ध्वनियों के साथ अभिनन्दन करना शुरू कर दिया। सुरा-मत्त लोगों के चेहरे आनन्द से तमतमा उठे और चापलूसी का जोर अधिक था। सेराफिन जिसने टाट के नए जूते पहन रखे थे और सफेद पट्टियाँ को लाल फीते से पाँवों पर मनोंबियम फ़ैशन से बाँध रखा था। अब मर्तामानाथ के सामने आकर थिरक-थिरक कर नाचने और प्रशंसा के गीत गाने लगा—

> 'आते हैं वे कौन बताओ ?
> क्यों हमारे स्वामी ही तो—
> जिन पर है हमको भी गर्व !
> साथ चले हैं जो मदमाती
> साथ आ रहीं स्वामिन् प्यारी !

भूरी दाढ़ी लम्बे बालों वाला और देखने में पादरी के समान इवान मरोग्रोव गम्भीर मद ध्वनि में चिल्लाया—

"हम आपके साथ बहुत सुख से हैं। हमें—आपको अपने बीच पा कर बड़ी प्रसन्न हुई है।

एक भोर वृद्ध पुरुष ममायेव बड़े आनन्द में चिल्लाया—

"वर्तमानोव-परिवार अपने लोगों का ध्यान राजा की तरह रखता है।'

और निकोनोव सब लोगों को सुनाते हुए कोल्वेव से बोला—

"ये लोग कितने कृतज्ञ हैं? ये अपने शुभचिन्तकों की कदर करना जानते हैं।'

'माँ, लोग मुझे धक्का दे रहे हैं' अपनी गुलाबी रेशमी तंग बनियान में गेंद की तरह लगने वाले याकोव ने शिकायत की। माँ ने उसकी उङ्गली पकड़ रखी थी। मजदूर स्त्रियों की ओर बड़े गौरव के साथ मुस्कराती हुई वह उससे बोली—

'देख! वह बुड्ढा कैसा नाच रहा है।

बुड्ढा बढ़ई चमक रूप से फिरकनी की तरह चक्कर काट रहा था और उछल-उछल कर एक के बाद दूसरा टप्पा गा रहा था—

"दौड़ो दौड़ो दौड़े आओ,
धम्-धम्, धम् धम् भागे आया!
धमड़े के पूत हाल भारी—
टाट के चूते तुम बनवाओ!
क्वारी बाला मधुर न उतनी
युवती को तुम गले लगाओ!

वर्तमानोव के लिए यह प्रशंसा नई नहीं थी। उसके

पास इन प्रशंसाओं की सचाई पर संदेह के कारण थे। परन्तु, फिर भी वह उन प्रशंसाओं से नरम पड़ गया और आनन्द से मुस्कराता हुआ बोला—

'बहुत अच्छा आप लोगों की शुभकामनाओं के लिए धन्यवाद ! कोई बात नहीं हम इसी प्रकार मित्रतापूर्वक निबाहे जाएँगे ! क्यों नहीं !'

और वह सोचने लगा—

'अफसोस है कि इल्या अपने पिता के इस सम्मान को नहीं देख रहा।'

अतामानोव को उन लोगों की किसी तरह सहायता करने की आवश्यकता अनुभव हुई। कुछ सोचने के पश्चात् वह अपनी ओर लोगों को आकर्षित कर घोषणा कर उठा—

'बच्चा के अस्पताल को हम दुगना कर देंगे।

अपने हाथों को ऊँचा फेंक कर सराफिम उछल पड़ा।

"लोगो तुमने सुना ? मालिक की जय हो !'

लोगों ने ऊँची आवाज में जय-घोष किया। मजदूर स्त्रियों से घिरी नतास्या इस अवसर से अधिक प्रभावित हुई। वह नाक के स्वर में बोली—

"तुम में से कुछ जाकर बीयर के तीन पीपे और ले आएँ। तिख़ान तुम्हें दे देगा। जाओ, भागो जल्दी।

इससे स्त्रियों का आलम और अधिक बढ़ गया और निकोनाव सिर हिलाता हुआ भावुकतावश बोला—

"यह प्रधान पादरी के स्वागत जैसा मौका है !'

"माँ-माँ ! मुझे गर्मी लग रही है" याकोव कुनकुनाया।

इस प्रसन्नता के अवसर पर कुछ रंग में भंग भी हुआ।

कमरे म दरवाजे से खिड़की तक वह चहलकदमी करता हुआ इस बातचीत को खतम करने के लिए छटपटाने लगा। वह डर रहा था कि बेटा कुछ और न पूछ बठे।

"यहाँ मिल में तुम बहुत-सी ऐसी बात सुनोगे और देखोगे जो तुम्हें नहीं देखनी चाहिए। वह कमर से पलंग को दबाते हुए बेटे की ओर बिना देखे कहता गया। "तुम्हें बहुत-कुछ सीखना है। अब तुम्हें नगर के स्कूल में भेजना है। तुम वहाँ पढ़ने जाओगे ?'

"हाँ।'

"तो ठीक है।

उसने बेटे को दुलार करना चाहा। परन्तु, किसी कारण वह रुक गया। उसे याद नहीं आ रहा था कि कभी उसके माँ बाप ने उसे मारने के बाद दुलराया भी था।

"अच्छा अब तुम जाओ और ध्यान देखना उस पारखा से तुम्हारी दोस्ती न रहे, मैं यही चाहता हूँ।

"उसे तो कोई भी नहीं चाहता।'

"ऐसे गन्दे लड़के को कौन प्यार कर सकता है ?'

अपने कमरे में पहुँच कर खिड़की के पास बैठे अर्तामानोव ने सोचा बेटे के साथ बातचीत करना ठीक नहीं रहा।

मैंने उसे बिगाड़ दिया है। अब तो वह मुझसे डरता भी नहीं।

बस्ती की ओर से तरह-तरह की मिश्रित आवाजें आ रही थीं। सर्दियों की भिनभिनाहट और गीत ऊँची आवाज में की जाने वाली बातचीत और हारमोनियम की चीं-चीं सुनाई दे रही थी। तभी फाटक के पास स तिरवान की आवाज साफ-साफ सुनाई दी—

'क्यों बच्चे, तुम घर में ही क्यों हो ? लोग खुशियाँ मना रहे हैं और तुम घर में ही बैठे हो ? पाठशाला जा रहे हो, यह बहुत अच्छी बात है। अनपढ़—का जन्म ही व्यर्थ है ऐसा लोग कहते हैं। परन्तु, मैं तुम्हारे बिना अकेला ही रह जाऊँगा।'

अर्दामानोव चाहता था कि जोर से चिल्लाए—

"तू झूठ बोल रहा है! अकेला तो मैं रह जाऊँगा! आह! मालिक के बेटे के लिए तू कितनी चापलूसी कर रहा है? बेईमान कहीं का! उसने ईर्ष्या-पूर्वक सोचा।

जब लड़का शहर में पढ़ने चला गया जहाँ पादरी स्तेव का भाई जो स्कूल मास्टर था उसे स्कूल में भरती करने के लिए तैयार था ल्योश ने अनुभव किया कि उसका हृदय खाली हो गया है और घर उसे काटने लगा है। उस अपनी आत्मा में बड़ी भारी रिक्तता और घर में सूनापन दिखने लगा। उसे ऐसा प्रतीत होने लगा जैसे उसके सोने के कमरे में लैम्प बुझ गई हो। वह घर में बहुत बेचैनी और घबराहट-सी अनुभव करने लगा वैसी कि वह सोने के कमरे में लम्प बुझ जाने पर करता था ल्योश प्रकाश का इतना आदी हो गया था कि लम्बी रातों में जब कभी लैम्प बुझ जाती तो वह जाग उठता था।

अपने जाने से पहले इल्या ने ऐसा व्यवहार किया जिससे लगा कि वह जानबूझ कर अपने पीछे बुरी याद छोड़ कर जाना चाहता है। उसने अपनी माँ से बड़ा बुरा व्यवहार किया और आखिरकार वह रोने लगी। उसने याकाव के सब पक्षियों को पिंजरे से बाहर छोड़ दिया और अपनी मैना जिसे याकाव को देने का वायदा किया हुआ था उसने निकानोव को दे दी।

'तुम्हें क्या हो गया है?' बाप ने उससे पूछा। परन्तु उसने एक तरफ सिर करने के अलावा कोई जवाब नहीं दिया।

अर्तामानोव को ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसका बेटा उसकी मखौल कर उसे बार-बार याद दिला रहा था कि वह क्या भूलना चाहता है। यह बड़ी विचित्र बात है कि प्योत्र के हृदय में इस छोटे-से लड़के ने कितना स्थान घेर रखा था।

"क्या मेरे बाप ने भी कभी मेरी इतनी परवाह की थी?'

उसकी स्मृति ने उसे विश्वास के साथ उत्तर दिया कि उसने अपने पिता को कभी किसी निकटवर्ती प्रेमी पुरुष के रूप में अनुभव नहीं किया बल्कि, सदा कठोर स्वामी के रूप में। वह उसकी उपेक्षा कर अलक्सेई का अधिक ध्यान रखता था। "तो, क्या मैं अपने बाप से अधिक दयालु हूँ।" अर्तामानोव ने मन-ही मन सोचा और घबराहट से रुक गया। वह नहीं कह सकता था कि वह दयालु है या क्रोधी। इन विचारों से उसे चैन नहीं मिल रहा था, ये विचार प्राय अचानक ही उसे काम के समय दु खद रूप से घेर लेते थे। उसका कारोबार बड़े ज़ोर-शोर से बढ़ रहा था। सैकड़ों आँखें उसकी ओर लगी थीं और निरन्तर उसकी ओर से सावधानी चाहती थीं। परन्तु, जब कभी उसे इल्या की याद आती तो उसके सब कारोबार सम्बन्धी विचार तागे की तरह टूट जाते जिन्हें वह फिर जोड़ने की कोशिश भी करता। इल्या की अनुपस्थिति के कारण हृदय के शून्याकाश को पूरा करने के लिए उसने छोटे लड़के याकोव की ओर ध्यान देना शुरू किया। परन्तु उसे बहुत निराशा के साथ मानना पड़ा कि याकोव से उसे सन्तोष नहीं हो सकेगा।

पिताजी ! मुझे एक बकरा खरीद दो, याकोव ने माँग की। वह हमेशा ही कुछ-न-कुछ माँगता ही रहता था।

'बकरा ही क्या ?

मैं उसकी सवारी करूँगा।

"यह तो बड़ा भद्दा विचार है। बकरों पर तो सिर्फ चुड़ैलें सवारी करती हैं।

"एलीना न मुझे एक चित्रों की किताब भेंट की है। उसके एक चित्र में एक बहुत अच्छा लड़का बकरे की सवारी कर रहा है।"

बाप न सोचा इल्या न तस्वीर पर कभी भी विश्वास नहीं किया होता। वह तो मुझे चुड़ैलों के बारे में बतलाने के लिए ही परेशान करने लगता।

वह याकोव की इस बात को भी पसन्द नहीं करता था कि मजदूर लड़कों स लड़ने-झगड़ने के बाद फिर शिकायत लेकर आ जाता था कि उसे लड़कों ने मारा है।

बड़ा लड़का भी क्रोधी और लड़ाकू था परन्तु उसन कभी भी किसी की कोई शिकायत नहीं की। भले ही वह बस्तियों के साथियों स पिटकर और चुटैल होकर ही क्यों न आया हो। यह छोटा लड़का कायर और आलसी था। वह हर समय कुछ-न-कुछ चबाता या चूसता ही रहता था। कभी-कभी याकोव की उन चेष्टाओं में एक कठिनाई स समझी जाने वाली बात होती, जिसके कारण उससे कुछ आशा भी की जा सकती थी। एक दिन, चाय के समय जब नताल्या उसका दूध उँडेल रही थी तो उसकी आस्तीन म उलझ कर चाय का एक ग्लास उलट गया और उसकी टाँग जल गई।

और मैं देख रहा था कि तू ऐसा ही करेगी' याकोव न ज़ोर स हँसते हुए शेखी मारी।

'तूने देखा और फिर भी चुप रहा। यह बड़ी बुरी बात है बाप न उसे बताया। अब देखो तो माँ की टाँग जल गई है।

याकोव मुँह स आँखें झपकाता और बिना कुछ कह खाने

की वस्तुएं चबाता रहा । कुछ दिनों के बाद बाप ने आंगन में किसी से उत्साह के साथ बक-बक करते हुए उसकी आवाज सुनी—

"मैं देख रहा था कि वह उसे मारने जा रहा है। वह लुकता-छिपता उसके पीछे से आया और इसे खूब मारा और एक घूंसा दिया।"

खिड़की से झांक कर अर्तामानोव ने देखा कि उसका पुत्र बड़ी व्यग्रता से उस बेकार लड़के पावलूश्का निकोनोव के साथ बातचीत कर रहा है। उसने याकोव को घर में बुलाया और निकोनोव से दोस्ती के लिए मना किया। वह बस कुछ और भी उपदेश देना चाहता था लेकिन लड़के की जामुनी-सफेद और विचित्र प्रकाश वाली पुतलियों को देख कर—उसने सिर्फ एक सांस भरी और लड़के को दूर कर दिया—

'बस परे हट, भावशून्य आंखों वाले !'

याकोव इतनी सावधानी से गया जैसे कि फर्श पर बर्फ बिछी पड़ी हो। उसकी कोहनियां कोरों से लगी थीं और हाथ ऐसे फने हुए थे जैसे कि वह किसी अधिक भारी वस्तु को उठाए हुए हो।

'फहड़ ! और भूस भी है। पिता ने निश्चय के साथ कहा।

उसकी बड़ी ऊंची और चुपचाप रहने वाली लड़की एलीना में भी कुछ ऐसी नीरसता थी जैसे कि वह याकोव में देखता था। वह लेटे-लेटे किताब पढ़ना पसन्द करती थी चाय के समय खूब मुस्कराया करती और फिर भोजन के समय रोटी को बड़े नखरे से अपनी कोमल टेढ़ी उंगलियों से तोड़ती और तोरवा में चमच को ऐसे चलाती जैसे कि उसमें मक्खी पड़ी हो। उसके बड़े-बड़े

साथ-साथ भाठ हमेशा मिले हुए रहते और वह अपनी माँ से ऐसी आवाज़ में बात करती जो लड़कियों के लिए अनुचित थी—

"यह अब ऐसे नहीं करते। अब यह फैशन में नहीं है।"

और जब बाप ने उससे पूछा—

"तू इतनी पढ़ी-लिखी लड़की है। तू कभी यह भी देखती है कि मिल में सारी कमीज़ों के लिए कपड़ा कैसे बुना जाता है?"

"कृपा कर मुझे वहाँ ले चलिए।" वह बोली।

तब उसने अपनी बढ़िया पोशाक पहनी और अपनी छतरी साथ ली जो उसके चाचा प्रसकवेई की भेंट थी और मनुआ सा अपने बाप के पीछे बड़ी सावधानी से चल पड़ी ताकि उसकी पोशाक में कोई सीवन उमड़ न जाए। मिल में आकर उसने कई बार छींका लेकिन जब मज़दूरों ने उसके स्वास्थ्य की कामना की तो वह शरमा कर चुपचाप बिना मुस्कराए किन्तु बड़े गौरव के साथ अपने सिर को हिलाती रही। बाप ने उसे कपड़ा बुनने की सारी क्रियाएँ समझाईं। परन्तु यह देखकर कि मशीनों की बजाय वह अपनी टाँगों को देख रही थी बाप चुप हो गया और उसने अपनी लड़की की कारोबार के प्रति उपेक्षा देख एक चोट-सी अनुभव की। कारखाना से बाहर आकर जब बाप ने उससे पूछा—

क्यों पसन्द आया?'

बहुत गर्द है,' अपनी पोशाक का निरीक्षण कर उसने जवाब दिया।

'तो तुझे कुछ नहीं दिखा।' प्योत्र ने दुःखद वाणी में कहा—'अपन इस घाघरे को उठाए क्यों फिर रही है? आमन

साफ है और तेरा घाघरा भी ऊँचा है।"

यह चौंक उठी और अपनी छोटी-छोटी उङ्गलियों से पकड़े घाघरे को छोड़ कर वह क्षमा भाव से बोली—

यहाँ तेल की बड़ी गन्ध आती है।

वर्तामानोव को लड़की का एक उङ्गली और अँगूठे से घाघरा पकड़ने का तरीका विशेष रूप से अप्रिय लगा था। वह बोला—

'देख सिर्फ इन दो उङ्गलियों से तू जीवन में कुछ नहीं कर सकती!'

एक बार बरसात के दिन जब वह सोफे पर लेटी हुई किताब पढ़ रही थी, तो बाप उसके बराबर बैठ गया और पूछा—'क्या पढ़ रही है?'

"एक डाक्टर के बारे में।

'अच्छा मतलब है कि कुछ वैज्ञानिक चीज पढ़ रही है।'

परन्तु जब उसने किताब को देखा तो उसे बड़ा दुःख हुआ।

"झूठ क्यों बोलती है? यह तो कविता है क्या कभी विज्ञान भी कविता में लिखा जाता है!"

वह जल्दी-जल्दी घबराई हुई बाप को बताने लगी कि किस प्रकार परमात्मा ने शैतान को आज्ञा दी कि एक जर्मन डाक्टर को फुसलाए और किस प्रकार शैतान ने डाक्टर के पास उसे फुसलाने के लिए अपने छोटे शैतान भेजे। वर्तामानोव ने अपने कानों को ऊँचा कर इस कहानी का अभिप्राय समझने की कोशिश की परन्तु उसे अपनी लड़की की एक उपदेश-सी ध्वनि बड़ी उपहास्यास्पद और दुःखद प्रतीत हुई जिससे वह चिढ़ गया और

उसे समझने मे कठिनाई हुई ।

'डाक्टर—शराबी था क्या ?

वह देख सकता था कि इस प्रश्न से एलीना घबरा गई और फिर उसकी सफाई का सुन बिना ही वह गुस्से में बोला—

"यह बड़ी गड़बड़ कहानी है—एक मन गढ़न्त कहानी। डाक्टर तो शैतानों में विश्वास ही नहीं करते। यह किताब तेरे पास कहाँ से आई ?

'मैकनिक ने मुझे दी थी।

प्योत्र को स्मरण आया कि एलीना किस प्रकार विचार मग्न अपनी बिल्ली जैसी नीली-नीली आँखों से सामने देखती है और उसने लड़की को चेतावनी देना जरूरी समझा—

'कोप्तेव तेरा जोड़ा नहीं। तू उसके साथ बहुत घनिष्टता ...त कर।'

हाँ एलीना और याकोव दोनो बड़े सुस्त और ...ल्या के ...कायदे म निरर्थक से थे। अब उसे स्पष्ट दिखलाई देता था कि ...या इन दोनों स अच्छा है। उसने इस बात पर कभी गौर ...ीं किया कि किस प्रकार धीरे-धीरे अपने पुत्र के प्रति प्रेम की ...ह उसके हृदय में पावल निकोलोव के प्रति घृणा पैदा होन ... । जब कभी वह इस बीमार नाटे-से बच्चे को देखता वह ...ा—

'इस गन्दे लड़के से ही ।

...इस लड़के के प्रति उसे घृणा होने लगी। निकोलोव कन्धा ...अपनी पतली गर्दन के ऊपर बेचैनी के साथ अपना सिर ...हुमा चलता, और जब कभी वह लड़का दौड़ता भी तो ...व को ऐसा प्रतीत होता कि वह कायर बुरे काम करने

वाला लड़का कुछ चोरी करके भा रहा है। वह दिन भर घर में काम करता रहता। वह अपने सौतेले बाप के जूते साफ करता उसके कपड़े धुला करता। घर में लकड़ी ढोकर लाता और फाड़ता पानी लाता और रसोई से कूड़े करकट की बाल्टियाँ बाहर ले जाता। अपने छोटे भाई के पोतड़े धोता। एक चिड़िया की तरह मेहनती गन्दा फटे हाल लड़का जिस किसी से भी रास्ते में मिलता कुत्ते की तरह हँसता हुआ उसका स्वागत करता। जब भी धर्तामानोव उसे चाहे कितनी भी दूर से देखता तो वह लड़का अपनी बत्तख जैसी गर्दन ऐसे हिलाता कि उसका सिर छाती पर लटक जाता। धर्तामानोव जब कभी इस लड़के को पतझड़ की बरसात में भीगते या सर्दी के दिन लकड़ी काटते — अपनी ठिठुरती लाल उँगलियों को मुँह की साँस से गर्म करने का प्रयत्न करते या बत्तख की तरह एक टाँग पर खड़े और दूसरी को गर्माने के लिए उठाते हुए और एड़ियों से घिसे-फटे पुराने जूते पहिन कर जाता देखता तो दिल में बड़ा प्रसन्न होता। जब यह लड़का खाँसता था तो इसका सारा शरीर हिलता था और वह अपनी छाती को अपने सफेद छोटे-छोटे हाथों से थाम लेता था।

धर्तामानोव को जब पता लगा कि यह लड़का उसके गुसल खाने के छज्जे में अपने कबूतर रखता है तो उसने तिरोम को आज्ञा दी कि वह इन सब पक्षियों को छोड़ दे और आगे के लिए ध्यान रखे कि यह लड़का छज्जे में न चढ़े।

"वह किसी दिन छत से गिर जाएगा और हाथ-पाँव तोड़ लेगा। कैसा गन्दा निर्लज्ज लड़का है!"

एक दिन शाम के समय अपने दफ्तर में आते समय उसने देखा कि यह लड़का चाकू से फर्श को खुरच रहा है और एक कपड़े से गिरी हुई स्याही को हटाने की कोशिश कर रहा है।

'यह स्याही किसने गिराई ?'

'पिताजी ने।'

'तूने तो नहीं गिराई।'

'परमात्मा की कसम—मैंने नहीं !'

'तो फिर तू क्यों रोने लगा ?'

घुटनों के बल सिर झुकाए बैठे हुए, थप्पड़ की प्रतीक्षा में पावेल ने कोई जवाब नहीं दिया। उस समय पर्वमानाव ने उस पर नजर डालते हुए सन्तोष से कहा था—

'तेरे साथ ऐसा ही होना चाहिए।'

और अचानक क्षण भर में ही प्रसन्न होकर वह अपनी दाढ़ी में से हँसा और सोचने लगा कि यह छोटा-सा नाचीज बच्चा कितना उपहास्यास्पद प्रतीत हो रहा है।

मैं भी कितना मूर्ख हूँ कि इसकी बातों में समय नष्ट करने लगा। उसने लड़के की ओर कुत्सा से देखकर सोचा और उसके सामने ताँबे का पाँच कुपिक का एक भारी सिक्का फेंक दिया।

'लो ! मिठाई खरीद लेना।'

लड़के ने डर कर सावधानी से अपनी मैली हड्डियों वाली उंगलियों से सिक्के को इस तरह पकड़ा जैसे कि कहीं उसकी गन्दी उंगलियों में ताँबा डंक न मार दे।

'तेरा सौतेला बाप तुझे मारता है क्या ?'

'हाँ।'

'तो क्या हुआ ? सभी पिटते रहते हैं—' पर्वमानोव ने सान्त्वना देते हुए कहा।

कुछ दिन बाद याकोव ने मर्तामानोव से पावलुश्का के बारे में शिकायत की, तो उसने विश्वास न करते हुए भी अपने स्वभाव के अनुसार बलर्क को सुझाया—

'अपने सौतेले बेटे को ताड़ना दो।'

"मैं उसकी खूब मरम्मत करता हूँ" आदर से क्लर्क ने विश्वास दिलाया।

गर्मी में इल्या छुट्टी के दिनों में घर आया यह। अपरिचित पोशाक में, साफ-सुथरे बाल कटवाए था—जिससे उसका चेहरा और चौड़ा हो गया था। अब मर्तामानोव की पावेल के प्रति घृणा और अधिक हो गई क्योंकि उसका लड़का फिर इस छोटे से निरर्थक गुब्बे लड़के के साथ दोस्ती बढ़ा रहा था। इल्या का व्यवहार विपरीत रूप में नम्र हो गया था और वह बड़े सुथरे हुए शब्दों में अपने माता-पिता को 'आप' कहकर पुकारता जेब में हाथ डालकर चलता घर में मेहमान की तरह व्यवहार करता और भाई का इतना चिढ़ाता कि वह रुआँसा-सा हो जाता। अपनी बहन को भी इतना सताता कि वह गुस्से में उसके किताब फेंककर मारती। मतलब यह है कि उसका व्यवहार बहुत ही गन्दा था।

"मैंने तुम्हें पहले ही कहा था!" नतालिया ने पति से शिकायत की—"और अन्य लोग भी कहते हैं कि पढ़ाई से उद्दण्डता बढ़ती है।"

मर्तामानोव चुप रहा और चिन्तापूर्वक पुत्र की ओर देखता रहा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि यद्यपि इल्या बहुत शरारतें करता है परन्तु वह दिल से नहीं केवल सताने के लिए करता है। स्नानागार के छज्जे पर कबूतर फिर फड़फड़ाने और गुटर्गूं करने लग। इल्या और पावेल घण्टों दिनभरों के बराबर बैठे कबूतरों का उड़ाने और बड़ी तन्मयता से बातचीत करते रहते।

एक बार इल्या के आने के शुरू के दिनों में ही बाप ने बेटे से कहा था—

'कहो स्कूल में तुमने क्या-क्या सीखा ? मैंने तुम्हें बहुत सी कहानियाँ सुनाई हैं । अब तुम्हारी बारी है ।

इल्या ने बहुत संक्षेप में और जल्दी-जल्दी निरर्थक कहानी सुनानी शुरू की कि लड़के अध्यापकों से कैसी-कैसी बातें कहते हैं ।

इन बातों की क्या जरूरत ?

'वे भी तो हमें दुखी कर देते हैं इल्या ने बताया ।

'अच्छा अब समझा ! लेकिन यह बात मुझे उचित नहीं लगी । क्या तुम्हारी पढ़ाई कठिन है ?

'नहीं हल्की ।

"सच बोल रहा है ?"

'तुम मेरे स्कूल की रिपोर्ट देखो —इल्या ने कन्धे हिला कर कहा और इस समय उसकी नजर समावार बगीचे और आसमान की ओर लगी थी । बाप ने पूछा—

"वहाँ क्या देखते हो ?

'बाग ।

बड़े अर्ताभानोव ने एक गहरी साँस भरी ।

अच्छा जाओ खेलो-कूदो ! दिखता है तुम्हें मेरी बातों में दिलचस्पी नहीं ।

जब वह अकेला रह गया तो उसे याद आया कि बचपन में जब कभी बाप उससे कुछ कहता था तो उसे भी उसके साथ नीरसता और भय का अनुभव होता था ।

"मास्टरों के साथ चालें भी चलते हैं। मेरी खोपड़ी में तो यह बात उस समय कभी आई नहीं जब गिरजे का पादरी मुझे चाबुक से सिखाया करता था। मालूम पड़ता है कि अब बच्चों के लिए विद्यार्थी जीवन बहुत आसान हो गया है।'

शहर के स्कूल को वापिस जाने से पहले इल्या ने बाप से एक प्रार्थना की। यह उसकी एकमात्र प्रार्थना थी

'पिताजी! पावेल को स्नानागार के कमरे में कबूतर रखने की इजाजत दे दीजिएगा।

पिता ने किसी प्रकार का वायदा किए बिना ही कहा—हर किसी की तकलीफें दूर नहीं की जा सकतीं।'

"मतलब यह कि वह उन्हें वहीं रख सकता है" बेटे ने निश्चित किया। 'मैं उसे कहता जाऊँगा—बहुत खुश हो जाएगा।

बड़े अर्तामानोव को इस बात का बड़ा दुःख था कि लड़का उस बेकार गन्दे लड़के की परवाह किया करता है और अपने बाप के जीवन में कुछ आनन्द लाने का कोई ख्याल नहीं करता। इल्या के चले जाने के बाद उसके हृदय में अपने क्लर्क के इस सौतेले लड़के के प्रति जबरदस्त घृणा बढ़ गई। और अब यह यहाँ तक बढ़ी कि जब कभी घर में, मिल या शहर में कोई दुर्घटना होती तो इस गन्दे मैले-कुचैले लड़के की मूर्ति अनिच्छित रूप से अर्तामानोव की इच्छा-कल्प में आ जाती। उसे ऐसा प्रतीत होता कि वह उसके सब कटु विचारों और बुरी भावनाओं को लटकाने के लिए अपने अङ्ग फैलाकर भेंट कर रहा है और यह बच्चा, काई और साँझ की छायाओं की तरह उसके विचारों में वास्तविक रूप से बढ़ने लगा। वह एक चोर, उचक्के शैतान की तरह उसकी आँखों के सामने आ जाता था।

एक बार भारतीय-ग्रीष्म के सुखद दिन को थका-माँदा और

नाराज मर्तामानोव बगीचे में आया। संध्या झुकी आ रही थी और ग्रीष्म का थका सूर्य बिना किसी ताप के वायु प्रताड़ित हरित आकाश में जो वर्षा से धुल चुका था मन्द-मन्द प्रकाशित हो रहा था। बगीचे के कोने में सिक्षान ब्यासोव गिरे हुए पत्तों को एक ब्रुश से समेट रहा था जिसकी शोकार्त कोमल सरसराहट बगीचे के बीच तैर रही थी। बगीचे के पेड़ों के परली ओर से मिल की आवाज आ रही थी और काला-नीला धुआँ मन्द अलस गति से पारदर्शक वायु को मलिन करता हुआ आकाश में उठ रहा था। दरबान को देखने या बातचीत की अनिच्छा से मालिक बगीचे के दूसरी तरफ जहाँ स्नानागार था चला गया। उसने देखा कि स्नानागार के दरवाजे बिल्कुल खुले पड़े हैं।

'हो न हो वह यहीं है।'

सावधानी से कपड़े बदलने के कमरे में झाँककर उसने अपने छोटे से दुश्मन की शक्ल देखी। उसका सिर झुका हुआ था टाँगें अलग-अलग थीं और लड़का हस्त-मैथुन में लगा हुआ था। एक क्षण के लिए मर्तामानोव को प्रसन्नता हुई परन्तु इसी क्षण उसे आक्रोश और हत्या का स्मरण आया और वह बड़ी घृणा से चिल्लाया—

सूअर कहीं के! तू यहाँ क्या कर रहा है?

पावेल के हाथ चलने बन्द हो गए और उसका सारा शरीर अजीब तरीके से बगल पर झुक गया। उसका मुँह खुल-सा गया और वह पीछे को सिमटकर उस बड़े आदमी के पाँवों पर गिर पड़ा। मर्तामानोव बड़ी खुशी से अपनी दाईं लात से उसकी छाती पर ठोकर मार कर रुक गया। लड़का हिला धीरे से कराहा और एक करवट लेकर फर्श पर मुड़क गया। एक क्षण आया जब मर्तामानोव को प्रतीत हुआ कि लात की इस चोट से उसने किसी गन्दे फटे हास की आत्मा को उसके शरीर से पृथक कर दिया है

बोझ से वह ऊब चुकी थी । परन्तु अगले ही मिनट उसने बगीचे की ओर झाँका । दरवाजे को बन्द कर वह बाहर की आहट सुनने लगा और उस पर थोड़ा-सा झुककर धीमे से बोला—

'बस खड़ा हो, बाहर चलें ।"

लड़का अपना एक हाथ आगे खींचे लेटा रहा और उसका दूसरा हाथ फर्श पर पड़े बूटों में ऐसे दबा हुआ था कि उसकी एक टाँग दूसरी टाँग से छोटी दीखती थी । जिससे प्रतीत होता था कि वह अचानक प्योत्र की तरफ सरकना चाहता है । उसकी आगे की ओर बढ़ी हुई बाँह अवास्तविक रूप से भयंकर लम्बी दिखाई दे रही थी । अर्तामानोव घबरा गया । उसने दरवाजे की चौखट पकड़ी । अपनी टोपी उतार ली और उस धारीदार कपड़े से अपना माथा पोंछा जो पसीने से तर हो लिया था ।

"खड़ा हो, मैं किसी को कुछ नहीं कहूँगा" वह धीरे से बोला । यद्यपि वह जान गया था कि लड़का मर गया है और साथ ही फर्श से लगे गालों के बीच उसने काले गाढ़े खून की एक पतली-सी धार फर्श पर बहती देखी ।

"मर गया है," प्योत्र ने सोचते हुए कहा । और इन सीधे संक्षिप्त शब्दों से अर्तामानोव के हृदय में एक बहरा कर देने वाली घबराहट बढ़ गई । अर्तामानोव ने टोपी उतार कर कोट की जेब में डाल ली, अपनी छाती पर क्रॉस का निशान किया और इस छोटी-सी दयनीय एवं सनकी आकृति की ओर मूर्खता से निहारने लगा । उसके दिमाग में बड़े डरावने और प्राचीन धार्मिक विचार उठ रहे थे ।

'मैं कहूँगा कि यह एक्सीडेण्ट अनजाने में हो गया है । इसे दरवाजे से चोट लगी है । हाँ, दरवाजा भी भारी है ।"

उसने आस-पास झुक कर देखा और बेंच पर भार-सा

बैठ गया—उसके पीछे तिखोन हाथ में झाड़ू लिए खड़ा था, और अपनी गीली-गीली आँखों से निकोलाय को देख रहा था। वह अपनी उँगलियों से पत्थर जैसे गालों को रगड़ रहा था जैसे कि किसी गम्भीर विचार में हो।

'लो' मर्तामानाव ने बेंच के छोर को अपने दोनों हाथों से पकड़ कर कहा। परन्तु तिखोन ने माथा हिला कर उसको टोकते हुए कहा—

"लड़का कमज़ोर और बड़ा था। कितनी बार मैंने उसे समझाया और मना किया था कि ऊपर न चढ़ा कर।"

"क्या ?" भय और आशा से व्यात्र ने पूछा।

'तू गिरकर चोट खाएगा', मैंने इसे बहुत बार समझाया। —प्योत्र इल्यिच ! तुमने भी उसे मना किया था याद है ? हर बस के लिए तुम्हें चुस्त होना चाहिए। यह बेहोश है क्या ?'

फर्श पर बैठकर तिखोन ने पावल की कलाई और गले की नाड़ी देखी, उसके गालों पर उँगलियाँ फेरी। फिर अपने एप्रन से उँगलियाँ ऐसे रगड़ी जैसे कि वह दियासलाई जला रहा हो। और फिर बोला—

"लगता है, खत्म हो लिया। पहले से ही बड़ा कमज़ोर था। इस बहुत चोट की ज़रूरत नहीं थी।

तिखोन धीरे धीरे बोल रहा था। उसकी गतियाँ मन्द थीं और वह सदा की भाँति ही था। परन्तु मालिक उस पर अविश्वास कर रहा था और आशा में था कि वह तुरन्त ही झिड़की के शब्द कहने वाला है। फिर तिखोन ने छत व चौकोर छेद की ओर देखा। कुछ देर कबूतरों की गुटरगूँ सुनी और फिर पहले की तरह उसी शान्त भाव से बोला—

'वह हमेशा इस दरवाजे से ही चढ़ता था एक टाँग बेंच

पर रखता और दूसरी टाँग दरवाजे के हत्थे पर, फिर ऊपर छज्जे का दरवाजा थाम बाँहों से छज्जा पकड़ कर किसी तरह ऊपर चढ़ जाता था। उसके छोटे-छोटे हाथों में ताकत नहीं थी। लगता है वहीं से गिर पड़ा और दरवाजे के किनारे से उसके सिर पर चोट आई है।"

"मैंने यह कुछ नहीं देखा।" प्योत्र ने आत्मरक्षा की सहज भावनाओं से प्रेरित होकर कहा और फिर जल्दी-जल्दी सोचने लगा—

"क्या यह झूठ बोल रहा है ? बहाने कर रहा है ? कहीं मुझे फँसा कर पकड़ना चाहता है या यह मूर्ख सचमुच कुछ नहीं जानता ?

उसे पिछली बात अधिक सम्भव लगी। तिख़ोन भी मूर्खों की तरह हरकतें कर रहा था। सिर को हिलाकर माथा ठोकता हुआ वह आहें भर रहा था—

"ओह, मिट्टी कहीं की ! ऐसे दुनियाँ में आते ही क्यों हैं बच्चे, इसकी माँ को बतलाऊँ। सौतेले बाप का तो कोई दुःख नहीं होगा। उसके लिए तो लड़का फालतू ही था।'

अर्तामानोव ने दरबान की सब बातों को बड़े संदेह से सुना। वह उनमें झूठ और मक्कारी तलाश कर रहा था, परन्तु तिख़ोन सदा की भाँति कौतूहल विहीन व्यक्ति की तरह कहता जा रहा था—

"सुनना ! वह भौंहों को हिलाकर बोला और सुनने लगा। कहीं बाहर कोई औरत गुस्से में चिल्ला रही थी—

'पावका ! पावका—आ।"

तिख़ोन ने अपने चेहरे पर हाथ फेरा।

"यह है तेरा पावका ! आँसुओं की तयारी कर।'

"नहीं यह भूल है' मर्तामानोव ने सोचा और जेब से टोपी निकाल कर बगीचे में बाहर आया और सावधानी से टोपी के ऊपर देखने लगा।

दो-तीन सप्ताह तक वह घबराया और मृत्यु भय से अस्थिर-सा रहा। उसे प्रति दिन नई आपत्ति आती दिखाई देती। उसे लगता कि अगले ही क्षण दरवाजा खुलेगा और सिपाही आ कर कहेगा—

"अब मैं सब-कुछ जान गया हूँ।'

बाह्य रूप से सब-कुछ ठीक-ठाक चल रहा था। सबने लड़के की मौत का सन्तोष और साधारण रूप से मान लिया जैसे कि पैदा करना और मरना उनका स्वभाव हो। निकानोव ने अपने गले में पीली की बजाय काली टाई लगा ली और उसके फूले चेहरे पर एक महत्वपूर्ण विमग्नता आ गई जैसे कि उसे कोई बहुत दिनों से मिलने वाला इनाम मिला हो। मृत लड़के की माँ ऊँची मजबूत और मोटे से चेहरे वाली थी वो चुप और अश्रुरहित आँखों से बेटे का कफनाने में जल्दी कर रही थी—कम-से-कम मर्तामानोव को तो ऐसा ही प्रतीत हुआ। वह ताबूत के सिर की तरफ सफेद लम्बी-सी खड़ी रही, साथ के मोम भाये की ओर माला का ठीक से लगाया और सावधानी से अपनी उङ्गलियों से नीले के चमचमाते कापते रखती रही जिससे उसकी आँखें झुक गई और फिर अत्यधिक शीघ्रता से वह अपनी छाती पर बार-बार क्रास का चिह्न बनाती रही। ध्यान से देखा कि उसकी बाँहें इतनी थक चुकी थी कि दूसरी बार वह अपनी बाँहों को भी न उठा पा रही थी। उसने क्रास का चिह्न करने के लिए हाथ उठाया परन्तु वह ऐसे गिर गया जैसे कि टूट गया हो।

हाँ इस प्रकार सब ठीक-ठाक चलता गया। यहाँ तक

निकोनोव ने दाह-क्रिया के खर्च को दान देने के लिए उसे अनेकों बार धन्यवाद दिया। लेकिन इस अनावश्यक उदारता से तिखोन को कुछ सन्देह हो गया। अभी तक उसे यकीन नहीं होता था कि दरबान इतना मूर्ख होगा जितना कि वहाँ स्नानागार में वह दिखाई दिया था। यह दूसरा मौका था जब स्नानागार ने इस व्यक्ति को इतनी प्रधानता दी थी और वह प्योत्र के जीवन में प्रवेश कर गया था। यह बड़ी अजीब और कँपा देने वाली बात थी। अर्तामोनोव ने इस पर यहाँ तक सोचा कि इस स्नानागार को जला देना या तोड़कर जलाने की लकड़ियाँ काट लेनी चाहिए, क्योंकि वह पुराना और सड़ चुका था। अब ज़रूरत थी कि एक दूसरा स्नानागार बगीचे में नई जगह बनाया जाय।

तिखोन को सावधानी से देख कर उसने पाया कि दरबान के जीवन में कोई परिवर्तन नहीं। सदा की भाँति वह अपने अस्तित्व के लिए अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी की दयालुता या लिहाज नहीं चाहता था और सदा की भाँति वह चुपचाप और पुलिसमैन तथा मिल-मजदूरों की तरह नाराज़-सा रहता था जो उसे पसन्द नहीं करते थे। खासतौर से वह स्त्रियों को बड़ी अशिष्टता से बरतता था। केवल मात्र नताल्या के साथ वह विशेष व्यवहार करता था जैसे कि वह उसकी मालकिन की जगह कोई सगी सम्बन्धिनी चाची या बड़ी बहिन हो।

"क्या बात है तू तिखोन के साथ घुल-मिल कर रहती है?' प्योत्र ने कई बार पत्नी को टोका भी था। इस पर पत्नी जवाब देती थी—

'वह मेरे बहुत काम करता है।

अगर दरबान के कोई मित्र या अतिथि आते तो प्योत्र उन्हें उसका पक्षपाती समझता। परन्तु मर्द सेराफिम के अलावा

तिखोन के कोई अधिक मित्र भी नहीं थे। वे दोनों साथ-साथ गिरजे को जाते और भक्तिपूर्वक प्रार्थना करते। यद्यपि वह कभी कभी बहुत मुँह फाड़ कर बड़े भद्दे तरीके से प्रार्थना करता था जैसे कि वह चिल्लाने लगा हो। कभी-कभी तिखोन की टिमटिमाती नजरों को देख उसके मालिक का चेहरा गम्भीर और भयार्त हो जाता था। अर्तामानोव को ऐसा प्रतीत होता कि इन गोली आँखों में कोई धमकी छिपी हुई है। कभी वह अनुभव करता था कि वह इस किसान को कॉलर से पकड़ कर खूब हिलाए और चिल्ला कर पूछे—

"अब बता क्या कहता है!

परन्तु तिखोन की पुतलियाँ सिकुड़ जातीं और आँखों में कोई भाव न दीखता। उसका पत्थर जैसा कठोर भारी चेहरा भावरहित होकर प्योत्र के भय को नष्ट कर देता। मूर्ख अन्तोन जब तक जीवित रहा अक्सर दरबान की झोंपड़ी में आता या फाटक के पास बेंच पर बैठा रहता और तिखोन उस मूर्खता से पूछता—

'तू फिजूल की बातें मत किया कर, जरा सोच कर मुझे बता कि यह कुयातिर कौन है?

क्यामस अन्तोन बड़े आनन्द के साथ चिल्लाता और अपना गीत गाने लगता—

ओह ईसा का अवतार हुआ—अवतार '

'चुप भी रह!

'गाड़ी का पहिया गुम हुआ, गुम हुआ ..'

"तू क्या चाहता है? एक बार अर्तामानोव ने चिढ़ कर उसे पूछा था। चिढ़ने का कारण वह खुद भी नहीं बता सकता था।

और मुख्य बात की परवाह उन्हें नहीं। लोग बग़ावत की ओर झुक रहे हैं, जिससे सरकार उन्हें दण्ड देती है। बस इस प्रकार हमारे यहाँ किसी-न-किसी कारण गड़बड़ी ही बस रही है। इस समय एक ही आवाज़ इस सारे धार-धारावे में आ रही है जो बहुत ऊँचे मनुष्य की आत्मा को जगाने के लिए ज़ोर दे रही है। यह आवाज़ एक काउंट तालस्ताय की है जो बहुत बड़ा दार्शनिक और साहित्यकार है। वह बड़ा अद्‌भुत व्यक्ति है और उसकी आवाज़ में बड़ा आग्रह है। परन्तु पता नहीं क्या बात है कि हमारा सनातन-धर्म (गिरजा) इस बारे में लापरवाह है।'

वह देर तक लियो तालस्ताय के बारे में बातचीत करता रहा यद्यपि मर्तामानोव को पादरी की अन्धकार में से मुक्त होकर निकलती हुई आवाज़ और उस असाधारण व्यक्ति के चित्रण का मतलब कुछ समझ में नहीं आ रहा था। पर उसके विचार श्रोता को अपने विचारों से बहुत दूर खींच ले गए। इस बात को न भूलते हुए कि उसने पादरी को क्यों बुलाया है प्योत्र ने अनुभव किया कि उस पादरी पर बहुत दया आ रही है। वह जानता था कि शहर की गरीब जनता पादरी के प्रति बड़ी अनुकम्पा का भाव रखती है और यह पादरी सबके साथ दयालु और प्रसन्न रहता है। वह गिरजे में सबकी एक-सी सेवा करता है और विशेषकर अन्त्येष्टि-संस्कार बड़ी भावुकता से करवाता है। मर्तामानोव इसको बड़ा स्वाभाविक समझता था—पादरी को होना भी ऐसा ही चाहिए। इस पादरी के प्रति उसकी सहानुभूति इस कारण थी कि वह शहर के दूसरे पादरियों से घृणा करता था जो ग्लेब से अच्छे नागरिक थे। परन्तु पादरी को कठोर भी होना चाहिए। वह विशेषकर हृदय को पार करने वाले शब्द कहना जानता हो, जो पाप के प्रति भय पैदा कर लोगों को उससे हटा सके। मर्तामानोव जानता था कि ग्लेब में यह शक्ति नहीं

थी। और कभी-कभी पादरी की झिझक भरी डगमगाती बातचीत से यह स्पष्ट दिखाई देता था कि वह किसी को नाराज नहीं करना चाहता है। अचानक वह कह उठा—

'पिता ग्लेब ! मैंने आपको इसलिए कष्ट दिया है ताकि मैं सूचित करूं कि मैं इस वर्ष हृव्य (धर्म-संस्कार) नहीं लूँगा।

'क्यों ? पादरी ने सोचते हुए पूछा, और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना बोला— 'तुम अपनी आत्मा के सामने उत्तर दायी हो।''

मर्तामानोव को प्रतीत हुआ जैसे कि ग्लेब ने ये शब्द दरबान तिखोन की सी उपेक्षापूर्ण ध्वनि में कहे हैं। गरीबी के कारण ही पादरी ने रबड़ के जूते नहीं पहने थे। अतः भारी किसानी बूटों के साथ आए हुए बरफ के कण फर्श पर छोटी-छोटी धाराओं में पिघलने लगे और वह इन धाराओं से अपने पाँव को बचाकर शिकायत और भर्त्सना करने लगा—

"जब तुम अपने चारों तरफ होने वाली बातों को देखते हो तो सिर्फ एक बात से ही सन्तोष होता है कि जीवन पाप है, जैसे-जैसे यह बढ़ता है, इसका पिण्ड भी बढ़ता जाता है और प्रतीत होता है कि हम उसकी शक्ति पर विजय प्राप्त कर लेंगे। मैंने जीवन का ऐसे ही देखा है—पहले तो वह बीज की तरह एक सूक्ष्म रूप में दीखता है और फिर तकुए पर लिपटे तागे की तरह वह बढ़ता जाता है। अगर यह बिखरा हुआ हो तो उस पर विजय प्राप्त करना हमें कठिन हो जाता है परन्तु जब इतना होता है तो न्याय की तलवार की एक चोट से इसे काटा जा सकता है।''

मर्तामानोव की स्मृति में ये शब्द बैठ गए और उसे एक प्रकार की शान्ति हुई। पापों का वह बीज—वही पावेल था।

क्या उस पर ही उसके सारे काले विचार एकत्रित नहीं हो रहे थे। और एक बार उसे इसी समय फिर याद आया कि उसके इस पाप में वस्तुतः उसके लड़के का भी कुछ भाग है। यह सोच कर और अपनी आत्मा में हल्कापन अनुभव करते हुए उसने एक गहरी साँस लेकर पादरी को चाय के लिए आमन्त्रित किया।

भोजन का कमरा प्रकाशमान् और आरामदेह था। वहाँ स्वादिष्ट भोजनों की महक के साथ एक उष्ण सुगन्ध भी आ रही थी। मेज पर रखा समवार अंगीठी पर चढ़ा था और उसमें से भाप की छोटी-छोटी फुहारें बड़े परिहास के साथ निकल रही थीं। उसकी सास आराम कुर्सी पर बैठी अपनी चार साल की पोती के लिए गीत गा रही थी—

सौभाग्यवती माता प्रकाश की—
देती हैं हरपा-हरषा कर,
निज प्रजा को भेंट निराली।
पीटर को दे डाली उसने
तेजस्विता गर्मी की प्यारी।
सन्त निकोलस को है दीनी
लहरों-सी अस्थिरता प्यारी।
पैगम्बर इलियाह के हेतु
शासन की है डोर सँवारी।

"यह तो मूर्ति-पूजकों का गीत है।" पादरी ने बुढ़िया को आँख मिचकाकर एक शान्त मुस्कान के साथ कहा।

शयन-कक्ष में पानी ने प्योत्र को बताया—

"अनफ्रेई वापस आ गया है मैंने उसे देखा था। वह तो हर बरस न मास्को पर दीवाना होता नजर आता है। मुझे डर है कि ...।

गर्मी के दिनों में नताल्या की शुभ्र ग्रीवा और चिकने गुलाबी गालों पर कुछ खास-खास धब्बे से दीखने लगे। यद्यपि वे धब्बे सुई से होने वाले छेदों के बराबर थे। लेकिन फिर भी उन धब्बों ने उसे परेशान कर रखा था और वह सप्ताह में दो बार सोने से पहले तन्मयता और सावधानी के साथ चमड़ी पर शहद जैसे रङ्ग का मरहम मला करती थी। उस समय वह शीशे के सामने अपनी नंगी कोहनियों को आगे-पीछे करती हुई होती तो उसके वक्ष के उभार उरोज उसकी कमीज में तेजी से हिलते रहते। स्यात्र अपने सिर के नीचे हाथों को बांधकर अपनी दाढ़ी की नोक को छत की ओर उठाए हुए पलंग पर लेटे हुए था। तभी कनखियों से नताल्या को देखकर उसने निश्चय किया कि वह एक तरह की मशीन की तरह काम करती है। उसके उस मरहम की गंध उबली स्टर्जन (एक समुद्री मछली) की तरह थी। जब नताल्या अपनी नियमित प्रार्थनाओं को करने के बाद पलंग पर लेटी और अपनी आदत के अनुसार उसने स्वस्थ शरीर को अपने पति को अर्पण कर दिया तो वह सोने का बहाना करने लगा।

'एक चीज,' उसने सोचा। "चार मैं भी तो तकुए की तरह लगातार घूम रहा हूं। और इस तकुए को चला कौन रहा है? किसान कहता है—मनुष्य चर्खा चलाता है और शैतान टाट बुनता है। ओह! कैसे-कैसे बेवकूफ हैं!"

जिस कारोबार को अक्सेनोई बड़ी शक्ति लगाकर बढ़ाए जा रहा था, अब वह नदी के ऊपर झुकने वाले टीलों तक पहुंच लिया था। उसका सुनहरा रंग अब नष्ट हो चुका था, अभ्रक की चमक और नुकीले पत्थरों की चमक भी नष्ट होती जा रही थी। लगातार बदलती रुत लोगों के पांवों से रौंदी जा रही थी और उस पर हर बसन्त ऋतु में नई घास और प्रचुर मात्रा में हरे

पौदे उगते आ रहे थे। आम लोगों के पाँवों से बने रास्तों पर नए पौदे उग रहे थे और बड़े पत्तों वाले पेड़ दिखाई देने लगे थे। कारखाने के चारों तरफ पेड़ अपने नए बीज बिखेर कर बो रहे थे और पतझड़ में गिरे पत्ते मोटी रेतीली भूमि को अधिकाधिक उपजाऊ बनाते जा रहे थे। मिल अब अधिकाधिक ऊँची आवाज में एक शिकायत के रूप में शोर करती और उसमें भय और चिन्ता का वायुमण्डल साँस लेता दिखाई देता। सैकड़ों तकुओं का फिरना, सैकड़ों खड्डियों की भड़ भड़ और सुबह से शाम तक सैकड़ों मशीनों का हाँफते हुए चलना लगातार जारी रहता था। कारखाने में दिन रात मेहनत का शोर होता रहता था। और इस सब पर अपने स्वामित्व की भावना आश्चर्यजनक प्रसन्नता और अभिमान पैदा कर रही थी।

परन्तु अब समय आ गया था जब अर्तामानोव अपने अन्दर अधिकाधिक चिन्ताएँ और थकान अनुभव करने लगा। उसे अपने बचपन की याद आने लगी जबकि इसी स्वच्छ छोटी सी नदी के किनारे एक शान्त गाँव बस रहा था। और दूर तक किसानों का शान्त जीवन फैला हुआ था। अब उसे अनुभव होने लगा कि किसी अदृष्ट हाथों ने उसे जकड़ रखा है जो उसे मरोड़ कर घुमा रहा है। दिन भर मिल के शोर से उसका दिमाग भर चुका है और उसमें कारोबार की चिन्ताओं के अलावा कोई स्थान नहीं रहा है। मिल की चिमनी से घुमाव खाता हुआ धुआँ आस-पास के वायु-मण्डल में निराशा, भय और नीरसता पैदा कर रहा था।

घण्टों और दिनों तक इस प्रकार की चिन्ताओं से मिल मजदूर बिलकुल अप्रसन्न थे। उसे प्रतीत हुआ कि अब मजदूर लगातार कमजोर हो रहे हैं उनमें किसानों की सी पुरानी महन शीलता नष्ट होती जा रही है और स्त्रियों की सी चिड़चिड़ाहट

बढ़ रही है। वे अब अपनी नाराजगी और मुँहफट पने में अधिकाधिक धृष्ट होते चले जा रहे हैं। अब उनमें फिजूल खर्ची और अस्थिरता बढ़ती जा रही है। पिता के काल में पहले उन लोगों में पारिवारिक जीवन पाया जाता था। वे लोग अधिक शान्ति और मित्रता से रहते थे। अब जैसी शराबखोरी और निर्लज्ज आचारहीनता उस समय नहीं थी। अब तो सब-कुछ गड़बड़ हो रहा था। मजदूरों में शोर-शराबा करने वाले लड़ाकू और यहाँ तक कई अक्लमन्द भी दीखने लगे थे। वे काम के प्रति लापरवाह हो रहे थे और आपस में बहुत लड़ते-झगड़ते रहते थे। अब वे अधिक शरारती और कटु होते जा रहे थे और हर बात की पड़ताल और हिसाब करते थे। खासतौर से नौजवान बहुत झगड़ालू और बदतमीज और अशिष्ट हो रहे थे। और मिल ने नौजवानों का किसान स्वरूप बिल्कुल बदल दिया था।

कोयला झोंकने वाले मजदूर वल्कोफ को शहर के पागलखाने में भेजना पड़ा। अभी पाँच बरस ही तो हुए थे जब यह सुन्दर स्वस्थ और सुदृढ़ किसान अपने घर के अग्नि में भस्मसात हो जाने पर अपनी चिन्ताग्रस्त सुन्दर स्त्री-सहित मिल में आया था। एक बरस में ही वह स्त्री चरित्रभ्रष्ट हो गई और वल्कोफ उसे मारने-पीटने लगा जिसके कारण उसे तपेदिक हो गई। और अब दोनों ही इस दुनिया में न रहे। वर्तमानोव ने इस प्रकार तेजी से बढ़ती गिरावट के बहुत से उदाहरण देखे थे। पिछले पाँच सालों में चार हत्याएँ हुई थीं—जिनमें से दो शराब के कारण, एक आपस की ईर्ष्या से, एक बड़े मजदूर ने एक नौजवान स्त्री में ईर्ष्यावश छुरा भोंक दिया था। अब लड़ाइयाँ भी प्रायः खतरनाक चोटों में ही समाप्त होती थीं।

अलक्सेई पर स्पष्टतः इसका कोई असर नहीं था। माई को इन चिन्हों समझना कठिन हो रहा था। अब यह बढ़ई सेराफिम

भी पहले जैसा साफ और परिहास प्रिय नहीं रहा था जो बड़ी कुशलता और आनन्द में काम करता हुआ मिल के बच्चों के लिए छोटी-छोटी सीटियाँ और धनुष बनाता तथा उनके लिए ताबूत पर कीलें ठोकता था। अलक्सई की बाज जैसी आँखें पहले की तरह विश्वासपूर्वक चमकती रहती थीं जैसे कि सब-कुछ ठीक है और ठीक ही रहेगा। उसके घर से कब्रिस्तान में तीन कब्रें बन चुकी थीं। अब उसका केवल मात्र एक बेटा मिरोन ही जैसे-तैसे अपने जीवन से चिपका हुआ था। वह बड़ा भद्दा और लम्बी अस्थि और उपास्थि का असावधानी से बनाया हुआ ढाँचा था जिसके शरीर से चलते समय एक प्रकार की खड़खड़ाहट होती थी। उसकी आदत थी कि वह अपनी उंगलियों को बार-बार से चटकाता रहता था। तरह साल की उम्र में ही उसने ऐनक लगानी शुरू कर दी थी जिससे उसकी पलियों की चोंच जैसी नाक किसी कदर छोटी दिखलाई देती थी और उसकी चमकीली आँखों में एक अप्रिय कालिमा-सी आ जाती थी। यह लड़का सदा किताब के पन्नों के बीच उंगली दबाए चलता, जिससे प्रतीत होता था कि किताब भी उसके शरीर के साथ उगी है। अपने माँ-बाप से वह समान स्तर पर बातचीत करता, उनकी आलोचना करता, जिसे वे दोनों पसन्द करते थे। प्योत्र अपने भतीजे के प्रति अप्रियता अनुभव करता था और उसी सिक्के में वह उसे अदा कर देता।

अलक्सई के घर में गम्भीरता, स्थैर्य और सभ्यता का बिल्कुल अभाव था। ज्येष्ठ अर्तामोनोव को अपने और भाई के जीवन में लगभग ऐसा ही अन्तर दिखलाई दे रहा था जैसे कि गिर्जे के साधु आश्रम और बाजार की दुकान के बीच। नगर में अलक्सई और उसकी पत्नी के कोई मित्र नहीं थे परन्तु उनके गासम की तरह दिखाई देने वाले—पुराने फर्नीचर और पुरानी चीजों से घिरे कमरों में त्योहारों के दिन संदिग्ध योग्यताओं के

पंडित इकट्ठे होते जिनमें सोन के दाँतों वाला मिल का डाक्टर याकोव्लेव, जो बड़ा मनौती ईर्ष्यालु और गुस्से वाला था, चिल्लाकर बोलने वाला मकेनिक कार्प्येव—जो बड़ा शराबी और जुआरी था मिरोन का अध्यापक एक विद्यार्थी—जिसकी पुलिस ने पढ़ाई बन्द कर दी थी मुर्गी जैसी नाक वाली उसकी पत्नी, जो लगातार सिगरेट पीती और गिटार बजाती रहती। इनके अतिरिक्त और भी अनेक मनुष्य-जाति के विकृत अजीब नमूने इकट्ठे होते जो पादरियों को गाली देने में सरकारी अफसरों के प्रति अशिष्टता पूर्ण बकवास में एक दूसरे से होड़ लगाते रहते थे। उनमें से प्रत्येक अपने को बुद्धि का अवतार समझता था। अर्तामानोव अपने पूर्ण अस्तित्व से अनुभव करता था कि ये लोग असली और भले नहीं उसकी समझ में यह भी नहीं आता था कि ये उसके भाई के घर में—जो उसके साथ एक महत्वपूर्ण कारोबार में आधे का मालिक है क्यों आते हैं ? उनकी चिल्लाहटों को सुनकर उस पादरी की शिकायत याद आती थी—

'वे चाहते बहुत-कुछ हैं परन्तु असलियत उनमें कुछ नहीं है।

उसने अपने मन से यह नहीं पूछा कि यह असलियत क्या और कैसी है ? वह तो कारोबार को ही असलियत समझता था।

उसके भाई का सबसे प्रिय या प्यार से चिढ़ाकर बोलने वाला जिप्सी कप्र्येव। वह सदा ही शराब के नशे में प्रबल शक्तिपूर्ण और एक प्रकार से बुद्धिमान दिखाई देता था। वह प्रायः सब लोगों के सामने डींग मारता था—

'यह दार्शनिकता तो फिजूल की बात है ! व्यवसाय—बस, मशीन ही है और कुछ नहीं। यद्यपि अर्तामानोव कप्र्येव को बड़ी संदेह की दृष्टि से देखता था, उसकी बातों में कुछ यथार्थिकता

से दूर जाने का अवसर मिलता तभी वह फिर अपने आस-पास के लोगों के प्रति और अपने प्रति गहरी घृणा से भर जाता। उसके जीवन में केवलमात्र एक ही प्रकाशपूर्ण स्थान था और वह था अपने पुत्र के प्रति प्रेम। परन्तु यह प्रेम भी उस लड़के निकोलोव के प्रति घृणा से ढका हुआ था, अथवा उसके खून के अपराध के बोझ से उसकी छाती में घुन घुना था। कभी-कभी इल्या की ओर देख कर उसकी इच्छा होती कि वह उसे इस बारे में सब कुछ बता दे—

"देख, तेरी चिन्ता में क्या कर बैठा मैं ?"

अपने भावों को छिपाने में वह बहुत कुशल नहीं था और वह यह छिपा भी नहीं सकता था कि इस बात से कुछ सैकिण्ड पहले ही उसे अपने पुत्र के प्रति भय पैदा हुआ था, परन्तु प्याज जानता था कि वह इस भय से ही अपने पाप को चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो, न्यायसंगत नहीं बता सकता था। फिर भी इल्या से बात करते हुए वह उसके साथी का जिक्र भी नहीं करना चाहता था, क्योंकि उसे डर था कि कहीं वह भूल से उसके अपराध की चर्चा न कर बैठे जिसे कि वह अपनी बड़ाई के रूप में उपस्थित करना चाहता था।

वह देख रहा था कि उसका बेटा इल्या बड़ी तजी से बढ़ रहा था। चाहे वह एक विचित्र दिशा में ही था। लड़का अब अधिक शान्त और संयमी था, माँ से वह सभ्यता से बात करता, छोटे भाई याकोव को जो हाईस्कूल में जाने लगा था उसने छेड़ना बन्द कर दिया था। और छोटी बहिन ल्यूबा के साथ कोमल व्यंग में बातें किया करता। परन्तु उसकी बातचीत और व्यवहार में एक प्रकार की चिन्ता और विचारणीय शीतलता भी थी। पावेल निकोलोव की जगह अब मिगन ने ले ली थी। दोनों भाई लगभग सदा साथ रहते और बाँहों में बाँह डाले बिना

मकान में गप लड़ाते रहते। वे बग़ीचे में बैठ कर साथ-साथ पढ़ते। इस्या लगभग घर में कम रहता था। जैसे ही सुबह होती वह किसी काम से शहर में अपने चाचा के पास अथवा मिरोन और काले घुंघराले बालों वाले गोरिस्लेतोव के साथ जंगल में चला जाता। वह एक नाटा चालाक मानफन की तरह फुर्तीला और लम्बी लचकीली नाक वाला लड़का था। उसकी आँखें सदा व्यंग में ऐसे घूरतीं थी जैसे कि वह नाराज़ हो।

'तुम्हें यहूदड़ों के साथ आवारा गिर्दी पसन्द है।' माँ ने घृणापूर्वक बेटे की भर्त्सना की। प्योत्र ने देखा कि बेटे की सुन्दर भृकुटियाँ हिल उठी थीं।

'यहूदड़ा! माँ यह एक अपमान-जनक शब्द है। आपको पता होना चाहिए कि अलक्सान्द्र—हमारे पादरी ग्लेब का भतीजा है इसका मतलब यह है कि वह रूसी है। वह स्कूल में पढ़ता है—और अपनी श्रेणी में प्रथम रहता है।

घृणा से माँ फिर उबल पड़ी—

"यहूदड़े, सब जगह ही आगे होने की कोशिश कर रहे हैं।'

आपको इसका पता कहाँ से चला? —बेटा भी पीछे नहीं हटा— सारे शहर में ले-दकर चार सौ यहूदी हैं और सिर्फ दवाफरोश के अलावा सब ग़रीब हैं।'

हाँ, हाँ चालीस यहूदी हैं और बरगारद में जाओ तो बाज़ार में सब जगह यहूदी-ही-यहूदी भरे पड़े हैं।'

चिढ़ कर इस्या ने आग्रह के साथ अपनी बात दोहराई—

"यहूदड़े बहुत बुरा शब्द है।'

माँ ने गुस्से में लाल होकर पिरच पर चमचा मारा और चिल्लाई—

"तू मुझे सिखाता है ? क्या मैं नहीं जानती कि मुझे कैसे बोलना चाहिए ? मैं—मैं बच्ची नहीं हूँ ? मैं जानती हूँ कि ये छोटे-छोटे चापलूस कैसे आस-पास घूमने की कोशिश करते हैं। मैं तिखोन को भी जानती हूँ। वह भी बड़ा खुशामदी और चापलूस है। इसीलिए मैंने कहा कि यह बहुदा है, खुशामदी और खतरनाक है। मैं ऐसे खुशामदियों को खूब जानती हूँ।"

'बस, बस ! इल्या ने कठोरतापूर्वक कहा। और नताल्या शिकायत में रोने हो वाली थी—

"प्योत्र इल्याच, यह क्या बात है, मैं एक शब्द भी नहीं कह सकती ?'

इल्या भौंहें चढ़ाए चुपचाप बैठा रहा और माँ ने उसे याद कराया—

"मैंने तुझे जन्म दिया है।'

'धन्यवाद" इल्या ने चाय का खाली प्याला परे हटा कर कहा। बाप ने आँखों के कोने से उसे देखा और अपना कान मल कर थोड़ा-सा मुस्कराया।

अपनी पत्नी के शब्दों से वह जान गया कि वह बेटे से वसे ही डरती है जैसे कि पहले कभी केरोसीन लैम्प से डरती थी। और अब वह काफी के एक पेचीदे बर्तन से डरती है जिसे आल्मा ने भेंट दिया था। वह डरती थी कि कहीं यह काफी का बर्तन एकदम फट न पड़े। उसे भी माँ की तरह ही अपने बेटे से तनिक भय-सा अनुभव होने लगा। नौजवान लड़के को समझना मुश्किल हो रहा था। तीनों ही बच्चों को व नहीं समझ पाए थे। पता नहीं उन्हें दरवाज़े तिखान में क्या अजीब और अच्छी बात दिखलाई देती थी। वे सन्ध्या-समय उसके साथ दर वाज़े पर बैठे रहते और अपच्छ धर्मालोच, उपदेश देते हुए इस बिगाम की ऊँची आवाज को सुनते।

'यह ठीक है, जितना कम चाफ होगा—उतना ही हल्का पसागे। परन्तु यहाँ तक कोनों की बात है क्या तुम्हें यकीन नहीं आता ? आसमान में कोन कैसे हो सकते हैं ? वहाँ दीवारें तो हैं नहीं ?'

इस पर स्कूल बाल वाले लड़के हँस पड़ते। इल्या की हँसी कोमल और सूक्ष्म हुआ करती। मिरोन की हँसी शुष्क और तीखी हुआ करती और गारिस्स्वेतोव हँसता तो था परन्तु अन्य लोगों की तरह इतनी जल्दी नहीं। वह हमेशा हकता व साथ अपने साथियों को हँसन से रोकते हुए कहता—

हँसो नहीं, यह हँसने की बात बिल्कुल नहीं।"

और, फिर तिक्षान का अस्पष्ट भाषण धीरे-धीरे चल पड़ता—

'बच्चो तुम्हें मानव प्राणी के बारे में अधिक-से-अधिक अध्ययन करते रहना चाहिए। आखिर यह मनुष्य क्या है ? ससार म इसका क्या काम है और उसके साम्य म क्या लिखा है ? हमें इसी पर विचार करना चाहिए और फिर उनके धर्म-वाक्य आते हैं। इन वाक्यों को भी समझना चाहिए। तुम लोग प्राय किसी चीज के लिए कभी दूसरा ही गोलमोल शब्द कहते हो, और उनका कोई अन्त नहीं।

और फिर तिक्षोन व्यालोव ने उस पहेली का दुहराना शुरू किया जो ल्योन ने पहले ही सुन रखी थी—

"मनुष्य धागा बुनता है और शैतान उससे टाट बुनता है, और समय अनन्त है तथा समय का चक्र चलता ही रहता है।'

इस पर लड़के जोर से हँस उठते और तिक्षोन व्यालाव भी भारी आवाज में उनका साथ देता और फिर साँस लेकर कहता—

"अरी प्रकाशपूर्ण आँखो ! तुम बुद्धिमान् हो लेकिन अभी पूर्णता पर नहीं पहुँची हो।'

सन्ध्या की छायाओं में ये बच्चे दिन के प्रकाश की अपेक्षा और छोटे दिखलाई देते और तिखोन उनके मुकाबले में अधिक लम्बा और फला दिखाई पड़ता था तथा दिन की अपेक्षा अधिक बढ़-चढ़ कर मूर्खता की बातें करता।

इल्या और तिखोन की बातचीत से बड़े मर्तामानोव के हृदय में दरबान के प्रति अधिक घृणा पैदा होने लगी और उसे तरह-तरह के अस्पष्ट भय सताने लगे। उसने बेटे से पूछा—

तिखोन तुमसे क्या कहता है?

'वह बड़ा दिलचस्प आदमी है।'

'किस बात में दिलचस्प आदमी है? अपनी बेवकूफियों के कारण?

इल्या ने धीरे से उत्तर दिया—

हाँ बेवकूफी का भी तो समझना पड़ता है।'

यह उत्तर मर्तामानोव को पसन्द आया।

'हाँ ठीक है हम बेवकूफियों में ही रहते हैं।" और उसी क्षण उसने अनुभव किया -

ये शब्द तो तिखोन के ही हैं।

पुत्र को लेकर उसके हृदय में एक प्रकार की विशेष आशाएँ जागृत हो उठती थीं। जब वह देखता कि इल्या जेबों में हाथ डाले किस प्रकार धीरे-धीरे सीटी बजाता हुआ खिड़की से मैदान में मजदूरों को देखता अथवा धीरे-धीरे बिना किसी जल्दी के धुनाई घर में जाता या कभी दब पाँव मजदूरों की बस्ती में जाता, तो बाप बड़े संतोष से सोचता—

'यह बड़ा तेज मालिक बनेगा और व्यापार में मेरी तरह उखड़ा उखड़ा और उदास नहीं रहेगा। वह व्यापार में अच्छी रुचि के साथ भाग लेगा।

कभी-कभी उसे निराशा भी होती, क्योंकि बेटा मितभाषी था। और यदि कभी बोलता भी था तो बड़े संक्षेप में जैसे वे पहले से ही सोचे-समझे शब्द हों। उन शब्दों को सुन कर बातचीत जारी रखने की इच्छा ही न होती थी।

"किसी कदर रूखा है" —बाप ने सोचा और उसे सन्तोष हुआ कि इल्या चिल्लाने और बात करने वाले मोरित्स्केलोव अथवा मन्द आलसी याकोव अथवा मिरोन जैसा न था। वे लड़के अभी से अपनी जवानी के सिद्धान्तों को खोकर किताबी कीड़ों की तरह बात करते थे। और मिरान सरकारी नौकर की तरह बड़ा घमण्डी हो गया था। उसकी नजर में किताबों में जीवन की सब घटनाओं और बातों के लिए नियम दिए हुए थे।

छुट्टियों के सप्ताह बड़ी तेजी से गुजर गए और ये नौजवान बच्चे फिर शहर के स्कूल में जाने की तैयारियाँ करने लगे। किसी कारण ऐसा हुआ कि एक ओर नताल्या याकोव को दुलार से उपदेश दे रही थी और दूसरी ओर पिता इल्या को। लेकिन वह वे बातें नहीं कह सका था वह उससे कहना चाहता था। और वह यह कैसे कह सकता था कि कारोबार की चिन्ताओं में मच्छरों के झुण्ड में वह बड़ा नीरस और ऊबा है? ऐसी बातें बच्चों से थोड़े ही करते हैं।

ज्येष्ठ अर्तामानोव की बहुत इच्छा थी कि वह अपने प्रतिदिन के साधारण जीवन से पृथक किसी एक जीवन का अनुभव ले—एक ऐसा जीवन जिसमें बर्फ, वर्षा, कीचड़, गर्मी और धूल अनिवार्य न हो। और अन्त में उसे एक ऐसी बात भी मिल गई। जिसे के एक सुदूरवर्ती जङ्गली हिस्से के बीच एक बार उसे जून के दिनों की भयंकर आँधी-पानी-ओलों का सामना करना पड़ा था। बिजली तड़क रही थी और बादलों को चीर कर नीला

प्रकाश फैला देती थी। जङ्गल में अन्धकार छा जाने के कारण संकीर्ण मार्ग पर प्रवाहित जलधारा देखने में नहीं आ रही थी। घोड़ों के खुरों से जमीन की नरम मिट्टी खुद-खुद कर पानी में घुस कर कीचड़ के रूप में बनती जा रही थी। गाड़ी की धुरी, पहिए सभी कीचड़ में सन गए थे। बिजली रह रह कर चमक उठती और उसके नील प्रकाश में शीशे के कणों की तरह मेंह की फुहारें और सड़क के दोनों ओर के वृक्ष कांपते हुए दिखाई देने लगते थे। उस समय पृथ्वी पर चारों ओर एक भयानक दृश्य उपस्थित हो गया था। गाड़ी के न दिखाई पड़ने वाले घोड़े सहसा ही रुक कर हिनहिनाने लगते तो भी उनके अस्थिर पाँवों से चारों ओर के पानी का छिड़कना बन्द न हो पाता। शान्त स्वभाव वाले भाट कोचवान यकीम ने उन्हें शान्त रहने को कहा। ओलों की वृष्टि जब मन्द हो गई तब ओलों के गिरने का तड़ तड़ स्वर भी जङ्गल में विलीन हो गया। लेकिन इसके बाद ही पानी और अधिक जोरों से बरसने लग गया। पानी की तेज बौछारें वृक्षों के पत्तों पर गिर गिर कर जंगल के अन्धकार को क्रोधपूर्ण गर्जन से भरने लगी।

'हमें पपोव के घर जाना ही पड़ेगा।' यकीम ने कहा।

और इस प्रकार एक स्वप्न की तरह अर्तामानाव ने मुलायम गद्दों में बैठे होने पर भी एक कम्पन अनुभव किया। वह मेज के सहारे अर्द्ध अन्धकार में डूबे हुए गरम कमरे में खोया हुआ सा बैठा रहा। कमरे में मेज पर रखा निकल-पालिश किया हुआ एक समवार शोर कर रहा था। एक लम्बी-पतली काली पोशाक पहने स्त्री जिसके पल्ले कन्धों नीचे लटक रहे थे पास टहल रही थी। लाल-लाल बालों की पगड़ी के बीच उगती सुन्दर भूरी आँखें पीले चेहरे को प्रकाशित कर रही थीं। वह बड़े कोमल और सरल शब्दों में बिना किसी प्रकार की शिकायत

नहीं व्यक्त होती थी, अपने पति की हाल में ही होने वाली मृत्यु की बात सुना रही थी। वह कह रही थी कि वह अपनी सब सम्पत्ति को बेच कर शहर में आकर एक प्राइवेट स्कूल खोलना चाहती है।

'यह सलाह आपके भाई ने ही मुझे दी है। वह बड़ा दिलचस्प जीवनपूर्ण और मौलिक-व्यक्ति है।

प्योत्र ने अपने आस पास कमरे में चारों तरफ देख कर ईर्ष्यापूर्ण ध्वनि-सी की। जवानी के दिनों में अपने बाप के साथ वह इस जिले से गुजर कर कई बार सरदारों के घरों में गया था और उनमें उसे कोई आकर्षण नहीं दिखाई दिया था। इन लोगों के घरों और उनकी सजावट तथा चीजों को देखकर उसका दिल एक प्रकार से बैठ-सा जाता था। परन्तु इस घर में कोई ऐसी बात नहीं थी जिससे उसका दिल बैठे। यहाँ सब-कुछ प्रसन्नता दया और सफाईपूर्ण था। चीनी के एक बड़े लैम्प के नीचे लैम्प, मेज पर रखे चीनी और चाँदी के बरतनों पर शुभ्र दूध जैसा प्रकाश फेंक रही थी। उसका कोमल प्रकाश एक ड्राइंग की पुस्तक पर झुकी छोटी-सी एक कन्या पर भी पड़ रहा था, जिसकी आँखों पर हरे हरे रङ्ग की एक छाया पड़ी हुई थी, उसके सामने कापी खुली पड़ी हुई थी और वह कन्या एक पतली पैन्सिल से उस पर चित्र बना रही थी, साथ ही धीरे-धीरे कोमल ध्वनि में कुछ गुनगुनाती भी जा रही थी। उसका यह गुनगुनाना माँ की समरस वाणी में किसी प्रकार का विघ्न नहीं डाल रहा था। कमरा बड़ा नहीं था, परन्तु फर्नीचर से काफी भरा दिखाई देता था। सब चीजें उसका आवश्यक अङ्ग दिखाई दे रही थीं और उसकी प्रत्येक चीज अपने बारे में पृथक-पृथक बोल रही थी। यहाँ तक कि दीवारों पर तीन चमकदार चित्र टँग रहे थे, उनमें से एक परियों की कहानियों का सफेद घोड़ा था, जो बड़े

गव से अपनी गर्दन मोड़े बहुत लम्बी प्यास के साथ—जो सग भग जमीन तक पहुँच रही था खड़ा था।

कमरे में सब-कुछ आश्चर्यप्रद सुख एवं शान्ति देने वाला और एक काल्पनिक कविता के समान अनुभव हो रहा था। यह साज सज्जा दूर से ही स्वामिनी का सुन्दर, सुमधुर गीत में सुर और ताल-सी देती मालूम दे रही थी। ऐसी परिस्थिति में कोई भी पुरुष अपना सम्पूर्ण जीवन बिना किसी भय या किसी प्रकार का हीन भाव लिए व्यतीत कर सकता था ऐसी पत्नी के साथ सम्पूर्ण जीवन उसकी प्रतिष्ठा और सब के बारे में हार्दिक-वार्ता साथ करके गुजारा जा सकता था।

बरामदे से दूर रङ्ग-बिरंगे शीशों से कभी २ आसमान में नीली बिजली की कौंध दिखाई दे रही थी। परन्तु इससे उसका दिल भयभीत नहीं हो रहा था।

भोर होते ही वर्तमानोंत आनन्द शान्ति, सुख और लगभग नीली आँखों वाली इस शान्त स्वभाव की स्त्री की यथार्थिक मूर्ति की स्मृति को सावधानी के साथ लेकर वहाँ से चल पड़ा। उसने उसे ऐसा ही सुखद आश्रय दिया था। गाड़ी में बैठे रास्ते के छोटे-छोटे पानी से भरे गड्ढों को, जो बिना किसी भेदभाव के सूर्य की स्वर्णिमता और वायु से प्रताड़ित बादलों व मलिन पत्तों को समान रूप से प्रतिफलित कर रहे थे पार करते हुए उसने शोक और ईर्ष्या में सोचा—

'देखो कुछ लोग ऐसा भी जीवन व्यतीत कर रहे हैं?

पता नहीं किस कारण से उसने इस नवीन परिचय के बारे में अपनी पत्नी को नहीं बताया और असफलाई से भी छिपाव किया। इसी से उसे एक प्रकार की व्यग्रता रही। कुछ सप्ताहों के बाद एक बार अपने भाई के घर पहुँचने पर बैठक में सोफे पर

भ्रोल्गा के बराबर बैठी पपोवा को उसने देखा। भाई ने उसे आगे धकेलते हुए कहा—

"मेरा निकोलायेव्ना! यह मेरा भाई है।"

महिला ने मुस्करा कर अपना हाथ आगे बढ़ाया और कहा—

"हम तो पहले से ही परिचित हैं।"

'यह कैसे ?' —प्रसक्सई आश्चर्य में बोला। 'कब से ? तूने तो मुझे कभी बताया भी नहीं।'

भाई के इस आश्चर्य से प्योत्र बड़े असमञ्जस में पड़ गया, और उसकी दाढ़ी के बाल बड़े अजीब तरीके से हिलने लगे। उसने अपने कानों को रगड़ कर उत्तर दिया—

मैं—भूल गया था।

प्रसक्सई बड़ी निर्लज्जता से उसकी ओर उङ्गली से संकेत करते हुए बोला—

ओ हो! जरा देखो तो—यह झेंप कर कितना लाल हो गया है ? बेटा! तुमने ठीक जवाब नहीं दिया! हाँ क्या कभी ऐसा भी हो सकता है कि एसी महिला को देखकर भुलाया जा सके ? जरा देखना इसके कान कैसे हिल रहे हैं!

पपोवा मुस्करा उठी लेकिन उसकी मुस्कराहट में कोई कसूर नहीं था।

उन्होंने शीशे के बड़े-बड़े ग्लासों में बरफ के साथ मधु-पान शुरू किया जिसे पपोवा ओल्गा के लिए भेंट में लाई था। यह शहद तृणमणि की तरह सुनहरा था और जिह्वा पर एक प्रिय चुभन पैदा करता था। उस मधु का पान करते ही प्रतीमानोव के मस्तिष्क में अनेक अच्छे-अच्छे भाव उठने लगे। परन्तु उन्हें शब्दों में प्रगट करने का अवसर उसे नहीं मिल रहा था, क्योंकि उसका भाई लगातार अपनी ही कहता जा रहा था—

"मेरा निकोलायेव्ना ! आप अपनी चीजों को बेचने की जल्दी न करें। उन्हें किसी पारखी को ही बेचना जो आत्मा की शान्ति की तलाश में हो। यह स्थान मानसिक शान्ति चाहने वालों के ही योग्य है। और हमारा भाई—आपको क्या देगा ? भूमि आपके पास है नहीं। फिर लकड़ी भी—उसमें अच्छी नहीं। और—यह लकड़ी भी सराओं के अलावा किसे चाहिए ?"

प्यात्र बीच में बोल उठा— 'बेचने की भी तो कोई जरूरत नहीं।

'क्या नहीं ?' पपोवा ने विचारमग्नता से शहद की चुस्की लेते हुए पूछा और फिर एक सांस लेकर बोली—'बेचना ही पड़ेगा मुझे।'

प्यात्र का पोल्या की सावधान दृष्टि और संयत, रहस्यमय मुस्कराहट बड़ी अप्रिय लग रही थी। वह स्थिरता से शहद-पान करता रहा और पपोवा को कोई जवाब न दे, चुप हो गया।

दो दिन बाद मिल के दफ्तर में अलक्सेई ने घोषणा की कि वह पपोवा के फर्नीचर का मूल्य तय कर उसे ऋण देना चाहता है।

'उसकी सम्पत्ति तो बहुत नहीं, परन्तु चीजें बहुत बढ़िया हैं।'

"मत दो,' प्योत्र ने दृढ़ निश्चय से कहा।

"क्यों नहीं ? मैं चीजों का दाम जानता हूँ।"

"मैं कहता हूँ, मत दो।'

परन्तु—क्यों नहीं ?" अलक्सेई जोर से चिल्लाया।—मैं किसी जानकार कीमत लगाने वाले के साथ वहाँ जाऊँगा।

प्यात्र अस्वीकृति में सिर हिलाता रहा, वह चाहता था कि भाई को हम छोड़ न जाए। परन्तु जब उसे कोई उचित

कारण न मिला, तो उसने अचानक प्रस्ताव रखा—

अच्छा आधे-आधे में आधा तू और आधा मैं।'

अलक्साई जोर से हँसा और उसकी ओर देर तक देखकर बोला—

"कहीं सौदाई तो नहीं हो गए तुम ?

"बात यह है—अगर हो गया हूँ तो वक्त आ गया है —प्योत्र अर्तामानोव ने ऊँची आवाज में कहा।

"तुम स्वयं अच्छी तरह विचार कर लो यह पार्टी अच्छी है। भाई ने उसे सचेत किया। 'मैंने भी कोशिश की थी लेकिन वह—एक मछली है जो हाथ से हर बार फिसल जाती है।

दो-तीन बार के मिलन के पश्चात् ही अर्तामानोव पपोवा के ही सपने देखने लगा। ज्यों ही वह कल्पना करने लगता कि यह स्त्री उसके पार्श्व में बैठी है त्यों ही उसके सामने एक ऐसे अद्भुत और आश्चर्यचकित कर देने वाले सुखमय जीवन के कपाट खुल उठते जो उसकी आँखों को सौन्दर्य से तृप्त कर हृदय को आनन्ददायक शान्ति से भरपूर कर देता। एक ऐसा जीवन—जिसमें दर्जनों आलसी अयोग्य और हमेशा के असन्तुष्ट और चीखने चिल्लाने, शिकायत करने झूठ बोलने और धोखा देने वाले लोगों से सम्पर्क रखने की आवश्यकता न होती। इसके अलावा वह झूठी खुशामद करने वालों से न घिर पाता था। वे खुशामदी जितनी खुशामद और चापलूसी करते उतना ही वह क्रोधित हो जाया करता और उसका यह क्रोध उतना ही छुपा करता जितना कि गुप्त विद्वेष भावना और धीरे धीरे बढ़ते हुए विद्रोह के होने पर हो सकता था। जाल-जाल मकड़ी की तरह तेजी से जाल फैलाती हुई मिल के जीवन से बहुत दूर के एक जीवन का चित्र

खून करना बहुत सरल था। उसने अपने स्वय के बारे में कल्पना की कि वह एक ऐसा बड़ा बिलाव है जिसको अपनी मालकिन से सुरक्षित शान्ति प्यार और दुलार की थपकी मिलती रहती है। वह भी इससे अधिक कुछ और की आकांक्षा नहीं करता—बिल्कुल भी नहीं।

पहले कभी जिस प्रकार निकोनोव का लड़का उसके विचारों का एक अप्रिय और कटु केन्द्र बना हुआ था—उसकी जगह अब पापोवा एक चुम्बक पत्थर के रूप में आ गई जो केवल सुन्दर-सुखद विचारों को आकर्षित किया करती थी। उसने अपने भाई के साथ एनक लगाए एक चालाक वृद्ध पुरुष को लेकर पापोवा की जायदाद देखने को जाने के लिए इन्कार कर दिया। वह व्यक्ति उसकी सम्पत्ति की कीमत लगाने के लिए साथ लिया गया था। परन्तु जब अलक्सेई रहन का सब सौदा कर के लौटा तो प्यात्र ने उसके सामने प्रस्ताव रखा—

"इस रहन को मुझे बेच दो।'

अलक्सेई को एक अप्रिय आश्चर्य हुआ। उसने प्रश्नों की एक झड़ी-सी लगादी—क्यों किसलिए—और अन्त में उसने घोषणा की—

"अच्छा सुन लो—यह रहन मेरे किस मतलब का है। वह मेरा रुपया चुकाने में बिल्कुल असमर्थ रहेगी और इस तरह उसकी वस्तुएँ मेरे पास ही रहेंगी। उसकी सभी चीजें अमूल्य हैं समझे। यदि तुम अधिक दे सको तो कह दो।

फिर दोनों के बीच सौदा तय हो गया। अलक्सेई ने मुँह बनाकर कहा—

'तुम्हें यह सौदा सफल हो। सौदा—अच्छा है।"

प्योत्र भी अनुभव करने लगा कि उसने एक अच्छा सौदा

किया है—उसने अपने लिए एक सुख, शान्ति का आश्रम भेंट में प्राप्त किया है।

"तेरी पत्नी से तो इसका कोई जिक्र न करूँ ?" भाई ने आँख मारते हुए पूछा।

'यह मेरी अपनी मर्जी है।"

भाई की तरफ क्रोधपूर्ण नजर से देखकर अलक्सेई बोला—

'ओल्गा का ख्याल है कि तू पपोवा से प्यार करने लगा है।"

'और यह मेरी अपनी मर्जी है।"

'देखो गुर्राओ नहीं! हमारी जैसी आयु में सभी पुरुष ऐसी गड़बड़ किया करते हैं।

प्योत्र ने बड़े रूखेपन से गुस्से में उत्तर दिया—

"देख तू मुझसे छेड़खानी मतकर, मुझे अकेला छोड़ !'

शीघ्र ही वह अनुभव करने लगा कि ओल्गा उससे बहुत घुलमिल कर बातें करने लगी है। परन्तु इससे एक प्रकार की अनुकम्पा का भाव प्रगट होता था जो उसे पसन्द नहीं था। एक दिन शरद की शाम को उसके आँगन में बैठ उसने पूछा—

"तुम्हारे पति ने तुमसे पपोवा के सम्बन्ध में तो कुछ निरर्थक बातें नहीं की ?'

ओल्गा ने उसकी ओर कोमलता से देखकर उसके बालों वाले हाथ को अपनी हल्की उंगुलियों से स्पर्श किया और बोली—

"ये सब बातें मुझसे आगे न सही जाएँगी।"

"ठीक है, ये बातें अब आगे कही भी नहीं जाएँगी।" अर्तामानाव ने अपने हाथ की मुट्ठी बंद कर उसे अपने घुटने पर

मारते हुए कहा—"यह सब—मुझ तक ही सीमित रहेंगी। तुम्हें इन बातों को समझने की भी जरूरत नहीं। बस, तुम पपोवा से कुछ न कहना।'

अर्शामानोव का पपोवा के प्रति प्रेम वासनापूर्ण नहीं था। उसके स्वप्नों में वह एक ऐसी स्त्री के रूप में प्रगट न होती थी जिसे वह चाहता हो। वह तो उसे अपने शान्त, सुखी और सुव्यवस्थित जीवन के लिए परम आवश्यक समझता था। जब वह स्त्री शहर में आ गई तो वह अलक्सेई के घर आ कर प्रायः उससे मिलता और एक दिन वह अपने पर काबू न रख सका और प्रेम-प्रवाह में बह ही गया।

एक बार जब वह अलक्सेई के यहाँ पहुँचा तो उसने पपोवा को अपनी बाँहें ऊपर चढ़ाए बीमार ओल्गा के पलंग के पास खड़ा देखा। वह चिलमची पर झुकी तौलिए को भिगो रही थी। वह बार-बार झुकती और सीधी होती—उसका शारीरिक गठन अद्भुत और आकर्षक था। किशोरियों के से छोटे-छोटे उसके स्तन उसको बरबस आकर्षित कर लेते थे। वह द्वार के बीच खड़ा उसकी गोरी-गोरी बाँहों सुदृढ़ पिण्डलियों और सुन्दर कटि-प्रदेश को अपलक दृष्टि से देखते-देखते यकायक ही वासना की तरंगों में बहकर अचेतावस्था में अनुभव करने लगा था कि पपोवा के हाथों ने उसके शरीर को आलिंगन में कस लिया है। उसके अभिवादन के उत्तर में बड़ी कठिनता से उसने सिर झुकाया और कमरे में घुस कर खिड़की के पास बैठ गया। फिर उदास भाव से पूछने लगा—

"तुम्हें क्या हो गया है, ओल्गा। इस प्रकार बीमार होते रहना ठीक नहीं।

यह पहला ही अवसर था जब एक स्त्री न उसे इतनी प्रबलता और पराधिता से अभिभूत कर लिया था। वह किसी

क़दर भयभीत होकर एक प्रकार का अस्पष्ट भयानक संकट अनुभव करने लगा। अपनी गाड़ी डाक्टर को लाने को भेज कर वह स्वयं उसी समय पैदल ही घर की ओर चल पड़ा।

यह फरवरी मास का अन्त था पिघलती हुई बर्फ़ आने वाले बर्फ़ानी तूफ़ान का भय पैदा कर रही थी। भूमि एक भूरे हल्के कुहरे से ढकी हुई थी। उस कुहरे के कारण आकाश अस्पष्ट था और प्रतीत होता था कि पृथ्वी और उसके बीच की दूरी कम हो गई है और वह अर्तामानोव के सिर के ऊपर एक उलटे कटोरे की तरह लटक रहा है। सीली ठण्डी गर्द यहाँ-वहाँ से धीरे-धीरे उड़ कर उसकी मूँछ और दाढ़ी को अच्छी तरह आच्छादित कर साँस लेने में बाधक हो रही थी। इस गिरी हुई बर्फ़ को अपने लम्बे-लम्बे क़दमों से रौंद कर बढ़ता हुआ अर्तामानोव उस रात की तरह जब निकिता ने आत्म-हत्या करने का प्रयत्न किया था और उस दिन की तरह जब उसने पावेल निकोनोव की हत्या की थी एक प्रकार की व्याकुलता—एक प्रकार की पराजय की भावना से थक कर चूर चूर हो उठा था। इन दोनों घटनाओं की दुःखद अनुभूति और दोनों की समानता उसे अधिकाधिक स्पष्ट और भयप्रद होती जाती थी। उसे यह भी स्पष्ट था कि वह इस महिला को अपनी रखैल नहीं बना पाएगा। उसने यह भी अनुभव किया था कि पपोवा के प्रति बढ़ता हुआ आकर्षण एकदम लुप्त होता जा रहा है और उसकी वह प्रिय महिला निम्न स्तर की स्त्रियों की श्रेणी में आकर साधारण होती जा रही है। पत्नी किसे कहा जाता है, यह भी वह भलीभाँति जानता था और पत्नी के बनिस्बत् एक रखैल किसी भी रूप में श्रेष्ठ सिद्ध हो सकेगी—ऐसा तो कोई कारण नहीं था। यद्यपि उसकी पत्नी की साधारण-सी कामुक चेष्टाएँ और अनिवार्य प्रेमालिंगन उसके हृदय में आसक्ति जाग्रत करने में सर्वदा असफल

सिद्ध हुए थे।

"तुम चाहते क्या हो ?" उसने अपने से ही प्रश्न किया। शारीरिक तृष्णा की शान्ति ? तो इसके लिए तुम्हारे पास तुम्हारी अपनी विवाहिता स्त्री है।

जब भी उसे इस प्रकार के क्षणों में किसी की धमकी का सामना करना होता तो अर्तामानोव यथाशीघ्र ही उस खतरे से छुटकारा पाने को आकुल हो उठता। वह उससे बचकर निकलना चाहता और चाहता कि वह पीछे मुड़कर भी उधर न देखे। किसी सङ्कट का सामना करना उसे ऐसा प्रतीत होता जैसे कि वह बसन्त की किसी अन्धकारमयी रात में चरमराती हुई बर्फ के ऊपर खड़ा हो। उसने इसकी भीषणता को जवानी के दिनों में अनुभव किया था और उसकी याद आज भी उसे अच्छी तरह थी।

कुछ दिन और बीत गए। इन दिनों वह अत्यधिक व्यग्र और चिन्तित रहा। एक रात को उसे नींद ही न आई, किसी प्रकार रात को बिताकर वह बहुत सुबह उठकर आँगन में आया तो उसने तुलुम नामक अपने कुत्ते को रक्त से सराबोर पाया। उस धुँधलके में वह रक्त तारकोल जैसा काला प्रतीत हो रहा था। उसने बालों वाले कुत्ते की लाश को पाँव से हिलाकर देखा तो उसका धड़ के ऊपर खुला हुआ पड़ा मुँह इधर उधर सरक सा गया और उसकी बाहर को निकली आँखें उसके बूते की ठोकर की ओर देखने लगीं। अर्तामानोव देखकर सिहर उठा। उसने चौकीदार की कोठरी का छोटा-सा दरवाजा ठोकर से ठेलकर खोला और बाहर ही खड़े-खड़े पूछने लगा—

'कुत्ते की हत्या किसने की है ?

अपनी पाँचों उङ्गलियों को पसारे तश्तरी को थामकर चाय

पीते हुए तिख़ोन ने उत्तर दिया— मैंने !'

'क्यों ? '

राहगीरों को यह फिर काटने लगा था ।

' आज इसने किसको काटा था ? '

''सेराफिम की लड़की जिनैदा को ।

प्योत्र एक क्षण मौन रहा और फिर कुछ सोचकर बोला 'यह एक दुखी करने वाली बात है ।

' निसन्देह ! मैंने इसे उस समय से पाला-पोसा है जब यह एक छोटा पिल्ला था । और आजकल तो इसने मुझ पर भी गुर्राना शुरू कर दिया था । सच तो यह है कि यदि आदमी को भी जंजीर से जकड़ कर रखा जाय तो वह भी पागल हो जाएगा ।'

तुम ठीक ही कहते हो । इतना कहकर अर्तामानोव सावधानी स दरवाजे को बन्द कर बाहर निकल आया और सोचने लगा—

''यदाकदा तिख़ोन भी बुद्धिमानी की बात कहता है ।'

आँगन में पहुँचकर वह कुछ क्षण तक खड़ा मिल की ओर से आने वाले शोर-गुल को सुनता रहा । दूर एक कोने में—अस्त बल के निकट ही सेराफिम की कुटिया की खिड़की से पीले प्रकाश की एक किरण दिखाई दे रही थी । अर्तामानोव उस खिड़की के निकट पहुँच कर उसमें अन्दर झाँका । मेज पर एक लम्प जल रही थी और सिर्फ एक चोली पहने बठी जिनैदा सुई से कुछ सी रही थी । जब वह कमरे में अन्दर पहुँचा तो जिनैदा ने बिना सिर को ऊपर उठाए ही पूछा—

'तुम फिर क्यों लौट आए ?

लेकिन जैसे ही उसने द्वार की ओर दृष्टि उठा कर देखा तो वह अपना काम छोड़ कर एकदम उछल पड़ी और मुस्कराते हुए बोली—

"उई माँ ! मैं तो समझी बाबू हैं ?"

'सुना है तुम्हें तुमुन ने काटा है !"

'हाँ, देखो न कैसा ?" उसने झींग मारते हुए कुर्सी पर टाँग रखी, और अपने घाघरे को उठाते हुए कहा— 'जरा देखो तो !

प्रतीमानोव ने उस टाँग की ओर तनिक देखा जिस पर घुटनों के नीचे पट्टी बँधी हुई थी । फिर लड़की के निकट पहुँच कर धीमे से पूछा-

"और तुम इतनी सुबह उठकर आँगन में क्यों गई थीं ?"

वह जिज्ञासा से उसकी तरफ देखने लगी और फिर बात का अर्थ समझ लेने के बाद स्वयं हँसने लगी । उसने लम्प को फूँक मारकर बुझा दिया और कहने लगी—

'मुझे दरवाजा बन्द कर देना चाहिए ।

आध घण्टे बाद प्यात्र प्रतीमानोव एक प्रसन्नतापूर्ण थकान के साथ धीरे-धीरे मिल की ओर चल पड़ा । वह अपने कानों को रगड़ता इधर-उधर थूकता और उस बुनकर की लड़की के निर्लज्ज चुम्बनों और प्रेमालिंगनों की आश्चर्यजनक अनुभूति से रोमांचित हो रहा था । वह मुस्करा रहा था और ऐसा अनुभव कर रहा था जैसे कि वह किसी को आसानी से ठग कर चला आ रहा हो ।

मिल की लड़कियों के साथ वह दुराचार करने को ऐसा टूटा जैसे कि रीछ मधुमक्खियों के छत्ते पर टूटता है । उन लोगों के बारे में जैसा उसने सुना था उनका जीवन उससे कहीं

अधिक स्पष्ट था। पहले तो वह उनके शब्दों और उनकी भाव भावों की आनन्ददायक नम्रता का खुला प्रदर्शन देख कर एवं उनके व्यभिचारी जीवन और उनकी निर्लज्जता को देखकर हतबुद्धि-सा रह गया। यह इस निमज्जता के ही कारण था कि उनके गीत स्वयं अपनी दुर्दशा पर रुदन करते थे। और वे राग—जिमैदा और उसकी सहेलियाँ जिसे प्यार कहते थे उसमें एक कटु तीक्ष्णता थी—रस को काटने वाली कड़वाहट और मदिरा से भी अधिक मादकता थी।

मिस्र के मल्लाह लोग सेराफिम की कुटिया को 'वास' और जिमैदा का 'पम्प' कह कर पुकारते हैं यह बात अर्तामानोव को मालूम थी। लेकिन सेराफिम उसे एक आश्रम बतलाया करता था। वह कढ़ी हुई तौलिया से ढके हुए सितारे को कन्धे पर लटकाए अंगीठी के निकट बैठा अपने घुँघराले बालों के सिर को हिलाता लाल चेहरे को सिकोड़ता और आँखों को मटकाता हुआ कहता, अरे साधुनियो मौज करो खूब मौज करो! प्योत्र इलिच क्या तुम्हें यह पता नहीं! ये सब साधुनी तो हैं ही। इन्होंने मौज के शैतान के सामने शपथ ली है और मैं इनका महन्त हूँ हाँ, मुझे एक तरह का पुरोहित ही समझो स स स स सा ऽ। एक रूबल दो और मौज लो!

इसके बाद वह पैसा लेकर अपने पाँवों में बँधी पट्टियों में रखता। फिर वह लोगों के साथ सितारे के तारों की झंकार के बीच गाने लगता—

'नरक में एक सुनारी।
माँये बैठी लसी बरफ॥
शैतानों ने उस भोली को।
टका कर डाला एक में॥

तुम्हारे मजाकों और हास्य-गीतों का कोई अन्त नहीं।

मासिक चकित हो कहता । इस पर बुड्ढा डींग मारता हुआ कहने लगता—

'मैं चलनी हूँ—एक चलनी । तुम कैसा ही गन्द छाँट कर मुझे दो—मैं उसको गीत में बदल दूँगा । ऐसा हूँ मैं आदमी—एक चलनी ।

एक बार वह बोला—

'यह सब मुझे उच्चवर्ग के भद्र लोगों—सरदारों ने ही सिखाया है । क्या शानदार लोग थे—जैसे कुतुज़ोव । और फिर एक सरदार पापुश्किन भी था । ओह ! कैसा शराबी और कैसा चालाक था ! ग़रीबों का बहाना किए और कन्धे पर थैला डाले ऐसे घूमता था जैसे देहातों में छोटी मोटी चीज़ों की फेरी लगाने वाला हो । वह जो कुछ देखता या सुनता था—सब लिखता जाता था । वह उन्हें लिखता रहा और फिर वह एक दिन, ज़ार के पास जाकर बोला—

'देखिए महाराज ! हमारे किसान क्या सोचते हैं ?'

'ज़ार ने वह सब लिखा हुआ पढ़ा उसे दिल से बड़ा दुःख हुआ और उसने किसानों को मुक्त करने की आज्ञा दे दी तथा साथ ही पापुश्किन की स्मृति में कांसे की एक मूर्ति—ठीक मास्को के बीच खड़ी करने की भी आज्ञा निकाल दी । उसने पापुश्किन को हाथ तक न लगाया और उसे जीवित सुखधाम भेज दिया । सरकारी खर्च पर उसे मनचाही शराब देने का भी हुक्म दिया । क्योंकि तुम जानते हो पापुश्किन ने आमलोगों के रहस्यों को लिखा था और वे ज़ार के खिलाफ हो गए । ज़ार के लिए यह सब लिखना फायदेमन्द सिद्ध हुआ इसीलिए उसको गुप्त ही रखना अच्छा था । सुखधाम में पापुश्किन पीते-पीते ही मर गया और सब लोगों ने उसके लेखों को चुरा लिया ।

'क्या झूठ बोल रहा है ?' मर्तामानोव बोला।

"लड़कियों के अलावा—मैंने कभी किसी से झूठ नहीं बोला। यह मेरा धन्धा नहीं," बुड्ढा बोला। यह समझ सकना बड़ा मुश्किल था कि वह मजाक करता है या गम्भीरता से कह रहा है।

"झूठ वह आदमी बोलता है, जो सचाई जानता हो —" वह बोला 'और मैं झूठ नहीं बोल सकता क्योंकि मुझे सचाई का ही पता नहीं ? हाँ चाहो तो मैं—तुमसे सच-सच कहूँ। मैंने तरह-तरह के सच देखे हैं। लेकिन मेरी कविता का टप्पा यह है—सत्य है वही, अच्छी जबतक तरणी है।

उसे सच का भले ही पता न था परन्तु उसे उच्चवर्ग के लोगों के शौक, उनके दौर्भाग्य उनकी कठोरताएँ, मनबहलाव और सम्पत्ति इत्यादि के अनगिनत किस्से याद थे। उनके बारे में वह सुना चुकने पर सदा खिन्न-भाव से कहता—

"अब वे खतम हो लिए ! वे जीवन-केन्द्र से हट गए, अब उन्हें अपना ही न पता ! तितर बितर हो चुके हैं .गिर चुके हैं" यह कह कर उसने सिर पर उङ्गलियों से एक घेरा-सा बनाया और हाथ को नीचे कर वैसा ही एक घेरा फर्श पर चित्रित किया।

"क्या खूब ! उन्होंने क्या-क्या ऐश किए हैं !" वह आँख मारता हुआ आगे कहता गया और फिर गाने लगा—

'कभी रहते थे नवाब-सरदार।
बिलासी, खाते रहे गो-मांस ॥
अब तक खतम हुआ घरबार।
ही पुरखों की जायदाद बिगाड़ ॥"

सेराफिम काकुमो पुर्वेसों किसानों के विद्रोहों दौर्भाग्यपूर्ण

प्रेम रात को दुःखी विधवाओं के पास आने वाले अग्निमुख सर्पों आदि की नाना प्रकार की कहानियाँ सुनाता और वह ये कहानियाँ इतनी दिलचस्पी से सुनाता कि उसकी असंयत, भ्रष्ट लड़की भी बच्चों की तरह कौतूहल से उनको सुनती रहती।

अर्तामानोव ने जिनैदा में इन्द्रिय लोलुपता तथा स्वार्थ-सिद्धि की दक्षता का एक अनोखा मेल पाया था जिसे देख कर उसे अरुचि उत्पन्न हुई थी। पावेल निकोनोव की जो कलङ्क लगाने की बात थी वह भविष्यवाणी ही सिद्ध हुई।

"मैंने इसे ही क्यों चुना है ? उसने मन-ही-मन सोचा। 'और भी तो बहुत-सी सुन्दर लड़कियाँ हैं। जब इल्या को इसके इसके बारे में पता लगेगा तो मैं कितना अच्छा लगूँगा !'

वह जानता था कि जिनदा और उसकी सहेलियाँ अपने इन शौकों को किसी अनिवार्य कर्तव्यों की तरह पालन करती हैं। कभी-कभी वह सोचता था कि वे अपनी इस निर्लज्जता से दूसरों का ही नहीं, अपितु स्वयं को भी धोखा देती है। जिनैदा का पैसे का लालच और उसकी वक्त-बे-वक्त माँग के कारण वह उससे दूर रहने लगा। सेराफिम की अपेक्षा जिनदा में यह बात बहुत अधिक थी। वह लगभग अपना सारा पैसा मीठी टनेरिफ सुरब्बे मीठी रोटी और लहसन मिली चटनियों पर खर्च करता देता था जो उसे बहुत पसन्द थीं। मीठी टैनेरिफ़ को न जाने किस कारण वह 'मूली की शराब' बतलाया करता था।

अर्तामानोव को यह प्रसन्नचित्त मनोरंजक बुड्ढा बहुत पसंद आया था। वह अपने काम में बहुत कुशल ही नहीं वरन् दूसरों से मेल-मिलाप करना भी अच्छी तरह जानता था। अर्तामानोव को पता था कि इस बुड्ढे को सब लोग चाहते हैं। मिल में लोग उसे 'सान्त्वना देने वाला' के नाम से पुकारते थे और ल्योव यह भी जानता था कि इस नाम में परिहास की अपेक्षा सचाई

अधिक है और इस परिहास में भी प्रेम की ही झलक स्पष्ट होती है।

फिर भी न जाने क्यों सेराफिम की तिखोन के साथ मित्रता उसे बड़ी अप्रिय लगती थी। उसे ऐसा दिखाई देता कि तिखोन भी जानबूझ कर अपने प्रति मालिक की घृणा को गहरा बनाता जाता है। अर्तामानोव के यहाँ नौकरी करते हुए उसने बीसवाँ साल पूरा किया था। इसी से नताल्या ने फैसला किया था कि इस दिन के उपलक्ष में उत्सव मना कर उसके नाम को चिरस्मरणीय बनाया जाय।

"जरा सोचो तो, वह कैसा विरला आदमी है!—नताल्या पति से बोली। "इन बीस सालों में हमने उसमें कोई बुराई नहीं देखी, उससे कोई तकलीफ नहीं हुई। एक अच्छी मामबत्ती की तरह वह चुपचाप उष्णतापूर्वक जलता हुआ हमारी सेवा कर रहा है।

दरबान को विशेष रूप से सम्मानित करने के लिए उप हार लेकर स्वयं प्योत्र ही उसके पास गया। दरबान के घर में सेराफिम त्योहार के कपड़ों में सजा-धजा बैठा था। तिखोन उसके पीछे सिर झुकाए खड़ा था और मालिक के पाँवों की ओर देख रहा था।

"इसे मेरी ओर से—तुम्हारे लिए—यह घड़ी है! पत्नी की ओर से यह कपड़ा है और साथ में ये कुछ रूबल भी हैं।

"रूबल—ये तो बेकार हैं,—तिखोन ने अस्पष्ट स्वर में कहा। एक पल रुक कर वह फिर बोला—इन सब के लिए मैं धन्यवाद देता हूँ।"

फिर उसने मालिक को टेनरिफ् मदिरा के पान के लिए आमन्त्रित किया जिसे सेराफिम लाया था। इस पर उस छोटे-से

मई ने अपनी बकवास शुरू कर दी—

व्यात्र हत्यच ! तुम हमारी कीमत जानते हो और हम तुम्हारी जानते हैं। रीछ को शहद पसन्द है तो लुहार अपने लोहे को ही चाहता है। ये धनी लोग हमारे लिए रीछ थे और तुम हमारे लिए लोहार हो। हम देखते रहे हैं कि तुम्हारा काम कितना बड़ा और कितना कठिन है।

ब्यालोव ने चाँदी की उस घड़ी को उङ्गलियों में दबाए और उसकी ओर देखते हुए ही कहा—

कारोबार—मनुष्य के लिए एक 'रेलिंग' की तरह है जिसे पकड़े हुए ही गड्ढे के चारों ओर किनारे किनारे हम घूम रहे हैं।'

'बिल्कुल ठीक ! —सेराफिम एकदम खुश होकर चिल्लाया— "बिल्कुल ठीक कहता है ! नहीं तो हम सब गिर ही जाते !'

तुम लोग फिजूल की बातें कर रहे हो ' मर्तामानोव बोला, 'तुम्हें कारोबार के बारे में क्या पता है, तुम्हें इस विषय में बात करन की आवश्यकता नहीं क्योंकि तुम व्यवसायी नहीं और तुम इन बातों को समझ भी नहीं सकते !'

यद्यपि तिखोन के शब्दों से वह एकदम नाराज हो गया था, परन्तु उसे अपने भावों को प्रगट करने के लिए काफी जोरदार शब्द न मिल सके थे। यह पहली बार ही नहीं था कि तिखोन ने अपने अस्पष्ट और आग्रहपूर्ण भावों को ऐसे शब्दों के पहरावे में कहा था कि जिससे मालिक नाराज हो गया। व्यात्र ने दरबान के खूब तन से चुपड़े पत्थर जैसे सिर को देखा और कानों को खुजाते हुए अधिक कठोर शब्दों से उसके इन भावों को कुचल देने के लिए शब्द खोजने लगा।

'कारोबार भी निःसन्देह तरह-तरह के होते हैं" सेराफिम ने सांत्वना देते हुए कहा "बुरे भी हैं और अच्छे भी ।

"अच्छे-से अच्छा सेज चाकू भी तुम्हारे गले पर बेकार है ' तिखोन बुदबुदाया।

मालिक की इच्छा थी कि वह उसे खूब गालियाँ सुनाए। चूँकि आज उसे सम्मानित किया गया था इसी से अपने भावों को मुश्किल से छिपाते हुए उसने कठोरता से पूछा—

"यह क्या बात है कि तू हमेशा ही कारोबार के बारे में कुछ-न-कुछ अनजमूल बकवास करता रहता है ? जिसे समझना कठिन है ।

तिखोन ने मेज के नीचे झुकते हुए स्वीकार किया । इन्हें समझना कठिन है ।

बढ़ई ने फिर कहना शुरू किया—

'प्योत्र इल्यिच ! यह तो केवल ऐसे ही कामों को काम समझता है जो हानिकारक नहीं ।

'सराफिम ! जरा ठहरो इसे स्वयं कहने दो ।

तिखोन इस पर भी विचलित न हुआ । उसने अपने सिर को झुका कर हथेली जितने गंज को दिखाते हुए एक ठंडी आह भर कर कहा— शैतान ने जो कुछ भी आदम-पुत्र को सिखा दिया वही व्यवसाय है ।

सुनो यह क्या कहता है ? सराफिम ने अपनी हथेली को घुटनों पर मारते हुए कहा ।

अर्तामानोव एकदम खड़ा हो गया । उसने गुस्से में दरबान को सलाह दी—

'जो बात तेरी समझ में नहीं आए उसके बारे में कुछ भी कहना ठीक नहीं समझे ।

वह दरबान के घर से बड़ी नाराजगी के साथ यह सोचता

हुआ कि इसका हिसाब चुकता कर छुट्टी दे देनी चाहिए, बाहर निकल आया—कल ही उसे नौकरी से अलग कर देगा। अच्छा, अब नहीं तो एक हफ्ते के बाद सही। जब वह दफ्तर पहुँचा तो नपोला उसकी प्रतीक्षा में खड़ी थी। उसने बड़ी रुखाई से उसका अभिवादन किया जैसे कि वह कोई अपरिचित हो और स्टूल पर बैठे हुए वह छतरी से फर्श का ठक-ठकाती रही। वह अपने रहन-नामे के सूद के बारे में जिक्र करने लगी कि वह उसे तुरन्त चुकाने में असमर्थ है।

"यह कोई बात नहीं" प्योत्र धीरे से बोला और उसकी तरफ देखे बिना ही उसके शब्दों को सुनता रहा।

"यदि आप मियाद बढ़ाने के लिए रजामन्द नहीं, तो आपको इन्कार करने का अधिकार है।"

वह बड़ी नाराजगी से यह कहकर फर्श पर छतरी से चोट कर एकदम इतनी जल्दी से बाहर चली गई कि जब वह अपने पीछे दरवाजा बन्द कर रही थी तभी प्योत्र उसकी तरफ देख सका।

'नाराज है, —अर्तामानोव ने सोचा—'पता नहीं, क्यों?'

घण्टे भर बाद ओल्गा के यहाँ बैठे हुए अपनी टोपी को सोफे से मार कर वह बोला—

'तुम उसे जता दो—मुझे उसके सूद की जरूरत नहीं। मुझे उसके पैसों की जरूरत नहीं? उसे इस बारे में चिन्ता नहीं करनी चाहिए, समझीं।

अपनी चमकीली रेशमी धागे की गुच्छियों और मनकों के बक्सों पर झुकी हुई ओल्गा विचारपूर्वक बोली—

"मैं तो यह समझती हूँ परन्तु वह बड़ी मुश्किल से

समझेगी ।

तो, तुम ऐसा करो कि वह समझ जाय । तुम्हारे समझने से मेरा क्या बनता है ?

धन्यवाद" ओल्गा ऐनक के पीछे से आँखें चमकाती हुई बोली । उसके तीखे व्यंग परिहास से प्योत्र नाराज़ हो गया ।

तुम अफ़सोस मत करो । वह रुखाई से बोला— 'मैं उसके बगीचे में सूअर नहीं चुगाना चाहता मैं यह बिल्कुल नहीं चाहता, तुम ऐसा मत सोचो ।

'ओह ! तुम लोग —ओल्गा ने आह भरते हुए अपने चिकने-चुपड़े सिर को हिला कर संदेह से कहा ।

प्योत्र चिल्लाया—

"तुम सच मानो ! मैं जानता हूँ मैं क्या कह रहा हूँ ।"

आह सचमुच जानते हो क्या ?"

वह सहानुभूति में आहें भरती रही और अवमाननीय सुनता रहा । वह देख रहा था कि उसकी आँखें अनुकम्पा से उसे निहार रही हैं । परन्तु प्योत्र इससे भी चिढ़ गया । वह खिड़की के पास बिगोनिया के सुन्दर फूलों और उनके मोटे-मोटे पत्तों की ओर निहारता रहा, जो जानवरों के कान की तरह दिखाई दे रहे थे । वह उससे विश्वासपूर्ण और अन्तिम बात साफ़-साफ़ करना चाहता था परन्तु उसे शब्द ही न मिल रहे थे । अन्त में वह बोला—

"मुझे उसके घर के लिए अफ़सोस है । वह एक सुन्दर स्थान है जहाँ वह पैदा हुई थी ।

"पैदा तो वह यार्शान में हुई थी ।"

"ख़ैर, वह यहाँ की वासी तो हो चुकी है । इसमें फ़र्क

क्या है ? उस घर में मेरी आत्मा पहली बार शान्ति के साथ सोई थी।'

'तुम्हारा मतलब है—जागी थी' ओल्गा ने कहा।

"आत्मा के लिए यह एक ही बात है—चाहे जागे, चाहे सोए।

वह देर तक बातचीत करता रहा जिसका मतलब स्वयं उसकी समझ में नहीं आ रहा था। मेज़ पर कोहनी टेके ओल्गा देर तक उसकी बातें सुनती रही और फिर बोली—

'अब तुम ज़रा मेरी बात सुनो!'

उसने प्योत्र को बताया कि नताल्या उस बुनकर की लड़की के साथ उसके सम्बन्ध के बारे में जानती है। इससे वह बड़ी नाराज है रोती है और शिकायत करती है। परन्तु, अर्तामानोव पर इसका कुछ असर न हुआ।

वही चालाक है—प्योत्र ने एक मन्द मुस्कान के साथ सोचा। "एक बात से भी उसने पता न होने दिया कि वह यह सब जानती है। वह तुमसे शिकायत करती है? हूँ और वह तुम्हें बिल्कुल भी नहीं चाहती।

कुछ सोच कर वह फिर बोला—

जिमका को लोग 'पम्प' कहते हैं, यह—ठीक है! उसने मुझमें से सब अश्लीलता बाहर निकाल दी है।'

'अश्लील बात क्यों कर रहे हो—ओल्गा ने उसे झिड़का और वह फिर आहें भरते हुए बोली—'तुम्हें याद है तुम अपनी आत्मा को एक बच्चे के समान समझते हो। तुम मानो—यह बात ऐसी ही है। तुम अपने आप से ऐसे डरते हो जैसे कि तुम स्वयं अपने दुश्मन हो।,

यह सुनकर प्योत्र नाराज हो गया।

"तुम मेरे साथ बहुत बढ़-चढ़ कर बात करती हो क्या मैं बच्चा हूँ जो तुम ऐसा सोचती हो। तुमने यह ऐसे क्यों सोचा। देखो, मैं तुमसे कहता हूँ कि मेरी आत्मा साफ है और मुझे किसी और से कुछ नहीं कहना। ऐसी ही बात है। नताल्या के साथ कोई बात नहीं हो सकती। कभी-कभी मैं सोचता हूँ कि उसकी खूब पिटाई करूँ। और तुम ओह तुम स्त्रियाँ!"

उसने टोपी पहनी और गूँग निपट पागल की तरह चुपचाप अपनी पत्नी के बारे में सोचता हुआ बाहर निकल गया। बहुत दिनों से उसने पत्नी के बारे में कुछ सोचा नहीं था—और घर में भी उसकी ओर ध्यान नहीं दिया था यद्यपि वह नित्य रात को परमात्मा की प्रार्थना करके अपने सहज स्वभाव और प्रेम से उसके साथ सो जाती थी।

'यह सब जानते हुए भी साथ सोती है' उसने बड़े गुस्से में सोचा—'मूर्खरिया कहीं की।'

पत्नी तो जानी-बूझी पगडण्डी थी जिस पर ध्यान बिना देखे भाले बिना किसी दुर्घटना के जा सकता था। उसके बारे में सोचने की कोई इच्छा नहीं थी। उसे याद आया कि उसकी सास का सारा सूजा शरीर और चेहरे के साथ आरामकुर्सी में बैठी धीरे-धीरे मृत्यु की ओर जा रही है अब उसकी ओर बड़ी अनिच्छा से देखती है। उसकी आँखें जो कभी बड़ी सुन्दर थीं आज वे ज्योतिहीन हो गई हैं उनमें कीचड़ भर रहते हैं और वे सदा ही उसकी ओर निहारती हैं। उसके विकृत ओठ तो हिलते परन्तु वह कुछ कहने में असमर्थ थी। उसकी जीभ हिलती, परन्तु मुँह से बोलने में असफल हो जाती और उसे अपने बाएँ हाथ से मुँह से बाहर निकली उस जिह्वा को अपने मुँह में धकेलने की कोशिश करना पड़ती थी।

'वह—अनुभव कर रही है। मुझे उस पर दया आती है।

और आश्चर्य होता था कि कभी वह इसी गम्भीर सूट-धारी गौरवपूर्ण नवयुवक के घुंघराले बालों को पकड़कर उन्हें हिलाया था। जहाँ तक याकोव का प्रश्न है वह बड़ा जरूर हो गया था, लेकिन वह पहले की तरह ही गोल-मोल और तोंद वाला था, और उसका चेहरा मर्दों का-सा और आँख पहले की तरह ही निर्मल थी।

इल्या! तुम अब बड़े हो गए हो? बाप ने कहा—"अब काम की देख भाल करो। दो चार बरस में तुम सब कुछ सम्भाल जाओगे।'

सिगरेट के एक छोर से लकड़ी के बने सिगरेट-केस से खेलते हुए और बाप के चेहरे की ओर देखता हुआ इल्या बोला—

"नहीं मैं अभी और पढ़ूंगा।'

"कब तक?

चार-पाँच बरस तक।

'और क्या पढ़ेगा?

' इतिहास।

उसका बेटा सिगरेट पीने लगा है यह देखकर अर्तामानोव को बुरा लगा। इसके अलावा उसका सिगरेट-केस भी घटिया किस्म का था। वह उससे अच्छा केस खरीद सकता था। सबसे अधिक भली न लगने वाली इल्या की बात तो यह थी कि उसने आगे और पढ़ने की इच्छा व्यक्त की और यह भी कि उसने घर आने पर तुरन्त ही यह बात कह दी थी।

कारखाने की छत के पास की खिड़की की ओर इशारा करते हुए—जहाँ एक पतली चिमनी से हल्की-हल्की भाप निकल रही

थी और बीच में यम का कोलाहल हो रहा था, वह बड़े गौरव से धीमे से बोला—

"यह देखो तुम्हारे लिए इतिहास जो उबल उबल कर आ रहा है ! तुम्हें इसे ही सीखना चाहिए । हमें कपड़े का बुनना सीखना है और इतिहास—हमारा धन्धा नहीं । मुझे पचास साल हो रहे हैं समय आ गया है कि तुम मुझे छुट्टी दो ।

'मिरोन और याकोव आपकी जगह लेंगे । मिरोन इंजि नियर होने जा रहा है ' इल्या ने उत्तर दिया । उसने अपनी सिगरेट की राख खिड़की से हाथ बाहर निकाल करके झाड़ी । पिता ने बताया—

"मिरोन मेरा भतीजा है बेटा नहीं । खैर, इस बारे में हम फिर बात करेंगे ।'

लड़के खड़े हुए और बाहर चले गए । बाप आश्चर्यान्वित हो आहत दृष्टि से उनका पीछा करता रहा क्या मामला है— वे मुझसे कोई बात नहीं करना चाहते ? दोनों बैठकर पाँच-सात मिनट बात कर सकते थे । एक तो मूर्खतापूर्ण बातें करता था और दूसरा कमरे में जम्हाई लेता रहा तम्बाकू का धुआँ भरता रहा और प्रारम्भ में ही उसने परेशान कर दिया । वे अभी आँगन में ही पहुँचे थे । इल्या की आवाज साफ सुनाई दे रही थी—

आओ, नदी किनारे घूमकर वहाँ का दृश्य देखें ?

"नहीं मैं थक गया हूँ ।

'ठीक, नदी पर हम कल भी जा सकते हैं, वह सूख तो जाएगी नहीं । नानी के मरने से माँ बड़ी दुःखी है और अन्त्येष्टि की तैय्यारियों से थक चुकी है ।"

'अप्रियता से तुरन्त मुकाबला कर उससे बचने के पुराने अभ्यास के कारण प्योत्र अर्तामानोव ने बेटे को एक सप्ताह का

अवसर दिया। इस काल में उसने देखा कि वह मजदूरों के साथ तुम कहके बात करता है और सन्ध्या समय तिखोन और सेराफिम के साथ बैठकर गप-शप भी लड़ाता रहता है। उसने खिड़की के पास से तिखोन की निर्जीव ध्वनि को भी सुना। वह अपनी मूर्खताओं की झड़ी लगाए रहता था—

'सो यह ऐसी बात है ! गरीबों का क्या जीवन है—कुछ नहीं। ठीक है इल्या येकोविच ! यदि लोग लोभ करना छोड़ दें तो सब को सब चीजें मिल भी सकती हैं।

और सेराफीम भी प्रसन्नतापूर्वक बोला—

'हां मैं यह सब जानता हूं ! मैं यह बातें बहुत दिनों से सुनता आ रहा हूं।

याकाव अब अधिक विचारशीलता से व्यवहार करता था। वह मिल की इमारतों में इधर-उधर चक्कर काटता। मिल की लड़कियों की ओर नजरें मारता और दोपहर के भोजन के समय जब स्त्रियां नदी पर नहा रही होतीं तो वह घुड़साल की छत से उनकी तरफ निहारता।

'बिल्कुल आवारा लड़का है' बाप ने निराशापूर्वक सोचा। "मुझे सेराफिम को इस पर नजर रखने को कहना पड़ेगा। कहीं इसे भी जवानी का जहर न चढ़ जाए।

मंगलवार का वह दिन बड़ा गीला, धुंधला और शान्त था। बड़ी सुबह से ही घण्टे भर से हल्की हल्की बूंदें आलस गति से पड़ रही थीं। और मध्याह्न में सूय ने बड़ी अनिच्छा से मिल और दोनों नदियों के संगम की ओर नजर मारी और पुन कामल नील बादलों से अपने को ढक लिया जैसे कि नतास्या अपने गुलाबी गालों को पत्ते-मोमम तकिए में रात के समय छिपा लिया करती थी।

सन्ध्या की चाय के समय अर्तामानोव ने याकोव से पूछा—

"तुम्हारा भाई कहाँ है ?'

'मुझे नहीं पता। सामने की पहाड़ी पर एक चीड़ के पेड़ के नीचे कुछ समय हुआ वह बैठा था।'

'जाओ उसे बुला लाओ। नहीं—ठहरो, कोई जरूरत नहीं। तुम दोनों आपस में मिल-जुलकर रहते हो या नहीं ?'

उसे प्रतीत हुआ कि उसका छोटा लड़का कहने से पूर्व कुछ हँसा था—

"ठीक है हम मिलकर रहते हैं।'

'कैसे ठीक-ठीक बताना ? क्या ऐसी ही बात है ?

याकोव की नजर गिर गई और वह कहने लगा—

"विचारों में—हम एक दूसरे से सहमत नहीं।'

"किन विचारों में ?"

'लगभग सब बातों में।'

"और, किन किन बातों में मतभेद है ?

"वह हमेशा किताबों के पीछे रहता है और मैं—सीधा-सादा बुद्धि से जैसा बनता है।'

"यह बात है"—बाप ने कहा। उसे बेटे से और अधिक पूछने का साहस नहीं हो रहा था। उसने अपना बरसाती कोट पहना और मलक्सेई की भेंट की हुई छड़ी—जिसकी मूठ में चाँदी के एक पक्षी के पंखों में बिल्लौरी पत्थर की गेंद थी हाथ में ली और फाटक के बाहर रुक कर उसने हथेली से आँखों पर छाँह की और नदी के पास पहाड़ी की ओर देखा—जहाँ पेड़ के नीचे सफेद कमीज पहने हस्या लेट कर पढ़ रहा था।

आज रेत भीगी हुई है। कहीं उसे जुकाम न हो जाय। वह बड़ा लापरवाह है।

अवसर दिया। इस काम में उसने देखा कि वह मजदूरों के साथ, 'तुम' कहके बात करता है और संध्या समय तिखोन और सेराफिम के साथ बैठकर गप-शप भी लड़ाता रहता है। उसने खिड़की के पास से तिखोन की निर्जीव ध्वनि को भी सुना। वह अपनी मूर्खताओं की झड़ी लगाए रहता था—

"तो यह ऐसी बात है! गरीबों का क्या जीवन है—कुछ नहीं। ठीक है इल्या येगोरिच! यदि लोग लोभ करना छोड़ दें तो सब को सब चीजें मिल भी सकती हैं।"

और सेराफीम भी प्रसन्नतापूर्वक बोला—

हाँ मैं यह सब जानता हूँ। मैं यह बातें बहुत दिनों से सुनता आ रहा हूँ।

याकोव अब अधिक विचारशीलता से व्यवहार करता था। वह मिल की इमारतों में इधर-उधर चक्कर काटता। मिल की लड़कियों की ओर नजरें मारता और दोपहर के भोजन के समय, जब स्त्रियाँ नदी पर नहा रही होतीं तो वह घुड़साल की छत से उनकी तरफ निहारता।

'बिल्कुल आवारा बछड़ा है' बाप ने निराशापूर्वक सोचा। 'मुझे सेराफिम को इस पर नजर रखने को कहना पड़ेगा। कहीं इसे भी जवानी का जहर न चढ़ जाए।

मंगलवार का वह दिन बड़ा गीला धुंधला और शान्त था। बड़ी सुबह से ही घण्टे भर से हल्की हल्की बूँदें, अलस गति से पड़ रही थीं। और मध्याह्न में सूर्य ने बड़ी अनिच्छा से मिल और दोनों नदियों के संगम की ओर नजर मारी और पुनः कोमल नीले बादलों से अपने को ढक लिया जैसे कि नताल्या अपने गुलाबी गालों को फूले-कोमल तकिए में रात के समय छिपा लिया करती थी।

सन्ध्या की चाय के समय अर्तामानोव ने याकोव से पूछा—

"तुम्हारा भाई कहाँ है ?"

'मुझे नहीं पता। सामने का पहाड़ी पर एक चीड़ के पेड़ के नीचे कुछ समय हुआ वह बैठा था।

'जाओ उसे बुला लाओ। नहीं—ठहरो कोई जरूरत नहीं। तुम दोनों आपस में मिल-जुलकर रहते हो या नहीं ?

उसे प्रतीत हुआ कि उसका छोटा लड़का कहने से पूर्व कुछ हँसा था—

'ठीक है, हम मिलकर रहते हैं।

'देखो ठीक-ठीक बताना ? क्या ऐसी ही बात है ?

याकोव की नजर गिर गई और वह कहने लगा—

"विचारों में—हम एक दूसरे से सहमत नहीं।

किन विचारों में ?

'लगभग सब बातों में।

'और, किन किन बातों में मतभेद है ?

वह हमेशा किताबों के पीछे रहता है और मैं—सीधा सादा, बुद्धि से जैसा चलता हूँ।"

यह बात है —बाप ने कहा। उसे बेटे से और अधिक पूछने का साहस नहीं हो रहा था। उसने अपना बरसाती कोट पहना और असबसेई की भेंट की हुई छड़ी—जिसकी मूठ में चाँदी के एक पक्षी के पंजों में बिल्लौरी पत्थर की गेंद थी हाथ में ली और फाटक के बाहर रुक कर उसने हथेली से आँखों पर छाँह की और नदी के पास पहाड़ी की ओर देखा—जहाँ पेड़ के नीचे सफेद कमीज पहने इल्या लेट कर पढ़ रहा था।

आज रेत भीगी हुई है। कहीं उसे जुकाम न हो जाय। वह बड़ा लापरवाह है।

बातों ही से हम लोग नहीं जीत सकते।"

प्योत्र यर्तामानोव छड़ी पर झुक कर खड़ा हो गया, बेटे ने उसे उठने में मदद नहीं की।

'इसका मतलब यह हुआ कि मैं सच और ठीक नहीं कह रहा ?'

"नहीं इसके विपरीत भी सत्य है।

'झूठ है। दूसरा कोई—सत्य नहीं है।" और पिता छड़ी को मिल की ओर हिलाते हुए बोला—

देखो सत्य यह है ! तुम्हारे दादा ने इसे शुरू किया मैंने इसमें सारा जीवन लगाया और अब—तुम्हारी बारी है। बस—यही सब-कुछ है। तू कैसा है ? हमने मेहनत की—और तू मुस घरें उड़ाना चाहता है ? दूसरों की मेहनत पर संत साधुओं की तरह रहना चाहता है ? खूब सोचा ! इतिहास ! इतिहास पर थूक। इतिहास—कोई लड़की नहीं जिससे शादी कर लेगा। और यह इतिहास क्या मूर्खता है ? इसका क्या लाभ ? मैं तुम्हें आलसी नहीं बनने दूंगा।"

यह अनुभव कर कि वह नाहक नाराज हो रहा है, प्योत्र यर्तामानोव ने अपने शब्दों में कुछ कोमलता की पुट देनी शुरू की—

"मैं समझता हूँ, तू मास्को में रहना चाहता है, वहाँ आमोद प्रमोद के साधन हैं। और असभ्यता भी वा ।'

इल्या न किताब उठा ली और उसके ऊपर से रेत झाड़ कर बोला—

'मुझे प्रगति करने की आज्ञा दीजिए।

'कोई आज्ञा नहीं दे सकता। पिता ने रेत में छड़ी मार कर कहा—"इन बातों के लिए मुझ स मत कहो।'

"और, अभी यह पूछेगा कि कौन सा आदमी ? उसने सोचा और जल्दी से पहाड़ी से नीचे की ओर उतरने लगा । परन्तु, बेटा गला फाड़कर जोर से उसके पीछे चिल्लाया—

'एक को ही नहीं मारा देखो यहाँ कब्रिस्तान में, कारखाने के कितने आदमी मरे पड़े हैं ।'

अर्तामानोव रुका और मुड़ा तो इल्या ने हाथ उठाकर किनारे से नीचे आसमान की तरफ़ क्रास लगी कब्रों की ओर इशारा किया । बाप के पाँवों के नीचे रेत चर चर्र की आवाज़ कर रही थी । अर्तामानोव को याद आया कि चन्द मिनट पहले ही उसने कारखाने और कब्रिस्तान के बारे में अपमानजनक बातें सुनी थीं । उसने अपनी ज़बान से कही गई फ़िज़ूल बात को छिपाने और उसे बेटे की स्मृति से हटाने की कोशिश की और रीछ की तरह भारी भरकम चाल से उसकी ओर चलकर छड़ी को हिलाते और उसे डराते हुए अर्तामानोव चिल्लाया—

क्या कहा ? नीच कहीं का !

इल्या एकदम दौड़कर पेड़ के पीछे छिप गया ।

ठहरो ! आप क्या कर रहे हैं ?

बाप ने पेड़ के तने पर छड़ी मारी जिससे बेटे के पाँव के पास काँपता हुआ छाल का एक टुकड़ा रेत में गिरा, जिसका हरा भाग उसकी तरफ मुड़ा हुआ था । वह बड़े गुस्से में भभकता हुआ बोला—

'मैं तुमसे टट्टियाँ साफ करवाऊँगा !'

फिर वह बड़ी तेजी से लड़खड़ाता हुआ पहाड़ी से लगभग फिसलता-सा नीचे की ओर उतरने लगा । उसका सिर भारी हो गया था और ताने-बाने में बँधे हाटिस की तरह विषाद और क्रोध में चक्कर खाता वह असंगत बातें बकने लगा ।

इन कतिपय मिनटों से ही उसके हृदय से निकल कर दूर हट गया है और उसके हृदय में एक क्रोधपूर्ण विषाद छोड़ गया है। मर्तामानोव को विश्वास था कि इन बीस सालों में उसने प्रति दिन में अविराम रूप से केवल मात्र अपने पुत्र की ही चिन्ता की थी, वह उस पर लगाईं आशाओं और प्रेम के ऊपर जीवित रह रहा था। उसने इल्या से बड़ी-बड़ी आशाएँ की थीं।

और अब वह दियासलाई की तरह भड़क उठा, और वहाँ नहीं रहा। यह क्या है? यह क्यों हुआ?

नीले आसमान में एक मन्द प्रकाश दिखाई दिया जो एक स्थान पर पुराने कपड़े पर चिकनाहट के धब्बे के समान प्रकट हुआ। फिर चन्द्रिका का खण्डित टुकड़ा दिखाई दिया। वायु मण्डल ताजा और नम था और नदी पर एक हल्का धुआँ उठ रहा था।

मर्तामानोव घर वापिस आया तो उसकी पत्नी कपड़े उतारे बैठी थी। अपनी गोल मोटी बाईं जाँघ को सीधे पाँव के घुटने पर रखे वह अँगूठे का नाखून काट रही थी। पति की ओर देखकर उसने पूछा—

'इल्या को तुमने कहाँ भेज दिया?

"शैतान के पास'—उसने कपड़े उतारते हुए कहा।

"तुम हर समय गुस्से में भरे रहते हो,' नतास्या ने दीर्घ श्वास भरी। पति जोर-जोर से साँस लेकर जानबूझ कर कपड़े उतारने में शोर कर रहा था। बूँदें खिड़कियों के शीशों पर पड़ रही थीं और बगीचे से भाव सरसराहट और टपटप आवाज आ रही थी।

'इल्या को अपनी पढ़ाई का घमण्ड हो गया है।"

"हाँ, क्योंकि उसकी माँ इतनी मूर्ख है।" माँ ने नाक

मैं इसे यहाँ से भगा दूँगा । जरूरतें इसे वापिस लाएँगी । फिर—टट्टियाँ साफ करवाऊँगा । मैं किसी तरह की फिजूल बात सहन नहीं करूँगा । हाँ ! मेरे साथ ये शरारतें नहीं चल सकतीं ! —उसके दिमाग में चक्कर खाते विचार-जाल के धप धप बाहर को निकलने लगे । और साथ ही वह अस्पष्ट रूप से समझने लगा कि उसने यह ठीक नहीं किया । स्वयं वह भी पुत्र से चोट खाकर बहुत अधिक अपमान अनुभव कर रहा था ।

ओका नदी के किनारे पहुँचकर वह रेल के टुकड़े पर थकान से बैठ गया । उसने अपने चेहरे का पसीना पोंछा और नदी की ओर देखने लगा जहाँ पानी के उथलेपन में मछलियाँ लोह की सुइयों की तरह तैर रही थीं और पानी को मन्द स्पन्दन प्रदान कर रही थीं । उसके बाद छोटी मछलियों को एक तरफ भगाती हुई एक बड़ी चपटी बड़े गौरव के साथ अपने मुँह को खोले प्रकट हुई और एक तरफ मुड़ गई ! उसने अपनी लाल आँखों से मलिन आकाश की ओर देखा और धुएँ के एक घेरे की तरह प्रकाशमान् बुलबुले पानी में छोड़े ।

अर्तामानोव ने उदासी से चपटी को डराया और ऊँचे स्वर में बोला—

"मैं तेरी किस्मत बना दूँगा ।

और पीछे को मुड़ा । उसने सुना कि उसके शब्दों से एक प्रतिध्वनि-सी हुई है । नदी के मन्द प्रवाह ने उसके क्रोध को धोना शुरू कर दिया और नीली ऊष्ण शान्ति ने उसके विचारों को कुण्ठित कर दिया । सबसे बढ़कर दुःखद बात यह थी कि उसका बेटा—जिसे वह प्यार करता था जिसके लिए इन पिछले बीस सालों में वह लगातार चिन्ता और कष्ट उठाता रहा था,

इत्या के प्रति मन उसकी घृणा और अधिक स्पष्टरूप से उबाल खाने लगी।

'नहीं झूठ है तुम इससे बच नहीं सकते। इसी समय उसे निकिता की याद आई जो एक शान्त कोने में जीवन की कटुताओं से बच कर छिप गया था।

सब मुझ पर ही काम मारते हैं और स्वयं बचते हैं।

परन्तु, मतमिानोव ने उसी क्षण अपने को थाम लिया—"यह–ठीक नहीं। मसक्सई काम से नहीं भागा उसने कारोबार को पिताजी की तरह ही प्यार किया है। वह बड़ा मालकी है और सब काम बड़ी चतुराई और सरलता से करता है।" उसे याद आया जब एक बार कारखाने में शराबियों की लड़ाई के बाद भाई ने उससे कहा था—

"ये लोग बिगड़े जा रहे हैं।

मसक्सई स्पष्ट भाई के साथ सहमत था।

"पता नहीं किस कारण से सब चिढ़े हुए हैं। ऐसा दिखता है कि सबकी नजरों में एक ही बात है।

मसक्सई इससे भी सहमत हुआ। वह हँसा और बोला—

हाँ यह बात भी ठीक है। कभी-कभी मुझे एक पिछली बात याद आती है। तुम्हारी शादी के दिन तिखोन की नजर में भी ठीक यही बात थी। जब उसने पिताजी को सिपाहियों से कुश्ती करते देखा तो वह स्वयं भी उनसे कुश्ती लड़ने लगा। याद है?

'ख़ैर तिखोन को यहाँ लाने की क्या जरूरत? वह तो—निपट मूर्ख है।

मसक्सेई फिर गम्भीरता से कहने लगा—

ज़रूरतें सामने आती हैं आदमी खुद समझने लगता है। अपने आप लौटेगा। सो जा, मुझे दुखी मतकर।'

मिनट भर चुप रह वह फिर बोला—

"याकोव को और अधिक पढ़ाने की ज़रूरत नहीं।'

वह फिर एक मिनट बाद बोला—

"मैं परसों मेले में जाऊँगा। सुन रही है?'

"हाँ, सुन रही हूँ।

'क्यों? इसका क्या मतलब?' अर्तामानोव परेशानी में पड़ गया। जब उसने अपनी आँखें मूँद लीं तो आँखों के सामने इल्या की तस्वीर आ गई। उसकी आँखों में अपमानजनक झलक और उसके चौड़े माथे की कल्पना करते हुए उसने सोचा 'अपने बाप का उसने एक मजदूर की तरह अपमान-सा कर दिया है। *नीच कहीं का एक भिखारी की तरह उसे दुत्कार दिया।* उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि किस तेजी से यह विस्फोट फूटता गया था। उसे ऐसा लगा कि इल्या इस विस्फोट की तयारी पहले से कर चुका था। परन्तु, वह क्या बात है जिससे वह इस अपराध के लिए मजबूर हुआ? इल्या के कठोर और तीक्ष्ण शब्दों को याद कर अर्तामानोव आगे सोचने लगा—

'दिखता है उस पिलपिले कुत्ते मिरोस्का[1] ने ही उसे मेरे खिलाफ कर दिया है—और कारोबार मनुष्य के लिए हानिकारक है—यह तिखान का विचार है। वह मूर्ख है, मूर्ख। उसने उस पर कैसे विश्वास किया? वह पढ़ा लिखा कैसा है? उसने सीखा क्या? मजदूरों पर उसे दया आती है, परन्तु, पिता का कोई अफसोस नहीं? और मुझसे दूर जा रहा है जिससे कि अपनी सचाई से एक तरफ रह सके।

---

1 मिरोस्का—मिरोन का ही तुच्छता सूचक नाम।

हत्या के प्रति भय उसकी घृणा और अधिक स्पष्टरूप से उबाल खाने लगी।

"नहीं झूठ है तुम इससे बच नहीं सकते।" इसी समय उसे निकिता की याद आई जो एक शान्त कोने में जीवन की कटुताओं से बच कर छिप गया था।

"सब मुझ पर ही काम लादते हैं और स्वयं बचते हैं।'

परन्तु, मर्शामानोव ने उसी क्षण अपने को थाम लिया—
'यह—ठीक नहीं। मसक्सेई काम से नहीं भागा उसने कारोबार को पिताजी की तरह ही प्यार किया है। वह बड़ा लालची है और सब काम बड़ी चतुराई और सरलता से करता है।" उसे याद आया जब एक बार कारखाने में शराबियों की लड़ाई के बाद भाई से उसने कहा था—

"ये लोग बिगड़े जा रहे हैं।

मसक्सेई स्पष्ट भाई के साथ सहमत था।

'पता नहीं किस कारण से सब चिढ़े हुए हैं। दिखता है कि सबकी नजरों में एक ही बात है।

मसक्सेई इससे भी सहमत हुआ। वह हँसा और बोला—
'हाँ, यह बात भी ठीक है। कभी-कभी मुझे एक पिछली बात याद आती है। तुम्हारी शादी के दिन तिखोन की नजर में भी ठीक यही बात थी। जब उसने पिताजी को सिपाहियों से कुश्ती करते देखा तो वह स्वयं भी उनसे कुश्ती लड़ने लगा। याद है?'

"और तिखोन को यहाँ लाने की क्या जरूरत? वह तो—निपट मूर्ख है।

मसक्सेई फिर गम्भीरता से कहने लगा—

"क्या बात है, तू इसी बात को बहुधा कहता रहता है—"लोग बिगड़ रहे हैं—बिगड़ रहे हैं। देखो यह हमारा काम नहीं। यह तो पादरियों साधु-सन्यासियों और शिक्षकों का काम है—और किसका यह काम हो सकता है? तरह-तरह के इलाज करने वाले और अफसर लोग होते हैं। यह उनका काम है कि वे देखें कि लोग बिगड़ न जाएँ। इस माल को वही देखते हैं, और मैं या तू—उसके खरीदार हैं। भाई! सब चीजें धीरे-धीरे बिगड़ती जाती हैं। देख, तू बुड्ढा होता जा रहा है और मैं भी। परन्तु, सिर्फ इसीलिए कि लड़की भी बुड्ढी हो गई है, तुम उससे यह नहीं कहोगे कि लड़की तू बुढ़िया हो गई है इससे जीवन की मौजें उड़ाना छोड़।"

'कितना बुद्धिमान् है"—ल्येप्र मतामालोव ने सोचा था—"बहुत बुद्धिमान्।

यह भाई की वाक-पटुता और प्रगल्भता और तरह-तरह के नए मुहावरों को सुन उसकी हार्दिकता और साहसिकता से ईर्ष्या करने लगा और उसे फिर निकिता की याद आई—वह कुबड़ा जिसे पिता ने सान्त्वना देने के लिए नियुक्त किया था। वह भी एक स्त्री के चक्कर में फँस गया और अब हमारे बीच नहीं रहा।

उस बरसाती रात में ल्येप्र मतामालोव तरह-तरह की बातें सोचता रहा। और तरह-तरह के कटु विचारों के उबाल में उस अन्धकारपूर्ण बरसाती रात की टप-टप में अनेक विरोधी विचार उठ रहे थे जो उसके लिए आत्म निर्णय में बाधा डाल रहे थे।

'और मैंने क्या अपराध किया है? उसने किसी से पूछा। और, जैसे कि उसे कोई उत्तर न मिला हो, वह अनुभव करने लगा कि इसका कोई-न-कोई जवाब जरूर है। पौ-फटते ही उसने अचानक निश्चय किया कि वह भाई के पास साधु-गृह जाय, शायद

यहाँ संसार के प्रभाभना और आपत्तियों से दूर उसके पास किसी प्रकार की सांत्वना और शान्ति मिल सके। और हो सकता है, तब वह किसी निश्चय पर पहुँच सके।

और जब देहाती सड़कों से हिचकोले खाती हुई गाड़ी साधु-गृह के समीप पहुँची तो वह सोचने लगा—

'एक कोने में बैठे रहना बहुत आसान काम है भाई, तू भी जरा बाहर रास्ते पर दौड़। तहखाने में अंधेरे का अचार बिगड़ता नहीं। धूप में वह जल्दी ही खराब हो जाता है।

भाई से मिले उसे चार साल हो गए थे। पिछली मुलाकात बड़ी रूखी नीरस थी। प्योत्र को ऐसा प्रतीत हुआ था कि कुबड़ा उसके पहुँचने से प्रसन्न नहीं था। उसके पहुँचने पर जैसे उसके कटि-प्रदेश उभर आए हों वह कुछ मुड़ा-मुड़ा और अपने खोल में घोंघे की तरह छिप गया था। फिर भारी-भरकम आवाज में परमात्मा के बारे में बात की और न परिवार के बारे में पूछ-ताछ की। बस साधुगृह और यात्रियों की आवश्यकताओं तथा लागत की मरीची के बारे में अनिच्छा और विषाद से जिक्र करता रहा। प्योत्र ने जब उसे कुछ धन भेंट किया था तो बड़ी उदासीनता से बोला—

वड़े पादरी को दे दो। मुझे जरूरत नहीं।"

स्पष्ट था कि वह प्रधान पादरी पिता निकोदिम को बड़े आदर-भाव से देखता था। प्रधान पादरी एक विशालकाय बड़ी हड्डियों और लम्बे बालों वाला तथा कान से बहरा था जो अपनी पोशाक में एक बुत की तरह दिखाई दे रहा था। प्योत्र के चेहरे की ओर अपनी काली आँखों से देख एक विचित्र पलक लिए उसने अनावश्यक उच्च स्वर से कहा था—

'पिता निकोदिम हमारे गरीब साधुगृह के आभूषण हैं।'

यह साधुगृह एक छोटी-सी पहाड़ी पर चीड़ के पेड़ों के घेरे में खड़ा और उनके सघन शीर्षों से छिपा हुआ था। सन्ध्या प्रार्थना के लिए पतली आवाज़ में बजने वाली घण्टियों से मर्तामानोव का स्वागत हुआ। एक ऊँचे कद्दावर दरबान ने, जो छिपी के बाँस के समान दिखाई दे रहा था, जिस पर एक पुरानी टोपी वाला अनावश्यक सिर था, फाटक खोला और वह लड़खड़ा कर बोला—

धु—म।

और, फिर हाँफते स्वर में बोला—

'धा-म-म-म-म्।

एक नीला भूरा बादल साधुगृह के ऊपर आधे आकाश में स्थिरता से लटक रहा था। ताँबे के भारी घण्टों की ध्वनि भी यहाँ के नम अवरुद्ध और भारी गम्भीर वायुमण्डल को दूर करने में असमर्थ थी।

"मेरे लिए यह बहुत भारी है, —अतिथि-गृह के सेवक ने अपराध भाव से कहा, जबकि वह निकिता के लिए लाए उपहार के बक्स को गाड़ी से निकाल रहा था और उसने छोटे-से काले से हाथ से उसके ढक्कन को बजाया।

प्योत्र गर्द से भरा और थका धीरे-धीरे बगीचे से गुज़र, अपने भाई के सफेद कमरे की ओर गया जो सेबों और बेरी के पेड़ों के बीच छिपा हुआ था। वह सोचता जा रहा था "बेकार यहाँ आया' —अच्छा होता मेले में ही चला जाता। जंगली पगडण्डी ने, जिस पर पेड़ों की गोल-गोल जड़ें इधर-उधर निकल कर बिखर रही थीं उसके दुःखद विचारों को और हिलाकर गड़बड़ में डाल दिया था। और अब उसकी जगह एक कटु पीड़ा ने ली,

तो विश्राम कर सब कुछ भूलने की उसकी इच्छा प्रबल हो उठी।

'मेरे लिए थोड़ा-सा आमोद प्रमोद लाभदायक होगा।

उसने भाई को तरुण वासंण्छाम वृक्षों के मध्य चन्द्राकार घेरे में सामने एक मंच पर लगभग आधे दर्जन लोगों के साथ बैठे देखा। यह दृश्य एक परिचित चित्र के दृश्य के समान था। प्योत्र ने देखा कि एक काली दाढ़ी वाला व्यक्ति बरसाती कोट पहने बैठा है जिसका एक पाँव चिथड़ों में लिपटा और रबड़ के जूतों में है एक मोटा बूढ़ा आदमी जो लिकक प्रवल-बदल करने वाले नपुंसक के समान दीखता था और एक लम्बे बालों वाला नौजवान भी था जिसने फौजियों का लम्बा कोट पहिन रक्खा था। उसके गालों की हड्डियाँ उभरी हुई और आँखें मोटी-मोटी थीं। वहाँ द्रयमोव नगर का रोटी पकाने वाला शराबी और झगड़ालू—मुजिन भी था। वह एक खम्भे की तरह सीधा और न्यायाधीश के सामने चोर की तरह खड़ा था। मुजिन फटी आवाज से कह रहा था—

सच है परमात्मा—बहुत दूर है।

चलने से सख्त पड़ी जमीन पर अपनी सफेद छड़ी से चित्र से बनाते हुए और लोगों की ओर देखते हुए निकिता ने भर्त्सना की—

'मनुष्य अपने पापों में जितना ही नीचे गिरेगा परमात्मा उतना ही दूर हो जाएगा। परमात्मा लोगों के पापों से बड़ा घृणा करता है।

"सांत्वना दे रहा है, ज्यादा अर्तामानोव ने सोचा और अपने आप सोचता हुआ थोड़ा-सा हँसा।

परमात्मा देखता है कि हम बेकार झूठ बोलते हैं। बेकार धर्म का नाम करते हैं—यह सब कुछ क्या? हममें एक दूसरे के प्रति सहायता और प्रेम कहाँ है? हम किसलिए प्रार्थना

करते हैं ? सब छोटी-छोटी बातों के लिए ही तो प्रार्थना करते हैं और फिर ।'

कुबड़े ने अपनी आँखें ऊपर उठाईं और क्षण भर की चुप्पी के बाद भाई की ओर ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखा। और फिर धीरे से एक बड़े बोझ की तरह उसने अपनी छड़ी को उठाया जैसे कि, वह किसी पर चोट करना चाहता हो। कुबड़ा उठा और छाती तक अपना सिर झुकाए, अपने भक्तों पर क्रास का चिह्न करता हुआ प्रार्थना के स्थान पर बोला—

"लो—मेरा भाई आ गया है।

मोटे और बाल रहित बुड्ढे ने अपनी तांबे जैसी लाल-लाल आँखों को मोड़ते हुए घृणा से देखा। और इधर अपने ऊपर क्रास का चिन्ह कर जोर से उच्चारण किया—

'जाओ परमात्मा तुम्हारा सहायक हो,' निकिता ने कहा।

लोग चारागाह के ढोरों की तरह चल पड़े। बुड्ढे आदमी ने घायल पाँव वाले व्यापारी को उसकी एक बाँह थामते हुए सहायता दी और मुजिम ने उसकी दूसरी बाँह थामी।

'नमस्कार। आशीर्वाद दो।

अपने लम्बे काले चोगे में डैनों की तरह लम्बी बाहों को निकाल, पिता निकोदिम ने उसके बँधे हाथों को बिना किसी प्रसन्नता के छुआ।

"मुझे तुम्हारे आने की आशा नहीं थी।

फिर उसने अपनी छड़ी से अपनी कोठरी की ओर संकेत किया और भाई के आगे आगे एक धक्के से अपनी टेढ़ी टाँगों

का पासों पर फेंकता हुआ और एक हाथ से अपनी छाती पर हृदय को थाम हुए आगे-आगे चल पड़ा।

"तू काफी बुड्ढा हो लिया"—प्योत्र ने विषाद में कहा।

"इसीलिए तो जी रहे हैं। टाँगें दर्द करने लगी हैं। हमारी जगह खोली है।"

निकिता अब और अधिक कुबड़ा दिखने लगा। उसकी कमर का कोना और बाँया कन्धा और ऊपर उठ गया था। शरीर मुड़ कर और जमीन के समीप आ गया था जिससे वह अधिक चौड़ा दिखाई दे रहा था। वह पादरी एक मकड़ी के समान दिखाई दे रहा था, जिसका सिर कट चुका था और वह अन्धों की तरह टेढ़ा-मेढ़ा कदमों के जमते हुए रास्ते पर चला जा रहा था। अपनी साफ-सुथरी तंग कोठरी में पिता निकोदिम किसी कदर बड़ा, परन्तु और अधिक भयानक दिखने लगा। जब उसने अपना चोगा उतारा तो उसका हाथी दाँत जैसा सफेद गंजा सिर पालिश की हुई खोपड़ी के समान दिखने लगा। धौले-धौले बाल खुरदरे गुच्छों में उसके कनपटी में कानों के पीछे, सिर के चारों तरफ थे। उसका चेहरा भी हड्डी वाला मोम के रंग का सफेद-सा दिखाई दे रहा था, हड्डियां वाले चेहरे पर कहीं मांस दिखाई नहीं पड़ रहा। उसकी मुरझाती हुई आँखों में किसी प्रकार का प्रकाश नहीं था और उनकी नजर उसकी बड़ी चौड़ी नाक के छोर पर केन्द्रित होती दिखाई दे रही थी। दो काले बच्चों के नीचे उसके सूखे ओठ निःशब्द गति कर रहे थे और उनका मुख गालों में गड्ढों के कारण दो पृथक भागों में बंटा और अधिक बड़ा दिखाई दे रहा था। विशेष तथा उसके ऊपर के ओठों पर धौले बाल डराबने और अप्रिय लग रहे थे।

धीरे से जैसे कि वह किसी आहट को सुन रहा हो और

प्रयत्नपूर्वक शब्दों को स्मरण कर पादरी ने एक सूजे से चेहरे वाले स्नानागार के सेवक की तरह दिखलाई देने वाले एक लड़के से कहा—

समवार। रोटी। शहद।'

'तुम धीमे-धीमे कैसे बोल रहे हो?'

'मेरे दांत में दुख है।

पादरी लकड़ी की मेज के पास सफेद रंग की एक आराम कुर्सी पर बैठ गया।

क्यों ठीक हो?

सब ठीक है।'

तिखोन ठीक है?

ठीक है। उसे क्या होना है?

बहुत दिनों से वह यहाँ नहीं आया।'

वे चुप हो गए।

निकिता हिला उसके चोगे ने झींगर की सी आवाज की जिससे व्योम की व्यग्रता और अधिक बढ़ गई।

'मैं तुम्हारे लिए कुछ उपहार लाया हूँ। जरा किसी को कहना कि बक्सा उठा लाए। उसमें शराब है। तुम्हारे यहाँ शराब की क्या मात्रा है?

भाई ने गहरी साँस ले उत्तर दिया—

हमारे यहाँ—कठोरता नहीं है। हमारे यहाँ कुछ और कठिनाइयाँ हैं। हमारे लोग शराबी भी हैं। क्योंकि, सब तरह के लोग आते रहते हैं। और पीते हैं। क्या किया जाए? दुनियाँ साँस से रही है। पादरी और साधु भी तो मनुष्य ही हैं।'

'सुना है कि तेरे पास बहुत लोग आते हैं।"

"आते हैं, और वे अज्ञानी हैं," पादरी बोला—'हाँ, आते हैं, धेर सत हैं ज्ञानी से ज्ञान की तलाश करते हैं। पूछते हैं—कैसे रहा जाय? रहते हैं। जीवन को गुजारते हैं और उन्हें अभी तक यह भी नहीं पता कुछ नहीं पता। सहनशीलता रही नहीं।

पादरी के शब्दों से भयभीत हो ग्यात्र मर्त्तामानाव बड़बड़ाया—

"बकवास है। लोगों ने अर्द्ध गुलामी को सहन किया, अब स्वतन्त्रता को सहन नहीं कर सकते। शासन की कमजोरी है।'

निकिता चुप रहा।

'सरदारों की अर्द्ध-गुलामी में वे इधर-उधर की आवारा गिर्दी और शरारतें नहीं करते थे। कुबड़े ने उसकी तरफ निहारा और अपनी आँखें नीची करलीं।

और, इस प्रकार व प्रयत्न-पूर्वक शब्दों को ढूँढते, वार्तालाप को लम्बे विरामों से भंग करते, धीमे-धीमे तबतक बात करते रहे, जब तक कि सेवक समवार सुवासित वासन्द्धाय-मधु और ताजी पकी भाप छोड़ती रोटी न ले आया। वे दोनों गम्भीरता से उसे देखते रहे जो बहुत भद्देपन से फर्श पर रखे बक्स को खोलने की कोशिश कर रहा था। प्योत्र ने मेज पर दो बोतलें और दो-तीन कवियार+ के डिब्बे रखे।

"पोर्ट," निकिता ने एक बोतल के लेबल को पढ़कर कहा—'हमारा बड़ा पादरी इसे बहुत पसन्द करता है। वह बड़ा बुद्धिमान् व्यक्ति है। वह बहुत बातें समझता है।'

"और, मैं—बहुत कम समझता हूँ।' प्योत्र ने आग्रह

+कैवियार—मछली के अण्डे।

स्वीकार किया।

'जितनी जरूरत है—तुम भी समझते हो और फालतू समझने की जरूरत भी क्या है? जरूरत से अधिक—समझना भी हानिकारक है।'

पादरी ने सावधानी से सांस ली। प्योत्र ने उसके शब्दों में एक प्रकार की कटुता-सी पाई। कोने में मेज पर रखी सस्त पीले से शीशे वाली लम्प के कृपण प्रकाश के अन्धकार में उसका चोगा मैला और चिकना लग रहा था। अपने भाई की मन्द हिसाबी मानसता के साथ 'मदिरा' के प्याले से शराब की घुस कियाँ भरते हुए प्योत्र ने व्यंग में सोचा—

शराब पीना जानता है।

प्रत्यक प्याला पीने के बाद अपनी सूखी और बहुत सफेद उङ्गलियों से रोटी का टुकड़ा तोड़ उसे शहद में डुबो अपनी नीली-सी दाढ़ी को हिलाता हुआ वह धीरे-धीरे चबाने लगा। पादरी में शराब के नशे के कोई चिह्न दिखाई नहीं दे रहे थे परन्तु उसकी धुंधली आँखें नाक के कोने पर केन्द्रित होती हुई चमकने लगी थीं। प्योत्र सावधानी से भाई से अपने नशे को छिपा कर धीरे-धीरे पीता हुआ सोचने लगा—

"नतास्या के बारे में—कुछ नहीं पूछता। और पिछली बार भी इसने कुछ नहीं पूछा था। शरमाता होगा। किसी के बारे में कुछ नहीं पूछ रहा। हम दुनियादार हैं। और वह—सन्त है। लोग इसके पास उपदेश पाने के लिए आते हैं।

उसने नाराजगी से जकेट की ओर अपनी दाढ़ी को झटक दिया और काना को मलते हुए वह बोला—

'तूने आसानी से अपने को यहाँ छिपा लिया है। खूब!'

'पहले ठीक भी था, अब ठीक नहीं। बहुत आदमी आने लगे

है और यह स्वागत् ।"

'स्वागत ?' प्यात्र हँसा ।— यह तो दाँता वाले डाक्टर की बात है ।'

"मैं चाहता हूँ कि यहाँ से कहीं और बदल दिया जाऊँ" पादरी ने प्याले में सावधानी से शराब डालते हुए कहा ।

'जहाँ और अधिक एकान्त हो,'—प्योत्र ने कहा और फिर हँस पड़ा । पादरी शराब की चुसकियाँ भरता तथा काली और शिथिल जीभ को ओठों पर घुमाता रहा । और फिर अपने अस्थिपंजर-सिर को हिला कर वह बोला—

'अशान्त और दुःखी लोगों की संख्या स्पष्टतः बढ़ती जा रही है । लोग सांसारिक चिन्ताओं से बचना और छिपना चाहते हैं ।'

मैं तो यह नहीं देखता —प्योत्र ने यह जानते हुए कि वह ठीक नहीं कह रहा फिर भी विरोध किया । "यह तो तू ही अपने आप छिपना चाहता है'—उसने कहना चाहा ।

'भय और चिन्ताओं की छायाएँ उनके पीछे हैं ।'

प्यात्र की भाषा में विरोध और भर्त्सना अपने-आप भरते जा रहे थे, वह भाई से झगड़ना चाहता था और उस पर चिल्लाना चाहता था । अपने बेटे के बारे में सोचता वह कटुता पूर्वक बोला—

'चिन्ताएँ तो मनुष्य स्वयं ढूँढ़ता है । वह अपनी मावश्यकता समझता है । अपना काम करो और बहुत समझदार बनने की कोशिश मत करो—बस, तुम शान्त रहोगे !"

परन्तु, भाई ने जो अपने ही विचारों में भूला हुआ था, उसके शब्दों को नहीं सुना । अचानक उसने अपने कम्पनदार शरीर के ढाँचे को एकदम हिलाया, जैसे कि वह नींद से जागा हो ।

उसका चोगा काली सलवटों में आगे को झुलक आया। अब वह अपने ओठों को प्योत्र की तरह कटुता और रोष से हिलाता हुआ बोला—

लोग मेरे पास आते हैं, उपदेश और शिक्षा चाहते हैं। परन्तु मैं क्या जानता हूँ जो उन्हें सिखा सकूँ? मैं कोई ज्ञानी नहीं। यह सब पादरी का ही काम है। मैं—स्वयं कुछ नहीं जानता, ऐसा दिखता है जैसे कि मुझे यह अन्यायपूर्ण, असुख, वरद मिला है। मुझे वरद मिला है कि लोगों को उपदेश दूँ। और पता नहीं यह वरद क्यों मिला है।'

'इशारा कर रहा है'—ज्येष्ठ अर्तामानोव ने सोचा, हो सकता है शिकायत करना चाहता है।

वह जानता था कि निकिता अपने भाग्य के बारे में शिकायत करना चाहता है। वह इस शिकायतों की पहले भी उम्मीद करता था जबकि वह पहली बार उसके पास आया था और अपने कानों को गरमाते हुए उसने रोष व भाई से कहा—

'भाग्य की तो बहुत लोग शिकायत करते हैं परन्तु पता नहीं यह किसलिए।'

'ठीक है। इससे उन्हें सन्तोष मिलता है' कुबड़े ने उसकी ओर ध्यान न दे कोने में खड़े लम्प की ओर देखते हुए कहा।

और तुझे तो हमारे स्वर्गवासी पिता ने भी आज्ञा दी थी—"सान्त्वना दे। लोगों को सान्त्वना देने वाला बन।

निकिता का मुख एक व्यंगात्मक मुस्कान में फँस गया। उसने अपनी धौली दाढ़ी को मुट्ठी में थामा और अपनी मुस्कराहट का मसल दिया। वह अपने शब्दों की अस्पष्टता से प्योत्र को भटकाता रहा जिससे उसमें एक प्रकार का कौतूहल जागृत हो गया।

'लोगों पर यहाँ मेरा रौब डाला जाता है जैसेकि मैं बड़ा ज्ञानी होऊँ, नि:सन्देह यह आश्रम के लिए लाभदायक है, यात्री बहुत संख्या में आते हैं। परन्तु मेरे लिए—यह कर्त्तव्य बड़ा दु:खद है। भाई! *यह बड़ा कठिन काम है! मैं उन्हें क्या शांति* और सतोष दे सकता हूँ? सहन करो, यही कहता हूँ। और—अब देखता हूँ कि सब लोग इससे भी ऊब गए हैं। उनसे कहता हूँ—आशा रखो, आशा रखो। लेकिन आशा भी किस पर रखी *जाय? परमात्मा के नाम से तो—कोई शांति नहीं होती। कहीं* भी विघ्न नहीं थमता। देखो, वह मालवाई आ रहा है।

'अरे! यह तो—हमारा मुखिया है। यह हमारे शहर का है। बड़ा शराबी है'—ज्येष्ठ मर्तामानोव ने किसी कारण से बचते हुए कहा।

''वह समझता है कि वह अपना भाग्य विधाता स्वयं ही है। वह परमात्मा को संसार का स्वामी नहीं समझता। आज कल ऐसे साहसी लोगों की कमी नहीं। यहाँ एक और पुरुष है—तूने उसे देखा, दाढ़ी नहीं रखता वह—बड़ा ईर्षालु और विश्वद्रोही है। यहाँ और लोग भी आते हैं और तरह-तरह के प्रश्न करते हैं। पता नहीं क्यों आते हैं? मुझे परेशान करते हैं और मेरी शान्ति भंग करते हैं।'

पादरी बड़े आवेश से बोल रहा था। भाई को देखकर प्योत्र को याद आया कि इसकी मुलाकातों में उसकी आँखें पहले इस प्रकार अपराधपूर्ण नहीं झपकती थीं। पहले कुबड़े की अपराधपूर्णता से प्योत्र शांत हो जाता था। क्योंकि अपराध को शिकायत का अधिकार नहीं। परन्तु अब वह स्वयं शिकायत कर रहा है। वह कह रहा है कि मेरा न्याय ठीक नहीं हुआ। ज्येष्ठ मर्तामानोव को भय हो रहा था कि भाई कहीं यह न कह बैठे कि—

'तू ही था, जिसने मेरा इस प्रकार न्याय किया !"

भौंहें चढ़ा कर, अपनी पत्नी की जञ्जीर से खिलवाड़ करते हुए वह आत्मरक्षा के लिए शब्द ढूँढने लगा।

'हाँ," कुबड़ा बोला, और ऐसा प्रतीत हुआ कि वह अप्रत्यक्षरूप से अपनी शिकायत से सन्तुष्ट है। सब लोग नाराज हैं, उनके विचारों में साहस है। अभी कुछ समय—दो सप्ताह पहले हमारे यहाँ एक शिक्षित नवयुवक आया, जो बहुत भयभीत सा दीखता था। बड़े पादरी ने मुझे आदेश दिया—"तू इससे बात कर, अपनी सरलता से इसे कुछ शांति और शक्ति प्रदान कर। और, मैं दूसरों के विचारों को अच्छी तरह स्मरण नहीं रखता। वह विद्वान् था और उसने घण्टों वाद विवाद में मेरी मातें निकाल दीं। वह बोलता रहा यहाँ तक कि मुझे उसके शब्द तक समझ में नहीं आ रहे थे। विचारों को समझने की बात तो दूर रही— 'शैतान को हम अपने जीवन का स्वामी स्वीकार नहीं कर सकते यदि ऐसा करलें तो हम दो परमात्मा स्वीकार करने पड़ेंगे और इससे ईसा के शरीर का अपमान होगा। जिसे हम युखारिस्त[1] के दिन स्वीकार करते हैं। ईसा के शरीर को स्वीकार करो जो अमरत्व का स्रोत है। उसने परमात्मा का विरोध किया—"चाहे परमात्मा सींगों वाला ही हो परन्तु वह एक होना चाहिए, अन्यथा जीवन असम्भव है। उसने मुझे दुःखी कर दिया और मैं पिता पम्योदर के सब उपदेशों को भूल गया। मैं उस पर चिल्लाया। तुम्हारा शरीर परिवर्तनशील है और आत्मा नष्ट हो चुकी है। इसके बाद बड़े पादरी ने मुझे बहुत बुरा भला कहा "तुम्हें क्या हो गया है ? तुमने कैसी अधार्मिक बकवास की है ? हाँ हाँ, बात ऐसी ही है।' प्यात्र का यह

---

1 युखारिस्त—ईसाइयों का एक त्योहार ईसा का पवित्र भोज-दिवस पवित्र रोटी और मदिरा का दिवस।

सब बातचीत बड़ी उपाहास्यास्पद दिखी और भाई को इस शोकार्त अवस्था में देखकर व्यग्र मर्तामानोव किसी प्रकार शान्त हो गया।

"परमात्मा के बारे में कुछ भी कहना कठिन है' वह बुदबुदाया।

हाँ कठिन है पिता निकोदिम ने सहमति प्रगट की और एक स्निग्ध-कटुता से पूछने लगा— याद है पिताजी हमें क्या उपदेश देते थे। हमलोग—सीधे-सादे मजदूर हैं हम लोगों के लिए यह सब ऊँचा ज्ञान है।'

"मुझे याद है।"

'हाँ पिता थियोदोर हमें आदेश करता है पुस्तकें पढ़ो!' और मैं पढ़ता हूँ। पुस्तकें मेरे लिए ऐसे ही हैं जैसे कि एक सुदूरवर्ती जङ्गल, जहाँ पेड़ों के साथ हवा शोर कर रही हो। आजकल के दिनों में पुस्तकों से कोई उत्तर नहीं मिलता। आज कल ऐसे विचार पैदा हो गए हैं कि पुस्तकों से उनका कोई उत्तर नहीं मिलता। सबमें साम्प्रदायिकता चल रही है। लोग ऐसी दलीलें करते हैं जैसे शराबी लोग अपने स्वप्नों को बताते हैं। इस मुजिन को—ही लो।"

पादरी ने थोड़ी-सी चाट और पी और रोटी का टुकड़ा चबाया। नरम रोटी का थोड़ा-सा टुकड़ा ले उसकी गोली बना कर वह अपनी उङ्गली से उसे घुड़काता हुआ बातें करता रहा—

"पिता थियोदोर कहता है, सारे दुःख बुद्धि के कारण होते हैं शैतान क्रोधी कुत्ते की तरह उसका पीछा करता है। वह उसे डराता है और कुत्ता उसकी तरफ निरर्थक भौंकता रहता है।' हो सकता है, यह ठीक हो, परंतु इसके साथ सहमत होना कठिन

है। हमारे यहाँ एक डाक्टर भी है जो बड़ा सीधा-सादा प्रसन्न चित व्यक्ति है। वह बुद्धि के बारे में और ही विचार रखता है। उसके लिए बुद्धि और मन बच्चों के समान है—और बाकी सब खिलौने की तरह हैं जिन्हें सब बातों में दिलचस्पी है। वह कल्पना करता है कि ये सब खिलौने कैसे बनते हैं। ये अन्दर और बाहर से कैसे बने हैं। और अन्त में उसे छोड़ देता है।"

'मुझे लगता है कि तू बहुत खतरनाक बातें करने लगा है," प्यात्र ने कहा। भाई के शब्दों से वह फिर विचलित हो गया था। उसकी वे बातें शक्ति और तीखी थीं जिनसे वह विस्मित और भयभीत हो गया। उसकी इच्छा हुई कि वह निकिता को पकड़ कर जमीन पर गिरा दे।

"पादरी बहुत पी गया है" उसने मन-ही मन कहा और अपने को शान्त करने लगा।

कोठरी में अब घुटन-सी हो गई थी। उसके एक कान में एक प्रकार की खट्टी गन्ध आ रही थी। कोयलों से उठने वाली खट्टी और लम्प की चिकनी गन्धें प्यात्र के विचारों को मन्द बना रही थीं। खिड़की के छोटे-से काले चौखटे में कुछ पत्ते लोहे पर खुदे चित्र की तरह दिखाई दे रहे थे और मकड़ी के समान लगने वाला उसका भाई धीरे-धीरे तत्परता के साथ अपना जाल बुने जा रहा था—

"ये सब विचार—खतरनाक हैं। खासतौर से—सीधे-सादे विचार। तिखोन का ही लो।"

'वह तो निर्बुद्धि है।'

'नहीं, वह ऐसा नहीं। उसकी बुद्धि और विचार बड़े उदार हैं। शुरू-शुरू में, मैं भी उससे बात करने से डरता था।

लेकिन जब पिताजी का देहान्त हुआ तो तिलोन और बहुत नम्र ठीक भी गया। तुम जानते हो कि पिताजी को तुम इतना अधिक प्यार नहीं करते थे जितना कि मैं। तुम और असत्तई इस मृत्यु से इतने दुःखी नहीं हुए, जितना तिलोन। तुम जानते हो उस सन्यासिनी पर मुझे उसकी मूर्खता के लिए गुस्सा नहीं आया था मुझे आया था परमात्मा पर, और तिलोन इस बात को झट समझ गया। वह बोला— 'हाँ मच्छर जिन्दा रह जाते हैं और मनुष्य ।"

'तू क्या बकवास कर रहा है !'' प्याम ने कठोरता से कहा—"लगता है बहुत पी गया है। कौन-सी सन्यासिनी ?"

निकिता दृढ़तापूर्वक अपनी बात कहता गया—

'ठीक है। तिलोन कहता है—'यदि परमात्मा संसार का मालिक है तो वृष्टि समय पर होनी चाहिए जो जनता के लिए लाभदायक हो। और इन सब अग्निकाण्डों के बारे में बताता है कि ये सब मनुष्य से ही नहीं होते जङ्गल भी तो बिजली से भस्मसात हो जाते हैं। और हमारी मृत्यु के लिए काइन[1] को पाप करने की क्या जरूरत थी ? और परमात्मा को सब प्रकार की इन कुरूपताओं की भी क्या जरूरत ? उदाहरण के लिए ये कुबड़—परमात्मा को इनकी क्या जरूर ?

'अच्छा यह बात है !' प्योत्र अपनी दाढ़ी में मुस्करा कर सोचने लगा और उसने अनुभव किया कि परमात्मा के विरुद्ध उसके भाई की शिकायत, उसे किसी प्रकार बेचैन नहीं बना रही। यह भी अच्छा है कि पादरी अपने माँ-बाप की शिकायत नहीं कर रहा।

'पहले तो तूने इस बारे में कभी कुछ कहा नहीं।

---

१ काइन—आदम का पुत्र जिसने अबेल का वध किया था।

"सब बातें एक साथ नहीं कही जाती। हाँ शायद मैं सारी जिन्दगी इस बारे में चुप रहता, परंतु अब ये भक्त—यात्री लोग शान्ति भंग कर मेरी आत्मा को दु:खी कर देते हैं और यह बड़ा असहनीय हो जाता है और तिखोन मेरे दिमाग में मंडराने लगता है? नहीं, वह समझदार है। हो सकता है कि—मैं उसे नहीं चाहता। वह तेरे बारे में भी सोचता रहता है "कहता है यह आदमी दिन भर बच्चों के लिए मेहनत करता है और बच्चे उससे दूर होते जाते हैं।

"और भी कुछ कहता है?" प्योत्र ने नाराजगी में पूछा—"वह इस बारे में क्या जान सकता है?

"नहीं। जानता है। कहता है, कारोबार और धन्धा सब धोखा है।

"मैंने भी यह सब सुना है अब उस मूर्ख को यहाँ से खदेड़ना पड़ेगा। हाँ, उसे हमारे परिवार के बारे में बहुत जानकारी है।"

अर्तामानोव ने यह निकिता को उस दु:खद रात का जब तिखोन ने उसे फाँसी के फन्दे से उतारा था स्मरण कराते हुए कहा। परन्तु उसे बालक निकोमोव की भी याद आ गई। पादरी इस संकेत को न समझा उसने शराब के प्याले को मुँह से लगाकर जीभ को शराब में डुबोया और ओठों को चाटता हुआ अपने कठोर शब्दों को कहता गया—

'तिखोन को भी किसी ने दु:ख पहुँचाया है यही कारण है कि वह दिवालिए की तरह संसार से भाग आया है।'

यह एक ऐसा विषय था जिससे बातों को दूसरी तरफ मोड़ लेना ही उचित था।

'क्या, अब तू परमात्मा में विश्वास नहीं रखता?

प्योत्र ने पूछा। उसे अचम्भा हो रहा था। वह कटुता से कुछ और पूछना चाहता था परन्तु ऐसा कर न सका।

'यह समझना बड़ा कठिन है कि आजकल कौन परमात्मा में विश्वास रखता है और कौन नहीं' साधु ने कुछ रुक कर फिर कहा—'लोग बहुत कुछ सोचते हैं परन्तु विश्वास कहीं भी दिखाई नहीं देता। यदि विश्वास है—तो बहुत सोचने की जरूरत नहीं यह ठीक बात परमात्मा के बारे में कहने वाले विद्वान् का कथन है।

'छोड़ इन बातों को'—प्योत्र ने अपनी कनखियों से देखते हुए सलाह दी। यह सब बेकारी और एकान्त जीवन का नतीजा है। लोगों को अब मजबूत लोहे की बेड़ियों की जरूरत नहीं।

'नहीं, दोनों में विश्वास नहीं किया जा सकता, पिता निकोदिम ने दृढ़तापूर्वक कहा।

अब घण्टी दूसरी बार बज रही थी और उसके नपे-तुले आघात खिड़की के मलिन शीशे पर टकरा रहे थे। प्योत्र ने पूछा—

"प्रार्थना के लिए जाओगे?

मैं नहीं जाया करता। टाँगों पर खड़ा होना मुश्किल है।"

'हमारे लिए भी प्रार्थना करते हो या नहीं?

साधु चुप रहा।

'अच्छा अब मुझे सोना चाहिए। मैं यात्रा से बहुत थक गया हूँ।'

निकिता फिर भी चुप रहा। अपनी आरामकुर्सी की बाजुओं पर अपनी लम्बी बाँहों को टिकाकर उसने अपने कोण दार शरीर को सावधानी से उठाया और बोला—

'मित्या । मित्री ?" और फिर कुर्सी में धँसते हुए अपराधी की तरह कहने लगा —

"मुझे क्षमा करना, मैं भूल गया, मेरा सेवक तो अतिथि गृह में सो रहा है । मैंने उसे भेज दिया था ताकि खुलकर बातें की जा सकें । ये सब लोग यहाँ भेड़िए और जासूस हैं ।'

उसने अनेक अनावश्यक बातें करते हुए भाई को अतिथि-गृह का मार्ग दिखाया । जब प्यान हल्की-हल्की ठण्डी बारिश के अन्धकार में उधर चल दिया तो वह सोच रहा था

'वह मुझे जाने देना नहीं चाहता था और अपनी बकवास जारी रखने की उसकी इच्छा थी ।"

और उसने एक आकस्मिक अज्ञात भय अनुभव किया कि वह फिर एक गहरी खाई की ओर जा रहा है, जिसमें वह किसी क्षण गिर सकता है । उसने जल्दी-जल्दी अपने कदम और हाथ आगे को बढ़ाए और तब अपनी उँगलियों से रात्रि की हल्की बारिश की बौछार का अनुभव करने लगा । अतिथिशाला का कुछ हिस्सा एक मोटे स्निग्ध धब्बे के समान लैम्प के प्रकाश में दूर से दीख रहा था ।

'नहीं," उसने जल्दी में सोचा और बड़बड़ाया, "मुझे इस की जरूरत नहीं । मैं यहाँ से कल ही चला जाऊँगा । मुझे जरूरत नहीं । आखिरकार हुआ क्या है ? ल्या वापिस आ जाएगा ! जीवन दृढ़तापूर्वक बिताना चाहिए । देखो तो मसलस्कोई कैसे आगे बढ़ रहा है और सफल हुआ है । हो सकता है किसी दिन वह मुझे भी पीछे फेंक दे ।'

मसलस्कोई के बारे में वह तेजी से सोचने लगा, ताकि निकिता और तिखोन को दिमाग से निकाल सके । और जब वह साधुगृह के अतिथिगृह के कठोर बिस्तर पर लेट गया तो उस

पादरी क और बरखान के पीड़ित करने वाले विचारों ने घेर लिया। तिखोन कैसा आदमी है? सब जगह उसकी ही छाया आ जाती है और उसके ये शब्द और विचार शब्दों की तरह चारों तरफ प्रतिध्वनित होने लगते हैं। उसके शब्दों की प्रतिध्वनि उसके बेटे इल्या क शब्दा और भाई के विचारों में मिल रही थी।

सान्त्वना देने वाला!' उसने भाई के बारे म सोचा। "और यह सेराफिम—सीधा सादा बढ़ई भी तो सान्त्वना द सकता है।

उसे नींद नहीं आई। मच्छर काट रहे थे और दीवार के दूसरी ओर भाई और दो-तीन आदमी आपस में बातचीत कर रहे थे। प्योत्र को लगा कि य नानवाई मुजिन बँधी टाँग वाला व्यापारी और हिजड़ा की सी शक्ल वाला वही आदमी होगा।

ये अवश्य ही शराब पी रहे हैं।

साधुगृह के चौकीदार न कुछ अधिक समय का अन्तर द देकर लोहे के तख्ते को खटखटाया इसके बाद ही अचानक बड़ी तेजी स बस कि सुबह की प्रार्थना के लिए समय निकला जा रहा हो, घण्टी का बजना शुरू हो गया। उस घण्टी के शोर से प्योत्र जाग उठा। तभी उसका भाई उसके पास आ पहुँचा और उसकी ओर बस ही देखने लगा जैसे कि उसने पिछले दिन नाराजगी स नीचे से ऊपर तक बगीचे म उसे देखा था। ज्येष्ठ अर्तामानोव ने जल्दी से मुँह हाथ धोया, कपड़े पहने और सेवक को आज्ञा दी कि वह उसके लिए अगले पोस्ट स्टेशन तक घोड़े तय करदे।

'इतनी जल्दी? साधु ने आश्चर्य स पूछा। मैं तो सोचता था—कि तुम कुछ दिन ठहरोगे।

"कारोबार आज्ञा नहीं देता।'

दोनों ने चाय पी । व्योम देर तक सोचता रहा कि भाई से और क्या पूछूं । फिर उसे याद आया—

'अच्छा, तो तुम यहाँ से जाना चाहते हो ?'

'सोचता तो हूँ । परन्तु वे मुझे जाने नहीं देते ।"

'उन्हें इससे क्या ?'

मैं उनके लिए लाभदायक हूँ उपयोगी हूँ ।

'अच्छा यह बात है तो फिर जाओगे कहाँ ?

हो सकता है, परिव्राजकों की तरह घूमने लगूं ।'

इन दु खती टांगों को लेकर कहाँ जाओगे ?

क्यों नही लूले-लंगड़े भी तो चलते हैं ।'

''यह ठीक है, वे चलते तो हैं —व्योम न सहमति में कहा ।

कुछ देर दोनों भाई चुप रहे । फिर निकिता बोला—

'त्रिलोन को मेरा नमस्कार कहना ।"

और किसको ?

"सब का ।

"बहुत अच्छा । तुम यह तो पूछा ही नहीं कि अमक्सेई कैसे है ?

इसके पूछने की क्या जरूरत ? मैं जानता हूँ कि वह ठीक ही होगा । और मैं हो सकता है यहाँ से जल्दी ही चला जाऊं ।

सर्दियों में तो नहीं जाओगे ?'

'क्यों नहीं ? सर्दियों में भी तो लोग जाते हैं ।'

'ठीक है, जाते हैं " प्योत्र फिर सहमत हुआ। उसने भाई को कुछ धन भेंट किया।

'ठीक है यह प्राट की चक्की की मरम्मत के काम आ आएगा। बड़े पादरी का देखन नहीं जाओगे ?

'समय नहीं घोड़े तय्यार खड़े हैं।

विदाई के समय दोनों भाइयों ने आपस में आलिंगन किया। यह आलिंगन निकिता के लिए बड़ा सुखद था। उसने भाई को आशीर्वाद नहीं दिया। निकिता का बाँया हाथ भाग की बाँहों में फँस गया—और प्योत्र को ऐसा प्रतीत हुआ कि यह जानबूझ कर किया गया था। अपने मुख को उसके पट की तरफ दबा कर निकिता ने धीमे से कहा—

'यदि कल रात कोई फिजूल बात मेरे मुँह से निकल गई हो तो क्षमा करना।

यह भी खूब कहा ! हम भाई भाई हैं।

"मैं तो रात के समय बराबर सोचता ही रहता हूँ।

'अच्छा नमस्कार !

और जैसे ही साधु आश्रम के फाटक से बाहर निकला तो प्योत्र ने पीछे मुड़ कर अतिथि-गृह की सफेद दीवार के सम्मुख पत्थर के समान अपने भाई की मूर्ति देखी –

'विदाई नमस्कार',—प्योत्र ने अपनी टोपी उतारते हुए कहा। उसका खुला सिर निरन्तर बारिश की हल्की बौछार गीला हो गया था। मार्ग चीड़ के पेड़ों के बीच से होकर था। उन पेड़ों के शीर्षों पर पड़ती बारिश चीड़ की सुइयों के साथ टकरा कर एक प्रकार शीश जैसा शब्द कर रही थी। कोचवान की जगह एक साधु बैठा हुआ था। और गाड़ी का घोड़ा लाल था और उसके कानों पर बाल नहीं थे।

"लोग भी कैसी-कैसी बातें करते हैं !" प्योत्र ने सोचा—"परमात्मा समय से पहले बरसात नहीं भेजता। यह सब नाराजगी, ईर्ष्या और कुरूपता के कारण है—आलस्य के कारण इन्हें किसी प्रकार की चिन्ताएँ तो हैं ही नहीं। बिना चिन्ताओं के मनुष्य—स्वामिहीन कुत्ते के समान हो जाता है।"

प्योत्र काँपता हुआ पीछे की ओर निहारने लगा। उसने देखा कि होने वाली यह बारिश कम-से-कम जरूर असामयिक है और फिर उसे नीचे वाले बादलों के समान विचारों ने घेर लिया। उन विचारों से बचने के लिए वह प्रत्येक डाक पड़ाव पर थोड़ी-थोड़ी वोदका पीता जाता था।

सन्ध्या समय जब धूमिल शहर दूर से दिखाई दे रहा था तो एक रेलगाड़ी सड़क को बीच से काटती हुई गुजर रही थी। इन्जिन ने एक तेज सीटी दी भाप उगली और पृथ्वी के अर्ध चन्द्राकार गर्त में घुसकर दृष्टि से ओझल हो गई।



३

मेष में बिताए हुए तूफानी रङ्गीन दिनों की याद कर प्यारे मर्तीमानाथ ने एक भयङ्कर अवस्थता का अनुभव किया उसकी यह अस्वस्थता हमेशा वास्तव में एक प्रकार के भय का ही रूप होती थी । उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि जितनी बातें उसे आज याद आ रही हैं वे सब कभी घटित हुई हैं । और यह भी कि वह स्वयं भी धार शराब, सङ्गीत की ध्वनियाँ शराबियों के गानों गुल-गपाड़े आमोद प्रमोद और आत्मा का छिन्न भिन्न कर इन बास मदिरा-मस्त स्त्री पुरुषों के निनाद से भरे किसी पत्थर के विशाल कमरे में उबला है । उन सब को घुंघराले बालों वाले सिर पर टोप रख तथा फ्रॉक-कोट पहने व्यक्ति ने उत्तेजित किया था । उसकी उल्लू जैसी आँखें चिकन-चुपड़े हजामत किए चेहरे से घूर रही थीं । इस मनुष्य ने अपने मोटे-मोटे ओठों को चबाते हुए मर्तीमानाथ को आलिंगन में कसा और फिर जोर से भींचते हुए बोला था—

"मूर्ख कहीं का—चुप रह! जानता नहीं कि रूस का बपतिस्मा× हो रहा है। समझा? प्रतिवर्ष वोल्गा और ओका नदी के किनारे यह बपतिस्मा होता है।

यह मनुष्य चेहरे से रसोइया दिखलाई देता था और पोशाक में उन मशालचियों के समान था जो धनी-मानी व्यक्तियों के मृत-शरीरों को श्मशान पहुँचाने के लिए भाड़े पर किए जाते हैं। प्योत्र को अस्पष्ट रूप से स्मरण हुआ कि उस मनुष्य के साथ उसका झगड़ा हुआ था और उसके बाद उन दोनों ने साथ बैठकर कोन्याक* पी थी उसमें मलाई की बरफ मिलाई थी। यह मनुष्य सुबकते हुए कहने लगा था—

रूसी आत्मा का रोना सुनो! मेरा बाप एक पादरी था और मैं हूँ एक बदमाश!'

उसकी आवाज बिगुल जैसी भारी लेकिन फिर भी कोमल थी। वह सब लोगों को अपने मलिन अश्लील भाषण के अन सुने शब्दों के प्रवाह में बहा रहा था। उसके शब्दों को सुन आत्मा अनिर्वाय रूप से विचलित हो जाती थी।

'हमारा पार्थिव शरीर भ्रष्ट है! वह चिल्लाया—'शैतान के साथ सड़ो! उस सुअर को अपनी मलिनताओं का दानकर दो! पेरया! अपने शरीर के विद्रोह को शान्त करो। यदि पाप नहीं करोगे तो प्रायश्चित कैसे करोगे? और यदि प्रायश्चित नहीं करोगे तो तुम्हारी रक्षा कैसे होगी? अपना आत्म—स्नान करो। क्या हम स्नान नहीं करते? क्या शरीर पानी से नहीं धोते? और, आत्मा? आत्मा भी स्नान चाहती है। रूसी आत्मा के लिए रास्ता छोड़ो, जो बड़ी संगीतमय, पवित्र और महान् है!'

×बपतिस्मा—ईसाई धर्म का संस्कार।
*कोन्याक—एक प्रकार की वादका जैसी कड़वी शराब।

प्योत्र ने रोया विचलित हुआ और फिर बुदबुदाया -

यह ठीक है कि हमारी आत्मा एक अनाथ शिशु है—भूली जा चुकी है और उपेक्षित है।

और तब सब लोग चिल्लाने लगे—

'ठीक है! बिल्कुल ठीक।

और एक गंजा लाल दाढ़ी वाला मनुष्य जिसका भोंरा-सा चेहरा था और कान गुलाबी थे उसके चारों ओर लट्टू की तरह घूमता हुआ स्त्रियों की सी आवाज में चिल्लाने लगा—

स्त्योपा! ठीक है। मैं तुझे बड़ा प्यार करता हूँ। मृत्यु तक तुझे प्यार करूँगा। मुझे तीन चीजें बहुत प्रिय हैं—तुम प्यार और सत्य। आत्मा के विषय में सत्य!

और, वह रोते हुए गाने लगा—

मौत की जय होती है मौत से।

प्योत्र ने मूल अन्तिम के शब्दों को दोहराया—

'गाड़ी का पहिया टूट गया टूट गया।

उसे ऐसा प्रतीत होने लगा कि वह इस सौंवले स्त्योपा को प्यार-सा करने लगा है और वह बड़े विस्मय से उसकी आवाज सुनने लगा। यद्यपि कभी-कभी उसके विचित्र शब्द उसे भय से भर कर उठते थे परन्तु अधिकांश ऐसे थे जिनसे वह गम्भीर, आतुरता के साथ विचलित हो गया जैसे कि कोई एक अन्धकार और कोलाहलपूर्ण विनाश के बाद प्रकाशपूर्ण शांत प्रदेश का द्वार खोल दे। उस विशेषत गाने वाली आत्मा! वाक्यांश बहुत पसन्द आया। उसमें एक प्रकार का परम सत्य और विषाद था एक पुरानी स्मृति के हृदय में बिल्कुल ठीक बैठते थे। प्रथमोव एक गन्दी गली में एक लम्बा भूरे बालों वाला अस्थिस

मनुष्य के समान वृद्ध पुरुष खड़ा था जो हाथों से धर्मान्का[1] का हत्था घुमा रहा था और उसके सामने सिर हिलाती बारह साल की लड़की सिकुड़ी नीली सी पोशाक में आँखें बन्द किए और ऊपर को मुँह उठाए थकान से मर्राई हुई आवाज में गा रही थी—

'जीवन से नहीं कोई नाता।
नहीं ढूँढ़ता शांति, स्वतन्त्रता ॥'

इस लड़की का स्मरण कर मर्तामानीव फानुनी कानों वाले मनुष्य से कुछ फुसफुसाया—

"इसकी आत्मा-ज्योतिमय है! ठीक है, यह वही है।"

'ल्योपा!' लाल दाढ़ी वाले पुरुष ने चिल्लाते हुए पूछा—"ल्योपा सब जानता है! उसके पास सब आत्माओं की चाबियाँ हैं।

और भी अधिक उत्तेजित भाव से लाल दाढ़ी वाला पुरुष चिल्लाया—

ल्योपा, मनुष्य-जाति का मित्र है। वकील पराविस्तोव तुम भी चिल्लाओ और हमें असमानता की अगम्य गुफा की ओर ले चलो! मैं इसकी आज्ञा देता हूँ।

मनुष्य-जाति का यह मित्र एक पहरिया था और कारखानेदारों की इस मण्डली की इन रंगरेलियों का अगुआ था। वह अपने शराबियों के रेवड़ के साथ जहाँ कहीं पहुँचता, वहीं संगीत बजने लगता और गीत गूँज उठते जो कभी बड़े विषादपूर्ण होते और आत्मा को विदीर्ण करके आँसू बहाने लगते तो कभी उन्मत्त नृत्य भी ठान लगते और इस संगीत के बाद स्मृति में

---

१ धर्मान्का—एक बाजा जो हत्था घुमाने से अपने आप बजता है।

बजते हुए बड़े ढोल की ढम-ढम और किसी नफ़ीरी की तीखी सी सीटी सुनाई देती थी। जब ये विषादपूर्ण विचलित कर देने वाले गीत समाप्त हो जाते तो ऐसा प्रतीत होता कि मदिरालय की पत्थर की दीवारें सिकुड़ कर आत्मा को पिचका रही हैं। और जब यह सामूहिक संगीत जोर का और आवेगपूर्ण होता और नाना रंग-बिरंगे कपड़े पहने नवयुवक उछलते-कूदते नाचते तो प्रतीत होता था कि हवा से ये दीवारें हिल रही हैं और टूट फूट रही हैं। बड़े आवेग के साथ आनन्द से आत्मग्य और विषाद के बीच हिलता हुआ प्योत्र अर्तामानोव इन घड़ियों में एक असाधारण आन्दोलन करने वाली इच्छा से भरपूर हो जाता। उसकी इच्छा होती कि वह या तो किसी को मार दे, या लोगों के सामने घुटनों के बल झुक कर सब को सुनाता हुआ चिल्लाने लगे—

"मेरा न्याय करो। मुझे कठोर-से-कठोर दण्ड दो।"

वे 'समाकात'+ नामक उन्मत्त मधुशाला में भी गए। जहाँ घूमने वाला एक फ़र्श सब लोग, नौकर चाकर मेज-कुर्सियों के साथ धीरे-धीरे अनन्त गति के साथ घूमता था। जिसके हॉल रूपी तकिए में भरे पंखों के समान भागों से खचाखच हॉल के भरे कोन हो स्थिर थे। जब फ़र्श घूमता था तो ये भी एक के बाद एक क्रम से सिर घुमाते हुए घूमते और पीतल के बैण्ड को बजाने वाले पागलों का झुण्ड दिखाई देता। दूसरे कोने में रंग-बिरंगी स्त्रियों की गाने वाली टोलियाँ दिखाई देतीं, जिन्होंने सिर पर फूल सजाए हुए थे। तीसरे कोने में काउण्टर के पीछे प्लेटों और बोतलों से सजी अलमारियाँ थीं। जिनके ऊपर छत से लटकी लैम्पों की रोशनी फैल रही थी। चौथे कोने में एक दरवाजा था जिससे अधिकाधिक संख्या में लोग एक-दूसरे को धकेलते हुए

+समाकात—अपने आप घूमने वाला पहिया या चक्र।

आ रहे थे। इस घूमते हुए चक्कर के किनारे पर पाँव ही ये लोग डगमगाते गिरते और अपनी बाहें फेंकते, हुए चिल्लाते जैसे कि कहीं चले आ रहे हों।

मनुष्य-जाति के मित्र साँवले स्त्योपा ने अचानक अतामानोव कहना शुरू किया—

"कोरी मूर्खता है, परंतु—फिर भी है बहुत अच्छी! यह ..., बल्लियों पर फैली हुई उंगलियों पर रखी एक तश्तरी की रह सकता है। और ये बल्लियाँ एक मोटे स्तम्भ से प्रभावित हो ही है। इस स्तम्भ में दो धुरे आड़े लगे हुए हैं और घोड़ों की ...ी जोड़ियाँ उनमें से हर एक में बाँधी हुई हैं और जब वे चलते हैं तो फर्श घूमता है। बिल्कुल सीधी-सी बात है, परन्तु—इसमें भी एक रहस्य है। पेत्या! याद रख। सभी बातों का कोई न कोई अर्थ होता है, समझे।

उसने छत की तरफ उंगली की तो एक हरा पत्थर उसकी उंगली पर भेड़िए की भूरी आँख के समान चमकने लगा। एक चौड़ी छाती वाले व्यापारी ने जिसका सिर कुत्ते जैसा था, अतामानोव का बाहों से हिलाया और मुर्दे की सी पथरीली आँखों से उसके चेहरे को निहारता हुआ बहरे आदमी की तरह ऊँची आवाज में पूछने लगा—

"और दुन्या क्या कहेगी, रे? तू कौन है?'

और, उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वह पास बैठे दूसरे आदमी की ओर मुड़ा और पूछने लगा—

'तुम कौन हो जी? मैं दुन्या से क्या कहूँगा? एँ?"

उसने पीठ के बल अपने को कुर्सी पर डाल दिया और बड़बड़ाने लगा—

'उ—फ़—फ़ शैतान!' और फिर बहुत जोर से

चिल्लाया—

'आओ, कहीं दूसरी जगह चलें।'

फिर, वह एक गाड़ीवान हो गया। दो भूरे घोड़ों से खींची जाने वाली गाड़ी में चालक की जगह बैठ गया और सड़क पर सब आने-जाने वाले लोगों को ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर बुलाने लगा—

'आओ, पावला के पास चलें! आओ हमारे साथ!

सब खुशी से चल पड़े। गाड़ी में पाँच आदमी थे, और उनमें से एक मर्तामामोव के पाँव में लेटा हुआ बक रहा था—

"उसने मुझे धोखा दिया है—मैं भी उसे धोखा दूँगा। उसने मुझे मैं उसे।'

एक पहाड़ी के नीचे चौराहे पर जो एक बड़ी गोल डबल रोटी के समान दिखाई दे रहा था वह गाड़ी पहुँच कर उलट गई। ड्योत्र गिर पड़ा और उसके सिर और बाहों में चोट आई। उस पहाड़ी की खाली ज़मीन पर पड़े हुए उसने देखा कि लाल सिर और जामुनी से कानों वाला वह आदमी पहाड़ी पर मस्जिद की ओर घुटनों के बल सरकता हुआ और बड़बड़ाता चला जा रहा है—

"दूर हटो मैं तातारों से बप्तिस्मा करवाना चाहता हूँ। मैं मुहम्मदी होना चाहता हूँ मुझे जाने दो!'

छोटे स्त्यापा ने उसे टाँगों से पकड़ लिया और खींच कर उस पहाड़ी के नीचे की ओर कहीं ले गया। तब आस-पास की दुकानों और कारवान-सराय से ईरानी तातार, पुजारी लोग और दूसरे लोग घिर आए और एक पीली खलात और हरी पगड़ी वाले वृद्ध मनुष्य ने ध्यान का डंडे से नमस्कार करते हुए कहा—

"स्त्री शैतान !"

एक तांबे के रङ्ग के चेहरे वाले पुलिसमैन ने प्योत्र को उठाया और उसे पाँव पर खड़ा करते हुए बोला—

'यहाँ झगड़े की इजाजत नहीं दी जाती ।'

गाड़ियाँ फिर चल पड़ीं और शराब में मस्त व्यापारी उनमें लाद कर आगे भेज दिए गए । मनुष्य जाति का मित्र सबसे आगे वाली गाड़ी में था और वह गाड़ी में खड़ा हो मुक्का दिखाते हुए ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहा था, जैसे कि वह सावक स्पीकर हो । वर्षा बन्द हो चुकी थी, लेकिन आकाश काला और डरावना ही था जैसा कि वह कभी भी भोर में भी नहीं होता था । करावान सराय की बड़ी इमारत पर बिजली चमक रही थी और अन्धकार में वह उसकी आग की चिंगारियाँ-सी दिख रही थीं । और जब मतिनकोर नहर को पार करने लगे लकड़ी के पुल पर घोड़ों के खुर थोपे से बजने लगे, मर्तामानोव को भय होने लगा कि कहीं पुल टूट न जाए और वे सब लोग इस काले स्तब्ध जल में गिर कर डूब न जाएँ ।

मर्तामानोव ने देखा कि वह इन दुःस्वप्नपूर्ण अवक्षेपों में स्मृतियों के और मदिरा-मस्त लोगों की भीड़ में जिनके बीच लगभग वह अपरिचित पड़ा हुआ है । उसने खूब शराब पी और बड़ी आतुरता से प्रतीक्षा करने लगा कि अभी आगामी कतिपय क्षणों में कोई परम असाधारण बात होने वाली है, जो बहुत महत्वपूर्ण और आनन्ददायक होगी—या तो वह किसी असीमित दुःख में डूब जाएगा अथवा उसी तरह असीमित आनन्द में सदा के लिए परिप्लावित हो जाएगा ।

सब से बढ़ कर अनोखी बात उसकी धुंधली स्मृति के धब्बों में आ रही थी वह एक थी पावला-मैनोशी की थी । उसने उसे एक बड़े खाली कमरे में देखा था । उस कमरे का तिहाई

माग बादलों, रंग-बिरंगे प्यालों गिलासों, फलदानों तथा फर्मों इत्या और दीम्पन से भरे चाँदी के बर्तनों से सजी मेजों ने घेर रखा था। दस-बारह लाल और सफेद बालों वाले गंजे सिरों वाले आदमी बड़ी व्याकुलता और आतुरता से उस मेज को घेरे हुए थे, और अनेक खाली कुर्सियों के बीच एक कुर्सी पर फल सजे हुए थे।

काले बालों वाला स्त्योपा कमरे के बीचों-बीच खड़ा था और अपनी सोने की मूँठ वाली छड़ी को मोमबत्ती की तरह उठा कर हुक्म दे रहा था—

"अरे! मूर्खो! जरा ठहरो! अभी निगमन का समय नहीं आया!

किसी ने मन्द ध्वनि में कहा—

'क्यों भौंक रहे हो?

"चुप रहो!'—अचानक एक मानवीय-ध्वनि आई—'मैं हुक्म देता हूँ।'

और, अचानक कमरे में अँधेरा हो गया उसी समय दरवाजे से बाहर ढोल बजने की हल्की आवाजें आने लगीं। स्त्योपा दरवाजे की ओर गया, उसे खोला, और एक मोटा व्यक्ति सामने पेट पर ढोल बाँधे लड़खड़ाते हुए, लम्बे-लम्बे कदम बढ़ा कर बतख की तरह अन्दर आया और जोर-जोर से ढोल पीटने लगा

बूम—बूम—बूम।"

इसके बाद बस हो ठोस और गम्भीर पाँच व्यक्ति और अन्दर आए जो भारवाहा पशुओं की तरह कमर से झुके हुए टाँगों में बँधे खीसिए से एक पियाना को कमरे में ले आए। पियाना के चमकीले काले पृष्ठ पर एक नग्न स्त्री लेटी हुई थी

जो अपनी चकाचौंध करने वाली शुभ्रता और निस्संकता पूर्ण नग्नता से एक प्रकार का भय पैदा कर रही थी। वह अपने उरस-वक्ष को उठाए सिर के नीचे बाँहों का तकिया लगाए पीठ के बल लेटी हुई थी। उसके खुले लटकते काले बाल पियानो के ढक्कने की काली पालिश के साथ घुल मिल रहे थे और जैसे-जैसे वह मंच के समीप सरकती हुई आती जा रही थी वैसे-ही-वैसे उसके शरीर की रूप रेखा अधिकाधिक स्पष्टता के साथ प्रस्फुटित होती जा रही थी और देखने वालों की दृष्टि उसकी बगलों और उदर के रोम गुच्छकों पर अनिच्छापूर्वक पड़ रही थी।

ठाँवे के पहिए चर्र-मर्र कर रहे थे, फर्श धीमे-धीमे बज रहा था और ढोल जोर-जोर से ढम-ढम कर रहा था। इस भारी पहिएदार रथ को खींचने वाले मनुष्य जरा रुके और उन्होंने अपनी कमरें सीधी कीं। मर्त्यमानोव प्रतीक्षा कर रहा था कि सब लोग हँसेंगे- और इसस उस परिस्थिति का समझना आसान हो जाएगा परन्तु इसकी अपेक्षा सब लोग खड़े हो गए और चुपचाप देखने लगे कि उस स्त्री ने किस प्रकार बड़ी मन्दा अलस गति से अपना सिर पियानो के ढक्कन से उठाया और उससे अलग हो गई। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे कि वह किसी स्वप्न के बाद अभी जागी हो और उसके नीचे—निशान्धकार का एक अक्षय पाषाण कठोरता के साथ पड़ा हुआ था। यह सब एक कहानी की तरह दिखाई दे रहा था। स्त्री ने खड़े होकर अपने लम्ब-काले बालों को कन्धों के पीछे की ओर झटकाया। पियानो की काली चमक को अपने शरीर की शुभ्र आभा से भङ्ग करती हुई वह अपने पावों को थिरकाने लगी। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके पदाघातों के नीचे पियानो की रागिनियाँ बज रही हों।

फिर दो और व्यक्ति अन्दर आए—एक सफेद बालों वाली, ऐनक पहने हुए बुढ़िया थी और एक पुरुष सान्ध्य-पोशाक में था।

बुढ़िया बैठ गई और उसी समय उसने अपने पीले-पीले दाँतों को दिखाते हुए पियानो के काले और सफेद हाथी दाँत के की-बोर्ड के साथ खेलना शुरू किया। साध्य-पोशाक पहने पुरुष ने वायलन को कंधा की तरफ उठाया और खास आँखों को ऐसे मरोड़ा जैसे कि वह किसी चीज का निशाना लगा रहा हो। कमान से वाय लिन के तारों को काटना शुरू किया तो उसकी पतली आवाज पियानो की मन्द ध्वनि के साथ मिलने लगी। नग्न स्त्री ने एक दम अपने सुगठित शरीर को सीधा किया। सिर पीछे को फेंका तो उसके काले-काले बालों ने निश्चलता से उन्नत वक्ष को आकर ढक लिया। वह निर्लज्जता से वक्ष और शरीर को हिलाती हुई धीरे-धीरे सानुनासिक स्वर में स्वप्निल और उदासीन भाव से गाने लगी।

सब लोग चुप हो गए। उन सब के चेहरे विस्मित भक्ति भाव हुई आँखों से उसकी तरफ ही निहार रहे थे। सब के चेहरों पर एक ही भाव थे। वे सब धुंधली विस्मित आँखों से उसकी तरफ देख रहे थे। और वह स्त्री अनिच्छा-पूर्वक अर्द्ध निद्रिता-सी गा रही थी और उसके अतिरिक्त मात्र कुछ अज्ञात अनसुने शब्दों को गा रहे थे। उसकी धुंधली आँखें लोगों के कंधों की ओर अनवरत रूप से देख रही थीं। अर्तामानोव ने कल्पना भी नहीं की थी कि कभी स्त्री का शरीर इतना सुगठित, भयङ्कर और सुन्दर हो सकता है। उस स्त्री ने अपने हाथ को वक्ष और कटि पर फैरते हुए सिर को हिलाना शुरू किया। और अन्त में उसके होंठ हँसते हुए से दिखने लगे और ऐसा प्रतीत होने लगा कि उसका सम्पूर्ण शरीर ही परिवर्तित और विकसित हो रहा है और सामने की सभी दृश्यमान् चीजों को छिपाता हुआ केवल मात्र अपना अस्तित्व बढ़ाए जा रहा है। अर्तामानोव भली भाँति जानता था कि क्षण भर के लिए भी उस स्त्री ने

उसके हृदय में उस पर अधिकार करने की आकांक्षा पैदा नहीं वह तो केवल मात्र एक भय और छाती के सङ्कोच को पैदा कर रही थी। उससे तो आतुरता का भय ही प्रस्फुटित हो रहा था। साथ ही वह यह भी अनुभव कर रहा था कि यदि वह स्त्री उसे साथ चलने को कहे तो वह उसके पीछे चल देगा और जो चाहेगी वह करने को तैयार हो जाएगा। फिर अन्य लोगों की ओर देखकर उसका यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया।

'सब लोग उसके पीछे चलने को तैयार हैं।"

उसका नशा कम हो रहा था और वह चुपचाप वहाँ से चला जाना चाहता था उसका यह निश्चय दृढ़ ही हो रहा था कि उसे किसी की ऊँची आवाज सुनाई दी—

'चास्त्रा, प्रकृति का वास। कुछ समझे? चास्त्रा, माया।'

अर्तामानोव जानता था कि, चास्त्रा का क्या अभिप्राय है। चास्त्रा दलदली जङ्गलों में हरी-भरी सुन्दर रेशमी घास का एक टुकड़ा होता है जिस पर पाँव पड़ते ही आदमी एक अतल गहराई में डूबने लगता है। और यह सुनते हुए भी वह इस स्त्री की ओर देख रहा था और उसकी परास्त करने वाली नम्रता की अपरिसम शक्ति के सामने अकड़ा हुआ अनुभव कर रहा था। और, जब भी उस स्त्री की भारी नवनीत-कोमल कटाक्ष उस पर पड़ती तो उसके कन्धे हिलते, गर्दन मुड़ती और उसकी नजर दूर हट जाती। उसने देखा कि भयङ्करता से दूसरे सब मदमस्त लोगों की फटती हुई आँखें मूर्खतापूर्ण विस्मय में उसकी ओर निहार रही थीं। इसी प्रकार एक दिन द्रयमोव के सार्गों में देखा था जब कि एक रंगसाज गिरजे की छत से गिर कर मर गया था।

काले घुँघराले बालों वाला लम्बा खिड़की की चौखट पर

बैठा हुआ था। उसके मोटे ओठ फटे हुए थे और काँपते हुए हाथ से वह अपने माथे को रगड़ रहा था। उसे देखकर प्रतीत हो रहा था कि अभी गिर कर फ़र्श से उसका सिर टकराएगा। परन्तु, पता नहीं किस कारण से वह वहाँ से उठा और एक कोने में चला गया।

स्त्री की भंगभंगिमाएँ एवं गतियाँ अधिक द्रुत और कंपायमान हो चलीं। उसका शरीर इस प्रकार मुड़न-तुड़न और मरोड़ खाने लगा जैसे कि वह पिंजरे से कूदना चाहती हो परन्तु कूद न सकती हो। उसकी उत्तेजक चीखें और अधिक कामुकतापूर्ण हो चलीं और उसकी ध्वनि और अधिक दृढ़ दिखने लगी। स्त्री की सुगठित टाँगों की थिरकनें उसके सिर की तेज झटकनें उसके सघन पंखों के समान केशों का कंधे और वक्ष पर गिरना और फिर पीछे को क्षेप करना किसी पशु की खाल के गिरने के समान भयङ्कर प्रतीत हो रहा था।

सङ्गीत एकदम बन्द हो गया और वह स्त्री फ़र्श पर झुक पड़ी। काले बालों वाले स्त्रैण ने उसे एक पुलहरी पोशाक में ढक दिया और उसे कमरे से बाहर ले गया। सारी महफ़िल चिल्लाने, चीखने, चार २ से तालियाँ बजाने और एक-दूसरे को धक्का देने लगी। सफ़ेद पोशाकधारी लोगों के समान वेटर कमरे से अन्दर और बाहर आ जा रहे थे। पीने के प्यासे तड़पड़ा रहे थे। सब गर्मी के युग दिन के समान परम तृष्णा से पीने लगे। इन लोगों की अशिष्टता गँवारपन और मेज पर झुके उन सिरों को देखकर घृणा होने लगती थी।

इसी समय सिपाहियों की एक भीड़ सामने आई। उनके नाच से यह सारा महफ़िल नाराज-सी हो गई और सब उनके

और तबतक सीटें और नेपकिन फेंकते रहे जबतक कि वे वहाँ से चल न गए। स्तोपा ने शोर-शराबा करने वाली स्त्रियों के एक झुण्ड को वहाँ से खदेड़ा। उनमें से एक नाटी, मोटी-मटोल भर यवन की लाल पोशाक में थी, जो प्योत्र के घुटनों पर आकर बैठ गई और शैम्पेन का एक प्याला उठा कर उसके ओठों से लगाया। अपना प्याला प्योत्र के प्याले से टकराते हुए वह चिल्लाई— आओ लाल बालों वाले मीत्या का स्वास्थ्य पान करें।" वह मच्छर जैसी हल्की थी और लोग उसे—पाशुता कहते थे। वह गिटार बड़ा सुन्दर बजाती थी और बड़ी भावुकता के साथ गाती थी—

'स्वप्न हुआ हुआ सुन्दर प्रभात का।
स्वप्न हुआ-नील-स्फटिक आकाश का॥"

और, जब उसकी मधुर ध्वनि इस पद पर बन्द हुई—

"स्वप्न हुआ विगत नव-यौवन का।
मधुर, विमल कन्यापन का॥'

अर्शीमानोव ने उसके सिर को निर्ममता और पितृ-पूर्ण भाव से सांत्वना के लिए थपथपाया।

'रोओ मत! तू अभी नौजवान है, डरने की क्या बात है?"

रात्रि-समय उसका आलिंगन करते हुए उसने अपनी आँखें जोर से भींचीं, ताकि वह एक और की पावला मेनोवो—का भलीभाँति स्मरण कर सके।

अपने होश के कुछ क्षणों में उसने बड़े विस्मय से अनुभव किया था कि यह कुमार्गगामी पाशुता उसे आश्चर्यजनक महँगी पड़ रही है। उसने पुन सोचा—

"कसी मच्छर-सी है।"

यह बड़े अचम्भे की बात थी कि मस के समय ये औरतें

किस चतुरता से लोगों की जेबों से पैसा निकाल लेती थीं और मदिरापान-पूर्ण निर्लज्जता के कार्यों से कमाए पैसे को किस मूर्खता से खर्च भी कर देती थीं। उसे लोगों ने बताया कि कुरो बस पेहरे वाला पशम का बड़ा व्यापारी पावला मैनोली पर दस हजार रुबल खर्च कर चुका है और वह उसके मन्न प्रगट होने पर प्रतिवार तीन हजार रुबल उसे देता रहा है। एक जामुनी से काना वाले व्यापारी ने सौ रुबल का नोट लेकर उसे मोमबत्ती की लौ से जलाकर अपनी सिगरेट सुलगाई और जेब से एक नोटों की गड्डी निकाल कर उसके वक्ष में धसाकर बोला—

'प्यारी जमन मानो मेरे पास अभी ऐसे बहुत हैं।'

वह सब स्त्रियों को 'जमन' कह कर पुकारता था। अतः मामाव भी प्रत्येक स्त्री में अनावेष्टित निर्लज्जता देखने लगा। इस मोटे-मोटे बालों वाली पावला के रूप में ही वह देखने और अनुभव करने लगा कि सब स्त्रियाँ चालाक मूर्ख और छिनाल करने वाली साहसी होती हैं। वह उन्हें शत्रुता के भाव से देखने लगा। उसे जब अपनी पत्नी का स्मरण आया तो उसने देखा कि उसमें भी एक विरोध भावना दबी थी।

मच्छर कहीं की,' उसने सब एकत्रित सुन्दर तरुण स्त्रियों को जो गुलाब की तरह सुन्दर तथा जोबनपूर्ण थीं और जो उसकी स्मृति में आ रही थीं—देखते हुए सोचा।

उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि इसका मतलब क्या है और ऐसा क्यों है? लोग क्या इतनी मेहनत करते हैं अपने को धंधों की जंजीरों में जकड़ा रखते हैं और फिर संसार में अपने ही प्रति बहरे बने रहते हैं। यह केवल इसलिए ही कि वे अधिक-से-अधिक धन एकत्रित कर सकें और फिर इस सम्पूर्ण गाढ़ी कमाई

को बसाने को बड़ी आसानी और इच्छा से व्यभिचारिणी और कुमार्गगामी स्त्रियों के पाँवों पर उसे लुटा देते हैं। और, यह सब हमारे समाज के प्रतिष्ठित और प्रसिद्ध व्यक्ति हैं। ये विवाहित हैं, सम्पत्तिशाली हैं और बड़े-बड़े कल-कारखानों के मालिक हैं।

शायद मेरा पिता भी इसी तरह भटकता!' उसने लगभग एक दृढ़ विश्वास के साथ सोचा। उसने जीवन की इन रंग रलियों में हिस्सा नहीं लिया बल्कि एक आकस्मिक अनिच्छुक दर्शक के रूप में ही वह वहाँ था। परन्तु ये विचार शराब से भी अधिक मदमस्त करने वाले थे जो शराब से ही बुझाए जा सकते थे। तीन सप्ताह तक वह मदिरापान के भयंकर दुःस्वप्न में डूबा रहा जो अचानक मसक्सेई के आगमन से ही भंग हो सका था।

ज्येष्ठ मर्तामानाव फर्श पर एक पलंग से पत्थर जैसे कठोर गद्दे पर पड़ा था। उसके समीप बर्फ की एक बाल्टी, क्वास की कुछ बोतलें, एक प्लेट सुअर मांस जिसके साथ शलजम मूली प्रचुरता से रखी हुई थी। सोफे पर नताश्या की तरह भौंहों को चढ़ाए मुँह खोले पाशूता सो रही थी। पाशूता की टाँगें सफेद और नीली-नीली सिराओं वाली थीं सफेद अँगूठे वाली एक टाँग फर्श पर सफेद मछली-सी लटक रही थी। खिड़की के बाहर हजारों दूषित मनों इस अखिल रूसी व्यापारी मार्केट में चिल्ला रहे थे।

शराब के नशे से भरे सिर में जो विषाक्त शरीर की पीड़ाओं की धड़कन से बज रहा था मर्तामानोव ने विषाद से पुरानी घटनाओं पर और पिछली रात की रंगरेलियों के बारे में विचार किया। लेकिन तभी अचानक मसक्सेई कमरे में ऐसे आ पहुँचा जैसे वह दीवाल फाड़कर प्रगट हुआ हो। कमरे में घुसते हुए उसने फर्श पर जोर से छड़ी पटकी और लँगड़ाते हुए कमरे में प्रवेश किया। प्योत्र के पास आकर वह तेजी से कहने

समा—

"क्यों क्या बात है जो पीठ के बल लेट पड़े हो ? कल सारे दिन और सारी रात और अब सुबह तक मैं तुम्हें तलाश करता रहा हूँ और अब यहाँ आ पहुँचा हूँ।

उसने उसी समय बेटर को बुलाया और लमनेड सोड़ा और बर्फ लाने का आर्डर दिया। सोफे की ओर मुड़ झुककर उसने पामुता के कन्धे को थपथपाया।

'उठो बारिश्न्या'[1] !

और, बारिश्न्या ने एकदम बिना आँखें खोले ही बकना शुरू किया—

"तुम जहन्नुम में जाओ लेकिन मुझे मत छेड़ो।

जहन्नुम तो तू अपने आप जाएगी - ममलसई ने बिना किसी रोष के प्रमोद में कहा। और नवयुवती के कन्धे पकड़ उसे बैठा दिया फिर उसे हिला कर दरवाजे की ओर इशारा किया।

बिल्ली कहीं की।

'इसे मत छेड़ो' प्योत्र ने कहा। इस पर उसका भाई हँसा और उसने सांत्वना देते हुए कहा—

"कोई बात नहीं। जब चाहेंगे हम फिर बुला सकते हैं।"

'आह शैतान ! ल्या ने कहा और आज्ञाकारिणी की तरह अपने कपड़े पहनने लगी।

ममलसई ने डाक्टर की तरह हुक्म देना शुरू किया—

"प्योत्र खड़े हो जाओ। अपनी कमीज उतार दो और जरा बर्फ रखड़ा।'

---

1 बारिश्न्या—रूसी भाषा में नवयुवती को कहते हैं।

पाशूता न फर्श पर गिरे अपने तुड़े-मुड़े हैट को उठाया और उसभें बालों वाले सिर पर रखा। झुककर शीशे में देखते हुए वह बोली—

'कितनी सुन्दर है रानी!'

और निद्रापूर्ण जँमाई लेते हुए उसने टोपी को फर्श पर फेंक दिया।

'अच्छा नमस्कार मीत्या! याद रखना, मैं सिमास्की में ठहर रही हूँ मेरा कमरा नम्बर १३ है।'

प्योत्र को उसके जाने पर बहुत दुःख हुआ। बिस्तर पर लेटे-लेटे ही उसने भाई से कहा—

इसे कुछ दे दो!

कितना?

"यही पचास।'

'यह बहुत अधिक है,' अलक्सेई ने उस स्त्री के हाथ में कागज के कुछ नोट देकर उसे बाहर निकाला और दरवाजा मजबूती से बन्द कर दिया।

'तू बड़ा कंजूस है। प्योत्र ने उसे ताना देते हुए कहा—"कल ही इस हैट के लिए उसने इससे भी ज्यादा खर्च कर दिया था।

अलक्सेई आरामकुर्सी पर बैठ गया। उसने अपने हाथ छड़ी की मूठ पर रखे और उस पर अपनी ठोड़ी टिका कर बैठ गया। वह बड़ी सूखी उदास की ध्वनि में बोला—

"पेत्या! यह तू क्या कर रहा है?"

'पी रहा हूँ,' बड़े भाई ने मधुर व्यंग में कहा। फिर वह खड़ा हो गया और तेजी से शरीर पर बरफ रगड़ते हुए

छींकने लगा ।

'भाई पियो जरूर परन्तु बुद्धि मत खोओ ! लेकिन यह क्या कर रहे हो ?

"क्यों, क्या बात है ?

'मलक्वई उसके समीप आया और अपरिचित की तरह मन्द स्वर में पूछने लगा—

'तुम्हें कुछ पता नहीं ? भूल गए हो ? तुम्हारे खिलाफ शिकायतें हैं । तुमने एक वकील का जबड़ा तोड़ा है और एक पुलिसमैन को नहर में फेंक दिया है ।

वह देर तक ज्येष्ठ पर्तीमानोव की शरारतों और शिकायतों को गिनाता रहा । लेकिन ज्येष्ठ पर्तीमानोव को लगा कि यह झूठ बोलता है और डराना चाहता है ।

उसने पूछा—'किस वकील का ? सब बकवास है ।

"मैं बकवास नहीं कर रहा । उसी काम वालों वाले व्यक्ति को—उसका नाम मैं भूल गया हूँ ?

'हाँ उसके साथ पहले कुछ झगड़ा तो हुआ था । —प्योत्र ने हाथ में आते हुए कहा । परन्तु उसका भाई और कठोरता से कहता गया—

'और, तुमने इन सब प्रतिष्ठित आदमियों को गालियाँ क्यों दीं ? और, अपने साथी को भी ?'

"हाँ-हाँ, तुमने ! तुमने अपनी पत्नी को भी गालियाँ दीं । सियोम, मुझे और किसी बच्चे को भी गालियाँ दीं और फिर रोते हुए बुदबुदाने लगे । फिर तुम चिल्लाए भी—'अब्राहम, इसाक सब नंगे हैं !' इस सबका क्या मतलब है ?'

प्योत्र का दिमाग भय से भर गया और वह आराम

कुर्सी में गिर पड़ा ।

"मुझे कुछ नहीं पता ।"

"यह कोई कारण नहीं !"—अलक्सेई लगभग चिल्लाते हुए और मझले घोड़े की तरह आरामकुर्सी से उछलते हुए बोला "इसके पीछे कुछ बात और है । जो बातें होश-हवास में आदमी सोचता है वही शराब के नशे में भी बकता है ! और, क्या अजीब बात है ! घरेलू बातों के बारे में क्या शराबखानों में आकर चिल्लाया करते हैं ? और अब्राहम और उसकी बलि इत्यादि के बारे में बकवास ? तुम समझते नहीं कि तुम इस सारे कारोबार को ही गड़बड़ में डाल दे रहे हो और मुझे भी बदनाम कर रहे हो ? तुम क्या समझते हो कि तुम यहाँ आप का स्नान कर रहे हो जो यहाँ अपने को नंगा कर सकते हो ! यह भी अच्छी बात हुई कि तुम्हारी इस बकवास के समय मेरा मित्र समस्यव वहाँ मौजूद था और वह समझ गया कि तुम सिर से चोटी तक वोदका से भरे पड़े हो । उसने तार भेज कर मुझे बुलवा लिया और मुझे आदि से अन्त तक सब सुना दिया । पहले सब हँसते रहे और फिर तुम्हारी बातों को उन्होंने ध्यान से सुनना शुरू किया—और जान गए कि तुम किस प्रकार के बकवासी आदमी हो ?"

"शराब पीकर तो सभी बकवास करते हैं"—याकोव ने धीमे से कहा । भाई के धक्का से वह फिर गद्दे में धँसने लगा । परन्तु अलक्सेई कहता ही गया और अन्त में उसकी आवाज़ काना फूसी की तरह धीमी हो गई—

"वे सब किसी विषय में बकवास कर रहे थे, और तू—दुनिया के बारे में । अच्छा हुआ कि समस्येव वहाँ मौजूद था और उसने बड़ी समझ से सबको चुल्लू भर २ कर शराब पिलादी ताकि, सब सुने हुए शब्दों को भूल जाएँ । तू जानता है, हमारा

कारोबार राजनीति की तरह है। लक्ष्मण आज हमारा मित्र है और कल घार शत्रु भी हो सकता है।'

प्यात्र अपना सिर को पकड़ कर दीवार के सहारे बैठ गया। वह चुप बठा रहा। गर्मी के कोलाहल म दीवारें कांपती सी दिखाई द रही थीं और उस एसा प्रतीत होने लगा कि इन कल्पना स उसका नशा उतर आएगा और उसके दिमाग़ की गड़बड़ और भय दूर हो जाएँगे। उसे बिल्कुल भी याद नहीं आ रहा था कि उसका भाई क्या कह रहा है।

न्यायाधीश की सी भाई की वह आवाज़ जस वह उससे बड़ा हो उसे बुरी प्रतीत हो रही थी। आग वह और क्या कहेगा इसकी प्रतीक्षा उसे डरावनी दिख रही थी।

तुझे क्या हो गया है? —कमर में झटके के साथ चलते हुए उसने जवाब तलब किया— 'तू निकिता के पास गया था, यही कहना चाहता है न'

हाँ, मैं उसे मिलने गया था।

और मैं भी गया था! जब तार का उत्तर आया कि तू वहाँ नहीं है तो मैं भी वहाँ जा पहुँचा। हम सब डर गए कि कहीं तू मर तो नहीं गया।

मेरे दिमाग़ म पता नहीं क्या गन्द भर गया था — प्यात्र न धीरे स बहकर अपराध स्वीकार किया।

और इसलिए तूने यह अच्छा सोचा कि नागा म यह गन्द उछाले? तू समझ स यदि तू एसी बातें करेगा तो सारे कारोबार को बदनाम कर देगा! और यहाँ कौन स बलिदान की बात है? तू ईरानी तो है नहीं जो लड़कों के साथ खिलवाड़ करता है? कैसा नासमझ बनता है। अपने हाथ को चेहरे पर ला कर दाढ़ी के बालों को कंघी करते हुए प्यात्र न उंगलियों के

बीच से कहा।

'यह सब हत्या के कारण हुआ है।"

धीरे-धीरे रुक-रुक कर जैसे कि वह अंधेरे में रास्ता टटोल रहा हो उसने हत्या के साथ हुए झगड़े के बारे में भाई अफनस्ई को सब कुछ बता दिया। उसे देर तक बोलना नहीं पड़ा। उसका भाई बहुत संतोष के साथ धीमे से बोला—

"फु-ह! यह तो कोई बात नहीं। भौर लकत्यव ने इस सब को भद्दे एशियाई तरीके से समझाया। अच्छा हत्या के बारे में? नकिम भाई। तुम मुझे क्षमा करो, यह कोई—बुद्धिमानी नहीं। व्यापारियों को सब सीखना चाहिए। उन्हें जीवन के सब क्षेत्रों में आगे बढ़ना चाहिए—तुम्हारी तरह नहीं।'

बहुत देर तक वह बड़े प्रभावपूर्ण भौर सुन्दर तरीके से कहता रहा कि व्यापारियों के लड़कों का इंजीनियर होना चाहिए, सरकारी नौकरियों भौर फौज म अफसर होना चाहिए। खिड़की के बाहर बहुत शोर हो रहा था थियेटर की ओर गाड़ियाँ जा रही थीं बर्फ के ठण्डे पेय-पदार्थों भौर आइस-क्रीम बेचने वाले जोर-जोर से चिल्ला रहे थे भौर सब से बढ़कर शोर पैवीलियन से उठने वाले संगीत का हो रहा था जिसे ग्रामीणवासियों ने नहर के पानी के ऊपर खम्भों पर खोहे भौर शीशे से बनाया था। ढोल के धमाकों से पावला मनोती का स्मरण हो रहा था।

'मेरे अन्दर किस प्रकार का गन्द घुस आया। —य्याद्र प्रतीमानोव ने दुहराया। उसने एक हाथ से कान म उङ्गली डाली भौर दूसरे हाथ से मोड़े के गिलास में वोदका डाली। भाई ने शराब की बोतल को दूर हटा कर उसे सावधान किया—

'देखो फिर अधिक पी डालोगे। अच्छा मेरे मिरान को

ही लो,—यह इञ्जीनियर होना चाहता है मैं बहुत खुश हूँ। यह विदेश जाना चाहता है—यह और भी अच्छी बात है! यह सब हमारे घर में ही रहना है घर से बाहर तो नहीं जाना। तुम इस बात को समझ लो कि हमारी जायदाद कल-कारखाना ही है। यही हमारी प्रधान शक्ति है।

प्योत्र इस सब को समझना नहीं चाहता था। अपने भाई के बुद्धिमत्ता और प्रभावपूर्ण भाषण को सुनने की उसको कोई इच्छा नहीं थी। वह सोच रहा था कि उसका यह वाचाल, प्रगल्भ भाई बहुत बुद्धिमान हो गया है और कई मामलों में उसने अपने से अधिक धनी और सम्भवतः अधिक बुद्धिमान लोगों का आदर प्राप्त कर चुका है जिनके हाथों में राष्ट्रीय पैमाने पर व्यापार की सब डोरियाँ हैं। उसका भाई साधुगृह में छिपा पड़ा है जो ज्ञान और दया कमा रहा है। और वह—स्वयं भाग्य की क्रूरता का शिकार बना हुआ है। ऐसा क्यों है? उसने कौन से अपराध किए हैं?

और तूने इस व्यभिचारी जीवन में भले लोगों को क्यों गालियाँ देनी शुरू कीं! —अलक्सेई ने धीरे-धीरे प्रेरणा देते हुए कहा। 'यह व्यभिचार नहीं परन्तु अतिरिक्त शक्ति है। वकील—बड़ा बदमाश है परन्तु समझदार है। वह सब बातों को ठीक-ठीक समझता है। व्यापारी—लोग बुजुर्ग हैं बहुत से इनमें बूढ़े हैं, परन्तु दुराचारिता और घोर शराबी तो उनमें नौजवानों जैसा है। और, हाँ नौजवान भी घोर-शराबी और दुराचार में पड़ते हैं परन्तु अपनी बढ़ती हुई शक्ति के कारण ही। और, फिर तुम्हें इस बात का भी विचार करना चाहिए कि हमारे घरों में स्त्रियाँ सीधी-सादी हैं उनमें जीवन का मज़ा नहीं व नीरस हैं! मैं नताशा के बारे नहीं कह रहा। मैं उसके बारे में नहीं कह रहा—वह तो एक विलाप सी है! हमारे यहाँ ऐसी

मूर्ख—बुद्धिमान स्त्रियाँ भी हैं, जो इतनी अंधी हैं कि आँखों से भलाइयाँ ही देखती हैं । आत्मा भी ऐसी ही है । उसे कोई बात बुरी नहीं लगती । वह न तो बुरा देखती है और न बुरा मानती है । परन्तु, नताश्या के बारे में ऐसी बात नहीं । तूने लोगों में उसके बारे में ठीक ही कहा था— वह एक घरेलू मशीन है ।'"

'क्या मैंने ऐसा कहा था ?' प्योत्र ने उदासीनता से पूछा ।

"लक्स्येव ने यह बात अपने आप तो गढ़ी नहीं ?"

प्योत्र भाई से और बहुत सारी बातें पूछना चाहता था, परन्तु उसे डर था कि अलक्सेई को कहीं और बातें याद न आ जाएँ जिन्हें वह भूल रहा है । उसके हृदय में भाई के प्रति भय, आशंका और ईर्ष्या के भाव पैदा होने लगे ।

'यह अधिक होशियार हुआ जा रहा है ।' उसने अलक्सेई में एक प्रकार की चालबाजी देखी जिसमें लोमड़ी की तरह पलटना और तत्परता का भाव भी था । प्योत्र उसकी बाज जैसी आँखों सुनहरे बाल जो उसके ऊपर के ओठ के हिलने से चमकते थे उसकी मोटी मोटी मूँछें, जो फौजी अफसरों की तरह हिलती थीं—उसकी बारीक कटी दाढ़ी—उसके पक्षी के पंजों के समान पकड़ वाली उँगलियों और खासतौर से, उसके दाएँ हाथ की तर्जनी जो हवा में लगातार तरह-तरह के नमूने सी बनाती थी उसको देखकर बड़ा डर लगता था । अलक्सेई छोटी सलेटी रंग वाली जैकेट से एक शैतान, बेईमान वकील के समान प्रतीत होता था । एक ऐसा वकील जो दूसरों के मामलों में पड़ताल करता रहता हो ।

अचानक प्योत्र की इच्छा हुई कि अलक्सेई यहाँ से टल जाए ।

"छोड़ो भी, मैं जरा सोना चाहता हूँ,"—उसने आँखें बन्द करते हुए भाई से कहा।

'ठीक है यह समझ की बात है' भाई ने सहमति प्रगट की 'आज तुम कहीं बाहर मत निकलना।'

'देखो, बच्चे की तरह कैसा मुझे सिखा रहा था! अब असलसई बाहर चला गया तो प्यात्र न चिढ़ते हुए सोचा। बाद में वह खाने से बिलमचों के निकट हाथ-मुँह धोने के लिए गया और वहाँ ठिठक कर खड़ा हो गया। उसने देखा कि बिलकुल उसके जैसा ही कोई मनुष्य उसके समीप टहल रहा है। उसके बाल बिखरे हुए, चेहरा बिगड़ा हुआ और आँखें डर से भरी हुई थीं वह अपने लाल-लाल हाथों से अपनी भागी वाली बगलें और छाती को टटोल रहा था। पहले कुछ क्षण तक प्योत्र को इस पर विश्वास ही न हुआ था कि यह दर्पण में उसका ही प्रतिबिम्ब है। एक उदासी भरी मुसकान से वह पुन बरफ के टुकड़े से अपने चेहरे, गरदन और छाती को धोने लगा।

'चलूँ किसी गाड़ी को तय कर जरा शहर हो आऊँ।' उसने निश्चय किया। उसने जैकेट को अभी आधा ही पहना था कि उसे उतार कर कुर्सी पर फेंक दिया और फिर अपनी उंगलियों से बुलाने वाली घण्टी के बटन को जोर-जोर से दबाने लगा।

'चाय लाओ, देखो खूब अच्छी तरह पका के लाना!' उसने नौकर को आज्ञा दी—'देखो! साथ में कुछ नमकीन भी लाओ। और हाँ वोदका भी।'

उसने खिड़की से बाहर झाँककर देखा—अभी तक दुकानों के चौड़े-चौड़े किवाड़ बन्द थे परन्तु सड़क पर लोग आ-जा रहे थे और उष्ण अन्धकार में वे सड़क के पत्थरों के साथ मिलते से

दिखलाई देते थे। थियेटर के दरवाजे में एक हिस्-हिस् करती हुई लम्प धुंधला पीला-सा प्रकाश छोड़ रही थी और कहीं समीप ही स्त्रियाँ गा रही थीं।

"मच्छर कहीं की।"

"क्या मैं सफाई कर सकती हूँ? किसी ने उसके पीछे से कहा। वह एकदम मुड़ा और देखा कि उसके पीछे ही साफ करने वाले ब्रुश और चिथड़ों को हाथ मे लिए एक आँख वाली एक बुढ़िया खड़ी है।

वह चुपचाप बिना कुछ बोले बरामदे में पहुँचा तो वहाँ एक व्यक्ति से जा टकराया। उसने धुंधले शीशों वाली ऐनक और काला हैट पहन रक्खा था। यह व्यक्ति ग्रमसुने दरवाजे से कह रहा था—

'हाँ हाँ और कुछ नहीं।

यहाँ सब कुछ गड़बड़-सा दिखाई दे रहा था। वह इन प्रच्छन्न शब्दों का अर्थ सोचने लगा। इसके बाद ज्येष्ठ अर्वामानोव एक गोल मेज पर बैठ गया जिस पर छोटा-सा समवार भाप से भन-भन कर रहा था और उसके ऊपर एक लम्प की चिमनी धीमे-धीमे हिल रही थी, लगता था जैसे कोई एक अदृश्य हाथ उसे हिला रहा हो। उसकी स्मृति में विचित्र विचित्र आकृतियाँ—ऐसे लोगों की आकृतियाँ जो शराब के नशे में धुत्त थे तरह-तरह की बकवास करती हुई गीत गा रही थीं। भाई के अपमानपूर्ण भाषण के टुकड़े, और किसी की चमकती हुई आँखें सब उसके सामने एक चलते हुए चित्र की तरह घूमने लगे। परन्तु, बावजूद इस सबके उसका दिमाग खाली और अन्धकारपूर्ण-सा था। केवल मन्द प्रकाश की एक क्षीण किरण खेल रही थी और इसी गर्दीले वायुमंडल में सब आकृतियाँ और मूर्तियाँ नाचती दिखाई दे रही थीं। और

इस कारण वह किसी और बात पर अपने विचार स्थिरता से केन्द्रित नहीं कर सकता था।

उसने गरम-गरम कड़ी चाय पी तो उसकी जीभ जल गई। फिर उसने थोड़ी-सी वोद्का गले में डाली। उसका तालू और मुँह जरा जले। इस सबसे उसे नशा नहीं चढ़ा परन्तु एक प्रकार की बेचैनी पदा हो गई। और वह अनुभव करने लगा कि कहीं चला जाए। उसने फिर घण्टी बजाई। एक नौकर अन्धकार में तैरता हुआ-सा उसके सामने आया जिसके न चेहरा था और न ये बाल। वह उसे हड्डी की मुट्ठ वाली छड़ी के समान लगा था।

थोड़ी-सी हरी लिकर[1] लाओ वान्का हरी लिकर, जानते हो कैसी होती है?

'हाँ-हाँ श्रीमान्-सार्जेंट।

तू वान्का तो नहीं है?

'नहीं, नहीं मैं कस्तान्तिन हूँ।'

"अच्छा जाओ!'

जब नौकर लिकर ले आया तो घर्तामानोव ने पूछा—

"क्या फौजी सिपाही हो?'

"नहीं।"

'बात तो तुम सिपाहियों की तरह ही करते हो।"

"काम दोनों एक ही हैं। सिपाही और नौकर—दोनों को हुकुम बजाने पड़ते हैं।'

घर्तामानोव थोड़ी देर तक सोचता रहा और फिर उसे एक

---

१ लिकर—एक प्रकार की शराब।

एक श्वास लेकर सलाह देने लगा—

'देख तू किसी का हुक्म मत बजा। इन सबको जहन्नुम जाने दे। तू, बस मलाई की बर्फ बेच। और कोई काम मत कर!'

जिकर भन्ने की राम जैसी भाड़ी थी तथा अमोनिया जैसी तेज और कड़वी। परन्तु इससे प्योत्र का सिर किसी तरह स्वच्छ हो गया। अब उसे चीज साफ-साफ दीखने लगी। जैसे-जैसे उसका दिमाग ठीक हो रहा था उस गली से आने वाली ध्वनियाँ भी हल्की और एक दूसरे से मिलती सुनाई देने लगीं। यह हल्का शोर-शराबा कहीं किसी ओर सहसा हुआ सा मालूम हो रहा था जो अपने पीछे नीरवता छोड़ता जाता था।

'तुम्हें हुकुम बजूली करनी है क्यों ऐसी बात है? वर्तामानोव ने सोचा। 'और किसकी? मैं स्वयं मालिक हूँ किसी का नौकर तो हूँ नहीं। मैं मालिक हूँ या नहीं?

परन्तु, ये सब विचार एकदम छिन्न-भिन्न हो गए और लुप्त होकर उसके सामने भय पैदा करने लगे। वर्तामानोव ने अपने सामने उस व्यक्ति को देखा जो उसके जीवन में आराम और ऐसा विश्वासपूर्वक जीवन व्यतीत करने में बाधा बन रहा था जैसा कि समझदार लोगों की तरह अमक्सई जीवन गुजार रहा था। यह व्यक्ति जो बाधा डाल रहा था चौड़े चेहरे और दाढ़ी वाला एक मनुष्य था। वह उसके सामने समवार के पीछे बैठा हुआ था और फिर जिसने चुपचाप बढ़े अपने बाएँ हाथ से दाढ़ी को पकड़ रखा था और हथेली से गाल थामे हुए था। वह बड़े विषाद से प्योत्र वर्तामानोव की तरफ देख रहा था जैसे वह उसकी भर्त्सना कर रहा हो और करुणा प्रकट कर रहा हो। उस व्यक्ति की ओर घूरते हुए वह रोने लगा और एक प्रकार के विषाद आँसू उसकी लाल पलकों से दाढ़ी पर टपकने लगे। एक

बड़ी मक्खी उसके चेहरे पर आ बैठी जैसे कि वह किसी मुर्दे के चेहरे पर बैठी हो, और फिर भौंहों के ऊपर रुक कर, उसकी आँखों में झाँकने लगी।

"क्या बदमाश के बच्चे ? —अर्तामानोव ने अपने शत्रु को सम्बोधन करते हुए पूछा। परन्तु उसका शत्रु नहीं हिला और न उसने कोई जवाब ही दिया। बस, उसके ओठ धीमे-धीमे से हिलते रहे।

'क्यों, अब क्या गुनगुना रहा है ? प्योत्र अर्तामानोव बड़े आह्लाद से चिल्लाया—' नीच कहीं के ! मुझे इस हालत में पहुँचा कर अब तू रो रहा है ? अब अफसोस करता है ? ओ पशु !'

उसने मेज पर रखी एक बोतल को उठाया और हाथ घुमाकर जोर से सामने आदमी के गंजे सिर पर दे मारी।

बोतल टूटकर अचार और तश्तरियों के साथ एक कोलाहल करती मेज से गिरी। आसपास के लोग जमा हो गए। यह छोटी-सी भीड़ दो हिस्सों में बँटकर, धीरे धीरे और बढ़ने लगी। एक आँख वाली औरत समवार को उठाने के लिए झुकी और उसके सामने सीधी खड़ी हो गई।

फर्श पर बैठे हुए अर्तामानोव ने शिकायत भरी अनेक आवाजें सुनीं।

"यह रात में जब सब लोग सोए हैं।

"सोया तोड़ दिया है !

'तुम जानते हो, यह कोई फैशन तो है नहीं ?

अर्तामानोव ने अपने हाथ इधर उधर हिलाए जैसे कि वह फर्श तैर रहा हो और फिर कराहा—

"यह मक्खी !

अगले दिन संध्या समय अलक्सेई बड़ी तेजी से अन्दर आया और डाक्टर की सी चिन्ता से और जैसे साइस घोड़े की परीक्षा करता है भाई की ओर देखने लगा । अपनी मूँछों में उङ्गलियों से कंघी करते हुए वह बोला—

'तू भलमनसाहत से बिल्कुल गिर चुका है । क्या ऐसी हालत में घर पहुँच सकता है—कभी नहीं । और साथ ही तू मेरी यहाँ क्या मदद कर सकता है ? तेरी दाढ़ी को छाँटने की जरूरत है प्योत्र । जूते भी नए खरीदने पड़ेंगे—तेरे जूते गाड़ीवानों जैसे हो रहे हैं ।

अपने दाँतों को भींचता हुआ ज्येष्ठ अर्तामानोव भाई के पीछे-पीछे नाई की दूकान की ओर चल पड़ा । वहाँ अलक्सेई ने बड़े रौब और बारीकी के साथ हिदायतें देनी शुरू की कि दाढ़ी और सिर के बाल कितने और कैसे काटे जाएँ । इसके बाद प्योत्र के लिए जूते खरीदते समय उसने अपने लिए भी एक जोड़ा लिया । इसके बाद प्योत्र ने जब शीशे में चेहरा देखा तो अपने को एक क्लर्क के समान पाया । उसके जूते महराब के नीचे कुछ तंग से थे । परन्तु वह बिल्कुल चुप रहा क्योंकि जानता था कि जो कुछ उसका भाई कर रहा है यह ठीक है । अपने बाल कटवाना और नए जूते पहनना—सब जरूरी तो था ही । होश में आने पर और भले आदमियों के बीच बैठने के लिए यह भी जरूरी था कि वह दुराचारिता और नशे के भारी दुखद बोझ को उतार कर फेंक दे ।

परन्तु अपने मस्तिष्क के शून्य और विषाक्त शरीर की थकान के बीच अपने भाई को देखते हुए उसने भाई के प्रति ईर्ष्या और आदर का मिश्रण—एक गुप्त आनन्द और विरोध का मिश्रण अनुभव किया । पतला लम्बा फुर्तीला और तेज नजर वाला

व्यक्ति अपना दाढ़ी हिलाता हुआ उसके सामने मौजूद था और कारोबारी युग की अतृप्त तृष्णा के ऊपर का धुआँ और चिंगारियाँ चारों ओर बिखर रहा था। नाड़ के साथ मन के एक बढ़िया जलपान-गृह के प्राइवेट कमरे में बड़े-बड़े प्रसिद्ध व्यापारियों के साथ दोपहर का भोजन खाते हुए प्योत्र ने बड़े आश्चर्य से अनुभव किया कि अमलखर्ई एक पक्के विदूषक का ढंग धारण करता है और अपने धनी साथियों का मनोरंजन करता है। परन्तु इन सब लोगों में कोई भी उसके इस मसखरेपन का अनुभव नहीं करता। बल्कि सभी उसका आदर कर उसकी कौतूहलपूर्ण बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे हैं।

एक बड़ी मोटी दाढ़ी और भारी भरकम बदन के कपड़े के कारखाने के मालिक—कमालोव ने अपनी आबर जैसे रंग वाली अँगुलियों को अमलखर्ई की ओर हिलाया और अपनी बन्द जमी आँखों को मटकाता हुआ और हर दो-एक शब्दों के बाद ओठों पर जीभ को फेरता हुआ बोला—

"अस्तागा! तू बड़ा कुशल और चतुर है! तू मुझसे बाजी ले गया।

"इमोलाह इवानोविच!—अमलखर्ई आनन्द से चिल्लाया—'यह तो मुकाबिला है। ठीक है न?

बहुत अच्छा। ऊँचा नहीं तुरुप का इक्का चला!

इमोलाह इवानोविच!—मैं तो अभी सीख रहा हूँ!

कमालोव ने सिर हिलाया—हाँ हाँ! सीखना ही चाहिए।

सुनना! अमलखर्ई ने आनन्द भरी ध्वनि में हस्तक्षेप करते हुए व्यंग से कहा—मेरा लड़का मिरान बड़ा बुद्धिमान् है—इन्जिनियर होने जा रहा है। उसने मुझे बताया कि मिरापुन नगर में एक विद्वान् रहता था। उसने राजा के सामने प्रस्ताव

रक्खा कि यदि मुझे खड़े होने की कोई जगह मिल जाए तो मैं सारी जमीन को उलट दूं !"

ओह ! क्या अजीब बात है ।

'बिल्कुल उलट दूं । सज्जनो ! ऐसी अवस्था में हमें कहीं-न-कहीं खड़ा होना होगा । हमें किसी परम बुद्धिमान् व्यक्ति की जरूरत नहीं । हम भी तो उलट सकते हैं । बस, हमें इन अफसरों के पलटने की जरूरत है । सज्जनो ये दरबारी सरदार लोग—अब अन्तिम सांसें ले रहे हैं—हमें इनसे कोई रुकावट नहीं । अब देश के अफ़सर भी हममें से और हमारे ही होने चाहिए । हमें सभी तरह के आदमियों की जरूरत है—जो सब अपने हों, हम बनिए-व्यापारियों में से हों ताकि वे हमारी बातों को हमारी मांगों को समझ सकें—बस, इसी बात की जरूरत है !

सफ़ेद बालों और गंजे सिर तथा मोटे-मोटे पेट वाले भारी भरकम लोगों ने सहमति प्रगट की—

'बिल्कुल ठीक है !

और एक ओर झुकासी नाक और भारी हड्डियों के ढांचे वाले हुंडियों के दलाल सोसेव ने आनन्द के साथ खिलखिलाते हुए कहा—

"हमारा अलक्सेई इल्यच बड़ा चालाक बूढ़ा है, उसे सब पता है कि मक्खन-पनीर कहां रखा है और वह सब चुरा लाता है ! बड़ी अच्छी बात है ! आओ उसके स्वास्थ्य के लिए पान करें ।"

सबने अपने प्याले उठाए, अलक्सेई ने बड़े आनन्द से सब के साथ प्याला टकराया और सोसेव ने अपने बच्चों जैसे छोटे से हाथ से कमासोव के भारी कन्धों को थपथपाकर कहा—

अब हममें बुद्धिमान् लोग भी आते जा रहे हैं ।"

"ऐसे तो हममें हमेशा ही रहे हैं।" कमालोव ने साभिमान कहा— मेरा बाप बोझ उठाने वाला मजदूर था और मुझे देखो, मैं कितना ऊँचा उठा हूँ।

"लोग कहते हैं कि तेरे बाप ने एक धनी आर्मीनियन के पेट में छुरा भोंकने के बाद यह काम शुरू किया था।"—मोसेव ने हँसते हुए कहा।

इस पर मोटी दाढ़ी वाले कपड़े के कारखाने वाले ने बकरे की तरह हँसकर उत्तर दिया—

'यह सब झूठ है। लोग मूर्खतावश ऐसी बातें किया करते हैं। यदि कोई भाग्यशाली है तो वह पापी है! और कजमा! तेरे बारे में भी तरह-तरह की अफवाहें उड़ रही हैं।

'और मेरे बारे में भी'—मोसेव ने समर्थन किया। वह सांस लेकर बोला—'अफवाहें तो हवा की तरह होती हैं।

यपड़ अतामानोव दाँत निपोरते हुए खूब खाता रहा लेकिन जहाँ तक हो सकता था उसने बहुत कम पी। उसने अपने को इन लोगों के बीच बैठ एक विभिन्न नस्ल के जानवर की तरह अनुभव किया। वह जानता था कि ये सब रूस के किसान हैं। सबके अन्दर उसने एक प्रकार की दस्युवृत्ति और मुक्खड़पन पाया था इन बातों के कारण वह अपने पिता का भी आदर करता करता था। उसने सोचा कि यदि मेरा पिता इस मौके पर होता तो वह भी इन रक्कोलिया में पूरी तरह भाग लेकर उन्हीं की तरह धन का लकड़ी की छीलन की तरह जला देता। हाँ, पैसा दौलत इन लोगों के लिए लकड़ी की छीलन की ही तरह है और ये लोग अपनी पशुवत शक्ति से गाँव-गाँव जाकर जनता पर रंदा चलाकर यह छीलन निकालते हैं।

परन्तु, उसका भाई असवर्द इन बड़े लोगों से किसी प्रकार

भिन्न था। फिर भी कभी कभी ऐसे भी मौके आते थे, जब वह अपने इस भाई के प्रति घृणा अनुभव करता था, क्योंकि वह बहुत चुस्त चालाक समझदार और यहाँ तक कि उन सबसे अधिक खतरनाक था।

सज्जनो! अलक्सई ने बड़े आवेग से कहा—'जरा सोचिए तो! हम लोगों के हाथ में कितनी अनन्त-अक्षय श्रम शक्ति है। ये करोड़ों किसान हमारे हाथ में हैं। ये ही मेहनतकश हैं और ये ही खरीददार हैं। और कहाँ इतनी संख्या मिल सकती है? कहीं भी नहीं और हमें इन जर्मनों और दूसरे विदेशियों की क्या जरूरत है? हम अपनी व्यवस्था अपने आप कर सकते हैं।

'ठीक है ठीक है' इस धर्मभक्त मण्डली ने ऊँचे स्वर में सहमति प्रगट की।

उसने विदेशों से आने वाले माल पर ऊँची ड्यूटी लगाने की चर्चा की। जमींदारों से जमीन खरीदने और जागीरदारों तथा सामन्तों के बनाए बैंकों से हुई हानि की भी चर्चा की। वह इन सबके बारे में जानता था। लोग उसकी बातों को विस्मय से सुनते और सहमत होते थे। इस सबसे ज्येष्ठ अर्तामानोव का और भी विस्मय हुआ।

'निकिता ने ठीक ही कहा था कि अलक्सई जीवन को समझता है,'—प्योत्र ने ईर्ष्या से सोचा।

स्वास्थ्य निवास होते हुए भी अलक्सई दुराचारिता का शिकार था। उसके पास भी अपनी लगी-बँधी मास्को की रहने वाली एक रखैल थी जो इस मेले में एक संगीत मण्डली लेकर आई थी। यह स्त्री भारी भरकम, सुगठित, शहद जैसी मीठी ध्वनि और चमकीली आँखों वाली थी। कहा जाता है कि उसकी आयु चालीस वर्ष की थी, परन्तु अपन मलाई जैसे शुभ्र वर्ण और गुलाबी

चेहरे और गम सून के कारण तीस बष से अधिक नहीं दिखती थी।

अास्योदिम्का, मेरे भाव —यह लोमड़ी जैसे तेज दाँतों का निकाल कर कहती और अलक्सई को अपने पीछे ऐसे छिपा लेती थी जैसे किसी बच्चे को माँ छिपा लिया करती है।

यह जानती थी कि अलक्सई उसकी संगीत-मण्डली की लड़कियों का भी नहीं छोड़ता था। उसने कई मौकों पर यह देखा भी था फिर भी उसके प्रति उसके सम्बन्ध बड़े मित्रता पूर्ण थे। प्योत्र ने कई बार यह भी सुना था कि वह लागों और उनके कारनामों के बारे में उससे सलाह लेता था। यह विस्मय कराने वाली बात थी। इस कारण अपने पिता और ताया उल्याना बाइमोकोवा के सम्बन्ध की स्मृतियाँ हरी हो जाती थी।

'शैतान कहीं का' उसने अपने भाई को देखते हुए सोचा।

यहाँ तक कि अलक्सई जब कभी कोई शरारत भी सोचता था तो वह भी विशेष और नई ही होती थी। एक मोटा जमन भाँड़ जिसका नाम मेयर था सरकस में एक सधे हुए सूअर को दिखाता था। वह सूअर कोट टोप और पेटन्ट चमड़े के जूते पहन अपनी पिछली टाँगों पर चलता तो एक व्यापारी की तरह दिखता था। सब दर्शक उसे देखकर आनन्द-विभोर हो जाते थे। और यहाँ तक कि व्यापारी लोग भी हँसते थे। परन्तु अलक्सई नहीं हँसा और इससे नाराज हो गया। उसने अपनी मित्र-मण्डली के साथ सलाह कर इस सूअर को चुराने का षडयन्त्र रचा। तब उन्होंने सरकस के नौकर को रिश्वत देकर सूअर को चुरा लिया और सब व्यापारियों ने बरखान्यिक्स होटल के बढ़िया रसोइए द्वारा उसका तरह-तरह का भोजन पकवा कर उसे हड़प कर लिया। प्योत्र मर्तामानोव ने इस किस्से को सुना था। इस दुष्ट के कारण वह

जर्मन भी एक दिन फाँसी लगाकर मर गया। [1]उसने इस मेसे में मलक्सेई को जिस रूप में भी देखा उससे उसके हृदय में मल क्सेई के प्रति और भी अधिक चिन्ता पैदा हो गई।

"यह बड़ा तेज है। इसमें कोई आत्मा नहीं। हो सकता है कि वह मुझे भी इस दुनियाँ में सदा के लिए तबाह कर दे और उसका पता भी न लगने दे। यह चाहे लालच से न भी हो परन्तु जुए में हारने से तो हो ही सकता है।'

इस भय के ज्ञान से उसका नशा भंग हो गया और वह साधारण अवस्था में आ गया। वह घर अकेला आया क्योंकि मलक्सेई मास्को चला गया था। जिस दिन मतामानोव प्रथमोव वापिस आया वह सितम्बर का आँधी वाला प्रवृत्तापूर्ण दिन था। बरसात से पंकिल भूमि में जोर-जोर से घंटियों के बजते हुए डाक के घोड़ों के खुरों की आवाज के साथ वह मार्ग के दोनों ओर संतरियों की तरह इस सँकरे भीगे दलदली मार्ग की रक्षा करते हुए, चीड़ के पेड़ों के बीच से गुजरता हुआ आखिरी मंजिल तै कर प्रथमोव पहुँचा।

जब आकाश नीले धुएँसे पतझड़ के बादलों के घोल से पुता हुआ लगा तो मतामानोव के थके दिमाग को उससे कुछ शान्ति मिली। उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे कि वह अपने निकट वर्ती मित्र को दफनाने के बाद थक कर लौटा हो। उस मृत व्यक्ति के बारे में उसे दया आ रही थी, परन्तु फिर भी यह जानकर प्रसन्नता हो रही थी कि वह उससे कभी मिलेगा नहीं और न उसके बारे में अस्पष्ट भावों के कारण उसकी शान्ति भंग होगी और न लोग उसे दुत्कार कर ही उसके जीवन के आनन्द

---

[1] इस तथ्य को पं दे बाबोरीकिन ने 'रूसकी वूर्त्येर'' नामक पत्र में सन् १८८० में लिखा था।

को भग करेंगे ।

अब मुझे अपने धंधे में लग जाना चाहिए और कुछ नहीं !' उसने अपने मन को संतोष दिया । सब लोग काम से ही जीवित हैं । ठीक है ।

' फिर वह अपनी पूरी शक्ति से काम में जुट गया । भारतीय गर्मियों के स्वच्छ प्रकाशमान दिन विषादपूर्ण शुभ्र चाँदनी रातों के घने प्रकाश में परिवर्तित होते जा रहे थे ।

पसम्द क मुक्तामय अर्ध अन्धकार में ज्येष्ठ अर्तामानोव मज दूरों का बुलाने वाली मिल की सीटी को जैसे ही सुनता तो आधे घण्टे क अन्दर ही मजदूरों की अथक सरसराहट और सदा की भाँति चहल-पहल और श्रम की अनवरत खट-खट शुरू हो जाती । प्रात काल से लेकर सन्ध्या समय देर तक किसान और और पुरुष कारखाने और गोदामों के दरवाजों के पास चिल्लाते और शोर करते रहते । बगाला नदी के पास शराबखाने से मद मत्त लोगों का संगीत और हारमोनियम बजने की ध्वनि आती और उन असंख्य ध्वनियों म हारमोनियम पर अरोजोव की एक सङ्गीत ध्वनि भी सुनाई पड़ती । आँगन में भारी और नियमपूर्वक काम करने वाला ब्यासोव इधर-उधर मशीन की तरह म्याड़ू, खुरपी और कुल्हाड़ा लिए काम करता रहता । धीरे धीरे बिना किसी जल्दी के वह लकड़ी काटता जमीन खोदता क्यारियाँ बनाता और किसानों और मजदूरों पर चिल्लाता । कभी-कभी सदा नीली और स्वच्छ कमीज में सेराफ़िम भी सामने आ जाता । उस अपने घर में नतालया भी मशीन की तरह काम करती दिखाई देती जो अपने पति द्वारा मेले से लाई कीमती भेंटों क कारण बड़ी प्रसन्न और सन्तुष्ट दिखाई देती थी । अब अपने पति के शान्त स्वभाव से वह और भी अधिक सन्तुष्ट थी । उसे मिल,' मिल के लोग और यहाँ तक कि घोड़े भी अब ऐसे

प्रतीत होते थे कि ये अनादिकाल तक अपना काम ऐसे ही करते जाएँगे। और इस प्रकार वायु से प्रताड़ित बादलों की तरह दिन सप्ताह महीने वर्ष बीतते-बीतते बीत हुए समय का एक ढेर लग गया।

स्पष्ट अर्धाभिमानी बैल की तरह सिर झुकाए मिल की इमारतों और उसके आँगन से गुजरता। वह मजदूरों की गली कूचों में भी जाकर बच्चों को भयभीत करता। इससे उसे एक नवीनता और विचित्रता अनुभव होती थी और वह इन कामों में अपने को निरर्थक—एकमात्र केवल निरीक्षण के रूप में अनुभव करता। उसे यह देखकर बड़ी प्रसन्नता होती थी कि—उसका छोटा पुत्र याकोव अब कारोबार को समझने लगा है और उसमें गम्भीरता से दिलचस्पी भी लेने लगा है। याकोव के इस व्यवहार को देखकर पिता के विचार ज्येष्ठ पुत्र इल्या से हट गए और उसने उसके प्रति ताप की जगह बहुत कुछ उदासीनता और शान्ति स्वीकार करली।

कोई बात नहीं तेरे बिना मेरा काम चल जाएगा, बेटा! तू बस, पढ़े जा!

खूब आहार-पुष्ट गुलाबी चेहरा और संतुष्ट, प्रसन्न आँखों वाला याकोव जब कभी मुस्कान से हँसता तो उसके सावुन के बुलबुले की तरह सब रंग चमकते। लाल-लाल भारी बदन का याकोव गौरव से चलता और एक मोटे, पले कबूतर का स्मरण कराता हुआ दूर से एक सशक्त समर्थ और योग्य कारोबारी की तरह दिखाई देता। मिल मजदूरनियाँ उसकी ओर बड़ी प्रसन्नता से मुस्कराती और वह भी उनको ओर तिरछी कामातुर दृष्टि से निहारता। वह उनके बराबर से गुजरता हुआ कन्धे मिलाता और उस समय उसे अपने गौरव का खयाल न रहता था। वह इस तरह गुजर कर एक भर-पेटी मुर्गे का स्मरण कराता। पिता उसे

देखकर अपने कानों को रगड़ता हुआ हँसने लगता।

'मूर्ख ! यदि पावला को दस लगा तो तेरा क्या ह्रास होगा ?

याकाव को यह बात उस बहुत पसन्द थी कि जब कभी वह अमक्सई क घर जाता तो वह मिरोन और उसक भद्दे मन मक चापलूस, गोरिस्लेनाव क साथ अनन्त बहसों में नहीं पड़ता था। मिरान अब व्यापारी के बेटे की तरह दिखाई नहीं देता था। वह पतला लम्बी नाक एनकधारी सुनहरी बटनों वाली जकट पहन और कंधा पर एक प्रकार का चिह्न लगाए एक न्यायाधीश की तरह प्रतीत होता था। वह एक फौजी सिपाही की तरह सीधा अकड़कर चलता रौब और गौरव के साथ बातें करता। व्याग्र जानता था कि उसका भतीजा हमेशा कोई-न कोई ऊँची विद्वतापूर्ण बातें बघारता रहता है परन्तु वह मिरोन को पसन्द नहीं करता था।

'भाई, यह तो कोरी फिलासफी है' —वह एक शिक्षक क रूप म अपनी जबों म हाथ धँसाए और कोहनी स कोना बनाए गम्भीरतापूर्वक कहता—'यह निर्बलता का विचार अयोग्यता स पैदा होता है।'

व्याग्र प्रतीमानोव अनुभव करता था कि गोरिस्लेतोव भी अच्छी तरह और बुद्धिमत्ता क साथ बात करता है। वह नाट कद काली बिना इस्तरी की हुई कमीज और विद्यार्थियों का कोट पहन अपनी फूली-फूली मोटी आँखों क कारण एसा लगता था कि वह कई रातों स सोया न होगा। उसका चेहरा साँवला तज और फुन्सियों स बिकृत हो चुका था। बहस करते हुए वह मिरोन क ऊपर बड़ जोर स चिल्लाता, इधर-उधर हाथ मारता और दूसरों की बात सुनना ही नहीं चाहता था।

'ठीक है, तुम अपना लक्ष्य प्राप्त कर लोगे, सूरज तुम्हारी मिल की सीटी के साथ आसमान में उमेगा—निकलेगा। और अँधियाला दिन दलदलों और जङ्गलों को पार कर तुम्हारी मशीनों के प्लेटफ़ार्म पर आएगा। परन्तु, तुम मनुष्य-जाति के लिए क्या कर रहे हो?" मिरोन अपनी भौंहें उठाकर माथे पर त्योरियाँ चढ़ा और ऐनक को सीधा कर अवेपन से धीरे धीरे उत्तर देता—

"यह फ़िलासफी है—एक समझ में न आने वाला राग है। यह शब्दों का मरोड़ना और थोथे ख्याल करना है। मेरे मित्र! जीवन—एक संघर्ष है उसमें संगीत उन्माद इत्यादि का कोई स्थान नहीं। उसके साथ यह एक मखौल लगती है।

वादी प्रतिवादी के शब्द काले कबूतरों व सफेद कबूतरों के समान प्रतीत होते थे। ज्येष्ठ अर्तामानोव सोचता—

'हाँ ठीक है। नए पक्षी हैं नए राग हैं।' इस वाद विवाद को वह अस्पष्ट रूप से समझता था। अपने याकोव की ओर देखकर उसे प्रसन्नता होती थी कि उसका पुत्र अपने ऊपर के ओठ को छिपाता था ताकि वह अपनी हँसी को छिपा सके।

'आज यदि इल्या होता तो इस बारे में क्या सोचता?"

मोरित्स्वेलोव चिल्लाया—

'जब तुम सारी पृथ्वी और उसके लोगों को अपनी लोहे की जंजीरों में जकड़ लोगे जब तुम मानव को मशीनों का दास बना लोगे।

मिरोन अपने सिर को हिलाकर जवाब देता—

'मानव जिसकी तू चिंता कर रहा है, वह निरर्थक है—बेकार है। यदि वह आज इसे नहीं समझता तो कल नष्ट हो जाएगा। बढ़ते हुए उद्योग-व्यवसाय और कल-कारखानों में ही

उसका त्राण है।"

'इन दोनों में कौन ठीक कहता है? दोनों में से कौन यथ है?" प्यात्र भर्तामानोव ने विस्मय से सोचा।

गोरिस्लेवेतोष का वह अपन नतीजे से भी कम चाहता था। उसमें उसे एक प्रकार का यहूदीपन और अविश्वास दिखलाई देता था और वह उससे किसी कारण सदा भयभीत भी रहता था वह एक पराये की तरह बिना किसी शिष्टाचार के अपने मेजबान से पहले मेज पर बैठ जाता काँटे छुरी बजाता और जल्दी-जल्दी बिना किसी सभ्यता के खामिसा और रागी खाता रहता। प्रलक्सई की तरह ही उसमें भी एक प्रकार की झटकने की आदत थी जिसे प्यात्र बहुत बुरी नजर से देखता था। भर्तामानोव से चुपचाप बिना किसी आदरभाव के वह अभिवादन करता और दो-एक रूखे-सूखे शब्द कहकर अपने खुरदरे गर्म हाथ को वापिस ले लेता। आखिरकार, वह उसे बेकार अनावश्यक मनुष्य समझता था। पता नहीं किस कारण वह मिरोन के साथ चिपका रहता था?

'स्त्योपा! भोजन करो, बहुत बातें मत बनाओ।" प्रोल्गा उसे सलाह देता।

तो वह बड़ी ढिठाई से जवाब देता—

"जब मेरे सामने कोई फिजूल घृणित बात की जा रही हो तो मैं ऐसा नहीं कर सकता।'

प्यात्र ने क्षुब्ध विस्मय से अनुभव किया था कि अलक्सई भी इन दो विद्यार्थियों के वाद-विवाद को ध्यान से सुनता है और कभी वह भी एक-दो शब्द अपने पुत्र के समर्थन में जोड़ देता है।

"यह ठीक है! जहाँ शक्ति होगी वहीं अधिकार भी

होगा। और आज शक्ति उद्योगपतियों के हाथ में है। इस लिए।"

भोजन और चाय के बाद ओल्गा अपने कसीदे का फ्रेम हाथ में लिए खिड़की के पास बैठी, चुपचाप बड़ी सावधानी से रंग-बिरंग मनकों के फूलों पर काम करती रहती। कभी-कभी उसके माथे पर बल पड़ने लगते जो आँखों के कोने से और रिम-लैस ऐनकों के नीचे नाक के कोने से प्रतिक्षिप्त होते थे। प्योत्र भाई के घर में अधिक सुख और शान्ति अनुभव करता था। भाई के घर में उसका मनोरंजन तो होता ही था पर हमेशा अच्छी शराब भी मिलती थी।

याकोव के साथ घर लौटते हुए बाप ने पूछा—

'जानते हो किस बारे में वाद-विवाद था?'

'समझता हूँ' बेटे ने संक्षेप में उत्तर दिया।

अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए ज्येष्ठ अर्तामानोव ने कुछ रौब और कठोरता से कहा—

'तो फिर क्या?'

याकोव हमेशा ही अनिच्छापूर्वक संक्षेप में परन्तु समझदारी से उत्तर देता था। उसके शब्दों में मिरोन के कथन का सारांश भी रहता था कि रूस को यूरोप की तरह ही रहना चाहिए। और गारिस्लवतोव का विश्वास था कि रूस का अपना अलग मार्ग है। इस अवसर पर ज्येष्ठ अर्तामानोव ने बेटे को बताना चाहा था कि इस सम्बन्ध में उसके अपने भी विचार हैं, अतः वह जरा रौब के साथ बोला—

"अगर विदेशी लोग अपने यहाँ अच्छे हैं, तो वे हमारे यहाँ आकर क्यों घुसते हैं?"

परन्तु—यह विचार भी अलक्सेई का ही था। उसके अपने कोई विचार नहीं थे। अर्तामानोव बड़ी नाराजगी और गड़बड़ में पड़ गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि बेटे ने उसकी नाराजगी को यह कह कर और भी बढ़ा दिया था—

'इस प्रकार की बुद्धिमत्ता की बातों को कहे बिना और इन वाद विवादों के बिना भी तो हम रह सकते हैं।'

ज्येष्ठ अर्तामानोव भी बड़बड़ाया—

"हाँ रह तो सकते हैं। इनके बिना भी रह सकते हैं।'

प्योत्र प्राय छोटी-छोटी नाराजगियों और असमंजसों का शिकार होता ही रहता था। यही कारण था कि वह एक तरफ होता जा रहा था और अपने को एक ऐसे दर्शक के रूप में ही अनुभव करता था जिसका काम आस-पास की सब बातों को देखना और सोचना ही था। उसके आसपास की सब बातों में एक रहस्य परिवर्तन होता जा रहा था और लोगों के शब्दों और हरकतों में एक प्रकार की नवीनता अशान्ति के रूप में चीख-चीख उठती थी। एक बार, पता नहीं किस कारण चाय के समय ओल्गा बोली—

सत्य तब है जब तुम्हारी आत्मा पूर्ण हो अथवा तुम्हें और किसी चीज की चाह न हो।

'ठीक है' प्योत्र ने सहमति प्रगट की। परन्तु मिरान की एनक चमकी और उसने अपनी माँ के कथन को ठीक करते हुए कहा—

यह ठीक नहीं। यह तो मौत है। सचाई कर्म में है—क्रिया में नहीं।'

जब वह कागजों के एक मोटे पुलन्दे को बगल में लपेटे बाहर चला गया तो प्योत्र ने ओल्गा को टोका—

होगा। और आज शक्ति उद्योगपतियों के हाथ में है। इस लिए ।"

भोजन और चाय के बाद ओल्गा अपने कसीदे का फ्रेम हाथ में लिए खिड़की के पास बैठी, चुपचाप बड़ी सावधानी से रंग बिरंग मनकों के फूलों पर काम करती रहती। कभी-कभी उसके माथे पर बल पड़ने लगते, जो आँखों के कोने से और रिम-लैस ऐनकों के नीचे नाक के कोने से प्रतिक्षिप्त होते थे। प्योत्र भाई के घर में अधिक सुख और शान्ति अनुभव करता था। भाई के घर में उसका मनोरंजन तो होता ही था पर हमेशा अच्छी शराब भी मिलती थी।

याकोव के साथ घर लौटते हुए बाप ने पूछा—

जानते हो किस बारे में वाद-विवाद था ?'

'समझता हूँ," बेटे ने संक्षेप में उत्तर दिया।

अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए ज्येष्ठ अर्तामानोव ने कुछ रौब और कठोरता से कहा—

तो फिर क्या ?"

याकोव हमेशा ही अनिच्छापूर्वक संक्षेप में परन्तु समझदारी से उत्तर देता था। उसके शब्दों में मिरोन के कथन का सारांश भी रहता था कि रूस को यूरोप की तरह ही रहना चाहिए। और गोरित्स्वतोव का विश्वास था कि रूस का अपना अलग मार्ग है। इस अवसर पर ज्येष्ठ अर्तामानोव ने बेटे को बताना चाहा था कि इस सम्बन्ध में उसके अपने भी विचार हैं, अतः वह जरा रौब के साथ बोला—

'अगर विदेशी लोग अपने यहाँ अच्छे हैं, तो वे हमारे यहाँ आकर क्यों घुसते हैं ?'

परन्तु—यह विचार भी प्रलक्सेई का ही था। उसके अपने कोई विचार नहीं थे। प्रर्तामानोव बड़ी नाराजगी और गड़बड़ में पड़ गया। ऐसा प्रतीत हुआ कि बेटे ने उसकी नाराजगी का यह कह कर और भी बढ़ा दिया था—

"इस प्रकार की बुद्धिमत्ता की बातों का कह बिना और इन वाद विवादों के बिना भी तो हम रह सकते हैं।"

ज्येष्ठ प्रर्तामानोव भी बड़बड़ाया—

हाँ, रह तो सकते हैं। इनके बिना भी रह सकते हैं।

प्यात्र प्राय छोटी-छोटी नाराजगियों और अचम्भों का शिकार होता ही रहता था। यही कारण था कि वह एक तरफ होता जा रहा था और अपने को एक ऐसे दर्शक के रूप में ही अनुभव करता था, जिसका काम आस-पास की सब बातों को देखना और सोचना ही था। उसके आसपास की सब बातों में एक अदृश्य परिवर्तन होता जा रहा था और लोगों के शब्दों और हरकतों में एक प्रकार की नवीनता अशान्ति के रूप में चोरी-चोरी उठती थी। एक बार, पता नहीं किस कारण चाय के समय प्राल्गा बोली—

"ईश्वर, सब हैं जब तुम्हारी आत्मा पूर्ण हो अथवा तुम्हें और किसी चीज की चाह न हो।"

'ठीक है' प्यात्र ने सहमति प्रगट की। परन्तु मिरान को एनक चमकी और उसने अपनी माँ के कथन को ठीक करते हुए कहा—

'यह ठीक नहीं। यह तो मौत है। सचाई कर्म में है—क्रिया में नहीं।"

जब वह कागजों के एक मोटे पुलन्दे को बगल में लपेट बाहर चला गया तो प्यात्र ने प्राल्गा को टोका—

"तुम्हारा बेटा तुमसे बहुत रुष्ट है !'

'बिल्कुल भी नहीं।"

मैं तो देख रहा हूँ वह रुखा और अशिष्ट है !"

"वह मुझसे अधिक बुद्धिमान् है —ओल्गा ने कहा। "मैं पढ़ी लिखी तो हूँ ही नहीं, कभी-कभी मूर्खता की ही बातें कह जाती हूँ। साधारणतया हमारे बच्चे हमसे अधिक बुद्धिमान् हैं।"

इस बात पर प्रतीमानोव विश्वास नहीं कर पाता था। उसने हल्के से हँसकर उत्तर दिया—

ठीक है तुम मूर्खता की बातें करती हो। परन्तु हमारे बुजुर्गों का कहना है कि बेटों से दु ख होता है—समझीं ?

अपने बेटों के बारे में बुद्धिमान् होने की बात से वह जरा चिढ़-सा गया था। क्योंकि यह इशारा ओल्गा ने असल में इल्या की ओर ही किया था। प्योत्र जानता था कि अलक्सेई इल्या को पैसा भेजता है और मिरोन का उसके साथ पत्र-व्यवहार चल रहा है। फिर भी अभिमान-वश उसने कभी भी उनसे नहीं पूछा कि वह कहाँ रहता है और कैसा है ? ओल्गा ही कभी-कभी मौका देखकर बड़ी चतुराई से उसके अभिमान का विचार करती हुई इल्या के बारे में बता दिया करती। उसी से उसे पता लगता रहता था कि इल्या आरखेंगल्स्क में रहता था और अब वह विदेश चला गया है।

"रहने दो। मुझे उससे क्या ? बुद्धिमान् होगा तो अपने लिए होगा—बाद में स्वयं अपने आप समझ जाएगा कि वही मूर्ख था।'

कभी-कभी इल्या के बारे में सोचने पर उसे अपने बेटे के जिद्दीपन पर आश्चर्य होता था। उसके आस-पास के सब लोग बुद्धिमान् होते जा रहे थे। फिर इल्या क्यों डर लगा रहा है।

भाई के घर में वह प्राय पापोवा और उसकी लड़की से मिलता। वह जैसी सुन्दर थी वैसी ही विस्मित गम्भीर और उदासीन भी थी। वह उससे बहुत कम बोलती और जैसा कि उसके और इल्या के बीच में प्राय बातें होती थीं उसने सोचा कि अपने बेटे को उसने खामखाह नाराज किया है। पापोवा उससे झेंपती थी। खास अवसरों पर पापाशा की मूर्ति उसकी स्मृति में नए रूप से जागृत हो जाती और आश्रय के अतिरिक्त और किसी प्रकार की भावना पैदा न करती। वह विस्मय में सोचता—'देखा क्या बात है? एक व्यक्ति को तुम चाहते हो उसके बारे में सोचते रहते हो—समझ में नहीं आता कि तुम्हें उसकी क्या जरूरत है, और उससे बातचीत करना तो गूँगे-बहरे की तरह असम्भव है।

हाँ ठीक है। सब बदलता जा रहा है। यहाँ तक कि मजदूर भी बड़े मजबूरी से रुष्ट और असन्तुष्ट के शिकार होते जा रहे हैं। और औरतें और भी अधिकाधिक चिल्लाने लगी हैं। मजदूरों की बस्ती में अशान्ति का कोलाहल सुनाई देने लगा था। सन्ध्या समय ऐसा प्रतीत होता था कि वहाँ भेड़िए चिल्ला रहे हैं। और यहाँ तक कि गलियों की चिड़ी रात भी नाराजगी के साथ चरमराती थी।

मजदूरों में एक प्रकार का भय और कहीं दूसरी जगह भटकने की अस्थिरता-सी दिखाई दे रही थी। बिना किसी कारण नाराज हुए नौजवान मजदूर अचानक दफ्तर में आ पहुँचते और माँग करते कि उनका हिसाब कर दिया जाए।

'तुम आप कहाँ जा रहे हो?' आर्त्र पूछता।

दूसरी जगह देखने के लिए।

क्या कारण है कि ये लोग ऐसे नाराज दिखाई दे रहे हैं?' ज्येष्ठ अर्तामानोव ने भाई से एक दिन पूछा—और अस

कसेई ने लोमड़ी जैसी धूर्ततापूर्ण हँसी से कन्धे हिलाते हुए कहा—"मजदूर सब जगह ही नाराज हैं और आन्दोलन कर रहे हैं।'

'हमारे यहाँ तो अभी ये बहुत चुप हैं। जरा पीतर्सबर्ग में जाकर तो देखो । हमारे यहाँ के सरकारी अफसर और मिनिस्टर भी वैसे नहीं जैसे होने चाहिए।"

और आगे चलकर उसने उसे कुछ ऐसी बातें सुनाईं जो बड़े भाई को बड़ी विचित्र मूर्खतापूर्ण और भयावह लगीं जिससे बड़े भाई ने नाराज होकर तर्जनी उठाकर उसे टोका—

'यह सब व्यर्थ है। जार से राज्य-शक्ति हाथ में लेने से हमारे सरदारों और सामन्तों को ही लाभ है क्योंकि उनके हाथ से शक्ति निकलती जा रही है। हम लोग बिना किसी राज्य शक्ति के मालदार बनते जा रहे हैं। देखो हमारा पिता तीज त्योहार के दिन मामूली रंग के जूते पहन कर आया करता था और हम विदेशों से आयात किए हुए पेटेन्ट चमड़े के जूते और रेशमी टाइयाँ पहनते हैं। हमें जार के अच्छे आज्ञाकारी सेवक बनना चाहिए न कि सूअरों की तरह उसके साथ व्यवहार करें। जार हमारे लिए देवदार का एक पेड़ है, जिससे छोटे-छोटे दाने के फल हमारी ओर भी गिरते हैं।

अलक्सेई इन बातों को सुनकर और जार से हँसा जिससे प्योत्र और भी नाराज हो गया। ज्येष्ठ अर्तामानोव को दिखने लगा कि अब लोग प्रायः जरा-जरा-सी बात पर हँसते थे। और इस नए स्वभाव में एक प्रकार की अप्रियता और मूर्खता थी। उन सब लोगों में से कोई भी उतने आनन्द से सांत्वना पूर्ण परिहास नहीं कर सकता था, जितना कि यह अमर वृद्ध बढ़ई सेराफ़िम।

प्योत्र अर्तामानोव इस सांत्वना देने वाले सेराफ़िम का

घनिष्ठ मित्र हो गया । अब प्योत्र अधिकाधिक उदास और दु:खी रहने लगा और उसकी प्रबल इच्छा होने लगी कि कभी-कभी वह शराब पिया करे । भाई के घर में पीने में उसे शर्म आती थी क्योंकि वहाँ सदा ही अजीब-अजीब बाहरी लोग भी होते थे । और इसके अतिरिक्त वह विशेषतः पाशेंका की नजर में शराबी नहीं होना चाहता था । घर में जब कभी वह नशे में आ जाता था तो नताल्या की नाराजगी से कन्धे उचकाए आहत और मूक सी नजर आती । वह चाहता था कि ऐसे मौकों पर वह उस पर चिल्लाए और गाली दे और उसके जवाब में वह भी उसे गाली दे । पर इस चुप्पी की हालत में वह मुटी-डरी सी दिखाई देती थी जिससे प्योत्र के हृदय में रोष पैदा होता था और उसे अपनी पत्नी के प्रति घृणा-सी आती थी । एक दिन अलीमातोव सराफिम के घर गया और बोला—

'बुड्ढे ! कुछ पीना चाहता हूँ ।'

प्रसन्नचित्त बढ़ई जरा मुस्कराया और समर्थन के भाव से बोला—

"यह तो मामूली बात है जैसे कि गर्मियों में सूरज ! प्रतीत होता है कि तुम थक गए हो । कोई बात नहीं हम तुम्हें शक्ति से भर देंगे ! और फिर—तुम्हारा काम भी तो कोई हल्का नहीं । तुम्हारे बालों पर यह दाढ़ी भी तो फिजूल नहीं आई !"

सराफिम अपने घर में अपने मालिक के लिए तरह-तरह के स्वादों की शराबें और लिकर रखता था और वह रङ्ग-बिरङ्गी बोतलों को घर के सब कोनों से निकाल कर लाता और शेखी मारने लगता—

'यह मेरा अपना आविष्कार है और एक विधवा सन्यासिनी इन्हें पूर्ण बना देती है । ओह ! कैसी गन्ध आ रही है ! जरा

इसे चखो तो ! यह चीड़ के अकुरों से बनाई गई है, और वसन्त के रस से भरपूर है । जरा देखो तो सही कैसी है !"

वह एक कुर्सी पर बैठकर अपनी खसजम की शराब का स्वाद लेता हुआ बहकने लगता—

'ओह ! कैसी साधुनी है । बड़ी भाग्यशाली स्त्री है । जिस किसी को भी प्यार करती है वही चोर निकलता है । और यह बिना प्रेमी के रह नहीं सकती यह उसका स्वभाव है । क्योंकि उसकी नसों में गरम खून दौड़ रहा है !"

'नहीं ! मैंने भी मेले में एक को देखा था ।' मर्तामानोव ने स्मरण कराया ।

"निःसन्देह ! सेराफ़िम ने उसका समर्थन किया और बोला—'ठीक है वहाँ तो दुनियाँ के कोने-कोने से चुना हुआ माल आता है । मैं खूब जानता हूँ !

सेराफ़िम को सबके बारे में विस्तृत जानकारी थी । उसने बड़ी मनोरंजकता से क्लर्क और मजदूरों की घरेलू बातों की चर्चाएँ शुरू कर दीं । सबके बारे में वह एक जैसी ही परिहास प्रिय-ध्वनि में बात करता और इसी प्रकार अपनी लड़की के बारे में भी उसने ऐसे जिक्र किया जैसे कि वह उसके लिए पराई हो ।

"उस शैतान ने भी जड़ूसी को खोने शुरू कर दिए हैं । वह लाहार शेवोव के साथ रह रही है और हाँ देखो तो कैसी अच्छी तरह रह रहे हैं ! सब जैसे का तैसा मिल जाता है ।"

सेराफ़िम का साफ़-सुथरा कमरा बहुत अच्छा था । उसमें चीड़ की महक आ रही थी और एक अन्धकार कोने में दीवार के साथ टिन की एक लैम्प लटकी हुई थी ।

कुछ शराब पीकर मर्तामानोव ने लोगों के बारे में शिका

पतें शुरू करदीं। बूढ़े बढ़ई ने धीरज रखने का उपदेश देते हुए कहा—

'यह कुछ नहीं, सब ठीक है। दुनियाँ भागी चली जा रही है, यही तो संसार की वास्तविकता है। अब तक मनुष्य सोया रहा—सोया रहा। अब जागा तो सोचने लगा—सोचने लगा। परन्तु अब उठा और चल पड़ा है! उसे चलने दो। तुम्हें इससे क्या! तुम्हें मनुष्य पर विश्वास करना चाहिए। तुम्हें अपने पर तो विश्वास है?

प्योत्र वर्तोमानोव चुप रह गया और सोचने लगा— अपने पर विश्वास करता हूँ या नहीं? और सेराफ़िम की साहसपूर्ण ध्वनि ने उसे सम्बोधन करते हुए सान्त्वना देना शुरू किया—

तुम यह मत देखो कि कौन कैसा है अच्छा है या बुरा। इससे कोई लाभ नहीं। यह हमेशा नहीं रहेगा। आज कोई अच्छा है तो कल बुरा। प्योत्र इल्यिच! मैंने बहुत देखा है—अच्छा भी और बुरा भी। आह! कितना देखा है—क्या देखा है! देखता हूँ—आज एक अच्छा है और कल नहीं! और—मैं जरा दूर हुआ कि वह नहीं रहा हवा में गर्द की तरह उड़ गया। और मैं भी क्या हूँ! किसलिए हूँ! लोगों के साथ एक मच्छर हूँ। एक दिन मैं भी नहीं रहूँगा और तू भी!'

सेराफ़िम ने बड़े गौरव के साथ समझाते हुए उँगली उठाई और फिर चुप हो गया।

उसकी बातों को सुनकर अर्तामानोव को कुछ प्रसन्नता हुई। उनमें उसे निःसन्देह सान्त्वना मिलती थी और मनोरंजन भी होता था। परन्तु, साथ ही अर्तामानोव को यह भी साफ़ दिखाई देता था कि यह बुड्ढा उसमें आत्मा की सच्ची बात नहीं कह रहा बल्कि पेशेवर सान्त्वना देने वालों की तरह उसका जी बहला रहा है

बँधा रहा है। सेराफ़िम की खिलवाड़ को देखते हुए उसने सोचा—

'कैसा शैतान और चालाक बुड्ढा है! निकिता ऐसा नहीं कर सकता।'

और जीवन में देखे अनेक सान्त्वना देने वालों की उसे याद हो आई—जिनमें निर्लज्ज चालाक स्त्रियाँ थीं, सरकस के भाँड और नट, जादूगर, जंगली जानवरों को सधाने वाले, शराबी गवैए और काला स्यापा था। वह अपने को मनुष्य जाति का मित्र कहता था। मार्ई अलबर्ई में भी किस प्रकार इन लोगों के साथ समानता थी। तिखान ब्यालाव में यह बात नहीं। और पावला मैनातो में भी नहीं है।

शराब के नशे में वह सेराफ़िम से बोला—"शैतान बुड्ढे! झूँठ बोलता है।

बुड्ढे बढ़ई ने अपनी अस्थिल आँखों पर हथेली मारते हुए गम्भीरता से कहना शुरू किया—

'न-ही! जरा सोचो और समझो मुझे झूँठ बोलने की क्या जरूरत? मैं तुमसे दिल की सच्ची बात कहता हूँ। मुझे सचाई का कुछ पता नहीं इसका मतलब है कि मैं झूठ भी नहीं बोलता?

'तो फिर चुप रहो।'

'क्या मैं गूँगा हूँ, जो चुप रहूँ!—सेराफ़िम ने हँसते हुए पूछा और मुस्कराहट से दीप्त चेहरे से बोला—'मैं बुड्ढा हो गया हूँ अब थोड़ी ही उम्र रह गई है। मैं सच को क्या समझ सकता हूँ। अब तो जवानों को चाहिए कि सचाई को समझने की कोशिश करें। इसीलिए तो उन्हें ऐनकें दी गई हैं। मिरोन लकसईमिच ऐनक पहन घूमता है और वह आर-पार देखता है कि कौन कहाँ,

कैम्प और क्या है।

सराफिम के मिरान का न चाहने के कारण प्योत्र मानाव को खुशी हुई थी। जब सराफिम ने अपना सिगरा उठ... बड़े श्रम के साथ मगोम म गाना शुरू किया—

'फुरक-फुरक फटफाता राजा
करघों के कमरा म जाए।
नाक-नुकीली प्यारी-प्यारी
जिस पर उनके रहे बढ़ाए।
विचार उसका अच्छा कितना
मूर्खों से ससार भरा है।
चतुर न कोई अधिक है उसम
और न अधिक खरा है।

'ठीक है।' मर्तामानोव न समर्थन किया।

और फिर अधिक नशे में चूर हो वह पाँव पटक-पटक कर गा उठा—

बाज नहीं वह चील नहीं वह
अच्छे चिड़ियों के झपट जा।
मक्खि है भगवान का प्यारा
नाम भगसी उसका ही था।

उसह मर्तामानाव को यह और भी अधिक पसन्द आया। फिर सराफिम न निलज्जता से याकोव के बारे में भी गाना शुरू किया—

बालाओं के आलिंगन को,
याकाजी रहत आतुर।
प्यास नहीं आग का उनको
भूल गए इतना बहादुर।

इस प्रकार भोर तक वे अपना मनोरंजन करते रहे। फिर दरबान को खटखटाता हुआ तिखोन क्यालोव अन्दर आया और उसने मालिक को जगाना शुरू किया। वह उदासीन भाव से बोला—

'उठो! समय हो गया है। मिल की सीटी बजने वाली है। तुम्हें मजदूर इस हालत में देखेंगे—तो अच्छा नहीं।'

मर्तामानोव जोर से चिल्लाया—

'क्या अच्छा नहीं? मैं मालिक हूँ या कुछ और!"

दरबान चुप हो गया और भारी शरीर को झटकाता हुआ चला गया। प्योत्र फिर सो गया। इस तरह वह कभी-कभी सन्ध्या तक सोता रहता और सेराफिम के यहाँ ही फिर जम जाता।

एक दिन वह आनन्दी लुघमिजाज बढ़ई काम करते-करते मर गया। वह डाक्टर के कान सहायक के पुत्र के लिए जो डूब कर मर गया था ताबूत तैयार कर रहा था कि अचानक फर्श पर गिरा और वहीं ढेर हो गया। मर्तामानोव की इच्छा हुई थी कि वह उस कब्रिस्तान तक पहुँचा कर आए। उसके बाद वह लोगों से खचाखच भरे हुए गिरजे में गया। वहाँ उसने लाल सिर वाले पादरी अलक्सान्द्र की अन्त्येष्टि-प्रार्थना सुनी। यह विनयी पादरी ग्लेब का उत्तराधिकारी था। ग्लेब पता नहीं किस कारण से एकदम पादरी पद को छोड़ कहीं चला गया था। पादरी अलक्सान्द्र बड़ी गम्भीरता से प्रार्थना करता था। और आज वह मिल के स्कूल के मास्टर सुगठित शरीर पिस्से के समान ज्ञिलने वाले येझोव द्वारा सगठित सङ्गीत-मंडली के साथ बहुत अच्छा गा रहा था। इस भीड़ में अनेक नवयुवक भी थे।

'आज रविवार है' मर्तामानोव ने लोगों की इतनी भीड़ होने का कारण सोचा।

इस छोटे-से हल्के ताबूत को नवयुवक मजदूर उठाए हुए थे और बड़ी उम्र वाले मजदूर जरा दूर हो थे।—जिनदा सरा फ्रिम की बेटी इस अवसर के अनुपयुक्त चमकीले रङ्ग-बिरंगे लबादे को पहन उदास चेहरे और निरश्रु पीछे-पीछे चल रही थी। जिनदा के साथ साफ-सुथरे कपड़े पहने चौड़े कन्धों वाला एक पुरुष उसके बराबर-बराबर चल रहा था। तिखोन ब्यामाव के भारी कदमों से रेत के बजने की आवाज आ रही थी। सूर्य बड़ी तेजी से चमक रहा था। नौजवान साथ सुगठित रूप से गा रहे थे। लेकिन इस अन्तिम बिदाई के गीत में विषाद की ध्वनि का एक विचित्र प्रभाव था।

"यह अच्छी ही बात है कि इतने लोग एकत्र हो गए हैं। मर्तामानाव ने अपने चेहरे से आँसू पोंछते हुए सोचा। तिखोन उसके पास पहुँचा उसके पाँवों की ओर निहारते हुए कुछ देर सोच कर बोला—

"यह सबका मनोरञ्जन करता था। जरा-सा इशारा होते ही अपना सितारा बजाने लगता था। और इतना कह कर उसने उसकी नकल में हवा में हाथ हिलाया।

"इसके साथ एक अवारागर्द बुड्ढा भी और होता था जिसके साथ एक लड़की भी सांत्वना के गीत गाया करती थी।

अपने मालिक की ओर निहारते हुए उसने अनादर के भाव में दुखद कठोरता से कहा—

"लोगों के यह दिमाग तक फेर देता था। कभी किसी को नाराज नहीं करता था परन्तु उसका जीवन ठीक नहीं था।"

"ठीक था ठीक था!—उसके मालिक ने झिड़कते हुए कहा। "तू इन विचारों में ही जकड़ा पड़ा है। बस, कहीं उस कुत्ते सुसुन की तरह पागल न हो जाना।

और, फिर दरबान से मुँह मोड़ कर मर्तामानोव घर की ओर चला गया।

अभी दोपहर शुरू हुई थी परन्तु गर्मी बहुत थी। रेतीला मार्ग, नीली वायु और आसमान सब गर्म होते जा रहे थे। सन्ध्या समय सूर्य सफेद बादलों के पहाड़ों पर जब पहुँच गया तो वे बादल धीरे-धीरे अन्तरिक्ष में पूर्व दिशा की ओर तैर गए। मर्तामानोव थोड़ी देर बगीचे में घूम लेने के बाद दरवाजे से बाहर निकला। वहाँ तिखोन दरवाजों की चूलों पर भी तारकोल डाल रहा था। ये दरवाजे बरसात के कारण जंग लगने से चर्र-चर्र करने लगे थे।

'क्यों आज काम क्यों कर रहा है, आज तो रविवार है?'—मर्तामानोव ने प्रसन्न भाव से पूछा और उसके पास ही बेंच पर बैठ गया। तिखोन ने कनखियों से उसकी ओर देखा और धीमे स्वर में बोला—

'सराफिम अच्छा आदमी नहीं था।

"उसमें क्या बुरी बात थी?

इसके उत्तर में मर्तामानोव ने बड़ी अजीब बात सुनी। उस बात को सुनकर उसके शरीर पर काले-काले चीटे से रेंगने लगे।

वह अच्छी यादवाश्त वाला व्यक्ति था। बहुत कुछ याद रखता था। जो कुछ देखता था उसे याद रखता था। और क्या देखता था? बुराई, अभिमान और अफसोसता। और वह इन्हीं के बारे में सब को बतलाता था। उसने ही यह असन्तोष फैलाया है, यह मैं साफ-साफ देख रहा हूँ।"

अपने बुश से चूलों में तारकोल टपकाते हुए तिखोन और कटुता से कहता गया—

मनुष्य से स्मृति छीन लेनी चाहिए। इसी से बुराई बढ़ती

` । ए रा हो होना चाहिए, ताकि, अब एक नस्ल मर जाए तो उसके साथ ही उसकी बुराइयाँ उसकी मूर्खता सब दफ़न हो जाएँ । अब दूसरी नस्ल पैदा हो तो उन्हें पहली बुराइयाँ याद न रहें । वे सब पूर्व की अच्छी ही बातें याद रक्खें । और मुझे हो देखो । मैं बुड्ढा हो गया हूँ और शान्ति चाहता हूँ । परन्तु शान्ति है कहाँ ? घूम जाऊँ तो शान्ति मिल जाय ।

अब से पहले सिलोन ने कभी इतनी देर तक और इतनी दुखी करने वाली बात नहीं कही थी । सदा की भाँति मुख्य आज उसके शब्दों में पता नहीं किस कारण अर्तामानोव के प्रति विद्रूप था । इस दरबान की धुँधली आँखों, तरल आँखों और पत्थर में लकीरें पड़े जैसे माथे को देख अर्तामानोव को उसकी बढ़ती हुई विकृति से आश्चर्य हुआ । सिलोन के माथे पर बल वस ही गहरे थे जैसे कि टखने के पास जूते में गहरे बल होते हैं उसके ऊँचे गाल जो आयु के कारण बाल रहित हो चुके थे, अब पूरे पक चुके थे और उसकी नाक स्पंज के समान छिद्रित हो चुकी थी ।

"यह सिड़ी और बुड्ढा हो गया है," अर्तामानोव ने सोचा और इस विचार से उसे प्रसन्नता हुई । अब यह बहुत बकवास करने लगा है, काम नहीं करता । इसका हिसाब कर देना चाहिए । मैं इसे एक अच्छी रक़म देकर विदा किए देता हूँ ।

एक हाथ में ब्रुश और दूसरे में तारकोल की बाल्टी थामे हुए तिखान अर्तामानोव के समीप आया । और अपने ब्रुश से काले लाल रङ्ग वाले कच्चे माँस की तरह के रङ्ग की मिल की इमारत की ओर इशारा करते हुए यह बोला—

"तुम कभी सुना है कि यह एक-छबीला सिदोव और उसका ऐयाशाना भाई यसार मरोज़ाव और ज़िन्दा भी—क्या गुस्समगुस्सा कहा करते हैं कि जिस मिल को पराए हाथों ने

बनाया है—यह एक बुरा काम है, इसे नष्ट कर देना चाहिए ।"

'प्रतीत होता है कि वे तेरे विचारों पर चल रहे हैं,' — प्योत्र ने हँसते हुए कहा ।

'मेरे विचार ! तिखोन ने अस्वीकृति में सिर हिलाते हुए कहा—' नहीं ये मेरे विचार नहीं । मैं ऐसी कल्पनाएँ नहीं करता । हर-एक आदमी अपने लिए काम करे तो किसी प्रकार की बुराई नहीं पैदा होगी । परन्तु, वे कहते हैं— सब कुछ हमने ही बनाया है, हम ही मालिक हैं ! प्योत्र इल्यच ! जरा देखो और सोचो कि क्या यह ठीक है । वैसे सब कुछ उन्होंने ही तो बनाया है । उन्होंने ही तुम्हें इस कारोबार में जोता है यह ठीक है । तुम इस सब ठीक रास्ते पर ले आए हो ।

अर्तामानोव गहन गम्भीरता से खड़ा हो उठा । जेब में हाथ डाल तिखोन के सिर से ऊपर बादलों की ओर निहारता गड़बड़ विचारों को सोचता हुआ बोला—

देखो, मैं बेशक सब कुछ समझता हूँ । इतने वर्षों तक तुम मेरे साथ रहे हो । और तुम अब बूढ़े हो चुके हो और अब तुम्हारे लिए काम करना मुश्किल हो गया है ।

'ये सब बातें कहने के लिए तुम्हें सराफिम ने हौसला दिया है ।' तिखोन ने मालिक की बात अनसुनी करते हुए कहा ।

'सुनो अब तुम्हें आराम करना चाहिए ।'

"आराम तो सभी को करना चाहिए । क्यों नहीं ?"

और सुनो, तुम्हारे साथ रहना बड़ा मुश्किल है ।' तिखोन स्वाभाव अपने बर्खास्त होने से आश्चर्यान्वित नहीं हुआ । परन्तु वह भारे से बोला—

"अच्छा कोई बात नहीं।"

"मैं तुम्हें अच्छी रकम दूँगा—प्रतामानोव ने उसकी स्थिर भावभंगिमा को देखते हुए वचन दिया। सिडोन ने अपने मटमैले जूतों को भूरते हुए कोई जवाब नहीं दिया। प्रतामानोव ने कठोरता से कहा—

अच्छा! नमस्कार।"

"बहुत अच्छा" दरबान ने जवाब दिया।

प्रतामानोव इस आशा से कि वहाँ उसके मिलने की नदी के किनारे चला गया। वह उसी चबूतरे के बीच गया जहाँ अपने बेटे हत्या से उसका एक दिन झगड़ा हुआ था। वहाँ सराफिम ने पेड़ की सफेद-सफेद शाखाओं से उसके लिए राजगद्दी-सी बना दी थी। इस जगह से मिल, घर, आँगन मजदूरों की बस्ती, गिर्जा, कब्रिस्तान सब-कुछ अच्छी भाँति दिखाई देते थे। अस्पताल और स्कूल की सफेद खिड़कियाँ बर्फ की तरह चमक रही थीं। मनुष्यों की छोटी छोटी मूर्तियाँ जमीन पर इधर उधर चलती हुई ताना बाना बनाती दिखाई दे रही थीं। वे लोग मिल की बस्ती की रेत पर कम चमते दिखते थे। गिर्जे के पास आँगन में बकरियों का झुण्ड खिलौनों के समान चर रहा था, जिन्हें पुराने जुलाहे मारिस्का के पोते एक बाँके बाल कम्पाउण्डर मराजाव ने पाला हुआ था। मिल की औरतें उससे बच्चों के लिए बकरियों का दूध खरीदती थीं। कारखाने के पास घास सहित जमीन के चौकोर टुकड़े में छोटे चीस, बाप बहुत साथ घूम रहे थे। अपने लाल की पीली सफेद टोपियों में वे पागलों के समान दिखाई दे रहे थे। मिल के आस-पास बहुत से पक्षी—कौवा, चिड़िया बुम्भिया इत्यादि भी चहक रहे थे और आसमान में उड़ते हुए अपने रङ्ग बिरंग पङ्खों को चमका रहे थे। इनके बीच जमीन पर नूर नीस

कबूतर भी दिखाई दे रहे थे। खासतौर से वगाक्षा नदी के किनारे शराबखाने के पास वे बहुत बड़ी संख्या में उड़ रहे थे जहाँ सन ढोकर लाने वाले किसान प्रायः रुकते थे।

परन्तु, कुछ समय से अर्तामानोव को अपनी इस बड़ी मिल के कारोबार से किसी प्रकार का आनन्द और अभिमान अनुभव नहीं होता था। अब अर्तामानोव इस मिल को तरह-तरह की कुदृष्टियों नाराजगियों और अप्रियताओं का कारण समझने लगा था। उसे यह देखकर दुःख होता था कि उसका भाई भतीजा और आस-पास के अन्य लोग किस प्रकार उसको निहारते थे, उसकी ओर चिल्लाकर हाथ हिलाते थे और खानाबदोश असभ्य लोगों की तरह उसके बड़प्पन का ध्यान न कर उससे उलझ पड़ते थे। मिल के बारे में जिक्र आते ही वे उसकी सत्ता को भूल जाते थे और जब कभी वह उन्हें स्मरण करवाता कि वह उसका मालिक है तो सब चुप हो सहमत हो जाते। परन्तु किसी भी छोटे या बड़े मामले में वे लोग करते थे अपनी मर्जी की ही। इस प्रकार की बातें बहुत दिनों पहले से ही होने लगी थीं, जब उसकी इच्छा के विरुद्ध मिल में बिजलीघर भी बना लिया गया था। लेकिन ज्यादा अर्तामानोव को जल्दी ही मानना पड़ा कि बिजली की शक्ति सस्ती और सुरक्षा-दायक है परन्तु फिर भी वह अपनी नाराजगी नहीं त्याग सका था। ये छोटी-छोटी नाराजगियाँ बहुत थीं, जो लगातार संख्या और कटुता में बढ़ती जा रही थीं।

खासतौर से उसे अपने भतीजे मिरोन से बहुत नाराजगी थी। वह अपनी पढ़ाई समाप्त कर चुका था। अब वह अजीब तरीके से चमड़े का फाट सुनहरी एनकें पीस जूते पहनता और नाराजगी से भौंहें चढ़ाता हुआ भौंकता—

"चाचा! ये सब पुरानी बातें हैं। चाचा, अब जमाना

पसट गया है।"

कभी कभी उसे ऐसा भी प्रतीत होता था, कि जैसे वह किसी कठोर स्वामी के सामने हो। फिर वह उससे डरता भी था। परन्तु उसका डर यहाँ तक ही सीमित नहीं था। वह उसकी और बातों से भी डरता था। मिरोन उसके सामने एक आग्रही अभिमानी और मनमानी करने वाला था। एक दिन उसने यहाँ तक कह दिया—

'देखो चाचा! आप जैसे लोगों से कुछ उन्नति नहीं कर सकता। तुम्हारे जैसों के साथ जीवन बड़ा मुश्किल है।

अर्तामानोव यह सुनकर ठिठक गया। उसके हृदय को इतनी ठेस लगी कि उसने यह भी नहीं पूछा कि— क्या?' इस प्रकार अपमानित होकर वह घर चला आया और कई सप्ताहों तक न अपने भाई के घर और न मिल में ही गया। उसे भय था कि कहीं मिरोन से उसका आमना-सामना न हो जाय।

मिरोन अब बोरा पापावा की लड़की के साथ शादी करने के सकल्प कर रहा था। वह अपनी भूरे बालों वाली माँ के समान ही लम्बी पतली और बड़ी हो चुकी थी। ओरा की तरह यह लड़की भी अप्रियतापूर्ण हँसी में हँसती थी। वह गदन हिलाती हुई अपनी बड़ी-बड़ी खुली आँखों से पूछती और निलज्जता से निहारती जैसे कि समझहीन अविश्वासी लोग किया करते हैं। वह बातों बातों में मक्खी की तरह भिनभिनाती हुई गाती और सुबह से शाम तक पर्दे पर रंग बिरंगे धब्बे डालती हुई एक तस्वीर बनाती रहती। फूंस का बना उसका हैट उसकी ठोढ़ी के नीचे बंधे फीते से पीठ को लटका रहता और उसके फूंस जैसे ही पीले पीले बालों का धूप में चमकाता। वह नये तरीके से कपड़े पहन होती और उसकी टाँगें घघरे के नीचे घुटनों तक दिखाई देती थीं।

मिठस्मे गारिस्स्वेतोव से भी उसे बड़ी घृणा थी। वह घर एकदम आ धमकता, चला जाता और फिर आ धमकता। आते समय वह लोगों की ओर रीब से छोटे पालतू कुत्ते की तरह उछलता और भौंकता –

"तुम लोग चाहते हो कि रूस की सम्पन्न आध्यात्मिकता को अमरिका की आत्महीनता में बदल दो ? क्या तुम लोगों के लिए चूहेदानियाँ बनाना चाहते हो ?

गोरिस्स्वेतोव की इन सब चीख़ों में ज्यात्र प्रतामानोव एक प्रकार की सचाई की झलक पाता। साथ ही वह इन सब में प्रायः तिखोन ब्यालोव की मूर्खता के साथ समानता भी पाता। वह जानता था कि यद्यपि इस उछल-कूद करने वाले छोटे-से आदमी और भारी भरकम उदासीन तिखान के बीच बहुत अन्तर था। एलिजाबेत पामोवा की ओर उछलकर गोरिस्स्वेतोव चिल्लाया—

"तू क्यों चुप है तुझमें तो *मानवता की आत्मा है ?'*

वह मुस्कराती तो उसके अस्थिर चेहरे में चकी पतझड़ जैसी नीली-नीली आँखें चमकती रहतीं। ज्येष्ठ प्रतामानोव इन सब अद्भुत और समझ में न आने वाले शब्दों को सुनता रहता।

"यह कल्पनावाद की पीड़ा है।' मिरोन ने अपनी ऐनक के शीशों को साफ करते हुए कहा।

अलक्सेई कहीं मास्को में घूमता फिर रहा था। याकोव लगातार मोटा और भारी होता जा रहा था और वह बातचीत से किनारा किए रहता। वह कम बोलता। परन्तु, कभी-कभी वह मिरोन और गोरिस्स्वतोव से बहस में उलझ पड़ता। याकोव के तातारों जैसी लाल-लाल दाढ़ी उग रही थी और वह सदा लोगों को झिड़कता रहता। ज्येष्ठ प्रतामानोव जब इन आन्दोलित मदान्ध भागों के प्रति अपने बेटे का बोलना सुनता तो प्रसन्न हो

आसा—

"सचमा ! आप लोग सड़क के गड्ढे में ही बैठे रहें। लेकिन अच्छा हो, आप ज़रा सादगी से रहना सीखें।'

ज्येष्ठ अर्तामानोव ने देखा कि याकोव को उस समय बड़ी हँसी आई जब एलिज़ाबेत पापाशा ने मास्को आ कर गोरित्स्वेतोव से शादी कर ली। मिरोन इस बात से बड़ा नाराज़ था। वह अपनी नाराज़गी को भी न छिपा सका। एक दिन उसने अपनी नुकीली दाढ़ी को हिलाते हुए—जो व्यापारियों की-सी नहीं दीखती थी—बातचीत करते हुए बड़ी स्पष्ट मक्कारी से कहा—

"स्तेपान गोरित्स्वेतोव जैसे वे एक मृत जाति के लोग हैं। संसार के किसी कोने में इस प्रकार निठल्ले लोग नहीं मिलेंगे।'

याकोव ने उसके क्रोध को सुलगाते हुए कहा—

और, ऐसी ही जाति का एक आदमी तुम्हारी नाक के नीचे से तुम्हारे प्रेम का टुकड़ा चुरा ले गया !

अपने कंधों को उचकाते हुए मिरोन ने उत्तर दिया—

"मैं कल्पनावादी नहीं।

यह क्या ? यह क्या चीज़ है ?" ज्येष्ठ अर्तामानोव ने पूछा और मिरोन ने प्रत्येक शब्द का धीरे धीरे उच्चारण करते हुए कहा—

'कोई नहीं समझता कि कल्पनावादी कौन होता है ? और चाचा तुम भी इसे नहीं समझते—यह सुन्दरता के लिए ऐसी ही चीज़ है जैसे गंजे सिर के लिए नकली बाल या किसी पोपले के लिए नकली दाँत।

'अच्छा ! लगता है किसी ने तुम्हारी नाक चपटी कर दी

है।" प्योत्र मर्तामानोव ने प्रसन्नता से कहा।

इस प्रकार की छोटी-छोटी बातों से प्योत्र मर्तामानोव खुश हो जाता और इन नई रोशनी के लोगों द्वारा किए गए अपमान का बदला ले लेता था उसके कारोबार का लगातार अपने हाथ में कर उसे एक ओर फेंकते जा रहे थे। परन्तु अपने इस एकांत में भी उसने विषादपूर्ण आनन्द अनुभव करना शुरू किया। इस एकांत में प्योत्र मर्तामानोव का नए-नए लोगों से परिचय होता।

प्योत्र मर्तामानोव एक अच्छा आदमी था। परन्तु जीवन ने उसके साथ कठोरता से सौतेली माँ की तरह व्यवहार किया था। उसका जीवन ही बाप के आज्ञाकारी मूक सेवक के रूप में शुरू हुआ था जिसने उसे जीवन के सुख की जगह एक मूर्ख नीरस स्त्री से ब्याह दिया था और उसके कंधों पर काम का भारी बोझ लाद दिया था। निःसन्देह उसकी पत्नी उससे प्यार करती थी। जीवन के पहले दिन उसके साथ बुरे नहीं गुजरे थे। परन्तु, अब वह अनुभव करने लगा था कि वह चरित्रहीन जुलाहन जितना उससे बड़ी उमङ्ग और गरमी से प्यार करती थी और उसे सहवास के आनन्द का आश्वासन प्रदान करती थी। मेला में पेशेवर स्त्रियों की उमङ्गों का तो वह विचार ही नहीं करना चाहता था। उसकी पत्नी का सम्पूर्ण जीवन भय में गुजरा था— पहले वह मसखराई और कैरोसीन लैम्प से डरती थी और बाद में बिजली की लम्प से खासतौर पर जब कभी उसकी कुप्पी फट जाती थी। बिजली की बत्ती के एकदम जलने पर वह भौंचक हो जाती और अपनी छाती पर क्रास का निशान करती। एक बार वह ग्रामोफ़ोन की दुकान पर भयातुर होकर उससे चिपट कर बोली—

"ओह! जान दो। इसे मत खरीदो!" उसने पति से प्रार्थना की— "हो-न-हो कोई दुष्ट आत्मा इसमें छिपी हुई है

ो चिल्ला रही है ''

वह अब मिरान डाक्टर याकोब्स और अपनी लड़की तत्याना से भी डरती थी और दिन भर सुबह से शाम तक खा कर मोटी होती जारही थी। इस पर उसका भाई भी अचम्भा करता था। बच्चा ने उसकी अवज्ञा करनी शुरू कर दी थी। एक दिन जब उसने बड़े याकोव से शादी करने के लिए कहा तो उसने हँसते हुए कहा था—

'माँ अच्छा हो तू कुछ और खा। इस पर वह आज्ञाकारी और अविश्वासपूर्ण भाव से बोली—

'क्या मैं समझती हूँ कि मुझे अधिक नहीं खाना चाहिए।'

और फिर खाने लगी।

बाप याकोव से बोला—

'क्यों अपनी माँ की मखौल करते हो? शादी तो तुम्हें करनी ही चाहिए—यही उसका समय है।'

गृहस्थ के बन्धन में बँधने का समय ही नहीं है। याकोव ने कारोबारी गम्भीरता से उत्तर दिया।

क्या कारण है तुम सब जमाने से डर रहे हो? —बाप ने नाराज होते हुए कहा। बेटे ने कोई उत्तर नहीं दिया और अपने कन्धे हिला कर रह गया।

वह भी कभी-कभी कह उठता—

पिताजी! आप भी नहीं समझते।' वह यह बात धीमे से कहता। फिर भी आखिरकार कोई ऐसी बात नहीं थी जिसे पिता बेटे से कम समझता हो। लोग पिछले जमाने में नहीं रह रहे थे और अब समय कुछ और हो आ गया था। और जमाना भी इसी तरह चल रहा था।

चेहरे पर एक ऐसा अजेय भाव था जो पक्षियों में दिखाई देता है। उसकी चोटी छोटी छाती चपटी और नाक मीली थी। यह अपनी बहिन के पास शहर में रहती थी और पता नहीं किस कारण से हाईस्कूल पास न कर सकी थी। वह पक्षों से बहुत डरती थी। मिरोन से वह सहमत थी कि ज़ार से राज्य-शक्ति छीन लेनी चाहिए। कुछ समय से उसने सिगरेट पीना भी शुरू कर दिया था। गर्मियों में जब वह मिस के पास घर में आती, तो माँ की ओर ऐसे चिल्लाती जैसे कि वह कोई मोकगनी हो और बाप के साथ दाँत भींचकर अनादर से जवाब देती। वह दिन भर किताब पढ़ती रहती। सन्ध्या समय वह शहर में चाचा के घर चला जाती और वहाँ से लौटते समय सुनहरी दाँतों वाला डाक्टर आकस्मिक उस पर पहुँचा जाता। रात में वह कन्या-सुलभ व्यग्रता से भलाभाँति सो नहीं पाती थी और अपनी चप्पलों से मच्छरों को ऐसे मारती जैसे कि पिस्तौल चला रही हो।

अर्तामानाव का अपने चारों ओर की दुनिया मिरोन की घृणापूर्ण बातों में लेकर लूले-लँगड़े टूटी कमर बिखरे बालों वाले स्टोकर वास्का के निरर्थक गीतों तक—सब अजीब और मूर्खतापूर्ण दिखाई दे रही थी। छुट्टियों के दिन वास्का—जो उसकी रसोइन से प्रेम करता था रसोईघर की खिड़की के नीचे आँखें बन्द कर हार्मोनिका पर गाता—

ज्यों मधु का पाए बिना
तनिक न आए चैन।
त्यों मुख तेरा देखना
चाहूँ प्रिय दिन रैन॥

और काफी समय से आन्या ने उस दृश्य के बारे में कुछ नहीं बताया था। और आजकल व्यथित व्याकुल अर्तामानाव का सहसा बड़े बेटे की याद आने लगी। हो सकता है कि दृश्या

अपने दुराग्रह का पर्याप्त दण्ड मिल चुका था। इस बारे में उसे तब अनुभव हुआ जब उसके प्रति मलवन्सई के भावों को उसने बदलते देखा। एक दिन सन्ध्या समय जब वह मलवन्सई के घर गया और सामने के हॉल में अपना कोट उतार रहा था उसने मिरोन को कहते सुना जो अभी मास्को से वापिस आया था—

'दल्या उन आदमियों में से है जो दुनियाँ को किताबों में देखते हैं तथा भाई और गाय में अन्तर नहीं बता सकते।

'झूठ है। मर्तामानाव ने अपने बेटे के प्रति नतीजे के विरोध को देखकर कुछ संताप के साथ सोचा।

मलवन्सई ने पूछा 'क्या वह अभी शास्त्स्वतोव के साथ एक ही पार्टी में है ?'

"उससे भी अच्छा। मिरोन ने उत्तर दिया।

बैठक में अन्दर घुसते हुए ऐंठ मर्तामानाव ने उन्हें अपने विचार में ही झिड़का— जरा ठहरो जिस दिन दल्या वापिस आएगा तुम्हें बता दूँगा वह क्या है।'

मिरोन ने उसी समय मास्को के बारे में बताना शुरू किया। वह बड़े रोष में सरकार की मूर्खता के विरुद्ध शिकायत करने लगा। जब मिरोन कागज का कारखाना लगाने की आवश्यकता का जिक्र कर रहा था (जिसके कारण सब उससे ऊब चुके थे) नताल्या बेटे के साथ अन्दर आई।

"बापा! हमारे यहाँ पैसा बेकार पड़ा है वह बोला। नताल्या एकदम लाल होकर (यहाँ तक कि उसके कान भी लाल पड़ गए) चिल्लाते हुए आपे से बाहर होकर बोली—

कहाँ है यह पैसा किसके पास है ?

मर्तामानाव एकदम उदासीन हो गया, उसे ऐसा दिखने

लगा जैसे कोई देखा भाला कमरा, जिसकी सब चीजों से वह परिचित था अब खाली और नीरस हो गया है। यह एक प्रकार की शारीरिक चिन्ता और घबराहट, एक गाढ़े धुम्ब की तरह बाहर से आती जो उसके कानों को बन्द कर आँखों को ढक देती। और इससे वह शारीरिक थकान बीमारी और मृत्यु के भयानक विचारों में डूब जाता।

'मैं तुम सब लोगों से ऊब चुका हूँ' वह बोला। "तुम अबस मुझे किस दिन छुट्टी मिलेगी ?

याकोव बड़बड़ाया—

'परन्तु हमारे यहाँ तो पहले ही काफी मुसीबतें हैं।" और नतास्या चिल्लाई— और अभी भी इन मजदूरों कारण तुम कहीं बाहर नहीं निकल सकते! सब जगह शराबीपन और दुराचार फैला हुआ है।

मर्तामानोव उठकर खिड़की के पास पहुँचा। वहाँ जमीन म पहरा ऊपर उठाए तिमोन ध्यासाव खड़ा था जो किसी छोटी लड़की को पथ पर सब दिखा रहा था।

आह! मू मायम। प्योत्र मार्तामानोव ने अपनी नीरसता भंग करते हुए कहा। इस प्रकार के बाह्य विचार उसके दिमाग म चूहों की तरह तेजी से दौड़ जाते और वह उनके आकस्मिक आगमन से प्रसन्न हो जाता। इनसे उसे किसी प्रकार की चिन्ता नहीं होती थी क्योंकि वे सिर्फ अचानक ही प्रगट होते और फिर छिप जाते।

'सो! यह सिपतोम है।' प्योत्र मर्तामामोव बहुत चिढ़ गया, जब उसने देखा कि उसके भाई ने सिपतान को एक साल तक इधर-उधर भटकने के बाद उसके वापिस आने पर उसे अपने यहाँ काम पर लगा लिया था। और सिपतान ने आते ही यह

अप्रिय समाचार दिया था कि पता नहीं उनका छोटा भाई निकिता कहाँ चला गया है। प्योत्र का विश्वास था कि यह बुड्ढा दरबान जानता है कि निकिता कहाँ चला गया है परन्तु सिर्फ उन्हें दुःखी करने के लिए ठीक-ठीक नहीं बताना चाहता। इस व्यक्ति के कारण ही ज्येष्ठ वर्तामानाथ अपने भाई से मनमुटाव कर चुका था और अलक्सेइ ने फिर भी बड़े जोर से विश्वास के साथ उसकी तरफदारी की—

'जरा सोचो एक आदमी ने जीवन भर हमारे यहाँ काम किया है, और हमने उसे झट बाहर फेंक दिया! क्या यह ठीक बात है?

प्योत्र भी जानता था कि यह बात ठीक नहीं है। परन्तु वह अपने घर तिखोन की उपस्थिति सहन नहीं कर पाता था। उसकी पत्नी ने भी शायद जीवन में पहली बार अलक्सेइ का पक्ष लिया और अपने स्वभाव के विरुद्ध असाधारण दृढ़ता से वह बोली—

'प्योत्र इल्यिच! यह बुरी बात है। चाहे तुम मुझे भले ही मारो परन्तु बुरी बात है!'

नात्या से मिलकर उन्होंने उसे समझाया और शान्त किया, परन्तु उसकी आहत अन्तरात्मा ने विजय से कहा—

क्या? तुम्हारी मर्जी किसी के लिए कानून नहीं बेलती!'

अब उसकी आहत अन्तरात्मा अधिकाधिक स्पष्ट अनुभव होने लगी था। अपने भारी शरीर को उठाते हुए ज्येष्ठ वर्तामानाथ पहाड़ी पर पहुँचकर चीड़ के पेड़ के बीच आरामकुर्सी पर बैठ जाता और अपनी आहत अन्तरात्मा के प्रति हार्दिक अनुकंपा अनुभव करता। उस अभाग्यशाली अन्तरात्मा के बारे में कल्पना करते हुए वह एक प्रकार की मधुर-कटुता भी अनुभव करता, जिसके

उत्तम गुणों का कोई पारखी नहीं था। वह इस अन्तरात्मा के बारे में उतनी ही आसानी से कल्पना करता जिस प्रकार गर्मी में किसी दिन दलदलों के ऊपर से नीले आकाश में सफेद-सफेद बादल उठने लगते।

मिल और उससे पैदा हुए आडम्बर तथा उसके चारों तरफ की चीजों को देख वह पूछता—

"क्या इन सब आडम्बरों के बिना जीवन सम्भव है ?"

परन्तु कारखानेदार मर्त्यामानोव ने आक्षेप किया—

"ये सब तिकोन की बातें हैं।"

पादरी ग्लब गारिस्वेतोव और दूसरे लोग भी यही कहा करते थे। हाँ लोग मकड़ी के जाले में फँसी मक्खी की तरह पंख फड़फड़ाते हैं।

"मुफ्त में भी थोड़ा जिया जा सकता है"—मिल मालिक ने जवाब दिया। कभी-कभी इस प्रकार दो गूँगी अन्तरात्माओं के बीच काफी गरम-गरम बहस छिड़ जाती और आहत अन्तरात्मा बड़ी निर्दयता से लगभग चिल्ला उठती—

"याद है मेले में शराब पीकर तू लोगों के सामने चिल्ला रहा था और अब्राहम की तरह बूढ़े इसाक़ की बलि चढ़ाने की बात बनाता था और बकरे की जगह तड़का तिकोनोव सामने आ गया। तुझे याद है या नहीं ? हाँ ठीक है वह ठीक है! और इस सचाई के कारण ही तूने मुझ पर फेंककर बोतल मारी थी। आह! तूने मुझे बरबाद कर दिया। तू तो मेरी भी बलि चढ़ाना चाहता था। और, किसको बलि, किसको ? क्या उस सीमा मान ईश्वर के लिए, जिसका निकिता जिक्र करता था ? उसी को ? आह! तू।"

इन दो आत्माओं के बीच भयङ्कर वाद विवाद की घड़ियाँ

म मिम मासिक ज्यष्ठ मर्तामानाव जार स माँस मोच मता ताकि सच्चा क्रोध के कडुवा आँसुओं को रोक सक। परन्तु य आँसू रुकते नहीं थे और धीरे धीरे उसके गालों से नीचे दाढ़ी पर और फिर हाथों पर टपक आते जिन्हें वह हथेली से पोछकर सुखाता और अपने मूंज लाल-लाल हाथों की ओर कुण्ठित दृष्टि से देखता। फिर वह बड़े-बड़े घूंटों में सीधा बोतल से मदिरा-पान करता।

परन्तु, इन कटुतापूर्ण दुःखद आँसुओं के होते हुए भी यह दुःखी अन्तरात्मा मर्तामानाव को बहुत प्यारी थी। वह ज्येष्ठ मर्तामानोव को वसी ही प्यारी दीखती जैसे कि वाष्पस्नानागार में सेवक द्वारा दी साबुन लगी सन की गरम-गरम छाल पीठ पर रगड़ी जाती है जहाँ हाथ नहीं पहुँच सकता।

और, अचानक सुदूर साइबेरिया में रूस के खिलाफ एक भयंकर मुक्का लगा।

मलकमाई उछलता हुआ अखबार को हिलाता हुआ चिल्लाया—

"यह डाका है! यह लूट है! और अपनी पक्षियों जैसी हथेली को छत की ओर उठाते हुए अंगुलियों को जोर से पकड़ते हुए बोला—

हम उन्हें बता देंगे।

मुनहरी बालों वाले डाक्टर ने जेब में हाथ डालते हुए और दीवार में लगी गरम अंगीठी की ओर झुकते हुए कहा—

'हो सकता है वे ही हम बतादें।'

यह ठीक जैसे लाल-लाल बालों वाला भारी मनुष्य सदा ही बकबक करता रहता था और चाहे उसके सामने कुछ भी कहा यह अफसोस कर उठता था। यह बीमार मरते हुए लामा

से भी उसी प्रकार परिहासपूर्ण बातें करता जैसे किसी मसखरे साथी की शाम में। स्पेष्ठ प्रर्तामानोव को यह भतीजा विदेशी-सा दिखलाई देता जो सदा व्यंग्य से हँसता, जिसे अजनबी लोगों के लिए समझना कठिन था। प्रर्तामानोव उसे नहीं चाहता था और नाहीं उस पर विश्वास ही करता था। इसी कारण बीमार पड़ने पर शहर के चुप रहने वाले जर्मन डाक्टर क्रोन से ही अपना इलाज करता था।

"बड़ी मस्तुरता से अपनी दाढ़ी को मरोड़ता हुआ जैसे कि उसके गलमुच्छों में दर्द हो रहा हो एक कोने से दूसरे कोने तक लमढींग की तरह कदम रखता हुआ वह सब को बता रहा था—

"यह सब अंग्रेजों के षड्यन्त्र से ही हुआ दिखता है।'

'ठीक है, मगर यह मामला क्या है?'—स्पेष्ठ प्रर्तामानोव ने दो एक बार पूछा परन्तु, न उसके चतुर भाई ने और ना बुद्धिमान भतीजे ने ही इस बारे में समझदारी के साथ बताया कि यह लड़ाई एकदम क्यों शुरू हो गई है। वह इन आत्मविश्वासी बुद्धिमान लोगों को अयार्ते देखकर खास तौर से क्षुब्ध था। उसने बेसमझे से ऐसी हरकतें कीं जिनसे कोई ऐसा सोच सकता था कि इस अचानक लड़ाई से अपसर्ड प्रर्तामानोव को ही कोई नुकसान पहुँच रहा है और वही किसी महत्वपूर्ण बात को करने में असमर्थ है।

शहर में एक धार्मिक जलूस निकाला गया। सारा दढ़ियल व्यापारी मण्डल बड़े रौब गौरव और भक्ति से भारी गिरी बर्फ पर अपने भारी कदमों से बैलों के समूह की तरह चल रहे थे और उनके पीछे सुनहरी पोशाक पहने, पादरी इकोनों और धार्मिक पताकाओं को उठाए सम्मिलित रूप से गाते हुए चल रहे थे। गिरजे की संगीत-मण्डली के गान की प्रतिध्वनि उठ रही थी—

"अपने भक्तों की रक्षा करो भगवान...।"

प्रार्थना के ये शब्द जो एक माँग की भावना रूप थे। व्यापारियों के गोल गोल मुखों से निकलती हुई सफेद भाप के साथ भौंहों, मूछों और दाढ़ियों पर जम कर उन्हें सफ़ेद बना रहे थे। इन सब में खासतौर से मोटा लाल-लाल गालों वाला और सफेद सीपी के बटन-सी आँखों वाला गाड़ी बनाने वाले का बेटा बरोपोनोव जोर से गा रहा था। इसने अपने बाप की सम्पत्ति के साथ-साथ विरासत में मर्तामानोव परिवार के प्रति शत्रुता भी प्राप्त की थी।

मर्तामानोव परिवार के सात व्यक्ति जुलूस में साथ-साथ चल रहे थे। सब से आगे अलक्सेई अपनी पत्नी का हाथ थामे लँगड़ा कर चल रहा था। उसके पीछे याकोव माँ और बहिन तत्याना के साथ उसके पीछे डाक्टर के साथ मिरोन और सब से पीछे हल्की जूतियाँ पहने ज्येष्ठ मर्तामानोव चल रहा था।

"यह क्या है ? धीरे से मिरोन ने पूछा।

"यह शक्ति का प्रदर्शन है।"—डाक्टर ने उत्तर दिया।

मिरोन ने अपनी ऐनक उतार कर रूमाल से पोंछी। डाक्टर बोला –

तुम देखोगे, उन्हें अवश्य ही मजा चखा दिया जाएगा!"

"हूँ। यह ऐसा कच्चा मांस नहीं जो जल्दी से जल जाए!"

"चुप रहो, ज्येष्ठ मर्तामानोव ने भतीजे को टोका। मिरोन ने अपनी लम्बी नाक के काले पर रखी ऐनक में से कनखियों से उसे देखा और फिर उंगलियों से चश्मे को ठीक किया।

"भक्तों की रक्षा करो भगवान्!" बरोपोनोव ने 'भक्तों' शब्द पर जोर देते हुए गाना शुरू किया और अपनी मोटी गर्दन

का पता नहीं किस कारण, पीछे का मोड़ कर अपनी लम्ब टोपी को हिलाया ।

पम्यानाव की लड़की बहुत अच्छे ऊँचे स्वर म गा रही थी । वह चालीस साल की थी फिर भी थी ताजी गोल और भारी वक्ष-वाली एक सुन्दरी । वह तीन बार विधवा हो चुकी थी । सारे शहर में बदनामी और निर्लज्जतापूर्ण जीवन म वह अग्रिणी थी । प्योत्र अर्तामानाव न सुना कि किस प्रकार वह धीरे-धीरे नतास्या को परामर्श दे रही थी—

"क्यों सम्बन्धिन ! तू अपने पति को लड़ाई पर क्यों नहीं भेज देती । वह तेरा इतना डरावना है कि उसे देखते ही दुश्मन भाग जाएगा ।'

और, फिर याकोव की ओर मुड़कर पूछने लगी—'क्यों यमपुत्र अभी तू शादी नहीं करेगा क्या ? मूर्ख कहीं का !'

ज्येष्ठ अर्तामानोव ने यह सब सुनकर मुँह मोड़ लिया । उसके दिमाग़ में ये सब शब्द मक्खी की तरह भिनभिना रह थे और उसे कोई अत्यन्त आवश्यक बात सोचन में बाधक हो रह थे, वह लोगों की पंक्ति से एकदम बाहर निकल कर पगडंडी पर धीरे-धीरे चलन लगा । बराबर स निकलती लागों की भीड़ इस बर्फ जैसे शुभ्र दिन म भी काली प्रतीत होती थी । लाग आग चल जा रहे थे चल जा रहे थे । उनके मुखों स भाप खौलते समवार की तरह बाहर निकल रही थी ।

इस भीड़ म पावोला भी अपने कठोर चेहरे के साथ अपनी धात्रामा के साथ आगे आगे चल रही थी । उसके सिर क भूरे बालों पर गिरी हुई बर्फ किरणों की तरह चमक रही थी । जब उसन अर्तामानोव की ओर देखकर सिर हिलाया तो उसकी भौंहों स बड़ी नीचे को झुकी । अर्तामानोव क दिल म उसके लिए दया सी पैदा हुई—

"मूख ! इन वसन्त को मरान का ही काम स बैठी है । फट हुए बालों वाल लड़कों की सम्पी पंक्तियाँ भी उसक सामने स गुजरी जो शहर के दो स्कूलों क लड़कों की थीं । इसक बाद एक भारा भद्दी नीली मशीन क साथ सिपाहियों की भाभी कम्पनी गुजरी जिसका अगुआ शहर का प्रसिद्ध लफ्टिनेन्ट मार विन था । मारविन की प्रसिद्धि उसक प्रतिदिन बसन्त में बर्फ क पिघलन स लकर सर्दियों में जमन तक बोका नदी में नहान के कारण थी और वह पम्पासोवा क साथ रहता था ।

उसके बाद भारी भरकम मोटी बसन्त के समान जन्माम अफ़सर निस्तरन्को चल रहा था । उसकी बीनियाँ जैसी उनकी मूछें थीं । उसकी बीमार पत्नी अपन भाई का हाथ थाम चल रही थी । इनमें निर्ज़ईकिन भी था जो शहर के पुरान मेयर का लड़का और उसक चमड़े क कारखान का उत्तराधिकारी था । निर्ज़ाइ किन क बारे म यह प्रसिद्ध है कि यद्यपि वह गिरजे की साधु नियों क साथ रहता था परन्तु उसन सारी पुस्तकें पढ़ी थीं और बोल बताता इतना अच्छा और पूर्ण रूप से जानता था कि फ़ौजी सिपाही भी उसस यह कला चोरी छिप सीखत थे ।

स्तपान वास्की चर्बी और मांस का एक पिण्ड-सा लग रहा था । वह अपनी स्लेज[४] म अपन पियक्कड़ जमाई और तिरछी आँखों वाली लड़की क साथ जा रहा था । उसक पीछे-पीछे चोड़ क रूप म शहर क छोटे लोग चल रहे थे जिनम मध्यम वग चमड़े का काम करने वाले ठेले गाड़ियाँ बनाने वाले और भिखारी तथा बहुत-सी ऐसी वृद्ध स्त्रियाँ थीं जिनकी किसी को जरूरत नहीं रही थी । वे स्त्रियाँ पुड़ियों का तरह चला जा रही थीं । आसमान स धीरे धीरे अलस गति स बर्फ नीचे गिर रही थी और लोगों क सिरों और शरीर पर जमती जा रही थी ।

४ स्लेज—बर्फ पर चलन वाली बेपहिए की गाड़ी ।

दूर से अरोपानोम की माँग करती हुई मनयक चीख सुनाई दे रही थी—'भक्तों की रक्षा करो भगवान !

"परमात्मा को इन लोगों की क्या जरूरत है ? समझ में नहीं आता कि क्या जरूरत हो सकती है ! मर्तामानोव ने सोचा। वह शहर के लोगों को नहीं चाहता था। शहर में अपने कारोबार के अलावा उसका लगभग किसी से कोई सम्बन्ध नहीं था। वह भी जानता था कि शहर वाले उसे नहीं चाहते हैं और उसे बहुत घमण्डी और क्रोधी समझते हैं। परन्तु सब शहरी लोग मलक्सेई की बड़ी प्रतिष्ठा करते थे क्योंकि वह चाहता था कि शहर की बड़ी सड़क को कंक्रीट का बना दिया जाए, चौराहे के चारों तरफ पेड़ लगाए जाएँ और ओका नदी के किनारे बगीचे लगा दिए जाएँ। मिरोन और याकोव से भी शहरी डरते थे और उन्हें बेहद लालची समझते थे, कारण कि आसपास की सब चीजों पर उनकी नजर रहती थी।

धीरे धीरे चलते हुए इस गम्भीर जलूस को देख कर मर्तामानोव ने नाक-भौं सिकोड़ी। इस भीड़ में उसके बहुत से जाने बूझे चेहरे थे। नाना रंगों की अनेक आँखें उसकी ओर एक साथ विद्वेष से निहार रही थीं।

मलक्सेई के दरवाजे पर पहुँचने पर तिखोन ने झुक कर उसका अभिवादन किया। मर्तामानोव ने उससे पूछा—

'क्यों बुड्ढे ! लड़ाई छिड़ गई है ?"

तिखोन ने मूकभाव से अपनी सुपरिचित भावभंगी में भारी हाथों को उठा कर अपने गालों को रगड़ा। आज जीवन में पहली बार मर्तामानोव ने इस आदमी से विश्वास के साथ पूछा था—

'क्या तू सोचता क्या है ?"

बेकार है। बच्चों का एक खिलवाड़ है।' त्यालोम ने

एकदम उत्तर दिया जैसे कि वह इस प्रश्न की प्रतीक्षा ही कर रहा था।

'तेरे लिए सब-कुछ बेकार और बच्चों का खेल है।' अनिश्चित भाव से अर्तामानोव ने कहा।

'क्यों नहीं? क्या हम कुत्ते हैं? हम जानवर तो नहीं।'

अर्तामानोव हल्की बर्फ़ से आगे बढ़ गया। बर्फ़ अब ज़ोर से पड़ने लगी थी। उसके विद्यार्थी भीड़ के सिर बिल्कुल ढक गए। बर्फ़ टीनों, पत्तों और छतों पर भी एकत्रित होकर वह उन्हें सफ़ेद बना रही थी।

क्योंकि उसको सांत्वना देने वाला सेराफ़िम अब मर चुका था इसलिए अर्तामानोव मनोरंजन के लिए प्रायः विधवा सायुनी ताइसिया पेराक्लितोवा के पास जाने लगा। वह एक दुबली-पतली अनिश्चित आयु की जवान दिखने वाली काली बकरी-सी स्त्री थी। वह बहुत शांत स्वभाव की थी और अर्तामानोव के साथ सदा ही सहमत रहती थी।

'हाँ-हाँ, प्यारे, हाँ!' वह कहा करती।

उसके घर में अर्तामानोव बिना किसी झिझक के शराब पीता और धीरे-धीरे नशे में आता। कभी-कभी उसे गुस्सा भी आता कि उसे यह नशा धीरे-धीरे क्या आ रहा है और उसके असम्बद्ध अस्पष्ट विचार ताइसिया की सुस्वादु और तीव्र वोदका के नशे में पिघलने लगते। नशे के पहले कुछ क्षण अप्रिय होते। वह अपने और दूसरों के बारे में कटुतापूर्ण विचार किया करता। जीवन के पापों और शराब के हर दस-सी रंग उसे विचारों को मारा उसे और भुला देती जिसमें कभी-कभी वह अपने को किसी भारी गड्ढे में गिराने की इच्छा करता। अपने दाँतों को किट किटाता हुआ वह अपने अन्दर उठते तूफ़ान को सुनता और

देखता और फिर जोर से ताइसा की ओर चिल्लाता—

क्यों तू चुप क्यों है ? कोई नई बात सुना !"

बकरी की तरह वह भी उछल कर उसकी जांघों पर आ बैठती। वह आश्चर्यजनक रूप से हल्की और उष्ण थी। अपने सामने एक किताब को छिपाकर रखे, वह पढ़ती—

पम्पालोवा ने लफ्टीनेन्ट मारवलिन का हिसाब कर दिया है वह फिर तीन सौ बीस रूबल हार चुका है। वह अपनी हुण्डी माँगती है जो उसने लिखवाली थी। और जेन्दार्म अपनी बी का शहर में इसलिए नहीं रखता कि वह बीमार है, परन्तु इसलिए कि वह अपनी रखैल से मिलते रहना चाहता है।'

यह सब गन्द है। मर्तामानोव कहता।

गन्द ! प्यार कैसा गन्द ?

शहर की घटनाओं के बारे में उसकी चर्चा से मर्तामानोव के विचार दूसरी तरफ चल पड़ते और इन नीरस पापी शहरियों के प्रति उसकी घृणा और बढ़ जाती। इन विचारों के साथ-साथ मसे का रंगरलियों के दृश्यों की स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में चक्कर काटने लगतीं। मूत्र-जन्य शराबी भरपेट सलवाई आँखों वाले रुपया फूकने वाले जिन्हें किसी बात की भी परवाह नहीं थी जो केवल मात्र अपनी शारीरिक वासना की तृप्ति करने में व्यस्त थे वह परम शुभ्र सुन्दर स्त्री जो कास पृष्ठस्थल से अपनी निर्लज्ज निवसन-नग्नता का प्रदर्शन करती थी इत्यादि।

प्यात्र मर्तामानोव गुरबाप विभिन्न रंगों की बादकाओं की गुर्मारियाँ मलता और तिसकने गुम्भ के प्रकार को पढ़ता। उस समय अपनी नस-नस में उग्र संसार की सबसे महान् शक्ति— एक भयङ्कर वास्तविक शक्ति उस स्त्री में ही थी जो धन के लिए अपने नग्न शरीर का प्रदर्शन करती थी जिसको प्रसन्न करने

के लिए बड़े-बड़े प्रसिद्ध धनवान् और प्रतिष्ठित व्यक्ति अपने धन सत्ता और स्वास्थ्य का ह्रास करते थे का अनुभव होता लेकिन उसके लिए इस कामी वकरी के धमाचा सारे जीवन में और कुछ नहीं था।

अपने कपड़े उतार फेंक और नाच ! अर्ताभानाव गरज उठता।

बिना संगीत के नाच कैसा ? साथुनी अपने कपड़ों का खसोटती हुई कहती— नम्काव निकारी को बुलाओ वह हारमो नियम अच्छा बजाता है।

इस प्रकार के मनोरंजनों में समय धनवान में ही गुजरता जाता था और इन अंधकारपूर्ण दिनों में कभी ऐसी बातें भी हो जातीं जो समझ में ही न आ पाती थीं। सर्दियों में अफवाह सुनी गई कि पीतसबर्ग में मजदूरों ने जार के महलों को नष्ट कर दिया है और लोग जार को मारना चाहते हैं।

तिमोन ग्यालान गुनगुनाया—

अभी तो वे मिरजा को भी लाएंगे —और क्यों न लाएँ ? लोग लाइ के ता है नहीं।

फिर गर्मियों में लोग चर्चा करते सुने गए कि क्सी-समुद्र के किनारे एक रूसी जंगी जहाज शहर पर गोले बरसा रहा है। इस पर तिमोन बोला—

'और क्यों न बरसाए ! लोग सहन के आदी जो हो गए हैं। शहर में इकाना (रंग पुतिया) के साथ फिर एक जलूस निकाला गया। अरापानाव पूरी पोशाक में जार की तस्वीर हाथ में थाम माँग कर रहा था—

भक्तों की रक्षा करो, भगवान् !'

यह इस बार और अधिक जोर से चीख रहा था और

भगवान् के अन्तिम 'नकार' में सहायता और भय की भावना छिपी हुई थी।

शराब के नशे में नग्न गले नंगे सिर वाला फ़्लिटीकिन चमड़े के कारखाने के मजदूरों के आगे-आगे एक दुनाली बन्दूक लिए चिल्ला रहा था—

'साथियो! यहूदियों के हाथ में रूस का नहीं जाने देंगे! रूस किसका है? हमारा! हमारा!!' —सहमति में सब शराब के नशे में धुत्त मजदूर चिल्लाए। फिर अपने पुराने शत्रु—कपड़ा-मिल मजदूरों को देखकर वे लड़ने लगे। उन्होंने डाक्टर याकोव्लोव का डण्डा मारा और बूढ़े कम्पाउण्डर को धोखा नदी में गिरा दिया। फ़्लिटीकिन कम्पाउण्डर के लड़के का दूर तक शहर में पीछा करता रहा और दो बार उस पर गोली भी चलाई, परन्तु उसका निशाना चूक गया लेकिन उसके कुछ छर्रे दर्जी ग्रूस्कोव की पीठ में जरूर लगे।

मिल में काम बन्द हो गया। नौजवान जुलाहे मजदूरों ने अपनी बाहें कसीं और मिरान तथा दूसरे समझदार लोगों के मनाने समझाने चिल्लाने और औरतों के आँसुओं को भी अनसुना कर के शहर की ओर दौड़ पड़े।

मिल खामोश और निर्मम हो गई। वह उस आँधी के सामने सिकुड़ी सिमटी-सी प्रतीत होती थी जिसने विद्रोह में चीखना और चक्कर खाना शुरू कर दिया था। वे बर्फ़ीली फुहारें मिल की दीवारों से टकरा रही थीं। उसने मिल की चिमनी को बर्फ़ से ढँक दिया लेकिन कुछ समय बाद वह गल गई।

स्पष्ट भर्तामानोव खिड़की के पास बैठा कुण्ठित दृष्टि से चींटियों की तरह मर्दों और स्त्रियों की काली-काली मूर्तियों को शहर और शहर से बाहर की ओर दौड़ते हुए निहार रहा

था। खिड़की के बाहर उसे ऐसा लगा कि इस भाग-दौड़ से लोग बड़े प्रसन्न हैं। फाटक के बाहर उसे हारमानिका* की चीं-ची भी सुनाई दी जिस पर मजदूरों की भीड़ में लगड़ा कोयला झोंकने वाला वास्का कोतोव गा रहा था—

"रूसी भूमि पर भारी भीड़।
लड़ रहे रूसी और जापानी॥
जापानी मुँह पर मारें मुक्का।
हम मारें उन्हें इकोनों से॥

वायु के साथ एक सरसराहट की आवाज आई, जो ठीक किसी भीड़ से भरे हुए विशाल खौलते सरोवर के उबाल के समान थी। फाटक के बाहर अमरसेर्ई की घोड़ा गाड़ी आई, जिसमें से एक आंख वाला कम्पाउण्डर मरोसोव बैठा था। गाड़ी में से घास से ढकी आल्गा भी बाहर निकली। अर्तामानोव जरा डर गया और अपनी टाँगों की पीड़ा को भी भूल जल्दी में उठा और उनसे मिलने के लिए आगे बढ़ा।

क्या हुआ है?' आल्गा ठीक मुर्गी की तरह फड़फड़ाती घबराई हुई बोली— ˋ

चमड़े के मजदूरों ने हमारी खिड़कियाँ तोड़ दी हैं।"

अर्तामानोव उसका रास्ता छोड़कर जरा मुस्कराते हुए गुनगुनाया—

'सो मुझ पर चिल्लाते थे, बकवास करते थे। अब उसका नतीजा यह बार हो नहीं है।

और उस अचानक, असाधारण रूप से आल्गा का बार-बार, घृणापूर्ण उत्तर मिला—

---

* हारमानिका—एक प्रकार का हारमोनियम जैसा बाजा।

बस कर ! चुप रह ! तेरा यह यार बड़ा बेईमान आदमी है।

यार के बारे में तू खूब जानती है,' उसने भद्दे तरीके से कहा और अपने हाथों को कानों तक उठाया।

इस छोटी-सी एनकधारी बुढ़िया की जो सदा ही शांत और चुप रहने वाली थी और कभी किसी के बारे में बुरी बात न कहती थी—रोष भरी आवाज से वह विस्मित हो गया। उसके शब्दों में एक प्रकार की विचित्र सचाई थी। निःसंदेह यद्यपि उसका कोई महत्व नहीं था और यह चिल्लाहट ऐसे ही निरर्थक थी जैसे कि कोई चूहा अपनी पूँछ पर बैल के पाँव पड़ जाने से चिल्लाता हो और बैल का किसी प्रकार का नुकसान नहीं पहुँचा सकता हो। वर्तमानोव अपनी आरामकुर्सी पर बैठ गया और सोचने लगा।

उसने नाराजगी के कारण आल्या के बेटे को भी उससे अपने किनारा-कशी के ख्याल से कई हफ्तों से नहीं देखा था। यह घटना गर्मियों के अन्त की थी, जब वर्तमानोव अपनी टाँग की सूजन के कारण बिस्तर में पड़ा था। इसी समय उसका शत्रु मरोगोनोव बड़े रौब के साथ पसीने में लथपथ अन्दर आया और अपने मोम मोटे ओठों को चपचपाता हुआ वर्तमानोव से 'जार' का भेजे जाने वाले एक तार पर हस्ताक्षर करने के लिए कहने लगा उसमें प्रार्थना की गई थी कि 'जार' मजबूत रहे और अपने हाथों से राज्य शक्ति न त्यागे। वर्तमानोव नगर के मुखिया की इस धृष्टता-पूर्ण माँग से कुछ विस्मित हुआ, परन्तु उसने हस्ताक्षर कर दिए, क्योंकि, उसे विश्वास था कि उसका भाई और भतीजा मिरान दोनों इससे नाराज होंगे और पीतसबर्ग से बरागामाव को भी खासी झाड़ पड़ेगी कि यह मोटे ओठों वाला कैसा मूर्ख है, जो अपने

से ऊँचे लोगों के मामलों में निरर्थक हस्तक्षेप कर रहा है।

वरोपोनोव ने तार के कागज को अपने कोट की जेब में डालकर कोट के गले तक के बटनों को लगाते हुए असफसई मिरोन डाक्टर और उन सब लोगों की जो मजदूरियों के भड़कान से वार के खिलाफ काम कर रहे थे—जिनमें से कुछ मूर्खता से और दूसरे अपने स्वार्थ की सिद्धि के लिए वार के खिलाफ चल रहे थे शिकायतें कीं। ज्येष्ठ मर्तामानोव ने उसकी सब शिकायतों को सन्तोष के साथ सुना और सहमति प्रगट की। परन्तु जब उसने नीले ओठों से वीरा पापोवा के विरुद्ध जहर उगलना शुरू किया तो वह कठोरता से बोला—

वारा निकोलायव्ना का इसमें कोई हाथ नहीं।

'कैसे नहीं? उसका पूरा हाथ है। हमें सब पता है।

'चल तुझे कुछ पता नहीं।'

'बहुत अच्छा इसका नतीजा तुम्हारे लिए बुरा ही निकलेगा।' यह कहकर वह बाहर चला गया।

सन्ध्या समय ज्येष्ठ मर्तामानोव पर उसका भतीजा और लड़की, उसकी उमर पर भी रहम न खाकर उस पर कुत्तों की तरह झपटे और भौंकने लगे।

पिता जी! आप क्या कर रहे हैं!" तत्याना चिल्लाई और उसके असुन्दर चेहरे पर व्याकुल आँखें घूमने लगीं। याकोव खिड़की के पास खड़ा उङ्गलियों से शीशा बजा रहा था। मर्तामानोव को लगा कि उसका बेटा भी उसके खिलाफ है। और मिरोन ने बड़े विषाक्त स्वर में पूछा—

आपने पढ़ा था कि उस कागज में क्या लिखा हुआ है?'

परन्तु, कारखाना अभी तक पूर्ण रूप से उसी के हाथ में था। मिरान कारखाने का सारा काम बड़ी समझदारी, चतुराई और आत्म-विश्वास से चला रहा था। मजदूर या तो उसका कहना मानते थे या डरते थे और वे लोग शहरी मजदूरों की अपेक्षा अधिक शान्त थे।

वायुमण्डल शांत हो गया फिर मानो बर्फ में दब गया हो। बर्फ बड़े-बड़े रुई के टुकड़ों में तेजी के साथ सीधी नीचे गिर कर खिड़कियों को अपने सफेद पर्दे से ढक रही थी जिसके कारण बाहर का कुछ नहीं दिखाई देता था। ज्येष्ठ अर्तामानोव से कोई भी बात नहीं करता था और वह अनुभव करता था कि उसकी पत्नी के अतिरिक्त अन्य सब उसे बाहर के झगड़े, बुरे मौसम और ज़ार की असफलता और अयोग्यता इत्यादि के लिए अपराधी समझते हैं।

"और, याशा कहाँ है?" माँ ने व्याकुल हो पूछा—"याशा, मैं पूछती हूँ याशा कहाँ है?"

मिरान ने घृणा से अपनी नाक सिकोड़ी और चाची की ओर निहारने लगा।

"मालूम पड़ता है कि वह अवश्य शहर के मुर्गीखाने में छिपा है।"

"क्या? किस जगह?" माँ ने भय से पूछा।

अर्तामानोव सोचने लगा—

"अच्छा हो, यह न जान पाए। मूर्ख है! इतना भी नहीं जानती कि याकोव की एक प्रेमिका है।"

और फिर अचानक बड़ी दृढ़ता से बोला—

"बहुत अच्छा, तुम जैसा चाहते हो, वैसे ही रहो। वैसा ही करो। ठीक है, इसमें मुझे कुछ पता नहीं। मेरी समझ में कुछ नहीं आता। मैं बुड्ढा हो चुका हूँ। मुझे दिखाई देता है कि इसमें शैतान का हाथ है, वही ये सब खिलवाड़ कर रहा है। इतनी उम्र तक मेरी समझ में कुछ नहीं आया।





२६ वर्ष की उम्र तक याकोव अर्तामानोव का जीवन अच्छी तरह और शांति से गुजरा। उसने कभी किसी प्रकार की विशेष अप्रियता का अनुभव नहीं किया। परन्तु, उसके बाद एक ऐसा समय आया जब शान्त जीवन के प्रेमियों का शत्रु याकोव के साथ भी बेईमानी से भरे और गड़बड़ खेल खेलने लगा। झगड़ों के तीन साल बाद जिससे शहर की शान्त आबादी में उथल-पुथल पैदा हो गई। यह पहली अप्रैल की रात को शुरू हुई थी।

याकोव सोफे पर बैठा सिगरेट पी रहा था और एक ऐसी संतुष्टि का अनुभव कर रहा था, जो किसी इच्छा रहित अवस्था में होती है, जिसका कि वह जीवन में बहुत सम्मान करता था और इसी में वह अपने जीवन की पूर्ण-सफलता समझता था। यह सन्तुष्टि उसे एक परम सुस्वादु भोजन करने और एक स्त्री पर पूर्ण अधिकार कर उसका आनन्द उपभोग करने के बाद हुई।

यह गोरा मसोन और सुगठित स्त्री कमरे में उसके पास स्टूल पर खड़ी थी और रात में जामुनी ज्वाला से जलते हुए काफ़ी के बरतन के नीचे स्पिरिट लैम्प की ओर विचारमग्न दृष्टि से निहार रही थी। उसकी नंगी बाहें और बच्चों जैसा चेहरा मास-गुलाबी रंग की लैम्प के प्रकाश में अच्छी तरह ढले लाल समामे के म रंग का दिखाई दे रहा था। उसके काले-काले बाल एक चित्र की तरह गर्दन और कंधों पर बिखर रहे थे। पोलीना के नग्न शरीर पर सुनहरा पीला गुब्बारे का चोगा पड़ा था और उसने माराक्को के हरे स्लीपर पहिन हुए थे। उसमें एक विशेष प्रकार की लचक सुघड़ता और अ-क्षमिता थी। उसका छोटा-सा सुन्दर चेहरा कुमारावस्था के लड़का जैसा था, फूले-फूले प्यारे होंठ यौवनभरी गोल-गोल चेरी जैसी आँखें थीं और उसका सम्पूर्ण शोभा इस समय भी जबकि वह उसका पूर्ण आनन्द उपभोग कर चुका था अत्यन्त प्रिय और मनोहर दिखलाई दे रहा था। निःसन्देह अपनी जानकारी की अन्य लड़कियों और स्त्रियों से वह अच्छी थी और यदि उसमें कुछ मूर्खता न होती तो वह और भी अच्छी होती।

मैं काफ़ी नहीं पीता। मेरी प्यारी आम्र-मंजरी! याकोव ने सिगरेट का घना धुआँ छोड़ते हुए और उसके बीच से देखते हुए कहा। पोलीना ने उसकी ओर बिना देखे ही पूछा—

और मैं?

मुझे नहीं पता तू क्या चाहती है। याकोव ने थकान भरी जँभाई लेते हुए कहा।

हाँ हाँ तुम क्यों नहीं जानोगे?' उसने सिर को झटका देकर ऊँची आवाज़ में कहा। एक मिनट भर उसके चिढ़ाने वाले चुभते हुए व्यंगों को सुन याकोव ने सिगरेट फ़र्श पर फेंक दी और जूता पहिन साँस लेता हुआ बोला—

"मेरी समझ में नहीं आता कि यह तेरा स्वभाव कैसा है कि भलीभांति जानते हुए भी कि जबतक पिता नहीं मरता, मैं तुमसे विवाह नहीं कर सकता।'

'यह बात तो हमेशा ही होती है।" पोलीना ने नाना प्रकार के अपशब्दों की बौछार करते हुए आगे कहा—

'बदाक मकड़े कहीं के तुझे तो अच्छी मौज ही चाहिए! मैं जानती हूँ कि अपनी इस खुशी और मौज के लिए तू मुझे किसी बुड्ढे तातारी को भी बेच सकता है। हां हां तू! बेईमान आदमी।'

याकाव को खासतौर से तब बहुत बुरा लगता था, जब वह उसे मकड़े के नाम से पुकारती थी। वैसे प्यार की घड़ियों में उसने उसका एक और नाम 'सलामे स्वाद' रखा था। तब ऐसा प्रतीत हुआ कि कम-से-कम वह आज के दिन तो इस झगड़े से बाज आ सकती थी, क्योंकि अभी दो घण्टे पहिले ही उसने उसे सौ रूबल दिए थे।

'विस्लाम से तेरा कुछ नहीं बनना'—याकाव ने उसे चेतावनी दी और टोपी पहन कर उसकी ओर हाथ बढ़ा—'दस्वि दान्या!' (नमस्कार) कह कर बाहर चला गया।

मुअर कहीं का! फर्श पर फिर सिगरेट फेंक गया है! सड़क पर सीली हवा चल रही थी। भूमि पर बादलों की छाया ऐसे सरक रही थी जैसे कि वह सड़क पर पड़े पानी के गड्ढों को पोछ रही हो। अब कुछ क्षणों के बाद चांद झांका तो गड्ढों में भरा पानी बर्फ की पतली तह से ढक कर कांच की तरह चमकने लगा। इस साल सर्दी भी बड़े जोर की पड़ी थी और बसन्त के आने पर भी जल्दी खिसकने का नाम न लेती थी। अभी पिछली रात को ही जोर की बर्फ पड़ चुकी थी।

याकोव मत्तमानाव बिना किसी जल्दी के धीरे धीरे जेबों में हाथ डाले और बगल में भारी डब्बा थाम लोगों की विचित्र, असम्य मूढ़ता के बारे में सोचता हुआ चला जा रहा था। इस प्यारी मूर्ख पालीना को और क्या चाहिए? वह सुख-शान्ति से रह रही है? किसी तरह की फिक्र नहीं और लगभग सौ रूबल महीने खर्च के मिल जाते हैं। याकोव जानता था और अनुभव भी करता था कि वह उसे चाहती है। और फिर भी उसे क्या चाहिए! वह शादी के पीछे क्यों पड़ी है?

ठीक मुरब्बे के बरतन में एक चूहे की तरह।" उसने अपने मन-पसन्द कहावत में अपने विचारों का समाहार किया। उसे जीवन बहुत सीधा-सादा दिखाई दिया जो मनुष्य से जो कुछ भी उसके पास है उससे अधिक कुछ माँग नहीं करता। वस्तुतः यह स्पष्ट है कि सब लोग इसी हृदय-पूर्ण शान्ति को प्राप्त करना चाहते हैं। दिन भर की मेहनत भी इस रात्रि की नीरवता की बहुत कुछ अप्रिय भूमिका है जब मनुष्य दिन भर की थकान के बाद किसी को के आलिंगन में एकान्त सहवास करता है और बाद में उसके प्रेमालिंगन सभोग और आनन्द की थकान के बाद निःस्पन्द गाढ़ निद्रा में सो जाता है। यही वस्तुतः महत्वपूर्ण वास्तविकता है। लोग मूर्ख हैं क्योंकि लगभग सभी स्पष्ट या अस्पष्ट रूप से अपने को औरों से अधिक बुद्धिमान समझते हैं। वे बहुत-सी निरर्थक कल्पनाएँ करते हैं। हो सकता है कि यह वे किसी मूढ़ता और अंधता के कारण करते हों जिसमें प्रत्येक आदमी दूसरों से अपने को अलग करना चाहता है ताकि वह भीड़ में स्वयं में खो जाए और नजर से न ओझल हो जाए।

इल्या भी मूर्ख है,' वह अपने विद्यार्थी क्लास से ही जब स्कूल में पढ़ता था किताबों में ही खोया रहा। अब वह शायद

सिस्टों (समाजवादियों) के पीछे लगा हुआ है। याकोव को उससे पहिले ही बहुत-सी नाराजगियाँ थीं और अब वह साइबेरिया में पहुँच गया है जहाँ उसे अभी कुछ दिन हुए याकोव ने कुछ पैसा भेजा था। उनकी माँ भी असह्य थी वह निपट मूर्ख थी। उन सबसे बढ़कर उनका पिता असह्य था—वह भी क्रोधी और ला इलाज मूर्ख बुड्ढा रीछ-सा था जो लोगों के साथ नहीं चल सकता था और सदा शराब के नशे में चूर और गंदा रहता था। यह चाचा असमर्ई भी जो इधर-उधर भटकता रहता था उस पर उसे हँसी आती थी जो इस बात की कोशिश में रहता था कि किसी-न किसी तरह सरकारी ड्यूमा में आ जाए और इसलिए बड़ी तृष्णा के साथ अखबारों को पढ़ताल करता। सब तरह के शहरी लोगों के साथ मीठा भूँठ-मूँठ मिठास और चापलूसी की बातें करता और मिल की बुड्ढी औरतों के साथ गन्दी मखौलें और दुराचार-पूर्ण गंदा जीवन बिताता। सबसे बढ़कर घृणा उस भयानक-मूर्ख लम्बी नाक वाले कठफोड़े मिरोन से थी जो अपने आपको रूस का एकमात्र परम बुद्धिमान् व्यक्ति समझता था। और, अपने आपको भावी कैबिनेट मिनिस्टर समझ बैठा था। पिछले दिनों से उसने अपने इस विश्वास को छिपाने की कोशिशें भी बंद कर दी थीं और अभिमानवश कहता था कि बस वही जानता है कि आगे क्या करना चाहिए और दया के दूसरे लोगों को क्या सोचना चाहिए। वह भी मजदूरों की सहानुभूति प्राप्त करने की हरचन्द कोशिश करता था और उनके लिए तरह-तरह के मनोरंजन—जैसे फुटबाल टीम, पुस्तकालय इत्यादि के संगठन से भेड़ियों का गाजर खिलाने जैसी कोशिश करता रहता था। तरह-तरह का सुन्दर कपड़ा बनाने वाले मजदूर फ्टेहाल चिथड़ों में गन्दा और शराबियों का जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन पर भी सामूहिक रूप से एक प्रकार की मूर्खता का भूत सवार था और उनमें पूछता तो बहुत थी

किन्तु सीधी-सादी समझ और चतुरता का अभाव था जो एक मामूली किसान में पाई जाती है। याकोव मजदूरों के बारे में बहुत कुछ सोचता रहता था क्योंकि उसका उनके साथ ही सबसे अधिक निकट का सम्पर्क रहता था। उसकी नौजवान मजदूरों के साथ लड़कियों के कारण बचपन में ही नाराजगी और घृणा थी। उनमें से बहुत से विरोधी थे। अपनी पुरानी शिकायतों को अभी भूले भी नहीं थे। अभी जब उसके दादा भी नहीं थे तभी मजदूरों ने दो बार रात के समय उस पर पत्थर फेंके थे और कई बार उसकी माँ ने चिल्लाती हुई औरतों से घर लेने पर उसकी बदनामियों को खरीदने के लिए पैसा भी दिया था। ऐसे अवसरों पर वह उसे झिड़कती और उसकी गलती बताते हुए कहती—

'तू कैसा मूर्ख मुर्गा है! तुझे कोई भी व्यावहारिक बात नहीं आती। शादी का तू इन्तजार क्यों नहीं करता या किसी को ऐसे ही रखैल बना ले! यदि तेरे बाप तक ये सब शिकायतें पहुँचीं तो इल्या की तरह तुझे भी घर से बाहर निकाल देगा।'

झगड़ों और बगावत के इन दो-तीन सालों में याकोव ने मिल में कोई खास डराने वाली या खतरनाक बात नहीं देखी। परन्तु, मिरोन की व्याकुलता पैदा करने वाली बातें, सनसनीखेज अफवाहें और समाचार पत्र (जिन्हें याकोव [illegible] पढ़ना नहीं चाहता था और जिनमें खुल्लमखुल्ला ईर्ष्या, रोष और उत्तेजना भरे भाषणों के समाचार होते थे जो मजदूर प्रतिनिधियों ने ड्यूमा में दिए होते थे)—इन सब ने मिलकर लोगों के प्रति याकोव के हृदय में और अधिक घृणा और ईर्ष्या पैदा कर दी थी। उसे प्रतीत होने लगा कि वह मुस्कानों, मुसकानों और मामूली रियायतों के पीछे अपने असली भावों को छिपाना सीख गया है। अब तक सब काम भलीभाँति चला जा रहा था। यद्यपि

कभी-कभी मजदूरों म अचानक एक प्रकार की बेचनी फैल जाती थी जैसे कि वे सोच रहे हो कि मिल का मालिक याकोव मर्ता मानाव उन मिल मजदूरों का मेहमान है जो उसके लिए काम कर रहे हैं और जो उनके यहाँ बहुत समय से पड़ा हुआ है। वे सब उस मेहमान से ऊब चुके हैं और वे उसकी ओर ऐसे देखते हैं जैसे कि वे कहना चाहते हों—

'क्यों अभी जाओगे नहीं ! समय आ गया है !'

इन पंक्तियों में उसे एक अस्पष्ट भय खड़ा दिखाई देता और मिल में एक प्रकार की गुप्त अस्पष्ट और अत्यन्त भयावह आग सुलगती दिखलाई देती जिससे उसे अपने लिए बहुत खतरा दिखाई देता था।

याकोव का विश्वास था कि मनुष्य बहुत सीधा-सादा है और यह सादगी मनुष्य को बहुत प्यारी है। मनुष्य किसी प्रकार के भयावह विचारों को नहीं सोचता और न उनको बोझ ही अपने में रखता है। ये सब विपैले विचार मनुष्य के कहीं बाहर रहते हैं और जब वह इनकी छूत से विषाक्त हो जाता है तो वे डरावने और समझ से बाहर हो जाते हैं। इन घृणित विचारों को जानने और बनने न बनने में ही भलाई है। फिर भी इन सब विचारों के विरुद्ध होने पर भी याकोव ने अन्य लोगों में उनका अस्तित्व स्वीकार किया और देखा कि वे सब लोग उसके चारों ओर मूर्खता के भयंकर बंधनों में बंधे हुए हैं और इस बंधन से जीवन की स्पष्ट और उन सीधी-सादी बातों को गड़बड़ी में डाल रहे हैं जिन्हें कि वह पसन्द करता है।

उन सब लोगों में जिन्हें वह जानता था तिखोन व्यालोव सब से भला दिखलाई पड़ा। लोगों के प्रति उसका शान्त व्यवहार, काम के प्रति ममता और प्रेम को देखकर याकोव इस दरबान

स ईर्ष्या करने लगा । अब तिखोन उसे बुद्धिमान देखने लगा । वह सोते समय अपने कानों को तकिए पर अच्छी तरह टिका कर सोता था जैसे कि वह भूमि की सब बातें सुनना चाहता हो ।

याकोव ने बुड्ढे से पूछा—

तू सपने देखता है ।

'क्या ? मैं कोई औरत हूँ' तिखोन ने कहा और उसके शब्दों में याकोव को एक ठोस तथा अडिग शक्ति का आभास हुआ ।

'औरतों के सपने' याकोव अर्तामानोव ने सोचा । अब वह चाचा अवसेई के वाद-विवाद इत्यादि के बारे में भी सोचता तो अन्दर ही अन्दर हँसता ।

साधारणतः सोच विचार करना उसके लिए कठिन था । वह धीरे धीरे विचारमग्न भारी कन्धा में चलता जैसे कि किसी बड़े बोझ को खींचते हुए सिर झुकाए अपनी टाँगों की ओर देख रहा हो । इसी प्रकार वह उस रात को पोलीना के घर से निकल कर चला जा रहा था । तभी एक भारी कामी मूर्ति का उसने अँधेरे में ठीक अपने सामने उठते देखा जिसने अपने हाथ सिर से ऊपर उठाए हुए थे । याकोव एकदम घुटनों के बल बैठ गया और तभी दाएं कोट की जेब में रिवाल्वर निकालकर आक्रमणकारी की टाँग पर गोली दाग दी । गोली का धड़ाका इसका और कमजोर था । पर वह आदमी एकदम पीछे को उछल पड़ा । उसके कंधे चहारदीवारी से टकराए और वह उसके पास जमीन पर गिर पड़ा ।

याकोव ने ठीक इसके बाद ही अपने को बहुत अधिक भयभीत अनुभव किया । वह इतना भयभीत था कि प्रयत्न करने पर भी हिल नहीं सका । उसके हाथ काँप रहे थे और अब उसने

खड़ा होना चाहा तो उसकी टाँगें काबू में न रही। उससे दो कदम दूर जमीन पर वह आदमी पड़ा था जो खड़ा होना चाहता था। इस आदमी के सिर पर टोपी नहीं थी और उसके बाल घुंघराले थे।

"बदमाश कहीं के! अभी गोली मार दूँगा।" याकोव ने लड़खड़ा कर उसकी ओर अपनी पिस्तौल उठाते हुए कहा। सामने वाले आदमी ने उसकी ओर सिर उठाकर देखा और बड़बड़ाया—

गोली तो तूने पहले ही मार दी है।

उसे पहचानते हुए याकोव विस्मय में बोला—

नस्कोव? ओह! नीच कहीं के। तू है!'

याकोव का भय एकदम प्रसन्नता में बदल गया। क्योंकि उसे पता लग गया था कि उसने हमले का अच्छा जवाब दिया है और उस पर हमला करने वाला मिल मजदूर नहीं परन्तु उससे एक पृथक मनुष्य है। वह शिकारी नस्कोव था, जो शादियों के मौके पर हारमोनिका बजाकर अपना गुजारा करता था। वह साधुनी पेरागिनाया के घर में ही रहता था और आज की रात तक किसी ने उसके बारे में कोई बुरी बात नहीं कही थी।

यह बात है, तूने यह क्या काम शुरू कर दिया है?" याकोव ने पाँवों पर खड़े होते हुए कहा। उसने चारों तरफ देखा वायुमण्डल बहुत शान्त था और थोड़ी-थोड़ी हवा बाड़े के पास खड़े पेड़ों की शाखाओं के निकट से सर-सर करती गुजर रही थी।

"मैं क्या कर रहा हूँ?' अचानक नस्कोव ने ऊँची आवाज में पूछा। मैं तुम्हें सिर्फ डराना चाहता था और कुछ नहीं। और

नहीं। तुम मानदार भले ही हो परन्तु मेरे खिलाफ कुछ सिद्ध नहीं कर सकोगे। मैं तुमसे कह रहा हूँ मैं मज़ाक कर रहा था। मैं तुम्हारे बाप को जानता हूँ। उसके लिए मैंने कई बार हार मोनियम बजाया है।

एक बड़े झटके से उसने सिर पर टोपी रखी और आगे को झुक कर भिंचे दाँतों से कराहते हुए, पतलून के पहुँचे को उठा कर जेब से रुमाल निकाला और घुटनों से कुछ ऊपर ज़खम को बाँधने लगा। इस दौरान में वह कुछ अस्पष्ट बातें भी बुदबुदाता रहा परन्तु याकोव ने उसके शब्दों पर ध्यान नहीं दिया और अपने इस असफल हमलावर के विचित्र व्यवहार को देख उसका साहस जाता रहा।

याकोव अर्तामोनोव बड़ी असाधारण तेज़ी से सारी परिस्थिति को सोचने की कोशिश कर रहा था। निःसंदेह वह इस बाड़ के पास नस्कोव को छोड़ रात के चौकीदार को बुलाये ताकि वह घायल के ऊपर चौकसी कर सके और बाद में पुलिस स्टेशन जाकर अपने ऊपर हुए हमले की रिपोर्ट कर दे। इसके परिणाम में तफ़्तीश शुरू हो जाएगी और नस्कोव उसके बाप और साबुनी के साथ रंगरलियों का ज़िक्र करेगा। हो सकता है कि उसके जैसे ही गला-काट गिरोह के और लोग भी हों या बाद में उससे बदला लेने की कोशिश करें। फिर भी ऐसे आदमी को सज़ा दिए बग़ैर नहीं छोड़ना चाहिए।

रात और अधिक ठण्डी होती जा रही थी। याकोव का हाथ रिवाल्वर पकड़ने से दर्द कर रहा था और सुन्न पड़ चुका था। पुलिस की चौकी तक रास्ता लम्बा था और वहाँ सब लगभग सो चुके थे। याकोव बड़े गुस्से में साँस ले रहा था, मगर अगला क़दम क्या लेना चाहिए—यह फ़ैसला करने में विफल

रहा। उसे मन ही मन ऊपर क्रोध आ रहा था कि उसने इस भारी बदमाश को मार क्यों नहीं डाला। यह टेढ़ी टाँगों वाला नस्कोव ऐसा लग रहा था जैसे कि उसने अपना सारा जीवन बारूद के मद्दोम पर ही गुजारा हो। और अचानक उसने ऐसी परास्त कर देने वाली बात सुनी जिसकी उसे आशा नहीं थी—

'मैं तुमसे साफ-साफ कहता हूँ चाहे यह एक गुप्त रहस्य ही हो' नस्कोव ने अपनी टाँग को पकड़े हुए कहा— तुम्हें पता होना चाहिए कि मैं तुम्हारी भलाई के लिए ही यहाँ हूँ ताकि तुम्हारे मित्र के मजदूरों पर नजर रख सकूँ। हो सकता है कि जो कुछ मैंने कहा हो वह कोरी बात हो और मैंने तुम्हें डरा दिया हो, परन्तु असलियत यह है कि मैं एक और शख्स को पकड़ना चाहता था और भूल से तुम पर आ पड़ा।

'ओ शैतान! याकोव ने कहा— यह क्या बात है?

हाँ यह ठीक है तुम नहीं जानते। इस साबुनी के घर के गुसलखाने में सोशलिस्ट लोग इकट्ठे होते हैं। वे वहाँ गड़बड़ और बगावतों की बातें करते हैं और मिलकर किताबें पढ़ते हैं।

'झूठ है याकोव ने धीरे से कहा। और फिर उस पर विश्वास कर बोला— 'हाँ, क्या कौन? कौन लोग इकट्ठे होते हैं?'

यह मैं तुम्हें नहीं बता सकता। जब वे पकड़ लिए जाएँगे, तुम्हें खुद पता लग जाएगा।

बाड़ के तख्तों को पकड़ कर नस्कोव खड़ा हो गया—

मुझे अपनी छड़ी दे दो इसके बगैर मैं घर नहीं पहुँच सकूँगा।

याकोव ने झुककर छड़ी उठा कर उसे दे दी और उसकी ओर चुपचाप देखते हुए पूछा—

'यदि यह बात है, तो तुमने मुझ पर क्यों हमला किया ?

"मैंने तुम पर हमला नहीं किया था। मैं तुम्हें कोई और समझ बैठा था। मुझे तुम्हारी तलाश नहीं थी किसी और आदमी की थी। अब तुम इन बातों को रहने दो। गल्ती हो गई है। तुम्हें जल्दी ही पता चल जाएगा कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ ठीक है। बस तुम्हें इलाज के लिए मुझे कुछ पैसा देना होगा।

और झाड़ को थामकर छड़ी पर झुकता हुआ अपनी टेढ़ी टाँगों से धीरे धीरे वह शहर के बाहर एक अँधेरे कोने के एकांत में अपने घर की ओर चल पड़ा जैसे कि वह बादलों की छायाओं को अपने सामने से इधर-उधर हटा रहा हो। और, दस-बारह कदम चलकर उसने जोर से बुलाया—

'याकोव पेत्रोविच !'

याकोव एकदम उसके पास जा पहुँचा। तब नस्कोव बोला—

'देखो इस घटना के बारे में किसी से एक शब्द भी न कहना ! नहीं तो तुम्हें अपने आप पता लग जाएगा।

वह अपनी छड़ी हिलाता हुआ, याकोव को भौंचक्का और चुप करता हुआ आगे बढ़ता गया। इस समय उसे बहुत-सी बातों के बारे में एक साथ सोचना और फैसला करना था कि उसे क्या करना है और इस सब का क्या नतीजा होगा है ? निःसन्देह यदि नस्कोव सोशलिस्टों की निगरानी पर है, तो वह बहुत लाभदायक उपयोगी व्यक्ति है, और यदि वह झूठ बोल रहा है धोखा देना चाहता है और उसके असफल निशाने का बदला लेने के लिए समय चाहता है, तो वह झूठ कहता है कि यह

उसे गलत आदमी समझा, और उसे डराना चाहता था। साफ यह है कि वह झूठा है! हो सकता है कि मजदूरों ने उसे मुझे मारने के लिए खरीद लिया हो? मिल के जुलाहों के बीच निःसंदेह एक बड़ा गिरोह दंगाइयों और झगड़ालू मजदूरों का है। परन्तु उनके बीच सोशलिस्ट हों यह समझना कठिन है। मजदूरों के बीच—सिदाव, फिलनाव मास्लाव और दूसरे समझदार मजदूरों ने अभी कुछ समय हुआ स्वयं माँग की थी कि झगड़ालू तथा दंगाई बे-समझ मजदूरों का जो ठीक नहीं हो सकते हिसाब कर दिया जाए। सच यह है कि नस्कोव ने धोखा दिया है। क्या इसके बारे में मिरान से जिक्र किया जाए? याकाव की समझ में नहीं आया कि यदि उसने नस्कोव के बारे में मिरान से जिक्र किया तो क्या परिणाम होगा परन्तु इस बात को वह भली भाँति जानता था कि उसके सामने जिक्र करने पर वह अदालत की तरह पूछ-ताछ और पड़ताल करेगा और हो सकता है कि उसकी मशीन भी बनाए। यदि नस्कोव जासूस है—तो इसका पता मिरान को भी होगा। और, आखिरकार सवाल यही है—गल्ती किसकी है, नस्कोव की या मेरी? नस्कोव ने कहा था—

तुम्हें जल्दी ही पता चल जाएगा कि जो कुछ मैं कह रहा हूँ वह सच है।"

याकाव शिकारी की ओर तबतक देखता रहा जबतक वह निर्माणकार की छायाओं में लीन न हो गया। अब उसे प्रत्येक बात साफ-साफ और सीधी नजर आने लगी नस्कोव का स्पष्ट उद्देश्य था—उसे लूटना और इसीलिए उसने हमला किया था याकाव ने उस पर गोली चलाई और उसके बाद एक ऐसी गड़बड़ भयानक बुरी बात हो गई, जो एक स्वप्न के समान थी। नस्कोव असाधारण चाल में बाड़ की ओर जा रहा था और उसके पीछे असाधारण सघनता लिए छायाएँ चली जा रही

थी । याकोव ने पहली बार ही मनुष्य के पीछे छायाओं को इतना लम्बा लटकते और सरकते देखा था । इन चिन्तापूर्ण विचारों की थकान के कारण कनिष्ठ अर्तामानोव ने चुप रहकर प्रतीक्षा करने का ही फैसला किया । नरुकोव की चिन्ताओं से वह लगभग बीमार और निराश हो गया । जब दोपहर के भोजन के समय मजदूर अपनी बैरकों से बाहर आए वह मिल के दफ्तर की खिड़की के पास खड़ा था और सोच रहा था कि इन सब में कौन-कौन सोशलिस्ट है ? क्या यह सच है कि महामारी के चेहरे वाला संगड़ा कोयला झोंकने वाला वास्का सोशलिस्ट है जिसने तरखान छेराफिम से तुरत गढ़कर हुलाने वाले चास्तूष्कियों[1] के ढंग गाने का खूब अभ्यास कर लिया है ।

कुछ दिनों के बाद एक बार जब कनिष्ठ अर्तामानोव एक खड़े घाड़े को साधने के लिए जङ्गल के कोने की ओर गया तो उसने जेंदाम (पुलिस का अफ़सर) निस्तरेन्को को देखा जिसने स्वीडिश जैकेट और लम्बे घुटनों तक आने वाले जूते पहिन रखे थे, उसके हाथ में दुनाली बन्दूक भी थी और उसके कन्धे पर पक्षियों से भरा शिकार का एक थैला लटका था । निस्तरेन्को जङ्गल की ओर मुँह किए और रास्ते की तरफ पीठ किए खड़ा था उसकी गरदन किसी प्रकार झुकी हुई थी और वह दोनों हाथों को ऊपर उठाए ओट करके सिगरेट पी रहा था । उसकी लाल चमड़े की पीठ पर सूर्य की किरणें पड़ रही थीं जिनसे वह जैकेट लोहे की बनी दिखाई दे रही थी । याकोव उसी समय उसके पास पहुँचा और जल्दी से पहुँच कर उसका अभिवादन किया—

---

१ चास्तूष्कियाँ—रूसी लोक-गीतों का एक रूप, जिसमें मौके पर तुरत रच गए दोहों के समान पद गाए जाते हैं ।

'मुझे नहीं पता था कि आप यहाँ पधार रहे हैं।'

"भाई, आज तीसरा दिन है। पत्नी बड़ी बीमार है। रोग बढ़ता ही जाता है। हाँ और ।

यह दु:खद समाचार देने के बाद निस्तेरेन्को ने बड़े आनन्द से अपने शिकार के थैले को दिखाते हुए कहा—

'और इधर देखो ! यह सब बुरा नहीं, क्यों ?

"आप शिकारी मस्कोव को जानते हैं ? याकोव ने धीमे से पूछा। पुलिस के अफसर की लाम-लाम भौंहें एकदम आश्चर्य से ऊपर को उठीं उसकी चीनियों जैसी मूछ हिली और उसने आसमान की ओर निहारा जिससे याकोव और भी असमञ्जस में पड़ कर सोचने लगा— हो न हो वह झूठ बोलता है। परन्तु ऐसा क्यों ?"

'मस्कोव ? कौन है वह ?

'वही शिकारी घुँघराले बालों और टेढ़ी टाँगों वाला ।

हाँ हाँ लगता है मैंने उसे यहीं कहीं जङ्गल में देखा है, जो बड़ी भटिया बन्दूक लिए फिरता रहता है ? क्या उससे क्या बात हो गई ?'

अब अफ़सर ने याकोव के चेहरे की ओर खोजती हुई नीली आँखों से देखा जिनकी सफेद रश्मियों के बीच एक केन्द्र था। याकोव ने जल्दी ही मस्कोव के बारे में सब बातें बता दीं। निस्तरेन्को ने जमीन की ओर देख कर बन्दूक के कुन्दे से जमीन पर गिरी चीड़ की शाखाओं को दबाते हुए अन्त तक उसकी बातें सुनीं फिर अपनी आँखों को उठाए बिना ही कहा—

तुमने तुरंत ही पुलिस में रिपोर्ट क्या नहीं की ? यह उनका काम है और, तुम्हारा कर्तव्य है।

'मैं जो तुम्हें बता रहा हूँ कि वह कहीं हमारे मजदूरों पर जासूसी तो नहीं कर रहा और यह आपका काम है ।"

'अच्छा यह बात है । पेन्दार्मे ने बन्दूक की नाली से सिगरेट बुझाते हुए कहा । उसने अपनी आँखों को मरोड़ा और फिर त्यौरी से याकोव की ओर देखते हुए जो उसकी समझ में नहीं आया कहना शुरू किया । जिसका सार यह था कि याकोव ने कानून के विरुद्ध बात की है कि इस डाकजनी की रिपोर्ट पुलिस में नहीं की और अब इस सब के लिए देर हो गई है ।

'यदि तुम उसी समय पुलिस चौकी पर उसे घसीट लाते तो यह साफ-साफ केस बन जाता । हो सकता है बिलकुल ऐसा न होता । परन्तु, अब तुम कैसे सिद्ध करोगे कि उसने तुम पर हमला किया और वह घायल हो गया है ? हूँ हूँ हूँ ! डर से भी आदमी पर गोली चलाई जा सकती है अचानक भी हो सकता है और निरी लापरवाही से भी ।

याकोव ने अनुभव किया कि मिस्तेरेन्को चालाकी कर रहा है और उसे डराना चाहता है या उसे घबरा कर इस किस्से से हटाना चाहता है । और जब पुलिस के अफसर ने याकोव से भय में गोली चलाने का जिक्र किया तो उसका सन्देह और दृढ़ हो गया—

"झूठ बोल रहा है ।

'हाँ-हाँ, मेरे भाई, यह बात ऐसी ही है । और उसने तुमसे अपने जासूस होने की जो बात कही है उसके लिए उसे सजा मिलेगी । हम पड़ताल करेंगे कि वह क्या जानता है ।' और याकोव के कंधों पर हाथ रखते हुए मिस्तेरेन्को बोला— एगा तुम्हें मुझे वचन देना होगा कि यह बात हम तक ही रहेगी । यह तुम्हारी भलाई के लिए है । समझे ? वचन देते हो न ?'

"बेशक, विश्वास रखो ।"

तुम इस बार म न अपने चाचा और म मिरान अस क्लोईविच स ही कुछ कहोग बस तुमन उनस तो जिक्र भी नहीं किया होगा । देखो हम इसको एस भी मत है—तुम इस बारे म कहीं जिक्र न करना ! समझे । शिकारी स्वय पायस हो गया । तुम्हारा उसस कोई वास्ता नहीं ।

याकोव मुस्कराया । अब उसक साथ यह आदमी बड़ी खुशमिजाजी क साथ बात कर रहा था ।

अच्छा नमस्कार उसन कहा । 'याद रखना तुमन वचन दिया है ।

कनिष्ठ अर्तामानोव बहुत कुछ हल्का और शान्त होकर घर चला आया । सध्या समय उसक चाचा न उसक सामन गुबरनियाँ (जिला) केन्द्र जान का प्रस्ताव रक्खा जिस उसन बड़ सतोष स स्वीकार किया । सात दिन क बाद जब वह घर लौटा और दोपहर भोजन के समय चाचा क घर म गया, तब मिरान का वार्तालाप सुनकर उस एक नई व्याकुलता का अनुभव हुआ—

'निस्तरन्का एसा मूर्ख और बेकार नहीं निकला जैसा कि मैं उस समझता था । उसन शहर में तीन व्यक्ति पकड़े हैं—एक मास्टर मोदस्तोव और कई और ।"

और हमारे यहाँ स ?' याकोव न पूछा ।

हमार यहाँ स शिदोव, त्रिफुनाव, अवामोव और अन्य पाँच नौजवान पकड़ गए हैं । यद्यपि पकड़न क लिए आवरन की पुलिस आई थी परंतु स्पष्ट है कि यह निस्तरन्का का काम था, और इस प्रकार उसको पत्ता स्पष्ट हमार साम क लिए बीमार पड़ी हुई है । हाँ, वह मूख नहीं । वह डरता है कि कहीं कोई उस मार म डाल ।"

"अब लोगों ने हत्या करना बन्द कर दिया है।" अल मसेई ने कहा।

और हाँ मिरोम ने कहा शहर में उस शिकारी को भी पकड़ लिया गया है।

नस्कोव को? याकोव ने धीमे से डरते हुए पूछा।

'मुझे पता नहीं। वह उस साथुनी के घर में रहता था। उसी के घर के स्नानागार में इन क्रान्तिकारियों की कांग्रेस हो रही थी। और, उसके घर में उसी के साथ तेरा बाप रंगरलियाँ कर रहा था जैसा तुम्हें पता होना चाहिए। कितनी घटिया बात है।

'हाँ बड़ी बुरी बात है'—अलमसेई ने अपने गंजे सिर को हिलाते हुए कहा। उसका क्या किया जाए?

याकोव की आँखें मलिन पड़ने लगीं और वह अपने चाचा और भाई से अधिक बात न कर सका। उसने सोचा—"नस्कोव पकड़ा गया है इसका मतलब है कि वह भी सोशलिस्ट है और डाकू नहीं। कहीं ऐसा तो नहीं कि मजदूरों ने उसे मुझ मिल मालिक को मारने के लिए कहा हो। वह जिन मजदूरों को (जैसे सिवोव वह साफ-सुथरे कपड़े पहनने वाला ढंग का सुघड़ मिजाज हँसोड़ लोहार क्रिकुनोव वह गुस्सैल मिजाज असामोव जो गबरू और कुशल कारीगर है) बड़े अच्छे मजदूर समझता था सब उसके शत्रु हैं।

अब उसे अपने चाचा के घर में भी सारी सोसाइटी बड़ी शोर-शराबा करने वाली दिखाई देती थी। सुनहरी दाँतों वाला डाक्टर याकोव्लेव जो कभी किसी के बारे में अच्छी बात नहीं कहता था, अब तटस्थ दूर खड़े दर्शक की तरह एक अजनबी पात्र व्यक्ति की तरह जोर-जोर से व्यंग्य में बात करता था।

और, वह अपने अखबार को हिलाता हुआ भयभीत कर देने वाली बातें किया करता।

'हाँ, हाँ' अपने सुनहरी दाँतों को चमकाता हुआ वह कहता— हम खिल रहे हैं। जाग रहे हैं। जाग ऐसे आलसी नौकरों के झुण्ड के समान दिखलाई दे रहे हैं जिन्हें अचानक पता लगा हो कि उनका मालिक आ रहा है और वे जल्दी-जल्दी डर से अपनी जगहों पर तैनात हो जाते हैं और झाड़ने बुहारने और घर को व्यवस्थित करने को कोशिश करने लगते हैं।

'डाक्टर, आप दोहरी बातें कर रहे हैं' मिरान ने चेहरा बनाते हुए कहा— यह सब आपकी अराजकता और आपका सन्देह है।'

परन्तु, डाक्टर की आवाज और ऊँची हो जाती उसके भाषण और लम्बे हो जाते जिनसे याकोव के मन में और अधिक चिन्ता के बीज पड़ जाते। ऐसा प्रतीत होता था कि सब लोग किसी बात से डर रहे हैं। सब एक-दूसरे से दुर्घटनाएँ इत्यादि का जिक्र कर परस्पर भय की आग को हवा दे रहे थे और उन्हें अपने ही शब्दों कामों और विचारों से भी डर होता था। याकोव ने अपने चारों ओर एक मूर्खता को बढ़ते हुए देखा। वह स्वयं एक चिन्ता और भय के वायुमण्डल में रह रहा था जब कि उसको स्वयं का भय उतना ही यथार्थ था जितना कि गर्दन पर फाँसी के स्पर्श से पीठ में पैदा हुई सनसनी में होता है। वह फाँसी का फन्दा दिखाई नहीं दे रहा था परन्तु लगातार तंग होता जा रहा था और उसे किसी भयङ्कर अनिवार्य आपत्ति की ओर खींचे ले जा रहा था।

अगले दो-तीन महीनों में उसका भय और अधिक उग्र हो गया। शहर में नरकोव और कारख़ाने में—दुबला पीला, कट जाने वाला अग्रामोव लौट आया था।

'क्या मुझ बूढ़े को आप काम पर लगा लेंगे ?' उसने मुस्कराते हुए पूछा । याकोव उसे इन्कार न कर सका ।

'क्या भेसखाने में बहुत कमाई है ?' उसने पूछा । याकोव ने उसी मुस्कान में उत्तर दिया—

'वहाँ भीड़ बहुत है ! यदि जेल के अधिकारियों को टाइफ़ाइड ने मदद नहीं की तो पता नहीं वे लोगों को कहाँ डालते ।'

हाँ, ठीक है याकोव ने जुलाहे के चले जाने के बाद सोचा—'तू मुस्करा रहा था मैं जानता हूँ, तू क्या सोच रहा था । उसी दिन संध्या-समय यवामोव के बारे में मिरोन ने एक नज़ारा खड़ा कर दिया । वह ज़मीन पर पाँव पटकता हुआ याकोव की ओर जैसे कि वह उसका नौकर हो, चिल्लाया—

तू पागल तो नहीं हो गया है ?' वह चीखा तो उसकी नाक गुस्से से लाल हो गई । 'कल ही उसका हिसाब कर दे ।

कुछ दिनों के बाद सुबह के समय जब वह ओका में स्नान कर रहा था याकोव ने लेफ्टीनेण्ट मावरिन और निस्तेरेन्को को देखा जो किनारे की तरफ़ चप्पू मारते हुए किश्ती में उसकी ओर चल आ रहे थे । उनके हाथों में तरह-तरह के मछली पकड़ने के काँटे इत्यादि थे । ठण्डे गुन वाले शान्त लेफ्टीनेण्ट ने याकोव से उदासीनता में सिर हिला कर चुपचाप अभिवादन किया और तुरन्त नदी की मझधार की ओर चला गया । परन्तु, निस्तेरेन्को ने कपड़े उतार कर उसके पास पहुँच कर धीमे स्वर में कहा—

तुमने यवामोव को कामगार नहीं रखा । बड़ा अफ़सोस है । मुझे भी दुःख है कि मैंने तुम्हें पहले चेतावनी नहीं दी ।'

"मैंने नहीं मिरोन ने उसे हटाया है ।" कनिष्ठ मर्वामानोव

न धीमे से कहा। उसने अनुभव किया कि पुलिस के अफसर के सच्चा ॥ शराब की तेज गन्ध थी।

अच्छा ? निस्तरम्का ने पूछा। 'तुमने ऐसा नहीं किया ?"

'नहीं ?'

'मुझे बड़ा दुःख है। वह आदमी बड़े काम का था। वह बहुत अच्छी झाड़ रहती।

और याकोव की ओर उसने सहयोगी षड्यन्त्रकारी की तरह देखा। सूर्य की किरणों से उसकी आंख सुनहरी उछलती हुई मछली की खाल के समान चमक रही थी।

पुलिस अफसर ने फिर पूछा—

"तुमने अपने मित्र को भी देखा है ? वही शिकारी ? और निस्तरम्का धीमे से आत्म सन्तुष्ट व्यक्ति की तरह हँसा।

'तुम जानते हो किस कारण उसने तुम पर हमला किया था ? वह पुरानी बन्दूक खरीदना चाहता था। भाई ! वह भी लोगों के अपने अपने शौक हैं जिनमें लोग अजीब अजीब काम करते हैं। खैर, बात ऐसी ही है। वह शिकारी है और काम का आदमी है। तुम्हारे साथ उसने जो गल्ती की है उसमें उसकी गरदन मेरे हाथ में है।'

'कौन-सी गलती, आप क्या कहते हैं।'

गलती श्रीमान् मेरी गलती !' पुलिस के अफसर ने जोर से दोहराया और नंगी छाती पर क्रास का निशान कर पाड़ की तरह पानी को धकेलता हुआ नदी में आगे को घुसा गया।

"तुम सब को शैतान उठा ले। याकोव ने पराजित भाव से कहा।

उसे अचानक ऐसा प्रतीत हुआ कि किसी कमरे का दरवाज़ा खुल गया है जिसमें रोना धोना हो रहा है और मौत हो गई है।

रात के समय उसकी माँ ने उसे रोते हुए जगाया—

'उठो जल्दी उठो तिखोन भागा हुआ आया है। कहता है – तुम्हारा चाचा अलक्सेई मर गया!' याकोव एकदम बिस्तर से खड़ा हो गया और बोला—

'कैसे? यह कैसे हो सकता है? उसे तो कोई बीमारी भी नहीं थी।'

भारी साँस लेते हुए दरवाज़े को धक्का देकर उसका बाप अन्दर आया।

'तिखोन।' वह बोला— 'तिखोन कहाँ है? उससे कभी कोई शुभ बात सुनने की आशा नहीं।' याकोव 'उफ़! इतना अचानक।' रात के कपड़े पहने याकोव ने अपने कंधों पर चोगा डाला और कानों को रगड़ते हुए चारों तरफ़ कमरे में अपरिचित की तरह देखकर रोना कलपना शुरू किया—

उफ़! आह ओह!

'यह कैसे हो गया?' याकोव ने घबरा कर पूछा।

'अपने पापों का प्रायश्चित किए बिना ही।' उसकी माँ ने कहा। वह खाट की एक भारी थाली के समान दिखाई दे रही थी।

वे सब एक खुली गाड़ी में चढ़ गए। याकोव ड्राईवर की जगह बैठा गाड़ी हाँक रहा था। उसने आगे बैठे हुए देखा कि पीछे की सीट पर बैठा हुआ तिखोन किस प्रकार हिल रहा है, और उसकी छायायें ज़मीन पर ऐसे पड़ रही हैं जैसे कि वे ज़मीन पर लकीर-सी खींचती जा रही हों।

माला उन्हें आँगन में ही मिली। वह लकड़ियों के काठ से फाटक के बाद सफेद पाथर और रात के पोशाक में घम रही थी। वह चाँद के प्रकाश में हल्की-नीली पारदर्शक मूर्ति-सी दिखाई दे रही थी। उसकी आकृति में आँगन के पत्थरों पर विचित्र प्रकार की नारी छाया पड़ रही थी।

आह! मेरा जीवन तो खत्म हो गया और मैं यह बाती। काला कुत्ता कुसुम उसके कन्धों के पीछे-पीछे चल रहा था।

रसोई की खिड़की के नीचे एक बेंच पर मिरान कमर झुकाए बैठा था। उसके एक हाथ में सिगरेट सुलग रहा था और दूसरे हाथ में वह अपनी ऐनक को लिए हिला रहा था कि उसके शीशे चमक रहे थे और एक चश्मा सुनहरा उभार हुआ में हिलती दिखाई दे रही थी। बिना ऐनक के मिरान की नाक अधिक बड़ी लग रही थी। याकोव चुपचाप उसके बराबर में बैठ गया और उसका बाप मौसम के बाद खड़ा सुना खिड़की का मार एक ठीक रहा था जैसे कोई सिपाही आज्ञा की प्रतीक्षा में खड़ा हो। आसमान की ओर देखता हुआ माल्या ऊँची आवाज में नमाल्या का कुछ बता रहा थी—

मुझे पता नहीं कब अचानक उसका कन्धा मौत की तरह ठंडा हो गया और उसका मुँह सुन पड़ा। मेरा प्यारा! मुन्नम अपना अन्तिम शब्द भी नहीं कह सका। कल ही उसने दिल के दर्द की शिकायत की थी।

माल्या धार-धार बहती जा रही थी और ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उसके शब्द भी छायाओं के साथ नीचे को गिर रहे हैं।

मिरान ने अपनी सुलगती सिगरेट को फेंका और याकोव

के कन्धों पर मुककर धीरे-धीरे सिसकना शुरू किया—

तु-म नहीं जानते, वह कितना अच्छा था ।"

'क्या किया जाए ?" याकोव ने अच्छे शब्दों के अभाव में उत्तर म कहा । भाभी से भी कुछ-न-कुछ सान्त्वना के शब्द कहने चाहिए । परन्तु क्या ? वह चुप रहा । जमीन की ओर देखते हुए उसने अपनी टाँगें बेंच के नीचे को कर लीं ।

उसका पिता भी सिसक रहा था । जब वह सावधानी से घर म घुसा तो उसके पीछे-पीछे पंजों के बल चुपचाप याकोव भी घुस गया । उसका चाचा सफेद चद्दर से ढका पड़ा था । उसके सिर से बँधे हुए रूमाल की उठी गाँठें सींगों की तरह दिखाई दे रही थीं । उसकी टाँगों की लम्बी उंगलियाँ चद्दर से बाहर निकलती हुई ऐसे दीख रही थीं जैसे कि वे चद्दर को फाड़कर बाहर निकल आई हों । आकाश के एक कोने में ढलता हुआ चाँद खिड़की से अपने प्रकाश के साथ झाँक रहा था । खिड़कियों के पर्दे फरफरा रहे थे और आँगन में कुमुम झाँक रहा था । ज्येष्ठ मर्तामानाव ने छाती पर क्रास का निशान करते हुए, एक मना वश्यक ऊँची आवाज में कहा—

आराम से जिया आराम से ही मर गया ।

खिड़की से याकोव ने देखा । आँगन में उसकी भाभी के बराबर वीरा पावोवा सम्पूर्ण काली पोशाक पहन संन्यासिनी की तरह घूम रही थी । और मोला, ऊँची आवाज में उसे अपने दौर्भाग्य और आपत्ति का जिक्र से बखान कर रही थी— 'वह नींद में ही खत्म हो गया ।

"बेवकूफ मत बन !' धीरे से ब्यासोव चिल्लाया । वह पूसिया के एक टुकड़े से घोड़े की गर्दन रगड़ रहा था और घोड़े को माँठों में अपने कान पकड़ने के लिए रोक रहा था । ज्येष्ठ

मर्तामानोव ने भी खिड़की की ओर देखा और बोला—

'बक रहा है बेवकूफ ! इसमें जरा भी अक्ल नहीं ।

'यह समय कहानियों का नहीं' याकोव ने सोचा और बाहर बरामदे में जाकर काली और सफेद पोशाक वाली स्त्रियों की छायाओं को देखने लगा कि वे किस प्रकार आँगन में बिछे पत्थरों की गर्द को बुहार रही हैं । पत्थर लगातार चमकीले दिखाई दे रहे थे । उसकी माँ तिखोन के साथ धीरे-धीरे सिर हिलाती हुई सहमति से वार्तालाप कर रही थी और साथ ही पाका भी सहमति में अपना सिर हिला रहा था । उसकी आँखों में एक ताम्र बच्चा दिखाई दिया । पिता घर से बाहर आया और माँ उससे बोली—

'एक तार निकिता इल्यिच को भी भेज देना चाहिए । तिखोन उसका पता जानता है ।

'अच्छा तिखोन जानता है !' साथ में पिता ने दोहराया—'मिरोन, तार भेज दो ।

मिरोन खड़ा हुआ और दरवाजे की तरफ चल पड़ा । दरवाजे की चौखट से कंधे रगड़ कर उसने हथेली से लकड़ी पकड़ा ।

'एक तार इल्या को भी भेज दो ।' स्वयं मर्तामानोव ने उसके पीछे से कहा । दरवाजे और दीवार के बीच खाली झिर्री से मिरोन ने तुरन्त उत्तर दिया—

'इल्या नहीं आ सकेगा ।

'देखो, तीस साल मैंने इसके साथ जिन्दगी गुजारी है ।' मोल्या ने कहा, और उसे स्वयं विस्मय होने लगा कि वह क्या कह रहा है । 'और हाँ, शादी के चार साल पहले से हमारी मित्रता थी । अब मैं क्या करूँ ?

प्योत्र याकोव के पास आ गया ।

इल्या अब कहाँ है ?

मुझे कुछ पता नहीं ।

'झूठ बोलते हो !

पिताजी ! अब इल्या के बारे म जिकर का समय नहीं ।"

आँगन म डाक्टर याकोव्लेव भी बड़ी तेजी स आया और पूछन लगा—

सोने वाले कमरे म है ?

'बेवकूफ ! याकोव न सोचा— तू क्या अब उसे जिन्दा कर देगा ।

वह इन ताक की घड़ियों की अनिवार्यता और दु ख स बहुत व्यथित-सा अनुभव कर रहा था । चारो तरफ सब चीजें बड़ी दु खद और अनावश्यक थी लोग और उनकी बातें चाँदनी रात म लौह-मूर्ति की तरह चमकते हुए चाड़े—सब बड़े दु खद प्रतीत हो रहे थे । उसकी चाचा आल्या भी उसे प्रतीत हो रहा था कि अपने पति क साथ सौभाग्य और गृहस्थ-सुख की निरथक डींगें मार रही थी । एक कोन म उसकी माँ झूठ-मूठ सिसकियाँ भर रही थी और उसक पिता की आँखें पथराई हुई-सी थी । उसका चेहरा बड़ा विकृत-सा हो गया था । आस-पास का सभी चीज बड़ी दु खद और उकतास लग रही थी ।

चाचा अलताई क जनाज क बिम जब उसक शरीर का कब्र म नाच उतारा जा चुका था और उस पर मुट्ठियो स चीनो रत गिराई जा चुकी थी निकिता आ पहुँचा ।

ला ! तुम भी आ गए । याकोव न सोचा और पादरी की कागोसी आकृति का ध्यान लगा । वह आकृति चीड़ क पेड़

क पास कमर झुकाए खड़ी थी ।

अन्त में बहुत देर बाद ग्रे । ज्येष्ठ अनामानाथ ने अपने भाई की तरफ पहुँच कर अपने चेहरे के आँसू पोंछते हुए कहा । पादरी ने कछुए की तरह अपनी गर्दन खोल से सिर निकाला । उसका सब ढाँचा और पहनावा निर्माणियों की तरह था । उसका चोगा मलिन और धूप से पीला-सा पड़ चुका था, जूतों पर और एड़ियों से घिस गए थे । गाल पिचके और गड्ढे में धँसे हुए थे । अपनी धुँधली आँखों से आस-पास खड़े माता के पास में सिमटा हुआ वह ज्येष्ठ अनामानाथ से नज़र दाढ़ी छिपाता हुआ धीमी आवाज़ में कुछ बोला । याकोव चारों तरफ निगाह दौड़ा रहा था । इतनों आँखें एक विकृत आकृति के चेहरे पर टिकी हुई थीं । और चेहरा का भाई एक सम्पन्न परिवार का था । इसके साथ दोनों भाइयों के बाद किसी प्रकार के झगड़े की आशा कर रहे थे । याकोव जानता था कि शहर के लोगों का यह विश्वास था कि अनामानाथ ने इस कुबड़े भाई को जबरदस्ती नाबालिग में घोषित किया था जिससे कि बाप की सारी सम्पत्ति के उसके उत्तराधिकार के हिस्से को भी हड़प सके ।

मोटा प्रसन्नचित्त पादरी पिता निकोलाई बड़े आदर से मन्द ध्वनि में आत्मा से कह रहा था—

'हम परमपिता परमात्मा को दान धन में अपमान नहीं करना चाहिए । जो हुआ वह तो परमात्मा की इच्छा है ।'

आत्मा ऊँची आवाज़ में बोली—

'लेकिन मैं न तो रो रही हूँ और न शिकायत ही कर रही हूँ ।'

उसके हाथ काँप रहे थे । और वह बेताब झटके से अपने पाथर की जेबों को टटोलता हुए आँसुओं से तर रूमाल को वहाँ

विरुद्ध काम कर रहा हूँ ।'

"कितना रुपया चाहिए ?" याकोव ने पूछा ।

नस्कोव ने तुरन्त कहा —

पचीस रूबल ।'

याकोव ने उसे फौरन उतना पैसा दे दिया और क्रोध के साथ भयभीत हो सोचने लगा—'यह मुझे बेवकूफ समझता है । यह समझता है कि मैं इससे डरता हूँ नीच ! जरा ठहर जरा ठहर ।

फिर वह धीरे-धीरे घर की ओर चल पड़ा । याकोव, इन्हीं विचारों में मग्न था कि यह व्यक्ति उसे कैसे बहका रहा है और निःसन्देह उसे बल की भाँति कुल्हाड़े के नीचे—काटने के लिए ले जा रहा है ।

और, मृत्यु-भोज भी बहुत देर तक शोर-शराबे के साथ चलता रहा । मेहमान बहुत प्यार कर रहे थे । वे सब खुश थे । धकोन[1] कस्तेंव और 'अनन्त स्मृति' का गीत गाने वाले, सभी लोग उसमें सम्मिलित थे । भिखाईकिन खूब शराब पी चुका और अपना काँटा उठा कर वह बड़े अशिष्ट तरीके से बार-बार गाने लगा—

"नित याद करें रण-बाँकुर गौरवमय इतिहास ।
युद्ध भूमि सहृ-त्रास थी यश अधरों पर मधुहास ॥"

स्तेपान चास्की, जब भारी नरम तकिए की तरह अपने फूले शरीर को लेकर अपनी गाड़ी में चढ़ रहा था तो प्रशंसापूर्ण ऊँची आवाज में बोला—

'अच्छा प्योत्र इल्यच ! निःसन्देह तुम अपने भाई को

---

१ धकाम—बड़ा पादरी ।

प्यार करते हो ! ऐसे शानदार मृत्यु भोज को जल्दी ही नहीं भुलाया जा सकता ।

अपने मुख शराब पिए हुए पिता को याकोव ने चिढ़कर कहते हुए सुना था—

'परन्तु, तुम यह जल्दी भूल जाओगे । और अब तुम्हारा तोंद के फटने में अधिक देर भी नहीं ।

प्योत्र अर्तामानोव ने भितर्इकिन बारकी वरापानोव और अनेक प्रतिष्ठित नागरिकों को मिरान की इच्छा के विरुद्ध आमन्त्रित किया था । मिरान इस कारण स्पष्टतः रुष्ट बैठा था । मृत्यु भोज की मेज पर थोड़ी देर बैठने के बाद आध घण्टे से भी पहले वह उठकर चला गया और सारस की तरह अकड़ता हुआ चहल कदमी करने लगा । उसके पीछे ही ओल्गा भी चुपचाप बाहर चली गई, और फिर पादरी निकिता जो अर्थ मविरामत्त सोया के साधुगृह सम्बन्धी प्रश्नों से कि वहाँ वह कैसे जीवन व्यतीत करता है, तङ्ग आकर बाहर चला आया । प्योत्र अर्तामानोव का व्यवहार बहुत ही आपत्तिजनक था । ऐसा दीखता था कि वह सब उपस्थित लोगों को नाराज करना चाहता है । याकोव को मृत्यु भोज के अन्त तक डर बना रहा कि कहीं नगरवासियों और उसके पिता के बीच कोई झगड़ा न खड़ा हो जाए ।

नतास्या भी नाराज होकर अपने घर चली गई । उसे इस कारण नाराजगी थी कि ओल्गा पापोवा के साथ बहुत घुलमिल कर बात कर रही थी । और फिर पता नहीं किस कारण से उसके पिता ने चाचा अलेक्सेई के कमरे में ही रात गुजारने का फैसला किया था । इन सब बातों और पिता की अनावश्यक और फिजूल इच्छा से वह चिढ़कर दुखी हो गया । दो एक घण्टे वह सोफे पर पड़ा-पड़ा सोने की कोशिश करता रहा । फिर

बाहर चला गया। वहाँ उसने रसोई की खिड़की के नीचे आँगन में पड़ी मेज पर सिकोन के साथ निकिता को कद्दुए जैसी विचित्र आकृति को देखा, जो एक टूटी-फूटी मशीन के समान थी। निकिता ने चोगा उतार रखा था। सिर गंजा और अधिक चौड़ा होने के कारण उसका यह अप्रिय चेहरा बच्चों के समान दीख रहा था। उसके हिलते हुए हाथों में एक गिलास था और बराबर बच पर क्वास[1] की एक बोतल रखी थी।

'यह कौन है?' धीमे से उसने पूछा और तुरन्त स्वयं ही उसका उत्तर दिया— यह–याशा[2] है। याशा याशा! तुम बुड्ढों के साथ भी थोड़ी देर बैठो।

और, उसने अपना गिलास चाँद की ओर ऊपर उठाकर उसके धुँधले ब्रत का निहारा। चाँद गिरजे के घण्टाघर के पीछे अधकार में छिप रहा था और रात्रि के अंधकार में वह बड़ा विचित्र-सा दिखाई दे रहा था। बादल घण्टाघर के ऊपर मलिन मपड़ों के टुकड़ों के समान जो नीली-काली मखमल पर सिले हों, दिखाई दे रहे थे। जमीन को सूँघता हुआ पसकर्ड का प्यारा कुत्ता कुकुम बड़ी व्यग्रता से आँगन में इधर-उधर घूम रहा था। कभी वह जमीन को सूँघता हुआ चलता तो कभी आसमान की ओर अपनी थूथनी उठाता और हल्की प्रश्नात्मक चीख-सी निकालता था।

चुप, चुप कुकुम! सिदान ने धीमे से कहा।

कुत्ते ने उसकी ओर आकर अपना भारी मुँह उसके घुटने में धँसा दिया और फिर शिकायत के रूप में चिल्लाने लगा।

---

[1] क्वास—अन्न या फलों से बनाया एक प्रकार का खट्टा मुस्वादु पेय जिसका रूस में बहुत रिवाज है।

[2] याशा—याकोव का प्यार का घरेलू नाम।

'यह अनुभव करता है समझता है," याकोव ने कहा। तिखोन ने उसका उत्तर नहीं दिया। परन्तु याकोव की प्रबल इच्छा थी कि वह कुछ खास ताकि विचार उसके दिमाग में न उठें।

मैं कहता हूँ कि यह समझता है उसने दृढ़ता से कहा, और दरबान ने प्रत्युत्तर में धीमे से कहा—

'हाँ, क्यों नहीं।

हमारे यहाँ मुज्दाल के साधुगृह में कुत्ता गन्ध से ही चोरों का पता देता था पादरी ने याद कर कहा। किस बारे में जिक्र चल रहा था? याकोव ने पूछा। पादरी ने थोड़ा-सी क्वास और पीकर हाथ की बाँहों से ओठ पोंछे और पापमय मुँह से जब कि वह सीढ़ी से नीचे को सरक रहा हो बोला—

"तिखोन कहता है कि लोग फिर बगावत करने वाले हैं ऐसा दिखाई दे रहा है! सब लोग समझदार होते जा रहे हैं।

'लोग समार के मामले में अपने को भूल बैठे हैं,' तिखोन ने कुत्ते के कानों में खिलवाड़ करते हुए कहा।

"इस कुत्ते को यहाँ से भगाओ। याकोव ने हुक्म दिया— यह पिस्सुओं से भरा पड़ा है। दरबान ने कुत्ते के पंजों को अपनी जाँघों से हटाकर उस पर धक्का दिया। कुत्ता अपनी टाँगों में पूँछ दबाकर दूर जा बैठा, और अत्यधिक विषाद-विषाद में सिर ऊपर को उठा चिल्लाने लगा। दोनों आदमियों ने उसकी ओर निहारा और उनमें से सम्भवतः एक ने सोचा कि तिखोन और पादरी जमीन में गड़े उसके मालिक की आत्मा इस विपत्ती कुत्ते के लिए अधिक दुःखी है।

विवाह तो पसन्द होगा याकोव ने धीमे से कहा और फिर सावधानी से आँगन के अँधेरे कोने की ओर देखने लगा। तिखोन मालूम है मिरोन और उसके साथियों का पता कर

ले गए ?"

'हां, क्यों नहीं ।'

पादरी ने अपने चोगे की जेब से टीन की एक डिबिया निकाली और उसमें से चुटकी भर नस्वार लेकर सूंघा और अपने भतीजे से कहा—

इस नस्वार का इस्तेमाल करता हूँ इससे आँखों को बड़ा मदद रहती है । अब मुझे कम दीखने लगा है ।'

छींकने के बाद वह फिर बोला—

'पकड़-धकड़ तो गाँव में भी हो रही है ।'

"सब जगह जासूस फैले हुए हैं' याकोव ने साधारण भाव से कहा ।

'सब पर निगरानी है ।

तिखोन बुदबुदाया—

'हाँ निगरानी न रखें तो कुछ पता भी न चले ।

और, याकोव ने अनिश्चित भाव से लड़खड़ाती ध्वनि में पता नहीं रात की सर्दी के कारण अथवा भय से फुसफुसाहट में कहा—

'और जासूस हमारे यहाँ भी हैं । उस शिकारी नाकोव के बारे में अजीब-अजीब अफवाहें हैं । कहा जाता है कि उसने सिदाव और नगर के लोगों के बारे में मुखबरी की है ।'

"ओह तू कितना बेवकूफ है'—तिखोन ने कुछ रुक कर प्रत्युत्तर में कहा और फिर कुत्ते की ओर अपना हाथ बढ़ाया और उसी क्षण उसे अपने घुटनों पर रख लिया । याकोव ने अनुभव किया कि उसने फिजूल यह बात शुरू की और सोचने लगा कि आखिर मैंने तिखोन का क्यों चौकन्ना कर दिया—

'देखो, नरकाम के बारे में कहीं कुछ न कहना ।

"क्यों, मुझे क्या जरूरत पड़ी है ? मेरा उससे कोई वास्ता नहीं । आजकल किससे बात की जाए किस पर विश्वास किया जाए ?'

'ठीक है,' पादरी ने कहा । अब लोगों में विश्वास कम हो गया है । लड़ाई के बाद मैंने कुछ घायल सिपाहियों से बातें कीं मैं देखता हूँ कि सिपाही भी लड़ाई में विश्वास नहीं करते मामा ! यह लोहा है । सब जगह लोहा ही लोहा और मशीनें हो गई हैं । मशीनें सब काम करती हैं मशीनें ही गाती हैं, मशीनें ही बोलती हैं । मशीनों वाले इस कारखाने में रहने को भी दूसरे ही लोगों की जरूरत है—जो लोहे के हों । बहुत लोग यह बात समझते हैं । मैं ऐसे बहुत से लोगों से मिला हूँ—जो कहते हैं हम तुम सब आराम-पसन्द लोगों को मजा चखा देंगे । और बहुत से इससे नाराज हो जाते हैं । जब मनुष्य अपने चारों तरफ हुकुम चलाता है,—तो लोग उसके अभ्यासी हो जाते हैं । परन्तु, जब लोहे के खिलाफ होते हैं तो लोहा नाराज हो जाता है ! पहिले हथौड़े-कुल्हाड़े और अन्य ऐसी ही चीजें जो हाथ से उठाई जाती थीं उनको लोग स्वयं उठाते थे परन्तु अब तो सौ-सौ मन की मशीनें जीवित मनुष्य की तरह स्वयं उठ खड़ी होती हैं ।

तिरोन ने आह भरी । याकोव के लिए ये सब बातें अनसुनी थीं । वह हँसते हुए बोला—

'घोड़े के बिना गाड़ी दौड़ रही है । आह ! भगवानो !

'और लोग बहुत नाराज हैं' पादरी ने धीमे-धीमे अपना कहना जारी रखा—'तीन साल तक मैं घूमता रहा हूँ । मैंने देखा है कि लोग कितने नाराज हो गए हैं और यह पता

नहीं चलता किस बात से नाराज है। सब एक दूसरे से नाराज हैं। एक बात है अपराधी सब हैं—कोई अपनी बुद्धि के कारण तो कोई मूर्खता के कारण। यह बात मुझे पादरी ग्लेब ने बतलाई थी। यह तो बहुत अच्छी बात है!'

'वह पादरी अभी जिन्दा है?' सिखोन ने पूछा।

'वह अब पादरी नहीं रहा।' मिकिता ने कहा। 'वह पादरी का धंधा छोड़ चुका है। अब देहातों—मेलों में किताबें बेचता फिरता है।'

'पादरी बहुत अच्छा आदमी है।' सिखोन ने कहा। 'मैं उसके पास अपने पापों को स्वीकार और प्रायश्चित्त करने के लिए जाया करता था। बहुत अच्छा आदमी है। पादरी तो वह गरीबी के कारण बन गया था। असल में उस परमात्मा पर कोई विश्वास नहीं था। मेरा तो ऐसा ही खयाल है।'

'नहीं, ईसा में विश्वास रखता था। सब आदमी अपने तरीके से ही विश्वास करते हैं।'

'इसी से तो सारी गड़बड़ शुरू होती है'—सिखोन ने हँसते हुए कहा और फिर बड़े भद्दे तरीके से हँसा—"क्या, खूब खाया है!"

इसी समय बरामदे से ज्यादा अर्तामोनोव नंगे पाँव चुपचाप बाहर निकला उसने रात के कपड़े पहन रखे थे। उसने नीले धुंधले आकाश की ओर देखकर खिड़की के नीचे बैठे लोगों से कहा—

"नींद नहीं आ रही। कुत्ते ने दुःखी कर दिया है। तुम लोग यहाँ क्या बातें कर रहे हो?

कुत्ता आँगन के बीच बैठा था। उसके कान खड़े थे और वह खुली खिड़की की अंधेरी जिल्द की ओर देख रहा

था। लगता था, जैसे वह अपने मालिक की चुनाहट की प्रतीक्षा में हो—

"और तिख़ोन तू अपनी क्या रट लगाए हुए है?" अर्तामोनोव ने कहा। "देख याकोव! यह किसान अपने एक विचार पर ही झुका हुआ है जैसे कि भड़िया जाल में फँसा हो। और भाई तू भी ऐसा ही है। निकिता! तुझे इल्या के बारे में कुछ पता है?"

"हाँ, सुना तो है।"

"हाँ! मैंने उसे घर से निकाल दिया है। वह पराए घोड़े पर सवार रहता था और यहाँ से पता नहीं किधर भाग गया। यह बात ठीक है सब उसकी तरह सम्पत्ति छोड़ कर नहीं जा सकते और अज्ञातवास नहीं कर सकते जैसा उसने किया है।"

"असस्सई[1] भी तो परमात्मा का आदमी था उसने भी ऐसा ही किया था।" निकिता ने धीमे से याद कराया।

ज्यष्ठ अर्तामोनोव ने अपना हाथ माथे की ओर उठाया। कुछ देर चुप रह कर वह बगीचे में चला गया और याकोव से बोला—

"मेरा बिस्तर कम्बल और तकिया इधर ले आ हो सकता है यहाँ नींद आ जाए।"

वह भारी भरकम सफेद बाग में सिर पर बिखरे बालों और चूर चूर सूजे चेहरे वाला लगभग बहुत डरावना दिख रहा था।

"मठाधीश के बारे में, निकिता, तू फ़िज़ूल बातें करता है

---

1 असस्सई—सन्त असस्सई।

उसने ग्रीगन के बीच रुकते हुए कहा—"तू मशीनों के बारे में क्या समझता है ? तेरा काम है परमात्मा के बारे में बताना । मशीनें कभी कोई रुकावट नहीं पैदा करतीं ।'

तिखान ने बड़े मनावर भाव में धृष्टता से कहा—

'मशीनों के कारण जीवन मँहगा और शोर-शराबे वाला बन गया है ।'

क्यह मर्तामानोव हाथों को फेंक कर धीमे से एक ग्रोर हटा ग्रोर बगीचे की ग्रोर चला गया । उसके आगे ग्राम याकाव तकिया उठाए ग्रस्पष्ट रूप में सोच रहा था—

'पिताजी ग्रोर चाचा तो दोनों सगे भाई हैं । मुझे इनसे क्या ? ये मेरी क्या मदद कर सकते हैं ।

प्योत्र मर्तामानोव ने ग्रपने छोटे भाई पादरी निकिता को ग्रपने घर रहने को ग्रामन्त्रित नहीं किया । पादरी ग्रोल्गा के घर में ही पीछे के एक चोबारे में ठहर गया ग्रौर उसने उसे बताया—

मैं कुछ समय तक यहाँ ठहर कर जल्दी ही चला जाऊँगा । वह बहुत कुछ ग्रज्ञात रूप से रह रहा था । जब तक उसे नीचे बुलाया न जाता तब तक वह नीचे कमरों में न जाता । वह बगीचे में पेड़ों की काट-छाँट करता रहता ग्रोर कछुए की तरह चलता हुग्रा जमीन से घास काटता । दिन प्रति दिन उसके चेहरे की झुर्रियाँ बढ़ती जाती थीं । उसका शरीर क्षीण होता जा रहा था ग्रोर बोलते समय उसकी ग्रावाज बड़ी मन्द पड़ जाती थी जैसे कि वह किसी कब्र से बोल रहा हो । गिर्जे में भी वह कभी-कभी ग्रोर ग्रनिच्छापूर्वक जाता ग्रोर प्राय बीमारी का बहाना कर घर में भी बहुत कम प्रार्थना करता । बात चीत में भी वह परमात्मा के बारे में बहुत कम जिक्र करता ग्रोर यथाशक्य इस विषय पर वार्तालाप में भी किनारा कर जाता ।

याकोब ने देखा कि श्रोल्गा पादरी से बहुत घनिष्ठ हो गई है श्रौर श्रीरा पापोवा तो उसका बड़ा श्रादर करती है। यहाँ तक कि जब कभी उसका पादरी चाचा अपनी यात्राओं श्रौर लोगों के बारे में जिक्र करता तो मिरोन भी न तो नाराज ही होता श्रौर न नाक-भौं ही सिकोड़ता। इन दिनों मिरोन अपने बाप की मृत्यु के बाद बहुत रूखा श्रौर कठोर हो गया था कारखाने के बन्दोबस्त में ऐसे हुक्म चलाता जैसे कि वह उसका सबसे बड़ा मालिक हो श्रौर याकोब पर किसी नौकर की तरह डाट डपट करने लगता।

जब कभी नताल्या सामने आती तो पादरी उसके साथ गोल-गोल चेहरे पर वैसी ही दयापूर्ण दृष्टि डालता जैसी कि श्रोरा पर डालता था। परन्तु, वह श्रोरा की अपेक्षा नताल्या से बहुत कम बोलता। नताल्या भी इन दिनों बहुत कम बोलने की आदी हो गई थी। वह सदा ठंडी स्वांसें भरती। उसकी काली चीते जैसी आँखें कभी-कभी अपने पति के स्वास्थ्य के बारे में अस्पष्ट रूप से निहारतीं। मिरोन को देख उसे डर लगता श्रौर मोटे भारी बेटे—याकोब को देखकर उसमें मातृ प्रेम का आह्लाद उमड़ आता। पता नहीं किस कारण से पादरी तिखान के साथ असहमत रहता था श्रौर वे दोनों आपस में एक-दूसरे के सामने से एस हो गुजर जाते जैसे दो अंधे गुजर जांय।

याकाब के जीवन में अब अपने पादरी चाचा की कोणाकार, कछुए जसी आकृति से एक श्रौर चिन्ता की छाया हो गई। पादरी का मलिन पिघलता हुआ चेहरा उसके अन्दर एक भारी मृत्यु की आशंका जागृत करने लगा। याकाब अर्तामानोव ने देखा कि घर में नई-नई चिन्तायें बढ़ रही हैं। श्रौर, क्योंकि उसकी] निजी चिन्ताएँ ही काफी थीं इस कारण उसे घरेलू चिन्ताएँ श्रौर अधिक व्यथित करने वाली प्रतीत हो रही थीं। उसके जैसे चतुर दूरदर्शी अनुभवी प्रेमी ने देखा कि पालिना जो अब उसकी

भोर से विमुख होती जा रही है और उसके सन्देह स्थिर, मसिष लफ्टिनेण्ट मार्वरिन पर दृढ़ होने लगे। अब याकोव से आमना सामना होने पर लैफ्टीनेंट अभिवादन के लिए बड़ी उपेक्षा से अपनी उंगलियाँ हैट से छूता और भोला को ऐसे घूरता जैसे कि वह अत्यन्त दूरवर्ती क्षुद्र वस्तु को निहार रहा हो। पहले वह कभी सामाजिक मुलाकातों के समय या शहर में साथ में भारी रकम का कर्ज लेने के लिए, अथवा कर्ज की मियाद को लम्बा करने के लिए बड़े आदर से प्रार्थना करता। अनेक बार चाप लूसी के भाव से उसने प्रशंसा में कहा था—

'अर्तामानोव तुम्हारा ढाँचा बिलकुल तोपखाने के अफसरों का सा है।

अथवा वह इसी प्रकार की अन्य प्रिय बातें बनाता जिन्हें याकोव खुशामद समझता था। इस अभिमानी प्रसन्नचित्त अफसर की शान्ति के प्रति नितान्त उपेक्षा तथा उसकी शक्ति और फुर्ती का दम शहरी लोग भौचक रह जाते थे और साथ ही उसके गुप्त साहस और वीरता में भी बहुत विश्वास रखते थे। वह लोगों के चेहरे की ओर अपनी भाल-नासे पत्थर जैसी आँखों से देखता और हुकुम देती हुई आवाज में कहता—

मैं ठण्डे खून वाला पुरुष हूँ। मुझे अतिशयोक्ति सहन नहीं।

एक दिन शहर के बूढ़े पोस्टमास्टर इलोव से वह ताश पर झगड़ पड़ा जिसकी तेज हाजिरजवाबी से सारा शहर भिन्न भिन्न था। मार्वरिन ने उससे कहा—

मैं अतिशयोक्ति नहीं कर रहा। परन्तु तुम एक बुड्ढे बेवकूफ हो।

याकोव मार्वरिन पर अपना प्रेम प्रतिद्वन्द्वी होने का सन्देह

करता था और साथ ही वह उसके साथ संघर्ष से भी डरता था। परन्तु उसे यह कभी नहीं सूझा कि यह स्त्री जिसे वह अब और अधिक प्रेम करने लगा था मार्वग्नि के सामने आत्मसमर्पण कर देगी। उसने उसे कई बार चेतावनी भी दी थी—

'देख! यदि मुझे ज़रा-सा भी पता चला कि तेरे और मार्वग्नि के बीच कुछ मामला है—तो मैं तुझे छोड़ दूँगा!

इसके साथ-साथ शिकारी नस्कोव के बारे में भी उसका भय बढ़ता जा रहा था। वह शहर के एक कोने में नवास्ता के पुल के पार रास्ते पर ज़मीन से अचानक निकल आता जैसे कि उसे कोई कर्ज लेना हो और अपनी टोपी में देखते हुए दृढ़ता से माँग कर बैठता।

इस शिकारी के बारे में एक विचित्र और अप्रिय बात यह थी कि वह सदा एक ही स्थान पर प्रगट होता था, जहाँ सन और घास घनी उग रही थीं और जहाँ घास खासकर दो बसों की शाखाओं के बीच बहुत घनी भाड़ी थी। दो वर्ष पहले इस जगह एक बागवान पैनफ़िल का छोटा-सा घर खड़ा था परन्तु उसे किसी ने मार कर उसका घर जला दिया। जलने की आग से झुलसी शाखाएँ अभी तक कोने में काली-काली दिखाई दे रही थीं। मरदकी[1] खसने वालों ने राख को मिट्टी के साथ मिलाकर उसे समतल बना दिया था। मकान के खंडहरों के बीच ईंटों की बुनियाद और चिमनी अभी खड़ी हुई थी और चाँदनी रातों में उस पर एक हरा तारा आसमान से नीचे लटकता दिखाई देता था। नस्कोव इस चिमनी के पीछे से धीरे-धीरे भाड़ियों को हटाता हुआ अपना सिर उठाता और टोपी उठाकर बड़बड़ाता

१ मरदकी—कई रूपों का एक ऐसा घास जो बहुत से रूपों को फेंक कर खसा जाता है।

लगता—

मैं आपकी सेवा में हूँ। आपके कारखाने में फिर एक गिरोह खड़ा हो रहा है।

इन गिरोहों से मेरा क्या वास्ता याकोव गुस्से में कहता और नस्काव की खुल्लमखुल्ला घृणा का भागी बनता—

'निःसंदेह आपका इन गिरोहों से कोई वास्ता नहीं परन्तु उनका आपसे वास्ता है।

अफ़सोस है मैंने इसे उस रात को नहीं मार डाला।' याकोव ने दसियों बार इस पर अफ़सोस किया होगा। और जासूस को पैसा देकर कहता—

देखो, बचकर रहना।

हाँ-हाँ मैं जानता हूँ।

मुझे गड़बड़ में मत डालना।'

'क्या? आप बेफिकर रहें। ऐसा नहीं होगा।

'बेशक वह मुझे निपट मूर्ख समझता है नस्काव को काम का आदमी समझते हुए भी याकोव का विश्वास था कि टेढ़ी टाँगों और चपटे चेहरे वाला यह आदमी उससे बदला भी लेना चाहता है। वह यह जरूर चाहता है। वह या तो उसे डराना चाहता है या उससे पैसा ऐंठना चाहता है। जो कुछ उसे वह दिखता रहता है शायद उसी से वह मजदूरों को खरीद कर उन्हें मरवाना चाहता है। याकोव को ऐसा भी प्रतीत हुआ कि पिछले दिनों से मजदूर उसकी ओर रोष से बहुत गौर से देखते हैं।

मिरान ने कई बार कहा था कि मजदूर बगावत पर उतारू हैं—इसलिए नहीं कि वे अपनी अवस्था में उन्नति करना चाहते हैं परन्तु, इसलिए कि बाहर से तरह-तरह के गुण्डा

पूर्ण विचार उनके दिमागों में ठूँसे जा रहे हैं कि उन्हें बैंकों कारखानों और देश की सब सम्पत्ति पर अपना अधिकार कर लेना चाहिए।

इस बारे में जिकर करता हुआ वह अपनी लम्बी-लम्बी टाँगों से चहलकदमी करता और कॉलर में उँगली फँसा गर्दन मोड़कर घूमता यद्यपि उसका कॉलर काफी ढीला था और गर्दन भी काफी पतली थी।

'यह तो सोशलिज्म भी नहीं। शैतान ही जानता है यह क्या है? और इस प्रकार के विध्वंसात्मक विचारों का प्रचार करने वाला मेरा सगा भाई है। हमारी सरकार में भी बड़े-बड़े बुद्धू काम करते हैं।

याकोव जानता था कि ये सब बातें जो मिरोन करता है, सुनने वालों को यह जताने के लिए ही करता है कि सरकारी ड्यूमा पद के लिए वह भी योग्य व्यक्ति है। परन्तु फिर भी भाई के घृणापूर्ण भाषणों से याकोव के हृदय में एक प्रकार का भय लगातार बढ़ता ही गया। वह आने वाली आपत्ति को और अधिक निकट अनुभव करने लगा। एक दिन सुबह जागने पर उसने मिल के आँगन में लोगों की चिल्लाहटें सुनीं। तकिए से सिर उठाते समय उसने देखा कि गोदाम की सफेद चिकनी दीवारों पर मानो भीड़ की काली-काली छायाएँ दौड़ रही हैं। वे लोग उछल-कूद कर रहे हैं हाथ पाँव मार रहे हैं और ऐसा लगा कि गोदाम का सारा पिछला भाग खींचकर बाहर लिए जा रहे हैं। याकोव पसीने-पसीने हो गया और एकदम चीख उठा—

"बगावत! बगावत!"

भीड़ की ये छायाएँ, जो उन लोगों की अपेक्षा अधिक भयानक थीं, एकदम लुप्त हो गई। याकोव को याद आया कि

से चमकते कुल्हाड़ों की चमक और मिरान की सुनहरी ऐनक खिड़कियों के प्रकाश का प्रतिबिम्ब फेंक रही थी। मिरान ने पुरानी सस्ती तस्वीरों के एक बहादुर जनरल की तरह अपना हाथ फेंका, जैसे कि वह किसी चीज को जमीन पर बिखेर रहा हो।

याकोव ने दफ्तर की खिड़की से उसे देखा था। उसे भी अपना बहनोई बड़ा प्यारा लगता था। उसके साथ उसका जीवन आनन्द में गुजरता और वह व्यथापूर्ण विचारों को भूल जाता। याकोव इस व्यक्ति के स्वभाव से ईर्ष्या करता था। परन्तु साथ ही उसे एक भविष्य द्रष्टा की तरह विश्वास भी था कि वह किसी भी दिन एक उड़ते पक्षी की तरह चला जाएगा और एक्टर या नाई बनकर अचानक लुप्त हो जाएगा। मीत्या का एक विशेष गुण यह था कि उसमें लालच का सर्वथा अभाव था। तत्याना के विवाह में उसने दहेज की भी माँग नहीं की थी। हो सकता है तत्याना की यह कोई चाल हो। ज्यष्ठ अर्तामानोव मन में भुनभुनाता—

देखो तो किस छोटे से लाल सिर वाले के लिए मैंने कमाई की है।

इधर मिरान ने भी विवाह कर लिया था।

'कृपया मुझे अपनी पत्नी को उपस्थित करने की आज्ञा दीजिए।' उसने मास्को से वापिस आकर अपनी गाल-मटोल नीली आँखों घुंघराले बालों और टेढ़ी गर्दन वाली छोटी-सी गुड़िया जैसी पत्नी को सामने किया। यह स्त्री एक पिस्तान के से छोटे आकार की थी और उसके सब नख-शिख बड़ी सफाई के साथ बने हुए थे। लेकिन यह याकोव की दृष्टि में उसके चाचा अलेक्सेई की बैठक में रखी पक्षी के सामने चीनी की छोटी मूर्ति के समान रक्त मांस की बनी स्त्री थी। इस चीनी की मूर्ति की गर्दन

टूट चुकी थी और उसे गोंद से किसी प्रकार टेढ़ा चिपका दिया गया था जिससे उसकी आँखें कमरे में बैठे लोगों की अपेक्षा सामने लगे शीशे में पड़ती थीं। मिरोन ने बताया कि उसकी पत्नी का नाम अन्ना है। वह सत्रह साल की है। परन्तु इस बारे में चुप रहा कि वह कागज के एक मिल-मालिक की एक मात्र लड़की है और वह अपने साथ काई-लाख रुबल भी लाई है।

'यह तरीका है कुछ लोग कैसे विवाह करते हैं। पिता याकोव की ओर लाल-लाल आँखों से देखते हुए बड़बड़ाया— और तू पता नहीं क्या गड़बड़ कर रहा है। और इत्या यहाँ से कुत्ते की तरह बाहर फेंक दिया गया है।

प्योत्र अपने भारी बेकार शरीर को उठाता हुआ कठिनाई से चल रहा था। याकोव को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका पिता अपने शरीर के बोझ से तंग आ चुका है और जान-बूझकर अपने बाभिल वृद्ध शरीर का प्रदर्शन कर रहा है। वह रात के कपड़ों में नंगे पाँव स्लीपर पहने बाग के बटन बन्द किए बिना ही खुली कमीज में घूमता था जिससे उसकी मोटी चरबी भरी छाती नंगी दिखाई देती थी। ऐसा वह अपनी बड़ी लड़की के ध्यान के समय उसे तंग करने के लिए किया करता था। कभी-कभी वह मिल के दफ्तर में आ बैठता और अपनी अनन्त बेकार बातों से याकोव के काम में विघ्न डालता और कहता कि उसने अपने बच्चों के लिए ही इस मिल में जीवन को बलिदान कर दिया है और उसने एक व्यवसायी की पत्थर ढोने वाली गाड़ी में जुते घोड़े की तरह अपनी सारी जिन्दगी खत्म कर दी है। वह सदा अनन्त चिन्ताओं से घिरा रहा है और उसने कभी एक घड़ी के लिए भी जीवन का सुख नहीं देखा।

याकोव इन बातों को सुनता और चुप रहता। वह देखता था

कि इन शिकायतों से पिता को कुछ संतोष मिलता है । इससे वह बेटे की नज़रों में इतना फंस जाता और ऊँचा हो जाता जितना कि गिरजे का घण्टाघर—क्योंकि शहर के घरों के लोगों से पहले सूर्य उसे ही देखता है और सन्ध्या-काल में सब से पहले उससे ही विदाई ले चला जाता है । परन्तु, पिता की इन सब शिकायतों से बेटे ने यह शिक्षापूर्ण परिणाम निकाला कि जीवन में उसे इस प्रकार निरर्थक नहीं रहना जैसा कि उसका पिता रहा है ।

और, उसने हमेशा देखा कि एक अच्छे भरपेट भोजन के बाद उसका पिता शिकायतों की तीव्र बेचैनी से परिपूर्ण हो कर अपने आस-पास के लोगों को खूब नाराज़ करना चाहता था । उसकी बूढ़ी पत्नी बगीचे में खिड़की के पास अपने घुटनों पर अनावश्यक हाथों को टिकाकर अपनी सूनी-सूनी आँखों से आसमान में एक बिन्दु की ओर देखती हुई बैठी रहती । वह उसके बराबर में आकर उससे छेड़खानी करने लगता—

'तू क्या सोच रही है ? तू मोटी तो है परन्तु दिखाई नहीं देता । बच्चे भी तो तुझे कुछ नहीं समझते । बस, तरयाना ही तेरी अपेक्षा रशाईवारिन से अधिक प्यार से बोलती है । एलोना भी तुझे भूल चुकी है, अब वह यहां आती ही नहीं । क्यों ? मालूम होता है किसी और नए प्रेमी से फंस गई होगी । और दुन्या कहाँ है ?"

परन्तु अपनी पत्नी से झगड़ा करना बड़ा नीरस था । क्योंकि उसका लाल-गुलाबी चेहरा एकदम आँसुओं से भर जाता था । ये आँसू केवल आँखों के कोने से ही नहीं परन्तु उसके गालों की खाल से और कानों के पीछे से भी दमकते-टपकते दिखाई देते थे ।

पहले अब अपने आँसू सुखा ले ।' पति बड़ी घृणा से

कहता और उसके पास से एक धुएँ की तरह दूर हो जाता।

याकोब की माँ उससे कभी झगड़ने की कोशिश नहीं करती थी। और, बेटे ने उसकी नजर में एक दुःखद दया का भाव देखा था। कभी-कभी उसका पिता आह भर कर कहता—

ओह खासो ओखों बास।

मिरोन उसकी छेड़खानी और मखौल से परे था। प्यादा उससे डरता था और परे-परे ही रहता था। याकोब इस बात को जानता था।

मिल में और घर में उसकी माँ और बीबी की बनी मूर्ति जैसी पत्नी से लेकर नौकर लड़के पीयोत्र तक सामने का दरवाजा बन्द करता था तक सब डरते थे। जब मिरोन आँगन में चला जाता तो ऐसा प्रतीत होता कि उसकी लम्बी-लम्बी छायाएँ भी उसके पीछे नीरवता पैदा करती जाती हैं।

अपने लाल सिर वाले जंवाई से भी छेड़खानी में विशेष आनन्द नहीं आता था क्योंकि वह स्वयं छेड़खानी और मखौल में कुशल था और अपने पर चोट होने से पहिले ही उस पर चोट करना शुरू कर देता था। नताल्या के पेट में बच्चा था, वह बहुत फूल चुकी थी उसके ओठ किसी कदर सिकुड़ से रहे थे। दोपहर के भोजन के बाद वह लेट जाती और मोटी किताबें एक साथ पढ़ने लगती। उसके बाद वह अपने पति के साथ घूमने चली जाती। उसके बराबर में उसका पति नौकर की तरह चलता रहता।

कभी ज्यादा यत्नामोव गाड़ी में घोड़ा जुतवा शहर में बड़ी निश्चिन्तता और विनोद के साथ मजाक मारने और छेड़खानी करने चला जाता। याकोब ने कई बार उसे ऐसा करते देखा था।

"प्यारे विद्यार्थी ! भाग में क्या कहीं परमात्मा को खो बैठा है ?"—वह पादरी से उलझ जाता। निकिता अपनी कुर्सी के साथ हिलता और अपनी हथेली को अस्थिमय घुटनों पर रखता हुआ धीमे से उत्साहना देता कहता—

ओह ! तुम ऐसा क्यों कहते हो। यह बेकार है ।"

"बेकार क्या है ? तुम अपनी टोपी तो पहनी नहीं है। यह तो तेरे सिर पर झूठी टोपी है। यह तेरा चोगा और यह दावा सब झूठा है। तू कैसा साधु है ?

'यह मेरी अन्तरात्मा की बात है।

'अच्छा तम्बाकू भी सूंघता है। मैं कहता हूँ तू गलत रास्ते पर है। अच्छा होता तू अपनी जवानी के दिनों में किसी गरीब, अनाथ लड़की से विवाह कर लेता जो कृतज्ञतापूर्वक तेरे लिए बच्चे जनती। और अब तू दादा हो लेता। परन्तु, तूने वह मौका खो दिया। याद है ?

पादरी निकिता एक बड़े कछुए की तरह धीरे धीरे इधर उधर सरक जाता और प्यात्र अर्तामानोव फिर ओल्गा की ओर जा पहुँचता और उस मन में असकर्ड के व्यभिचार और रंग-रलियों के किस्से सुनाता। परन्तु इससे भी उसे कुछ संताप न होता। क्योंकि वह छोटी-सी बुढ़िया पति की मृत्यु के बाद एक प्रकार की सनकी का शिकार हो चुकी थी, और वह घर के फरनीचर, व अन्य सामान को सदा इधर-उधर उलट-पलट करती या खिड़की से बाहर झांकती रहती। वह अपने सिर को चुपचाप हिलाती हुई चलती और अपनी नाक पर भारी नीला चश्मा एनक पहन छड़ी के साथ चाभी झाप आय का फैसला टटोलती हुई चलता। प्यात्र की ईर्ष्याभरी कहानियों को सुन कर वह मुस्करा कर जवाब देती—

"जो तुम्हारी मर्जी है कह जाओ परंतु मेरे भाल्योमा को जैसा कि मैं जानती हूँ कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा। तुम कोई अच्छी बात तो कह नहीं सकते।

"वह तेरे बारे में ठीक ही कहता था कि तू एक आँख से देखती है।"

"मुझे तो अब दोनों ही से नहीं दिखाई देता। भास्मा ने कहा, अब बिल्कुल दिखाई नहीं पड़ता। कल उसको प्रिय चीनी की मूर्ति को मैं अपने अपेपन से तोड़ बैठी।

अक्सर पर्तामानोव सिग्नान से भी उलझन को जाहिर करता। परन्तु उसमें उलझना आसान नहीं था। सिग्नान नाराज नहीं होता था और अपने कंधे से पीछे को देखता हुआ वह चुप चाप सवेरे में जवाब देता।

तू बहुत दिन जिएगा —पर्तामानोव ने कहा। सिग्नान ने अपनी गूँजती आवाज में उत्तर दिया—

हाँ, लोग जीते हैं और अधिक जीते हैं।"

'और, तू क्या जी रहा है ? बता ?

सभी जीना चाहते हैं। उसे उत्तर मिलता।

'ठीक है ! परन्तु सब लोग जिन्दगी भर आँगन में भाड़ू तो नहीं लगाते।'

सिग्नान के अपने अलग विचार थे।

यह ठीक है कि पैदा हो जाते हैं। परन्तु, जीना तो मौत तक पड़ता है। —वह जवाब देता। पर पर्तामानोव उसकी सुने बिना अपनी बात कहता जाता।

'दास ! तूने अपनी सारी जिन्दगी हाथों में भाड़ू लिए गुजार दी। न तेरे कोई है न बच्चे और न किसी प्रकार की

तुम्हें चिन्ता है। ऐसा क्यों ? मेरे पिता ने तुम्हें दूसरा अच्छा काम दिया था। परंतु तूने उससे आग्रहपूर्वक इन्कार कर दिया। क्या कारण था ?'

"यह पूछने का तुमने समय निकाल दिया प्योत्र इल्यच !" तिखोन ने एक तरफ निहारते हुए कहा।

अर्तामानोव ने फिर नाराज होते हुए दृढ़ता से उलझना शुरू किया—

तू जरा देख तो कि तेरे जीवन में कितने लोग मालदार हो गए। सब लोग जीवन के सुख चाहते हैं उन्होंने धन भी एकत्रित कर लिया है।

ठीक है धन एकत्रित करते रहे खूब जमा किया और शैतान का तरीका ऽऽ। तिखोन ने अपने 'था' को विशेष जोर के साथ लम्बा उच्चारण करते हुए कहा।

याकोव इन्तजार में था कि पिता नाराज होगा और तिखोन को गालियाँ सुनाएगा। परंतु वृद्ध पिता चुप रहकर कुछ अस्पष्ट रूप से बुदबुदाया और फिर दरबान के पास से हट गया। तिखोन भी उम्र के साथ-साथ सुस्त पड़ता जा रहा था, उसके बाल कम और एक ही रङ्ग के धौले पड़ गए थे। उसकी आँखें मटियाली पड़ती जा रही थीं परंतु फिर भी वह आयु के आक्रमण के विरुद्ध बहुत अच्छी तरह डटा हुआ था। शरीर उसका पहिले जैसा ही दृढ़ था और अब उसके चेहरे पर एक प्रकार का गौरव और शांति आ गई थी। वह महत्त्वपूर्ण उपदेश देता हुआ बातें करता। याकोव को ऐसा प्रतीत होता था कि तिखोन उसके पिता की अपेक्षा अधिक 'अधिकार और स्वामित्व' से बात करता था।

याकोव भी अनुभव करता था कि अपने परिवार के बीच

वह फासतू आदमी है। घर भर में उसे एक पराया व्यक्ति मीत्या भोंमोनाव ही पसन्द आता। मीत्या उसे न मूर्ख और न ही बुद्धिमान दिखता था। वह उसे इन्हें किसी भी श्रेणी में नहीं रख सकता था। वह और सबोंसे भिन्न था। और उसका महत्व उसके प्रति मिरोन के व्यवहार से स्पष्ट था। मिरोन सब के साथ रोब और घमण्ड बरतता था, सब पर हुकुम चलाता था और अधिकार जमाता था। परन्तु मीत्या के साथ समय २ पर बहस मुबाहिस के बावजूद बहुत अच्छा था। मिरोन उसके साथ कठोर जबान-दारी नहीं करता था। घर में सुबह से सांझ तक नाना प्रकार का शोर होता रहता।

मीत्या!'—तत्याना चिल्लाती। कहाँ है मीत्या? — माँ पूछती और कभी-कभी याकोव भी खिड़की के बाहर सिर निकालकर जोर से चिल्लाता—

'मित्री,— भोजन का समय हो गया है चाचा!'

मीत्या मिल में नामकी की तरह सबों में घूमता होता और अपनी हँसी-मजाक की कभी-कभी पूछ से मजदूरों और ...ों के साथ मिरोन की कठोरता और नाराजगी का पाप ...। मजदूरों को वह मित्र कहकर पुकारता।

...देखा मित्र! यह बात ऐसी नहीं! वह दाढ़ी वाले ...े भरकम बढ़ई फोरमैन से कहता और अपनी जेब से मोटी ...न चमड़े की जिल्द वाली किताब को निकाल कर पास के ...त पर पेंसिल से कुछ चित्र बनाता और फिर पूछता—

...देखते हो! यह ऐसा है! और यह ऐसा है! और ...र ऐसे! अब समझ आया?'

ठीक है,' फोरमैन सहमत हो जाता। 'लेकिन हम तो पुराने ही तरीके से काम करने के अभ्यासी रहे हैं!'

किस प्रकार मर रहा है। वह कठिनता से चौबारे की सीढ़ियों पर चढ़ता और पादरी के बिस्तर पर बैठ जाता और अपनी सूखी लाल आँखों से स्थिर दृष्टि से उसकी ओर निहारता। निकिता चुपचाप लेटा रहता, खाँसता और घबराई हुई नजर से दल की ओर देखता रहता। अब उसके हाथ काँपने लगे थे। उसके शरीर पर सारा चोगा भी काँपता रहता था जैसे कि वह किसी रहस्य चीज का घागे से भार रहा हो। कभी-कभी वह खड़ा होता और खाँसता हुआ हाँफता।

'क्या गिरजे जा रहे हो?' भाई पूछता।

निकिता भाई के कंधे बिस्तर और कुर्सी की पीठ को पकड़ता हुआ खिड़की की ओर सरकता। उसका चोगा एम दिखाई देता था जैसे कि टूटे मस्तूल पर फटी पाल। खिड़की के पास बैठकर वह अपना मुँह बगीचे में नीचे सुदूर फैले काले-लाल नुकीली फुनगियों वाले जंगल की ओर निहारता।

अच्छा आराम करो उसका भाई अपने कानों को रगड़ता हुआ कहता। और फिर जीने से नीचे उतर ओल्गा को बताता—

निकिता! धीरे धीरे, ओल्गा से वह कहता— यह धीरे धीरे गिर रहा है। जल्दी ही खतम।

एक मोटा पादरी—पिता सरदारी आया। उसने कहा कि निकिता को साधुगृह के नियमों के अनुसार आश्रम में भेज देना चाहिए क्योंकि इसकी मृत्यु और अन्त्येष्टि यहीं होनी चाहिए। परन्तु बुड्ढे ने ओल्गा को मनाते हुए कहा—

जब मैं मर जाऊँ तभी मुझे वहाँ भेजना।'

और तीन बार उसने प्रार्थनाभाव से आग्रह किया—

'मेरे कफ़न का ढक्कन ज़रा ऊँचा रखना ताकि दब न सकूँ। इसे भूलना मत!'

सफ़ाई शुरू होने के चार दिन बाद निकिता मर गया। मरने से एक दिन पहले उसने साधु आश्रम में सूचना भेजने के लिए कहा—

अच्छा है वे मेरे बाद ही आएँ। जब तक वे यहाँ आएँगे मैं ख़तम हो चूँगा। निकिता की मृत्यु के दिन सुबह याकोव ने अपने पिता को चौबारे की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए सहारा दिया। पिता ने अपनी छाती पर क्रास का निशान बनाया और भाई के मलिन चेहरे—उसके पिचके मुँह और अधमुँदी आँखों की ओर निहारा। निकिता ने अस्वाभाविक ऊँची आवाज़ में कहा— मुझे क्षमा करो।

"इसमें क्षमा की क्या बात है? किस लिए?—प्योत्र अर्तामानोव बुदबुदाया।

'मेरी मूर्खताओं के लिए।

मुझे भी क्षमा करो ज्येष्ठ भाई ने कहा— मैं तुमसे समय असमय मखौल करता रहा हूँ।

'परमात्मा, मखौल के लिए सज़ा नहीं देता पादरी ने हल्की आवाज़ में उसे विश्वास दिलाया। और भाई ने कुछ रुक कर चुपचाप पूछा—

अब कैसी तबियत है? किधर हो?'

'मैं भूल गया, पादरी ने भाई को टोकते हुए जल्दी में कहा। मामा, तू तिखोन से कह देना कि वह अपस[1] का पेड़ काट डाले। उस पर मका नहीं रहना चाहिए।

१ अपस—एक पेड़।

हड्डियों वाली छाती साधारण मनुष्यों से विपरीत, एक कोनदार ड्रम की तरह बार-बार उठती और नीचे को गिरती थी। उसके गले से निकलते मृत्यु के निरर्थक शब्दों को याकाव के लिए सुनना बड़ा असह्य हो रहा था। अब इन गतिहीन हड्डियों के ढेर में, जो काला पड़ चुका था तथा जिसने बँधे हाथों में पुराने दर्द का सांस का क्रास थामा हुआ था, साधारण मनुष्यों के समान कोई बात नहीं रह गई थी। उसे अपने बाबा के लिए बड़ा शोक था परन्तु साथ ही वह सोच रहा था कि यह क्या रिवाज है कि बुड्ढों को, और खासतौर से घरेलू सम्बन्धियों को, लोगों की नजर में मरने दिया जाए।

अपने भाई का इन्तजार किए बिना कि वह क्या कहेगा, ज्येष्ठ वर्तामानाव याकाव की बाँह पकड़ चुपचाप सिर झुकाए बाहर निकल आया। नीचे आकर वह बोला—

मर रहा है।

अच्छा ? कुर्सी पर बैठे अखबार के बड़े कागज से अपने शरीर को आधा छिपाए मिरोन ने पूछा। यह कहते हुए उसने अखबार से नजर नहीं हटाई परन्तु इसके बाद अखबार को मेज पर फेंकते हुए कोने में बैठी पत्नी से बोला—

मैं ठीक था तो यह पढ़ो।

उसकी गोल-मटोल पत्नी कमरा पार करके मेज के निकट आई तो खिड़की के पास बैठी उसकी माँ भी उत्सुक हो बोली—

'क्या यह सच नहीं, मिरोन ? लड़ाई अभी छिड़ी नहीं ?'

तो अब द्वितीय वर्तामानाव भी समाप्त हो जायगा।' प्यात्र वर्तामानाव ने ऊँची आवाज में स्मरण कराया।

"सब झूठ है, कोई सन्देह नहीं"—मिरोन ने अपनी पत्नी

तथा याकोव से कहा। वे दोनों अखबार के ऊपर झुके नवयुवक अखबारी तारों को पढ़ रहे थे। जब कि वह यह समझने की कोशिश कर रहा था कि इससे उसे क्या डर हो सकता है। न्याय मजिस्ट्रेट गलत नवसातोव बड़े गुस्से में हाथ झटकाकर आंगन में चला गया जहाँ सूरज ने बिछे हुए पत्थरों को इतना तपा दिया था कि मसा मसा कामस जूता के अन्दर पाँवों को खाल तक गर्मी अनुभव हो रही थी। खिड़की के पास से मिरोन की सूखी सिसकियों की आवाज आ रही थी और याकोव ने खिड़की के पास हाथ में अखबार लिए देखा कि उसका पिता अपने लाल-गुलाबी मुक्के से किसी को डरा रहा है।

तीसरे दिन सुबह ही साधु लोग निकिता की लाश को लेने आ गए। वे सात थे जिनका आकार और ऊँचाई अलग अलग होते हुए भी नवजात शिशुओं के समान एक से दीख रहे थे। उनमें सिर्फ एक पादरी ही सबसे ऊँचा और पतला था जो उनके आगे आगे चल रहा था। उसकी दाढ़ी बड़ी घनी थी और उसकी ऊँची तथा प्रसन्नतापूर्ण आवाज अवसर के लिए उपयुक्त नहीं थी। वह एक काला क्रॉस गले में लटकाए सब के आगे-आगे चल रहा था। देखने में ऐसा लगता था जैसे उसके चेहरा हो नहीं है क्योंकि वह गंजा था उसकी चौड़ी चपटी नाक गालों में आकर विलुप्त सी हो गई थी और चेहरे पर उसकी पलकें चाँद और दाढ़ी के बीच दो छोटे छोटे छिद्रों के अलावा कुछ दिखलाई नहीं पड़ रहा था। जब वह चलता तो अपने पाँवों को एक धीरे उठाता था जैसे कि वह अन्धा हो। वह तीन तरह की ध्वनियों में गा रहा था—

"पवित्र परमात्मा" हल्की आवाज में 'पवित्र सर्वशक्तिमान' ऊँचा और 'पवित्र प्रभो हम पर दया कर।' एसी तरह और पार होने वाली पतली आवाज में कि मक्खियों के तरह

उसकी दाढ़ी को भार माध्यम से देखते कि यह तीना मावाजें एक ही मुंह से कैसे निकल रही हैं।

जब जनाजा चौराहे पर पहुँचा तो मालूम हुआ कि मार्ग नागरिकों भौर लेफ्टिनैण्ट मावरिन की सुरक्षित फौज के सिपाहियों से घिरा हुआ है जिनके साथ शहर के कुछ अधिकारी भौर पादरी भी मौजूद हैं। प्रविचलित उत्साह वाला लफ्टिनण्ट एक मूर्ति की तरह अपने सिपाहियों के भागे फौजी पोशाक पहने खड़ा था। पादरी और अन्य धार्मिक विचारों के लोग अपनी कोणाकार पोशाकों तथा अपनी निष्प्राण भाकृतियों में वहाँ मौजूद थे। उनके कपड़े धूप में पिघलते हुए सोने की तरह चमक रहे थे जिसकी झलक लफ्टिनण्ट मावरिन पर भी पड़ रही थी। भाषण देने के लिए बनाए हुए मंच के भागे एक मोटा अफ़सर टोपी रखे अपने छोटे-से सिर को हिलाता हुआ इधर-उधर घूम रहा था।

तीन ध्वनियों वाला पादरी अपने काले क्रॉस को हिलाता हुआ लामा की दीवार के भागे रुका भौर अपनी मंद ध्वनि में बोला—

रास्ता दो।

परन्तु भीड़ इन पादरियों के लिए नहीं बल्कि इस प्रावनिक के सहायक अफ़सर के लाल लम्बे घोड़े के लिए हटी था। वह अफ़सर अपने सफेद दस्ताने पहने हाथों को तेजी से हिला रहा था। घोड़े पर पादरियों के सामने आकर वह गली के दोनों की तरफ मुड़ा भौर भिड़की तापूर्ण आवाज में बोला—

क हाँ ? तुम लोग क्यों नहीं रहे ? पीछे हटो !

पादरियों ने अपने क्रॉस ऊपर को किए भौर चिल्लाने लगे—

प वि त्र प र मा त्मा ।

हुर्रा ! अफ़सर ज़ोर से चिल्लाया भौर चौराहे पर खड़े

हजारों कंठों से आवाज निकली— हु र्र र्र र्र आ।

अफसर अपनी रकाबों में खड़ा होकर जोर से चिल्लाया—

'ध्यान दीजिए ! कृपया गली में हो जाओ ! मिरोन अनस्तस्येविच वापिस हो जाये प्रार्थना करता हूँ ! रास्ता नहीं यहाँ इतना जोर है और आप लोग यह क्या है ?

ज्यत्र अर्तामानोव ने जो अपनी पत्नी और याकोव के सहारे जनाजे के साथ साथ चल रहा था नीचे से ऊपर अफसर के स्थिर चेहरे की ओर देखा और बड़ी निराशापूर्ण गम्भीरता के साथ ताबूत को उठाने वाले पादरियों से बोला—

पिताओ ! वापिस हो लो। और फिर लम्बी साँस भरता हुआ आगे बोला—

लगता है यह अंग्रेज़ अफसरी हुकुम है।

याकोव को यह सब घटना बड़ी भद्दी और उपहासास्पद प्रतीत हुई। परन्तु, वे सब लोग उसी गली में मुड़ गए जहाँ पालीना रहती थी। याकोव ने पोलीना को देखा जो सफेद पोशाक में गुलाबी पैरासाल[४] लिए जनाजे की ओर आ रही थी। उसने बड़ी जल्दी से अपने उन्नत वक्ष पर क्रॉस का निशान किया।

यह मार्करिन से प्रेम करने जा रही है। उसी वक्त याकोव ने सोचा और मन में परेशान होकर एक अप्रियतापूर्ण आह भी। साधु जल्दी-जल्दी चल पड़े। लम्बी दाढ़ी वाला साधु धीरे धीरे सोचता हुआ गाने लगा उसके पीछे चलने वाली संगीत मंडली एकदम चुप हो गई। शहर के बाहर कसाईखाने के सामने एक अजीब आकृति की गाड़ी खड़ी थी जिस पर काला कपड़ा पड़ा हुआ था और जिसमें चित्रकार पाड़ जुते हुए थे। इस गाड़ी

४ पैरासाल—किस्म की छतरी।

उसकी फौजी पोशाक की जैकेट के बटन बन्द नहीं थे। और उसकी पतलून के भी बटन खुले थे। पालीना टाँग-पर-टाँग रखे सोफे पर बैठी थी और उसकी टाँगों की जुराबें पिंडलियों तक सरकी हुई थीं। उसकी चमकीली शरारती विचित्र गोल-गोल आँखें और गाल लज्जा से लाल पड़े हुए थे।

क्यों ?

स्थिर ठंडे-खून लफ्टीनेंट ने पूछा तो इस प्रश्न से याकोव का सन्देह बिल्कुल दूर हो गया। उसने आगे को बढ़कर अपनी टोपी कुर्सी पर रख दी और एक बबराती हुई भर्राई तथा विचित्र आवाज में कहा—

"मैं जनाजे को पहुँचाकर और स्मृति भोज से लौटकर आ रहा हूँ।

'अ च्छा !' लैफ्टीनेन्ट ने स्वामित्व के भाव से प्रभु के रूप में कहा। पालीना सिगरेट पीती हुई खिलखिलाने लगी और उपेक्षा से जैसे कि उसने कोई अपराध नहीं किया, धुआँ उड़ाती हुई बोली—

इप्पालित् इवानोविच मुझे कह रहे हैं कि मैं फौज में नर्स का काम करूँ।

'नर्स ? है ! याकोव ने व्यंग्य से हँसते हुए कहा। तो फिर स्थिर व ठंडे खून वाले लैफ्टिनेंट ने आगे को कदम बढ़ाकर जवाब में पूछा—

"इस मखौल का क्या मतलब ? मैं आपको याद कराना चाहता हूँ कि मैं अतिशयोक्ति पसन्द नहीं करता ! मैं यह सहन नहीं कर सकता !

इन दो तीन क्षणों में याकोव ने अनुभव किया कि उसके

हृदय में एक क्रोध और घृणा की लहर दौड़ गई है और उसे अधिकाधिक व्यथा इसलिए अनुभव होने लगी क्योंकि यह छाती थी जो उसके लिए ऐसी ही आवश्यक और प्यारी थी जैसे उसके शरीर का ही कोई अङ्ग हो—ऐसा अंग जो अपने से अलग न किया जा सकता हो। लेकिन इस अनुभव से उसके शरीर में घृणा की एक कपकपी दौड़ गई और वह अपनी जेबों में हाथ डालकर विस्मित सा खड़ा हो गया।

'खबरदार जो आगे बढ़े!' उसने लफ्टीनेन्ट को सावधान किया। उसकी आँखें क्रोध से फटी जा रही थीं।

'ए ...सा क्यों ?" लफ्टीनेन्ट ने पूछा और एक कदम आगे को बढ़ आया। याकाव को लफ्टीनेन्ट के दोहरी आवाज के शब्द बड़े अप्रिय लगते थे। और आज तो वे असह्य ही हो गए थे। वह गुस्से में पागल हुआ जा रहा था। जेबों से अपने हाथ निकालते हुए वह चिल्लाया—

'मैं तुम्हें मार दूंगा।'

लैफ्टीनेन्ट मार्बरिन ने उसकी कलाई पकड़ली और उसे पीड़ित करते हुए दबाया। याकाव की पिस्तौल जेब में ही चली गई। उस की बाँह में कोहनी के पास जोर की पीड़ा हुई तो वह जेब से बाहर निकल आई। लफ्टीनेन्ट ने उसकी निर्दयता से उंगलियों से रिवाल्वर छीनकर उसे पास पड़ी आराम कुर्सी पर फेंक दिया। फिर वह बोला—

यह बेकार है।

पापा पापा!' अलामामोव ने ऊँची फुसफुसाहट में सुना इसलिज्ज सर्गेइविच! अरे आरमिया! तुम पागल तो नहीं हो गए? यह सब किसलिए? वरना यहीं मामला झगड़ा खड़ा हो जाएगा! यह सब किसलिए?

"अ-च्-छा ।' ठण्डे खून वाले लफ्टीनन्ट ने गरजते हुए कहा उसने याकोव की दाढ़ी पकड़कर उस नीच को अपने पाँव की ओर झुकाया और बोला—"मुझसे माफ़ी माँगता है या नहीं, बेवकूफ़ कहीं का !

और प्रत्येक शब्द के साथ उसने याकोव की दाढ़ी को नीचे झटकाया और फिर उसकी ठोड़ी पर मुक्का मार कर उसे खड़ा होने के लिए मजबूर किया ।

"आह ! कितनी लज्जा की बात है ओह ! ओह !" पोलीना लैफ्टीनेन्ट की कोहनी पकड़ते हुए चिल्लाई ।

याकोव का दाँया हाथ हिल नहीं सकता था परन्तु उसने दाँत भींचकर बाँए हाथ से लैफ्टीनेन्ट को अलग हटाना चाहा । उसका चेहरा रुआँसा-सा हो गया और उसके गालों से आँसू नीचे ढलक आए ।

"खबरदार अगर तुम मुझसे लड़े !" लफ्टीनन्ट चिल्लाया और याकोव को उसने आराम-कुर्सी पर धकेल दिया जहाँ गिटार पड़ी थी । याकोव ने हथेली से चेहरे को ढाँपकर अपने आँसू छिपाने चाहे फिर वह गतिहीन मूर्छित-सा होता हुआ बैठ गया । उसने अपने कानों में लफ्टीनन्ट पर चिल्लाती हुई पोलीना की आवाज सुनी -

"हे परमात्मा, कितनी बुरी बात है ! और यह तुमने ! कैसा झगड़ा ! और किस लिए ?

'नौजवान जी ! तुम जाओ जहन्नुम !" लैफ्टीनन्ट ने भारी नाक की सी आवाज में कहा—

"यह लो ! तुम्हारी वफ़ादारी के लिए यह तुम्हारे लिए काफ़ी है ! मैं अधिकप्राप्ति सहन नहीं कर सकता । तुम बिलकुल मामूली औरत हो ।

अपनी टाँगों से भारी आवाज करते हुए सप्लीमेन्ट दरवाजे को जोर से बन्द करके चला गया और अपने पीछे लटकती हुई लम्प की खटखटाहट और यामाना की हल्की चीखें छोड़ गया। याकोव अपनी निर्बल टाँगों पर जो काँप रही थीं खड़ा हुआ था। था, उसका सम्पूर्ण शरीर ही काँप रहा था जैसे धक्का लग रहा हो। पोलीना कमरे के बीच में ... के नीचे मुँह फाड़े गहर-गहर साँस भरती हुई खड़ी थी और वह हाथों में ... नोटों को लिए निहार रहा था।

कमीन कहीं की। याकोव बोला। तूने यह सब क्या किया? तू तो हमेशा मुझसे ही कहती थी कि मुझे तो मार देना चाहिए।

स्त्री ने उसकी ओर निहारा और नोटों को फर्श पर फेंक दिया। फिर भर्राई हुई विषादपूर्ण ध्वनि में बोली—

"आह! कैसा गुण्डा बदमाश है।" यह कहते हुए वह आरामकुर्सी में गिर पड़ी और अपने दोनों हाथों से सिर को पकड़ कर बैठ गई। याकोव उसकी पीठ पर जोर से मुक्का मार कर चिल्लाया—

हट! रिवाल्वर मुझे दे!

वह बिना हिले उसी प्रकार दुःखी स्वर में बोली—

तो तू मुझे प्यार करता है?

नहीं नफ़रत करता हूँ!

"झूठ! तू प्यार करता है!"

वह तेजी से उछलकर याकोव की गोद में आ बैठी और उसकी गर्दन में बाँहें डालकर बड़ी दृढ़ता से लिपट गई। फिर वह उसे बड़े उन्मत्त प्रेम में चूमने लगी और उसकी आँखों और मुँह पर भारी उष्णश्वास छोड़ती हुई धीमे से बोली—

'झूठ है तू प्यार करता है प्यार करता है। और मैं भी ओह! मेरे कोमल सलोने प्यार।

सलोना उसका प्यार का शब्द था जो वह आक्रोश के प्रेम में पागल हो कहा करती थी जिससे उसके हृदय में एक परम कोमल मधुर पाशविकता जागृत हो जाती।

इन घड़ियों में भी वैसा ही हुआ। वह उसके सामने फिर द्रवित हो गया और उसे अपने हाथों में पकड़कर भींचता हुआ उसका चुम्बन लेने लगा। बीच बीच में सांस भरता हुआ वह बड़बड़ाता भी जा रहा था—

'बेहूदी! छिनाल कहीं की! जानती नहीं।

घण्टे भर वह सोफे पर उसके साथ बैठा रहा और वह उसके पाँवों में लगी रही। अपने पाँव से उसे भुलाते हुए वह विस्मय के साथ सोचने लगा—

'यह सब कितनी जल्दी हो गया!'

वह थकान भरी आवाज में बोली—

मुझे बड़ा गुस्सा आ गया था। मैंने तुमसे किनारा करने तक की सोची थी। तुम अपने ही कामों में लगे रहते हो। मार्गों के जनाज़ों में चले जाते हो और मैं यहाँ अकेली। फिर मैं नहीं जानती थी कि तुम मुझे प्यार करते हो अब जान गई। अब तुम मुझे और अधिक प्यार करोगे। तुम अब हिरस करोगे क्योंकि जब हिरस होती है।

यहाँ से हम कहीं दूर चले जाना चाहिए। याकोव ने भर्राए स्वर में कहा।

हाँ! परिस चलें! मैं फ्रेंच भाषा भी बोल सकती हूँ।'

उन्होंने अभी लैम्प नहीं जलाई थी। कमरे में अँधेरा

छाया हुआ था। बाहर सड़क पर रक्षित सेना के सिपाही मार्च करते आते-जाते पर चीख रहे थे और स्त्रियाँ उन चीखों का उत्तर दे रही थीं—

'अब हम विदेश भी नहीं जा सकते, यहाँ भी लड़ाई छिड़ी हुई है,'' याकोव ने याद कराया—'लड़ाई शैतान इसे ले जाए।'

पालिना ने फिर अपने विचार सामने रखे—

'ईर्ष्या के बिना कुछ ही प्यार कर सकते हैं। तुम ही जरा देखो कि सब नाटक-उपन्यासों में ईर्ष्या-ही-ईर्ष्या है।'

याकोव जरा हँसा और बोला

'अच्छा हुआ गोली चल पड़ी, गोली मेरी आँख में भी लग सकती थी। अभी तो मेरी पतलून में ही छेद हुआ है।'

पालीना ने पतलून के छेद में उँगली डाली और फिर सिसकती हुई, प्रचंड घृणा से धीमे से बोली—

'आह! कितनी शरम की बात है, तुम उसे गोली भी नहीं मार सके! तुम उसके पेट जैसे लपकाते पेट में गोली नहीं मार सके!'

'चुप!' याकोव उसे झकझोरते हुए चिल्लाया, परन्तु वह उसी प्रकार अपने होंठों को भींचती हुई उनसे सीटी की सी आवाज निकालते हुए पागलपन में कहती गई—

'नीच! सुअर कहीं का! मुझे भी गालियाँ सुनाकर गया है! तुम सब पुरुष ऐसे हो, तुम हम औरतों को कुछ भी नहीं समझते।'

और फिर अपने मोटे-मोटे होठों को हिलाकर सोनहरी जड़े दाँतों को दिखाती हुई वह बोला—

"देखो यदि औरत तुमसे विमुख रहने लगी है, तो इसका यह मतलब नहीं कि वह तुम्हें प्यार नहीं करती।"

'चुप रह ! मैं कहता हूँ चुप रह !' याकोव चिल्लाया और उस क्षण भोला कि वह पीड़ा में सिसकियाँ भरने लगी—'ओह ! अब मैं समझी तू मुझे प्यार करता है ! याशा ! मेरे सलोने याशा !'

और हँसते हुए वह बड़ी हल्की चाल से चल पड़ा। वह एक ऐसे व्यक्ति की तरह अनुभव कर रहा था जिसने किसी सहर नाक क्षण में कोई कीमती उपहार छीन लिया हो। उसके हृदय में आनन्द उमड़ उठा था। बाहर जाने से पहले उसने पोलीना से छिपा कर रखी हुई अपनी रिवाल्वर मांग ली। पोलीना उसे देना नहीं चाहती थी। परन्तु याकोव उसे यह बताने के लिए बाध्य हो गया कि रिवाल्वर के बिना वह बाहर जाने से डरता है। तब उसने मस्कोव के साथ हुई घटना का ज्यों-का-त्यों सुना दिया। मस्कोव के प्रति पोलीना के भय से वह प्रसन्न हो गया और उसे विश्वास हो गया कि वह वास्तव में ही उसे प्यार करती है। पोलीना ने अपने हाथ भल कर आह ! आह ! करते हुए उसे झिड़का—

'तुमने मुझे इस बारे में पहले क्यों नहीं बताया ?"

और फिर वह भयभीत होकर सोचने लगी—

निस्संदेह यह बड़ी दिलचस्प बात है। सचमुच में एक जासूस ! यह तो शरलॉक होम्स जैसी मिसाल है तुमने पढ़ा है ? परंतु हमारे यहाँ तो ये जासूस भी बदमाश और गुण्डे हैं ?'

इसमें क्या सन्देह, याकोव ने समर्थन किया।

उसे रिवाल्वर देते हुए उसने इच्छा प्रगट की कि रिवाल्वर

कैसे गोसी दागती है यह देखा जाए और याकोव को इस बात पर राजी किया कि वह अंगीठी की चिमनी में गोली मारे। इसके लिए याकोव को फर्श पर पेट के बल लेटना पड़ा तो वह भी उसके साथ लेट गई। जब याकोव ने गोली चलाई तो खिड़की से बहुत-सा धुंआ निकला। इस पर पोलीना आहें भरती एक तरफ हट गई। और फिर खड़ी होकर धीरे से बोली—

"देखा तो!"

पालिश किए हुए फर्श पर छोटा-सा एक गहरा तिर्छा छेद हो गया था।

"जरा सोचो यहाँ से मौत निकली है!" पोलीना अपनी सुन्दर काली पतली भौंहों को तरेरती हुई बोली—

याकोव ने उसे कभी इतना निकट सुन्दर और प्यारा अनुभव नहीं किया था। उसकी आँखें बच्चों की तरह विस्मय करती देख रही थीं। और जब उसने उसे नस्काव के बारे में बताया तो उसके बाल-सुलभ चेहरे पर गुस्से का कोई भाव नहीं था।

'इसमें अपराध की कोई भावना नहीं,' याकोव ने सोचा और उसे यह बात बड़ी प्यारी लगी।

उसे बिदाई देते समय याकोव की बाहों को कंपी करते हुए वह बोली—

आह माता! इसका क्या मतलब हो सकता है? कितना गंभीर मामला है? आह मेरे परमात्मा परन्तु वह नीच!' फिर अपने फसे-फसे हाथों की मुट्ठियाँ कसते हुए वह काँपती हुई क्रोध के साथ बोली—

'हे परमात्मा, आप कितने नीच हैं!'

परन्तु अचानक याकोव का हाथ पकड़ कर उसने कुछ सोचा और माथे पर त्यौरियाँ चढ़ा कर बोली—

"ठहरो ठहरो ! एक लड़की और है आह यह स्पष्ट ! और बड़े आनन्द और लज्जा से उसने याकोव को विदाई दी—

"जाओ मेरे प्यारे सलोने !'

प्रभात का वह समय बड़ा शीतल था ओस पड़ी हुई थी। बगीचा की ओर से आने वाली वायु नीलिमा हरित आसमान के साथ सब की गन्ध से भरी हुई थी।

'बेशक उसने यह सब नाराजगी में किया होगा। ज्यों ही पिता का देहान्त होगा मुझे उससे शादी कर लेनी होगी। उसने बड़ी उदारता से सोचा तो उसे शान्ति वन वाले सेराफ़िम के मशीन वाले शब्द अचानक याद आ गए।

'प्रत्येक लड़की एक डूबते हुए मनुष्य के समान है जो किसी भी तिनके को पकड़ लेता है। वही तिनका बन कर उस पर तुम अधिकार करो।

स्थिर ठण्डे गुम वाले सैपिटमण्ट के बारे में विचार परेशानी करने वाले थे। वह तिनका नहीं है। निःसन्देह वह नाराज था और अवश्य ही कोई अप्रियता पैदा करेगा। परन्तु सम्भव तो यह है कि वह लड़ाई पर भेज दिया जाएगा। नेस्कोव के बारे में भी याकोव अस्तीमानोव का भय कम हो गया। यद्यपि टेमी ही भेड़ियों में शिकारी उसकी घात में रहता था और उसके सामने आ खड़ा होता था। उसने अपनी जेब के रिवाल्वर को ज़ोर से पकड़ा और सावधानी से चारों तरफ की आहटों को सुनने लगा।

परन्तु एक-दो सप्ताह ही गुजरे होंगे कि याकोव अस्तीमानोव के सामने शिकारी का भय फिर से एक कड़ुए धुएं के समान उठ खड़ा हुआ। रविवार के दिन जब वह जंगल में बरापानोव से

बरोद दरवार के पेड़ों के टुकड़ों का निरीक्षण कर रहा था तब उसने देखा कि शिकारी नस्काव भाड़ियों के बीच से कंधे पर पैसा डाल और कमर की पेटी में तरह-तरह के काटे लटकाए चला आ रहा है।

'आपके साथ की मुलाकात सुखकर हो।' समीप आते हुए उसने कहा फिर उसने सिपाहियों के फ़ैशन में पहनी टोपी को दाईं भौंहों पर झुकाकर कोन से उठाने के बजाय टोकरी की तरह बीच से ऊपर उठा लिया।

उसके इस मनोज्ञ अभिवादन का उत्तर दिए बिना याकोव ने दांत भींचे और फिर जेब में पड़ी रिवाल्वर को पकड़ने लगा। नस्काव चुप था वह अपनी टोपी के अस्तर में याकोव से नजर बचाते हुए उङ्गलियाँ मार रहा था।

अच्छा अब क्या बात है?' अर्तामोनोव ने पूछा। नस्काव ने अपनी कुत्ते जैसी आँखें ऊपर उठाईं और अपने गुरदर कुत्ते बालों पर हाथ फेरते हुए स्पष्ट स्वर में बोला—

'आपकी प्रेमिका अर्थात् पैलागिया आन्द्रियेवना ने पाव्ली स्वादुकाव्स्की की लड़की से मित्रता कर ली है। आप उसे समझा दें कि वह उसका साथ छोड़ दे। मार उस गया!"

यह बात सही ही है।

और गहरे के मिरजा की पटियों को सुनते हुए शिकारी फिर बोला—

यह मेरी हार्दिक सलाह है। मैं आपका भला चाहता हूं। और मुझे कुछ रूबल दो। इतना कह वह शिकारी आसमान

परंतु अचानक याकोव का हाथ पकड़ कर उसने कुछ सोचा और माथे पर त्योरियाँ चढ़ा कर बोली—

'ठहरो ठहरो ! एक लड़की और है याद रहे यह स्पष्ट !' और बड़े आनन्द और लज्जा से उसने याकोव को विदाई दी—

'आओ मेरे प्यारे समोन !'

प्रभात का वह समय बड़ा शीतल था ओस पड़ी हुई थी। बगीचों की ओर से आने वाली वायु नीलिमा हरित आसमान के साथ सब की गन्ध से भरी हुई थी।

बेशक उसने यह सब नाराजगी में किया होगा। ज्यों ही पिता का देहान्त होगा मुझे उससे शादी कर लेनी होगी।' उसने बड़ी उदारता से सोचा तो उसे शान्ति दन वाले सराफिम के मखौल वाले शब्द अचानक याद आ गए।

'प्रत्येक लड़की एक डूबते हुए मनुष्य के समान है जो किसी भी तिनके को पकड़ लेता है। वही तिनका बन कर उस पर तुम अधिकार करो।

स्थिर ठण्डे खून वाले लैफ्टिनेण्ट के बारे में विचार परेशानी करने वाले थे। वह तिनका नहीं है। निःसन्देह वह नाराज था और अवश्य ही कोई अप्रियता पैदा करेगा। परंतु सम्भव तो यह है कि वह लड़ाई पर भेज दिया जाएगा। नस्कोव के बारे में भी याकोव मतामिनाथ का भय कम हो गया। यद्यपि ऐसी ही घड़ियों में शिकारी उसकी याद में रहता था और उसके सामने आ खड़ा होता था। उसने अपनी जेब के रिवाल्वर को जोर से पकड़ा और सावधानी से चारों तरफ की आहटों को सुनने लगा।

परंतु एक-दो सप्ताह ही गुजरे होंगे कि याकोव मतामिनाथ के सामने शिकारी का भय फिर से एक कड़ुए धुएं के समान उठ खड़ा हुआ। रविवार के दिन जब वह जंगल में बरानोनाथ से

खरीदे देवदार के पेड़ों के टुकड़ों का निरीक्षण कर रहा था तब उसने देखा कि शिकारी नस्कोव झाड़ियों के बीच से कन्धे पर थैला डाले, और कमर की पेटी में तरह-तरह के कांटे लटकाए चला आ रहा है।

'आपके साथ की मुलाकात शुभकर हो।' समीप आते हुए उसने कहा फिर उसने सिपाहियों के फ़ैशन में पहनी टोपी को दाईं भौंहों पर झुकाकर कोने से उठाने के बजाय टोकरी की तरह बीच से ऊपर उठा लिया।

उसके इस अनोखे अभिवादन का उत्तर दिए बिना याकोव ने दांत भींचे और फिर जेब में पड़ी रिवाल्वर को पकड़ने लगा। नस्कोव चुप था वह अपनी टोपी के अस्तर में याकोव से नजर बचाते हुए उङ्गलियां मार रहा था।

'अच्छा अब क्या बात है?' अर्तामानोव ने पूछा। नस्कोव ने अपनी कुत्ते जैसी आंखें ऊपर उठाईं और अपने खुरदरे सन बालों पर हाथ फेरते हुए स्पष्ट स्वर में बोला—

'आपकी प्रेमिका अर्थात् पलागियां आन्द्रियेवना ने पादरी स्लाकोव्यन्सेव की लड़की से मित्रता कर ली है। आप उसे समझा दें कि वह उसका साथ छोड़ दे।'

'क्यों?'

'यह बात ऐसी ही है।'

और शहर के गिरजा की घंटियां को सुनते हुए शिकारी फिर बोला—

"यह मेरी हार्दिक सलाह है। मैं आपका भला चाहता हूँ। और मुझे कुछ रूबल दो।' इतना कह वह शिकारी आसमान

की तरफ देखते हुए कुछ गिनने-सा लगा। फिर साफ कर बोला—

मुझे पैंतीस रूबल था।'

इस कुत्ते को गोली मार देनी चाहिए। याकोव ने नोटों को गिनते हुए सोचा।

शिकारी ने नोट हाथ में थाम लिए और अपनी टेढ़ी टाँगों पर काँटों को खनखनाता हुआ टोपी का पहिने बगैर झाड़ियों में चला गया। याकोव ने अनुभव किया कि यह आदमी उसे अब अधिक असह्य तथा बुरा लग रहा है।

नस्कोव! याकोव ने धीमे से पुकारा। और जब वह झाड़ियों में आधा छिप गया था तो याकोव ने एक प्रस्ताव रखा—

'तू इस काम को छोड़ क्यों नहीं देता?

क्यों छोड़ दूँ? नस्कोव ने आग को पैहरा करते हुए पूछा। प्रतीमानाव ने शिकारी की खाली आँखों में एक भय और ईर्ष्या की झलक देखी।

यह खतरनाक काम है। याकोव ने कहा।

हमें अपने काम का तरीका आना चाहिए। नस्कोव ने जवाब में कहा और उसकी आँखों की वह झलक नष्ट हो गई। खतरनाक उसके लिए है जो काम करना नहीं जानता।'

अच्छा, तुम्हारी इच्छा।'

'तू अपनी भलाई के ही विरुद्ध सलाह दे रहा है।"

धनुता में क्या भलाई हो सकती है' याकोव धीमे से बोला और फिर उसने सोचा कि वह इस आमूस से सामतों भासा।

'यह क्या सोचता होगा इस बेवकूफ से कहना ही फिजूल था ।

नम्कोव ने उसे शिक्षा देते हुए कहा—

'इसके बिना तो जीवन व्यर्थ है । सब की अपनी अपनी प्रभुताएँ और आवश्यकताएँ होती हैं । अच्छा नमस्कार ।

और वह याकोव की ओर पीठ कर फिर चीड़ की सघन झाड़ियों में छिप गया । याकोव देर तक नुकीली झाड़ियों की शाखाओं की सरसराहट तथा उसके पाँव के नीचे कुचलते हुए पत्तों की आहट सुनता रहा । उसके बाद वह साफ मैदान की ओर आ गया जहाँ घोड़े उसकी प्रतीक्षा में खड़े थे । इसके बाद वह बड़ी तेजी से शहर में पालोना के घर पहुँचा ।

'ला सुअर कहीं का ! लगभग प्रसन्नता और आश्चर्य में पालोना ने कहा । 'मुझे पहले ही पता था कि तुम मेरी तरफ आ रहे हो बताओ तो ! तुम्हें कब पता लगा कि वह मेरे यहाँ आती है ? जरा बताओ तो सही !

तू इन लोगों से परिचय ही क्यों रखती है ? याकोव ने गुस्से में झिड़कते हुए कहा । इस पर उसने भी अपने पीले गुलूबन्द को गुस्से में झटकाते हुए कहा—

'पहली बात तो यह है कि इसकी जिम्मेदारी तुम पर है और दूसरी यह कि क्या मैं कुत्ते-बिल्लियाँ पालूँ अथवा आवारिन बनूँ । मैं यहाँ दिन भर मसान की तरह अकेली रहती हूँ, और बाहर जाने के लिए कोई साथी नहीं । वह बड़ा मनोरंजक है । मुझे उपन्यास पत्रिकाएँ इत्यादि देती है राजनीति पर बहस करती है और बहुत-सी बातें बताती है । मैं उसके साथ पाठशाला के स्कूल में भी पढ़ी हूँ । उसके बाद हम दोनों में लड़ाई हो गई थी ।

उसके कंधों में अपनी उंगलियाँ फँसाते हुए वह बड़ी निराशा और प्रतिवाद से आगे बोली—

"ज़रा सोचो तो क्या गुप्त प्रेमिका के रूप में रहना आसान है ? स्लाद्कोपेव्त्सेवा कहती है कि प्रेमिका का जीवन रबड़ के गमाशों[1] की तरह है, जब कीचड़ हो तो उन्हें पहन लिया नहीं तो फेंक दिया । वह भी तो तुम्हारे डाक्टर से प्रेम करता है पर वे इसे छिपाते नहीं । तुम मुझे ऐसे छिपाए हुए हो जैसे कि मैं कोई गुप्त फोड़ा हूँ । तुम्हें मेरे साथ लज्जा आती है जैसे कि मैं लूली-लंगड़ी या कुबड़ी हूँ । मैं कुरूप या विकृत तो बिलकुल नहीं ।

"ज़रा ठहर तो," याकोव ने कहा, "शादी कर लूँगा ! गम्भीरता से कहता हूँ शादी कर लूँगा, यद्यपि तू है निरी सूअरिया ।"

"यह सवाल दूसरा है कि हम में से कौन सूअर है !" वह बच्चों की तरह सिसकियाती हुई आगे बोली— "सूअर या गुनाहगार कौन हममें से सूअर है कौन अपराधी है । ओह ! मैं बहुत गड़बड़ में पड़ गई ! मेरे प्यारे सजान, मेरे प्यारे, तुम स्वार्थी नहीं, कोई और होता तो वह चुप रहता । क्या वास्तव में वह जासूस तेरे लिए फायदेमन्द है ।

सदा की तरह याकोव उसकी बातों से प्रसन्न और हल्का मन-सा अनुभव करता हुआ बाहर निकला । सात-आठ दिन के बाद की ही बात है कि एक दिन प्रातःकाल पाचक के दास और टेढ़ी नाक वाले नाटे कद के टाइम-कीपर अनातोलिन ने उसे सूचना दी कि आज सुबह ही जब बहुत से मजदूर कोटों से मछलियाँ

---

१ गमाश—रबड़ के बने हुए जूते जो बरसात और बरफ के समय चमड़े के जूतों पर पहने जाते हैं ।

पकड़ रहे थे, जुलाहा मोद्गिनोव शिकारी नस्कोव को डूबने से बचाने में खुद भी मुश्किल से बच पाया और वह अब अस्पताल में पड़ा है। जैसे ही याकोव ने उसकी नाक से आती रिपोर्ट को सुना वह जरा टाँग फैलाकर बैठ गया ताकि अपनी जेबों में हाथों को और अधिक छिपा सके।

"डुबो दिया" उसने बड़ी उदारता से कोमल छिपों जैसे चेहरे वाले मोद्गिनोव के बारे में सोचा। उसे विश्वास ही नहीं आ रहा था कि यह व्यक्ति किसी को मार सकता है।

'बहुत अच्छी घटना है' उसने सोचा और सन्तोष की साँस लिया। पालिना ने भी इस शुभ समाचार के लिए सहमति प्रकट की।

'निःसन्देह यह अच्छा हुआ' उसने गम्भीरतापूर्वक भौंहें चढ़ाकर कहा 'क्योंकि यदि किसी और तरीके से उसे मारा होता तो बहुत पाप होता।'

फिर भी उसने शोक प्रकट किया—

अच्छा होता कि उसे पकड़कर उससे सब बातें मनवाकर तब उसे फाँसी दे देते या वासी ही मार देते। तुमने कभी पढ़ा है ?

'फ़िज़ूल मत बक पाल्का* !' याकोव ने उसे रोकते हुए कहा।

कुछ दिन शान्ति से चुपचाप गुजरे। याकोव बरोमारोव हो आया और जब वह वहाँ से लौटा तो मिरान ने चिन्तापूर्ण भाव से माथे पर त्योरियाँ चढ़ाते हुए कहा—

---

* पाल्का—पालिना पाल्का इत्यादि नाम पाल्गिया के प्रेम के नाम हैं जो इस उपन्यास में याकोव की प्रेमिका है।

'हमारे कारखाने में फिर से गड़बड़ी शुरू हो गई है। एक्के के पास जिम के भाए हुए आर्डर के अनुसार उन अवस्थाओं की खोज हो रही है जिनमें कि यह शिकारी नस्कोव हुआ है। माद्रिनोव, क्रियाकोव और कोयला झोंकने वाले उस सुखमिजाजी कोवोव को भी पकड़ लिया गया है। वे लोग उस दिन शिकारी के साथ मछलियाँ पकड़ रहे थे। मोद्रिनोव का मुँह और कान सब फटे हुए हैं। पुलिस इसमें कोई राजनैतिक रहस्य देख-खोज रही है नि सन्देह इन भुक्त-भुक्ते कानों में नहीं।'

वह पियानो के पास खड़ा अपनी ऐनक को नाक पर सन्तुलित करता हुआ और आँखों से टकटकी लगाए कमरे के कोने को घूर रहा था। अपनी सिकुड़ी स्वीडिश जैकेट, लाल काली-सी पतलून और घुटनों तक लम्बे बूटों में वह मैकेनिक की तरह लग रहा था। उसका ऊँचा मस्तिष्क चकड़ा और बारीक हजामत किए गाल और छोटी हुई मूछ किसी फौजी अफसर का स्मरण करा रही थी। मिराम के भावों के प्रदर्शन करने और कुछ कहने से उसके मन में कोई कम्पन नहीं होता था।

वह अत्यधिक चिन्तित हो भाग कहने लगा—'बड़ा नराम जमाना आ गया है। इधर अब हम लड़ाई में भी फँसे हुए हैं। हमेशा की तरह हम आज भी लड़ रहे हैं ताकि अपनी मूर्खताओं की ओर से जनता का ध्यान बटा सकें। परन्तु हममें इतनी शक्ति नहीं कि अपनी मूर्खताओं के विरुद्ध लड़ाई छेड़ सकें। हमारी सब समस्याएँ देश की आन्तरिक समस्याएँ हैं। किसान और मजदूरों की पार्टियाँ राज्य शक्ति को अपने हाथ में लेना चाहती हैं। इस पार्टी की एक पंक्ति में एक व्यवसायी का बेटा इल्या मर्लामिनाथ भी है—उस परिवार का बेटा जिसने देश को व्यावसायिक और टाकनीक की दृष्टि में यूरोप के समान बनाने का महान कार्य पूरा किया है। मूर्खता पर मूर्खता की जा रही

हैं। अपने वर्ग के हितों को धोखा देने वालों के लिए इस भारी अपराध का दण्ड मिलना चाहिए। यही नहीं यदि इस अपराध की वास्तविकता तक पहुँचो तो यह सरकार के साथ—अपने देश के साथ द्रोह करना है। मैं पढ़े-लिखे लोगों को जैसा कि मारिस्त्वेतोव भी है, ऐसा समझ भी सकता हूँ क्योंकि इनका किसी वर्ग विशेष से सम्बन्ध नहीं और न उनके पास कोई काम ही है। क्योंकि उनमें किसी प्रकार की प्रतिभा नहीं और पढ़ने-लिखने के अलावा उनमें कोई कार्य करने की शक्ति भी नहीं। बस वे पढ़ते हैं और बकवास करते है। मेरा तो विचार है कि कम से साधारणतः ध्वंसकारी गतिविधियों में वे ही लोग भाग लेते हैं जिनमें किसी और प्रकार की योग्यता और प्रतिभा नहीं है।

याकोव को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका भाई ऐसे बोल रहा है जैसे कि वह कमरा यातनाओं से भरा हुआ हो। उसने अपनी आँखों को इतना अधिक सिकोड़ा कि वे बिल्कुल बंद हो गईं। याकोव ने उसके भाषण का सुनना बन्द कर दिया और वह अपने ही विचारों में डूब गया कि मस्काव की मृत्यु का क्या परिणाम होगा और उसका असर कहीं मुझ पर भी न हो।

इतने में ही मिरोन की गर्भिणी पत्नी जो ढोल-सी हो रही थी, उसकी ओर मुड़ी हुई आँखों से देखती हुई बोली—
चलो, कपड़े बदलो !

मिरोन ने पर्याप्त प्रसन्नता से अपनी ऐनक को नाक पर ठीक किया और बाहर चला गया।

लगभग एक महीने बाद सब कैदी छोड़ दिए गए। मिरोन ने बड़ी कठोर आवाज में किसी प्रकार की बात न सुनते हुए याकोव से कहा—

'इन सब को गिरफ्तार कर लो।

याकोव बहुत दिनों पूर्व ही भाई के कठोर हुक्मों के सामने झुकने का आदी हो चुका था। यह एक तरह से अच्छा भी था क्योंकि मिल के मामलों के सम्पूर्ण उत्तरदायित्वों से वह मुक्त हो जाता था। परन्तु, इस बार वह बोला—

'कोयला झोंकने वाले को तो रख ही लेना चाहिए।''

'क्या ?

'वह आनन्दी स्वभाव का है और हमारे यहाँ एक लम्बे समय से काम कर रहा है। वह लोगों को खुश रखता है।''

अच्छा चलो उसे रख लो।

और अपने ओठों को चबाता हुआ मिरोन बोला—

'हाँ मसखरे भी कभी-कभी उपयोगी होते हैं।'

कुछ समय तक याकोव को ऐसा दिखाई दिया कि सब ठीक-ठीक चल रहा है। लड़ाई के कारण सब लोग थक चुके थे। वे सब लोग शान्त विचारशील और अधिक दब हुए से थे। परन्तु अब याकाव में भी अप्रियताओं का अंकुर फूट चुका था और वह अनुभव करता था कि कम-से-कम उसके लिए मुसीबतों का अन्त नहीं हुआ है। वह अदृश्य कठिनाइयों की प्रतीक्षा कर रहा था। और यह प्रतीक्षा भी उसे अधिक न करनी पड़ी। निस्तेरन्का लम्बे कद की एक महिला के साथ हाथ में हाथ डाल बाहर में दिखलाई दिया। यह महिला पाशेका के समान ही दिखाई देती थी। सड़क पर याकाव के साथ मुलाकात होते ही उसने दूर से कनखियों से देखा और समीप आकर अभिवादन के बाद पूछा—

क्या आप एक घण्टे के बाद मेरे पास आ सकते हैं ? मैं अपने श्वसुर के यहाँ हूँ! शायद आपको पता हो कि मेरी पत्नी मर रही है! मैं आप से प्रार्थना करूँगा कि सामने के

कमरे की घण्टी न बजाएँ, उससे बीमार को बेचैनी होती है। आप पीछे के द्वार से आ जाएँ। नमस्कार।

यह एक घण्टा बहुत भारी और लम्बा प्रमाणित हुआ। और पण्डित याकोव प्रतीमानोव कमरे में कुर्सी पर बैठ गया। उस कमरे में किताबों से भरी अलमारियाँ लगी हुई थीं निस्तब्धता ने उसे भ्रम में डाल दिया कि वह किसी और आहट को सुन रहा हो कहा—

क्या? हमारे मित्र को उन्होंने खत्म कर दिया है। निःसन्देह हुआ ऐसा ही। परन्तु इसे साबित करना कठिन है। क्योंकि बहुत सफाई से यह काम किया गया—इसकी तारीफ करनी पड़ेगी। अब बात यह है कि तुम्हारी प्रेमिका—पोलीना नाज़ारोवा का स्वार्त्कोपस्काया नामक लड़की से परिचय है, जिसे कुछ दिन हुए बरागोरोद में पकड़ा गया है। क्या वे परिचित हैं या नहीं?

"मुझे नहीं पता," याकोव बोला। परन्तु वह एकदम पसीने से तर-बतर हो गया था। उन्होंने अपने हाथ को नाक तक लाया और अपने नाखूनों को देखता हुआ साथ-साथ ये बोला—

"आप जानते हैं।"

"ठीक है, मुझे विश्वास होता है कि वे दोनों आपस में परिचित हैं।"

मेरा मतलब यही था।

यह चाहता क्या है? याकोव ने सोचा। वह उसके भरे लाल-लाल चेहरा, मोटी नाक के चपटे चेहरे और भूरी धुँधली आँखों को देखकर बिल्कुल ऊब गया था। उसके शरीर से पसीने की बू आ रही थी।

'मैं आपसे एक अफ़सर के रूप में बात नहीं कर रहा। परन्तु एक परिचित के रूप में ही जो आपकी भलाई चाहता है और जिसके लिए आपके व्यवसायिक हित पराए नहीं। याकाव ने इस भारी आवाज को भी सुना मेरे प्यारे निशानेबाज ! तुम जानते हो असल में बात क्या है ? उन्स्कार्म हंसा, और थोड़ा चुप रह लेने के बाद उसे स्पष्ट करता हुआ बोला—

मैं निशानेबाज इसलिए कहता हूँ। क्योंकि मुझे पता है कि एक बार तुमने अग्निक्षेपक यंत्र का असफलतापूर्वक प्रयोग किया था। अब बात यह समझ लो कि स्लाद्कोपेत्सका नामक लड़की तुम्हारी नजारोवा—तुम्हारा प्रेमिका की परिचित है। अब तुम्हें जरा सोचा—इस शिकारी नस्काव की हरकत्ता के बारे में तुम्हारे और मेरे अलावा अन्य किसी को कुछ पता नहीं था। मैं इस बारे में परिचितों की मर्जी को अलग रखता हूँ। नस्काव भद्दा जरूर था परन्तु वह बेवकूफ नहीं था और। इतना कह कर निस्तरेन्को ने एक गहरा सांस लिया और फ़र्श पर कुर्सी के नीचे निहारा—

'कोई चीज अमर नहीं। एक तुम्हीं शेष हो जो इस रहस्य को समझ सकते हो। याकाव चर्तामानाय का प्रतीत हुआ कि इस पुलिस अफ़सर के मुँह से शब्द नहीं परन्तु फांसी के फंदे निकल रहे हैं जो अदृश्य रूप से उस पर रहे हैं। उनसे उसका गला घुटता जा रहा है। उसकी छाती जकड़ती जा रही है। उसके दिल की धड़कन एकदम रुक रही है। और उसका सिर एसे घूमने लगा था जैसे कि सर्दियों की झंझावात से सब चीजें हिलने लगी हों परन्तु निस्तरेन्को धीरे-धीरे हड़ता से कहता जा रहा था—

मैं ऐसा सोचता हूँ और यह मेरा विश्वास भी है कि

बात कह दन की असावधानी आप से ही हुई । आपको याद होगा क्यों ।"

"नहीं, ऐसा नहीं याकाव धीम स्वर म सावधानी से बोला ताकि कहीं उसकी आवाज फिर धोखा न दे ।

ऐसा ही है ?' पुलिस अफसर न अपनी मूँछों को साफ साफ उङ्गलियों स मरोड़त हुए कहा ।

"नहीं," याकोव न सिर हिलाते हुए दोहराया ।

'बहुत अजीब बात है । खर फिर भी हम इसे सुलझा सकते हैं । देखो, मल्काव की जगह दूसरे आदमी का लाना बहुत जरूरी है जो तुम्हारे लिए भी बड़ा लाभदायक हो । तुम्हारे पास मिनायव नामक एक आदमी आएगा तुम उस काम पर लगा लें । ठीक है ?

'ठीक है ।" याकाव सहमत हुआ ।

"बस, यही बात थी । हाँ मैं तुमस प्रार्थना करूँगा कि तुम बहुत सावधान रहोगे । अपनी इन औरतों स एक शब्द भी नहीं । समझ गए ?

यह एस कह रहा है जैसे किसी छोटे-से बेवकूफ बच्चे का । याकोव न सोचा । इसके बाद पुलिस का अफ़सर आने वाली पतझड़ म पक्षियों का उड़ान और सबाद का जिक्र करने लगा । उसन यह भी बताया कि अब उसकी पत्नी की सेवा उसको बहिन कर रही है ।

'परन्तु हमें पुर-स-पुर समय स मुकाबले की तयारी भी करनी चाहिए,' निम्तरकों ने अपनी मूँछों के छोरों को मोटे-मोटे कानों की तरफ़ म जाते हुए कहा तो होठों के ऊपर उठ जाने से उसके पीले-पीले दांत चमक उठे ।

मुझे यहाँ से भाग आना चाहिए।" याकोव ने सोचा। यह मुझे कहीं फँसा कर मारेगा। अब चलना ही चाहिए।

तुम सबको शैतान उठा ले। जब वह बाका नदी के किनारे आ रहा था तो उसने सोचा। 'मुझे तुम्हारी क्या जरूरत है? क्या-क्या जरूरत है और किसलिए?"

हल्की पतझड़ के प्रारम्भ की वर्षा अलस गति से धरती पर छींटे मार रही थी। नदी का पीला पानी बूँदों के धब्बों से घिरा हुआ था और हवा की गन्ध घोंटन वाली उष्णता से याकोव मर्तामानोव की निराशा और भी अधिक उग्र हो गई। "क्या इन मूर्खतापूर्ण अनावश्यक भयों के बिना अब सीधा-सादा शान्तिपूर्ण जीवन नहीं हो सकता?'

परंतु, तूफान और आँधी में गुजरती हुई मालगाड़ी की तरह महीने असाधारण आकांक्षा और भयों से भर कर मन्द गति से गुजरने लगे।

लड़ाई से मरोजोव परिवार का जबार वापिस आ गया था। उसकी छाती पर सेंट जार्ज का तमगा लगा था। उसके बाल उड़ चुके थे आग से झुलसी उसकी खोपड़ी लाल-लाल चकत्तों से ढकी हुई थी। उसका एक कान कट चुका था और उसकी दाईं भौंहों के नीचे एक गुलाबी निशान था और उसमें एक निष्क्रिय आँख हिलती हुई दीखती थी। दूसरी आँख से वह कठोरता और सावधानी से देखता। जबार ने कोयला झोंकने वाले वास्का कोतोव से खूब दोस्ती कर ली। यह कोयला झोंकने वाला सराफिम का चेला था। वह नए-नए गीत और टप्पे गढ़ता रहता था। उसने एक नया गीत यह गढ़ा—

आँधी हो या पानी हो
मां मार्गों की हो बौछार!

खाई में हमको है रहना
चाहे बरसे मूसलाधार !
लेकिन हैं हम मूरख कितने
जो सब जाते हैं रंगरूट !
फ्रैन्चजनों की मदद करन
योरोप में जो करते लूट !

याकोव ने मराजाब से पूछा—

"क्यों जब्बार, हम लोगों का लड़ना ठीक नहीं है क्या ?"

"ठीक कैसे लड़ सकेंगे जब लड़ने की सामग्री नहीं।" जब्बार ने उत्तर दिया। उसकी आवाज ऊंची और असन्तुष्टतापूर्ण थी और उसके शब्दों में भी वही निस्तब्ध घृणा थी जो कोयला झोंकने वाले के गीतों में रहती थी।

"याकोव पत्रोविच ! हमारे यहाँ के देशभक्ति करने वाले ठीक नहीं।" उसने मालिक के चेहरे की ओर निहारते हुए कहा। "आज बदमाश चालबाज लोगों के हाथ में देश की बागडोर है। वे ही मालिक बन बैठे हैं। जिधर देखो उधर यही बात है।"

जब्बार और कोयला झोंकने वाला बारह मजदूरों के बीच एक खड़े थे जैसे कि पतझड़ की रात में लैम्प हो। इसी समय जब गुलमिजाज तत्याना का पति बहुत विचित्र हास्यास्पद पतलून जो जब्बार के फौजी कोट के रंग की थी—पहने सामने आया तो बाल्को ने उसे देखकर तुरन्त टप्पा गढ़कर गाया—

यह पतलून मनोखी देखो
कितना है इसमें अन्तर !
किसी का यदि बढ़ता है सिर
तो यहाँ देखो बढ़ता चूतड़ !

हालत म देखत हैं। माकोव की यहिल तल्याना दिन भर मस बारा क पर्णो को पलटती रहती और वह ऐसी करी विससाई देती थी कि सदा उसके कान लाल-लाल दिखाई दत । मिरोन पक्षी की तरह कभी जिस म कभी मास्का और कभी पीत संयय की उडानें करता और लौटकर थोड़ी ऐड़ी वास भारी अमरिकन पूर्ता म चहल-कदमी करता हुआ बड़े ईर्ष्यापूर्ण प्रसन्नता स उस पियक्कड़ "किसान रास्पातिन"* का जिक्र करता जो जौंक की तरह जार स चिपका हुआ था।

'मैं नहीं मानता कि कोई ऐसा जिन्दादिल किसान भी है, सापेक्ष पर अपनी पुत्रवधू क साथ बठी अन्धी थोस्या ने बड़े आग्रह क साथ कहा, वहीं उसका दो वर्ष का पोता प्लतोन चिल्ला रहा था। यह जानबूझकर मुझे पाठ क लिए दिया गया है ।"

"यह बहुत ही बढ़िया है ! तल्याना क प्रसन्नचित्त पति ने कहा— यह तो बहुत बढ़िया है । लो, गाँव भी बदला लगे लग। यहा।

उसने बड़ी खुशी से अपने छोटे-छोटे मोटे हाथों का मला। उन पर लाल-लाल बाल ऊन की तरह उगे हुए थे। इस सम्पूर्ण परिवार म वही अकेला ऐसा था जो किसी आन वाले त्योहार की प्रतीक्षा बड़ी प्रसन्नता और विश्वास क साथ कर रहा था।

'परमात्मा ! बड़े दु ख स तल्याना न चिढ़ते हुए कहा। 'तुम्हें किस बात की खुशी हो रही है, समझ म नहीं आता !

बड़े आश्चर्य स मुँह बाकर थोस्या बोला—

---

* रास्पातिन—एक किसान पादरी जिसने ज़ार और ज़ारिना पर अपना प्रभाव बढ़ा लिया था और उसके कारण रूसी राज नीति पर बड़ा दूषित प्रभाव पड़ा। अन्त म वह मार दिया गया।

'क्या ? तुम्हारी समझ में नहीं आता ? तो समझ लो ! अब तक तो देहाती किसान सब कुछ सहन करते रहे हैं। परन्तु अब वे बदला ले रहे हैं। इन किसानों के रूप में देहात ने एक विनाशकारी विष तैयार किया ।

"जरा क्षमा कीजिए !" मिरोन ने मुँह बनाते हुए कहा— 'अभी कुछ दिनों पहले तो तुम कुछ और ही तरह की बातें किया करते थे ।'

परन्तु याकोव बड़े आवेग के साथ अपनी बात को तीखी हल्की आवाज में हाँफते हुए कहता गया—

'यह तो एक संकेत मात्र है। ये निरे सीधे-सादे किसान नहीं ! आरदाही का अपना ३०० वाँ वर्ष गाँठ का मनाए तीन वर्ष ही बीते हैं कि अब यह ।

'फिजूल !' मिरोन ने बड़ा तेजी से कहा। डाक्टर याकोव्लेव सदा की भाँति भिनभिनाता रहा था। याकोव अर्ता-मानोव ने सोचा— 'यदि यह बात कहीं पुलिस के अफ़सर निस्त रुक्का तक पहुँच गई तो ?

'तुम लोग ऐसी बातें क्या करते हो' उसने पूछा— 'इनमें रखा ही क्या है ?'

और यह बात समझाता हुआ बोला—

"बस चुप रहो !"

याकोव ने देखा था कि मिरोन भी इन दिनों असाधारण रूप में घबराया और भयभीत रहता है। इससे वह और भी चिंतित हो गया। आखिरकार इस परिवार के लोगों में मात्या ही एक अकेला ऐसा रह गया है जो पहले जैसा ही लट्टू की तरह प्रसन्नचित्त घूमता है सब के साथ मजाक में खिलखिलाता और सन्ध्या समय अपनी टुनटुन करती सितार को लेकर गाने लगता है—

मेरी पत्नी क़ब्र में है ।"

परन्तु तस्याना को भी अब उसके रागों में कोई आनन्द नहीं मिलता था ।

आ ह ! कितना ऊब गई हूँ ! यह कहती और बच्चों के पास बाहर चली जाती ।

मीत्या मजदूरों को शान्त करने में बड़ा कुशल था । उसने मिरान को सलाह दी कि वह आलू, साग, मटर और आलू इत्यादि देहाती इलाक़ों से ख़रीदे । क्योंकि वहाँ यह खाद्य सामग्री सस्ती मिल सकती है । और मिल के मजदूरों को सिर्फ़ ढुलाई का ख़र्च लगा कर दाम-के-दाम में बेच दे । मजदूरों को यह बात बहुत पसन्द आई और अब याकोव को भी साफ़-साफ़ अनुभव होने लगा कि मिल के सब मजदूर मिरान और उसकी अपेक्षा इस प्रसन्नचित्त मीत्या को अधिक चाहते हैं । याकोव ने यह भी देखा कि अब मिरान और तस्याना के प्रति मीत्या के बीच झगड़ा भी काफ़ी होता है ।

तुम जनता की तरफ़ झुकना चाहते हो ? मिरोन ने अपने भावों और ईर्ष्या को न छिपाते हुए तेज़ी से पूछा । परन्तु मीत्या ने मुस्कराते हुए जवाब दिया—

यह तो जनता की इच्छा है जनता का अधिकार है ।

मैं पूछता हूँ तुम गुरु कौन हो ? मिरान चिल्लाया ।

बस करो यह क्या धार-गुल है ?' क्रुद्ध अलेक्सेई ... पिता कर शिकायत करता । परन्तु याकोव यह भी देखता था कि पिता की घुँघली आँखों में एक प्रकार की घृणा रहती थी । वृद्ध ध्यान का यह देखकर प्रसन्नता होती थी कि उसका भतीजा और ऊँचाई कैसे जगह रहे हैं । यह तस्याना का नम्रतापूर्ण पतली आवाज़ को सुनकर खिलखिलाता और विशेष कर जब और भी

अधिक खिलखिला उठता जब ममास्या हरत हुए कहती—

'मुझे थाड़ी चाय और दो तान्या एक प्याला और ।'

प्रत्येक नई घटना क साथ एक नया भय भी आता दिखाई देता था। सब घटनाएँ एक-दूसरे से असम्बद्ध और अभूतपूर्व-सी प्रतीत होती थीं। इन्हीं दिनों अचानक मात्या जो लगभग अंधी हो चुकी थी, ठण्ड के कारण दो दिन के अन्दर संसार से चल बसी। उसकी मृत्यु क कुछ दिनों बाद ही मिन और बाहर जार ने सिंहासन छोड़ दिया समाचार से वज्रपात की तरह हिल पड़ा।

अब क्या होगा? क्या प्रजातंत्र स्थापित होगा? याकोव ने भाई से पूछा। वह बड़ी प्रसन्नता के साथ अखबार में आँख गाड़े पढ़ रहा था।

"निःसन्देह प्रजातंत्र बनेगा। मिरोन ने उत्तर दिया। और उसने मेज पर झुकते हुए गुल अखबार के पन्नों पर अपना हाथ रखा तो उसके बोझ के कारण पन्ने दो भागों में फट गए। याकोव का यह अपशकुन लिया और मिरान ने उसको और असाधारण दृष्टि से देखा और फिर अपनी पतली आवाज में मुस्कराते हुए बोला—

'निःसन्देह रूस की नवीनता और राजनैतिक स्वस्थता शुरू होगी। भाई यही प्रतीत होता है।'

उसने अपनी बाँहें फैलाईं जैसे कि वह याकोव का आलिंगन करना चाहता हो। परन्तु दूसरे ही क्षण उनमें से एक बाँह को पीठ के पीछे को मोड़ लिया और दूसरी को अपनी ऐनक ठीक करने के लिए उठाया। फिर उसने अपना हाथ इस फैलाया कि यह रसप के मिशनरी की तरह लगने लगा और फिर बोला मैं रूस ग्राम को भागता जा रहा हूँ।'

मीत्या अपने हाथों को फेंकता हुआ और ग्रामर की तरह खिलखिलाता हुआ बोला—

'अब सब ठीक रहेगा। अब जनता अपने प्रबल भावों को बारबार शब्दों में कह सकेगी जो बहुत दिनों से उसके दिलों में दबे हुए हैं।

मिरान ने उसके साथ किसी प्रकार की बहस करना ठीक न समझा और वह सोच विचार करता हुआ ओठों को चाटता रहा। याकोव ने भी देखा कि अब प्रत्येक बात ठीक हो रही है और लोग खुश हैं। मीत्या ने मिल के आँगन में एकत्रित मजदूरों को फ़र्श पर खड़े होकर बतलाया कि पीतर्सबर्ग में क्या हुआ है। मजदूरों ने प्रसन्नता से 'हुर्रा' की चिल्लाहट की और फिर उसको हाथ और टाँगों से पकड़ कर नीचे से पाए और ऊपर आकाश में उसे उछालने लगे। मीत्या एकदम गेंद की तरह गोल हो गया और उन्होंने उसे काफ़ी ऊँचाई तक उछाला। लोगों ने मिरान को भी उछाला जिससे उसे ऐसा दिखा कि वह टुकड़े टुकड़े हो जाएगा। हवा में उसके हाथ और पाँव अलग हुए जा रहे हैं। मीत्या को पुराने मजदूरों की भीड़ ने घेर लिया और उनमें से एक बलवान् मजदूर मिराशिन बाइनाव उसके चेहरे की ओर देखकर बोला—

'मित्री पावलाय! तुम बहुत बढ़िया आदमी हो, बहुत बढ़िया, समझे? आओ साथियो दिमित्री के लिए फिर हुर्रा!'

मजदूरों ने फिर 'हुर्रा' की आवाज़ की और कोयला झोंकने वाला यास्का अपनी गंजी खोपड़ी चमका कर नाचता हुआ बिलकुल पागलों की तरह गाने लगा—

'अरे, जनता शाप पी भीख
और ज़ार का सिंहासन ऊँचा था।

चढ़कर अब सोर्यो ने देखा—
तख्त पर कौआ इक बैठा था।"

"शाबाश, और गाओ।" मजदूरों ने उसको उत्साहित किया।

मजदूर साथ याकाव को भी हवा में उछालना चाहते थे, परन्तु वह वहाँ से भाग कर घर में छिप गया। क्योंकि उसे विश्वास था कि मजदूर उसे एक बार ऊपर फेंक कर नीचे गिरने पर थामेंगे नहीं और उसे जमीन पर ही गिरने देंगे। और, संध्या समय मिल के दफ्तर में बैठे हुए उसने खिड़की के बाहर आँगन में तिखान की आवाज सुनी—

'तुम पिल्ले का क्या ले गए? मुझे बेच दो। मैं उसे अच्छा कुत्ता बना दूँगा।'

'अरे बुड्ढे! क्या अब कुत्ता को पालने का समय है?" पहरेदार मरोजाव ने कहा।

"और तू उसका क्या करेगा? मुझे बेच दे उसे, यह पूरा एक रूबल। ठीक है न?

'इस बात को रहने दो।'

याकाव ने खिड़की के बाहर झांका और कहा—

"क्या तिखोन बोर रहा ?

"हाँ!" बुड्ढे ने स्वीकृति में कहा और घर के कान में देखता हुआ धीरे से बोला—

"बोर...को हटा दिया गया।

तिखान अपने ऊँचे जूतों को सीधा करने के लिए झुका हुआ था। वह जमीन की ओर झुके हुए ही बोला—

वे हार चुके। तो यही हुआ जैसा आन्तोन कहा करता

था—'गाड़ी का पहिया गुम हुआ ।'

उसने अपने शरीर को सीधा किया और घर के कोने की ओर धीरे से यह कहता हुआ चला गया—

'गुनुन—गुनुन ।

कुछ और सप्ताह आनन्द एवं प्रसन्नता से एक सङ्गीत की तरह गुज़र गए । मिरोन सत्याना और डाक्टर तथा दूसरे सब लोग आपस में प्रसन्नतापूर्वक रह आए । इसी बीच शहर से कुछ अपरिचित लोग आए और लोहार मिनायव को अपने साथ ले गए । इसके बाद ही सूर्य की उष्ण धूप से चमकती हुई बसन्त ऋतु आ गई ।

सुनो मेरे प्यारे सन्तान ! पालिना बोली । 'मेरी समझ में नहीं आता कि यह सब क्या हो रहा है ? जार ने हुकूमत करने से इन्कार कर दिया है । सिपाही लूले-लँगड़े हो गए हैं और मर चुके हैं । पुलिस के महकमे को भंग कर दिया गया है और कुछ नागरिक लोग इधर-उधर हुकूम चलाते हुए घूम रहे हैं—अब कुछ रहा जाएगा । हर तरह के बदमाश और शैतान जो चाहेंगे यह करेंगे । दिनोंदिन ही मुझे शान्ति से नहीं रहने दे रहा । जिन लोगों को मैंने ठुकरा दिया था । वे लोग जो मेरा पीछा करते रहे हैं सब यहीं हैं । अब मैं यहाँ अधिक नहीं रह सकती । यहाँ सब गड़बड़ और उथल-पुथल हो रही है । मैं एसी जगह रहना चाहती हूँ जहाँ मुझे न कोई जाने न कोई पहचाने ! और साथ ही जब क्रान्ति हो चुकी है, स्वतंत्रता मिल चुकी है तो प्रत्येक मनुष्य जैसा चाहे वैसा रह भी सकता है ।

पालिना ने ये सब बातें काफी लम्बे शब्दों में दृढ़तापूर्वक कहा और याकोव ने उसकी बातों में एक अकाट्य तर्क पाया । वह उसे शान्त करता हुआ बोला—

'जबतक यह सब शान्त नहीं हो जाए, थोड़े दिन और प्रतीक्षा करो।"

परन्तु, उसे अब विश्वास नहीं था कि उसके चारों तरफ जो अशान्ति और आन्दोलन उठ रहा है—मिल में हुआ सारा शोर जो प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़कर जबरदस्त होता जा रहा है, कभी शान्त होगा भी या नहीं। जो मनुष्य डरने का आदी हो जाता है उस डर के कारण भी उनका मिल जाना है। साकार का अख़बार मग़ज़ात को उस झुलसी हुई खोपड़ी से डर लगने लगा। जब्बार मजदूरों के बीच ज़ार की तरह चलता और मजदूर उसके पीछे गडरिए के कुत्ते के पीछे-पीछे भेड़ के समान चलते रहते। मीरा उनके चारों तरफ़ धामस्तु कोहरे की तरह घुमता रहता। इन दिनों जब्बार का रूप भी उस बड़े कुत्ते के समान हो गया था जिसे मनुष्य की तरह सीधा चलने के लिए सधाया गया हो। अपनी झुलसी हुई खोपड़ी को छिपाने में उसे कभी-कभी तंग होना पड़ता था। वह अपने सिर पर मस्ताना के तुर्की स्माना गोर ने तौलिए की लपट लेता जिसे मारने वालों ने उसे दिया था जिससे उसकी यह बड़ी पगड़ी उसके चौड़े कन्धों और भारी शरीर पर इलकती लगती। वह मोटे पुलिस अफ़सर के सहायक एस्के की तरह बड़े रौब से इधर-उधर जाता अपने अंगूठे को नहीं फ़ौजी पतलून की पटी पर टिकाता और अपनी मुक्त उँगलियों का मछली की चाप के समान इधर-उधर हिलाता और जब-तब ज़ोर से चिल्लाता—

'साथियो आइए, आइए! उसने तीन नौजवान मजदूरों का भी न्याय किया जिन्होंने मिल से कपड़ा चुराया था। मिल के आँगन में सब लोगों को ज़ोर से सुनाते हुए उसने चारों से प्रश्न किया—

'तुम जानते हो, तुमने किसकी चोरी की है?'

और फिर स्वयं ही उसका उत्तर दिया—

"तुमने खुद अपनी और हम सब की चोरी की है ! सूअर के बच्चो, क्या यह भारी अच्छी बात है ?'

उसने अपराधियों को बेत की सजा दी । इस पर दो मज़दूर बड़ी खुशी से उन पर बेत लगाने लगे । उस समय कोयला झोंकने वाला वास्का नाचता हुआ पागलों की तरह गा रहा था—

चोर उचक्कों पर यहां ! देखो
पड़ती कैसी बेतें आज ।
औरों को जो लूट करे हैं,
न्याय है होता उनका आज !

सहसा गाना बन्द हो गया । वास्का अपने हाथों को हिलाता हुआ एकदम चिल्लाया—

"रक्षा करो हे भगवान अपने भक्तों की ।'

इस पर मीत्या जोर से चिल्लाया—

'शाबाश !

मीत्या नीली पतलून पहने रहता था और पीछे की ओर झुकी हुई चमड़े की टोपी भी सिर पर सदा रखे होती । उसके गुलाबी चेहरे पर स्वेद-बिन्दु चमकते रहते थे और आंखों में मादकता और प्रसन्नता लिए वह इधर-उधर दौड़ता रहता था । पिछली रात को उसकी पत्नी से बहुत झगड़ा हुआ । प्रारम्भ में याकोव ने कमरे की ओर से आती हुई बगीचे में ऊंची फुसफुसाहट सुनी और फिर रसोईखाना की ओर से उठती हुई पुकारें आने लगीं—

'तुम भोंदू हो ! तुम बड़े बेईमान आदमी हो । क्या यही तुम्हारे विचार हैं ? गरीबों का भी क्या कोई विश्वास होता है ! झूठ है । महीने भर पहले तुम्हारे कैसे विचार थे कैसा-कैसा

बातें करते थे। बस, अब हो गया ! मैं कल ही शहर में अपनी बहिन के यहाँ जा रही हूँ और मेरे साथ बच्चे भी।

याकोव को ये बातें सुनकर कोई अचम्भा नहीं हुआ। वह बहुत दिनों से देख रहा था कि खास बातों वाला मीत्या उनके खिलाफ़ हो रहा है। परन्तु, याकोव को इस बार में आश्चर्य और एक प्रकार से अभिमान भी जरूर हुआ कि उसने इस खास बातों वाले आदमी की अविश्वसनीयता को पहले से भाँप लिया था। अब उसकी माँ भी जो कभी मीत्या को मुर्गे की तरह प्यार करती थी कहती—

यह क्या बात है यह हम से खिलाफ़ क्या रहता है ? कहीं यह यहूदी तो नहीं ! मैं इन रोटी और खिलाया।

मीत्या जोर से कहता था—

"सब चीजें बहुत आश्चर्यजनक हैं ! जीवन एक सुन्दर, बुद्धिमान स्त्री है। परन्तु, अब समय आ गया है कि हम भेड़िए और बकरियों के एक साथ रहने के बनावटी किस्से को भूल जाएँ। तत्याना येगोरोव्ना ! अब इन बातों को भूल जाओ !

मिरान ने बड़े गुस्से में कठोरता से पूछा—

'और कल तुम क्या कहोगे ?"

'वही जो जीवन बताएगा ! बस, यही बात है, और कुछ नहीं।

उसकी पत्नी और मिरान उससे ऐसे बच कर चलने लगे जैसे कि उनके कपड़ों को कहीं कालिख न लग जाए। कुछ दिनों बाद मीत्या अपने सब सामान को उठाए, जिसमें पुस्तकों के तीन बन्द-बड़े बक्स थे और मेल का बना कपड़ों से भरा एक बक्सा भी था, लेकर शहर चला गया।

याकोव को हर जगह आग सुलगती हुई दिखने लगी।

लोग एक प्रकार की स्पष्ट मूकता का पूर्ण छोड़ रहे थे। और ऐसा कोई चिह्न नहीं था जिससे पता चल कि ये गड़बड़ के दिन कभी समाप्त हो सकते हैं।

एक दिन वह पोलिना से आकर बोला—

'अच्छा मैंने फैसला कर लिया है कि हम यहाँ से चले जाएँ। पहले मास्को जायेंगे और वहाँ पहुँचकर फिर आगे की सोचेंगे।'

"बहुत अच्छा! आखिरकार तुमने सोचा ही।" पोलिना उस आलिंगन में बाँधकर चूमती हुई बोली।

जुलाई की संध्या बगीचे का गुलाबी अधकार से परिपूरित कर रहा था। खिड़की के बाहर भारी बरसात के पानी के कारण सीली धरती से तीव्र गन्ध उठ रही थी। धरती अब सूख भी धूप में तप रही थी। मौसम बहुत अच्छा था परन्तु था चिन्तापूर्ण विचारों से भरा हुआ।

याकोव पोलिना के उष्ण और सीसे हाथों को अपने कंधों से हटाकर चिन्तातुर हो बोला—

अपनी छाती को जरा ढक लो और कपड़ा को ठीक-ठीक पहनो! हमें गंभीरता से सोचना है। वह फिर उसके घुटनों को छोड़कर दो तीन उच्छ्वासों में पलंग के पास पहुँची और अपना चोगा पहिनकर गम्भीर भाव से उसके बराबर में आ बैठी।

सुनती है' याकोव ने अपनी हथेली से गालों को इतना रगड़ा कि उसके बाल खड़े से बजने लगे। हमें गम्भीरता से विचार करना है। ऐसा देश और ऐसी सरकार तलाश करनी है, जहाँ हम शान्ति से रह सकें जहाँ लोग दूसरों के कामों के बारे में समझने और सोचने का फिक्र न करें। हमें ऐसी ही जगह चाहिए।'

'नि सन्देह पालिना ने कहा ।

'और यह सब बड़ी सावधानी से करना है । मिरोन कहता है कि रेलगाड़ियाँ आजकल भगोड़े सिपाहियों से भरी हुई हैं । इसलिए हम गरीबों के वेष में जाना होगा ।

हाँ और तुम अपने साथ अधिक-से-अधिक पैसा ले चलना ।"

'हाँ, यह बात तो ठीक है । मैं इस प्रकार निकल जाना चाहता हूँ कि किसी को कुछ पता न चले । मैं घर से बारामा रोद का नाम लेकर चलूँगा । समझीं ?

और इसमें छिपाने की क्या बात है ? आश्चर्य और अविश्वास से पालिना ने पूछा ।

यह उसकी भी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों करना है ? यह विचार अभी उसके दिमाग में उठा था । बस उसने अनुभव किया था कि यह विचार ठीक है ।

बात यह है मेरे पिता और मिरोन तरह-तरह के सवाल करेंगे । जिनकी कोई जरूरत भी नहीं । पैसा तो मास्को में काफी है, हम पैसा वहाँ खूब मिल जाएगा ।

'तो फिर जल्दी करो ! पालिना ने कहा । तुम जानते हो कि पैसे के बगैर वहाँ गुजारा नहीं हो सकता । वहाँ सब-कुछ मँहगा होगा । हो सकता है कि कोई हमसे लूट ले छीन ले तब क्या होगा ।

उसके कन्धे के ऊपर से दरवाजे की ओर देखती हुई वह बोली—

'लो ! जरा मेरी रसोइन को भी देखो । पहले यह बहुत नसी थी । और अब बड़ी ढीठ और सदा आराम में धुत रहती

है। हो सकता है किसी दिन वह मुझे नींद में ही काट दे। इस गड़बड़ी के दिनों में सब सम्भव हो सकता है। कल मैंने उसे—एक आदमी के साथ कानाफूसी करते सुना था। हे परमात्मा! मैंने सोचा कि यह क्या है! और जब मैंने चुपचाप दरवाजा खोलकर देखा तो वह घुटनों के बल बैठी चिल्ला रही थी। बड़ा बुरा नजारा था!'

'चुप रहो,' याकोव ने उसे जल्दी से टोककर उसकी डरी हुई फुसफुसाहट को बन्द किया और आगे कहा 'पहले मैं यहाँ से चलता हूँ।'

'नहीं' वह अपने मुक्के को घुटनों पर मारती हुई बोली—'पहले मैं! और तुम मुझे पैसा दो और।"

'क्यों तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं?' याकोव ने नाराज होते हुए गुस्से में पूछा। उसे तुरन्त ही एक उत्तर मिला—

'नहीं। मैं ईमानदारी और सरल भाव से कहती हूँ—नहीं! क्या आजकल किसी पर विश्वास भी किया जा सकता है जबकि लोग प्यार को धोखा दे चुके हैं और सब लोग सब के साथ धोखा कर रहे हैं? तुम किस पर विश्वास कर सकते हो।

उसका तर्क बड़ा अकाट्य था। इससे भी अधिक चोंगे की परतों में छिपी उसकी नन्ही छाती एक और कठोर थी। आखिर याकोव अर्तामोनोव उसके सामने चुप हो गया और उसकी बात मान गया। उसने फैसला किया कि पालिना अपना सामान संभाल कर कल वरागारोद चली जाए और वहाँ उसकी प्रतीक्षा करे।

अगले ही दिन याकोव ने पेट के दर्द की शिकायत की जो बिल्कुल ठीक जँचती थी। पिछले कई महीनों से वह बहुत

कमज़ोर हो गया था। उसमें सुस्ती और मुलक्कड़पन बढ़ गया था। आठ दिन बाद वह रेलवे स्टेशन की ओर एक ऊबड़-खाबड़ मार्ग पर जाता हुआ देखा गया। चारों ओर सड़क के निकले हुए पत्थरों से बने गड्ढे और कीचड़ के ढेर बिखरे पड़े थे। वह अपने पीछे एक भग्न अस्त-व्यस्त जीवन छोड़ता जा रहा था। सामने धुएँ के बादलों के बीच से सूर्य एक गड्ढे में से चमक रहा था।

एक महीने बाद मिरोन प्रतीमानाव मास्को से लौटकर आया। उसने तत्याना के सामने सिर झुका कर और अपनी हथेली को निहारते हुए कहा—

'मैं तुम्हें एक बहुत दुःखद समाचार देने आया हूँ। मास्को में मेरे पास वह निर्लज्ज लड़की आई थी जिसके साथ याकोव रहता था। और बोली कि कुछ लोगों ने याकोव को पीटा और फिर रेल के डिब्बे से बाहर फेंक दिया। हे भगवान् लोग भी कैसे हो गए हैं!'

'नहीं!' तत्याना चिल्ला कर कुर्सी से उठने की कोशिश करने लगी।

"हाँ उस समय भी वह बेहोश था। दो दिन के बाद वह मर गया और उसे पिनूकी स्टेशन के पास गाँव के एक कब्रिस्तान में दफना दिया।"

तत्याना ने चुपचाप अपने रूमाल से आँखों को ढक लिया। उसके ऊँचे कंधे हिलने लगे थे और उसकी काली पोशाक फर्श पर नीचे गिरी हुई थी। लगता था कि वह पतली लम्बी गरदन वाली घास द्रवित होती जा रही है।

मिरोन ने अपनी एनक को ठीक कर अपनी उँगलियाँ चटकाईं और एकान्त में पड़े गिरजे की घंटियों को सुनने लगा।

यह घण्टी सन्ध्या की प्रार्थना के लिए बुला रही थी। वह फिर कमरे में चहलकदमी करता हुआ बोला—

अब रोने से क्या फायदा? तुम और मैं दोनों ही जानते हैं कि सच्ची बात यह है कि वह एक बिलकुल बेकार आदमी था असभ्य और मूर्ख था। मुझे इन शब्दों के लिए क्षमा करना, निःसन्देह दुःख हम सब को है।

हे परमात्मा! तत्याना ने रुदन से लाल हुई पलकों को हिलाते हुए कहा। उसने अपनी जीभ से उन्नसियों को गीला करके भौंहों पर फिराया।

'और वह साहसी लड़की मिरान ने अपने हाथों को जेबों में डालते हुए कहा "एक बनावटी शोकार्त विधवा के रूप में मेरे पास आई। उसकी बढ़िया पोशाक से साफ होता था कि उसने याकोव पर खूब हाथ साफ किया है। उसने मुझसे यह भी कहा था कि उसने घर वालों को चिट्ठी लिखी है।

तत्याना ने सिर हिला कर यह अस्वीकार किया।

'शुरु नहीं भी भेजी हो। मुझे तो ऐसा ही बताया था। मेरा विचार है कि माँ-बाप को इस बारे में कुछ नहीं बताना चाहिए। अच्छा हो, मैं यही सोचते रहें कि याकोव जीवित है। ठीक है न?

हाँ यह ठीक है तत्याना ने सहमति प्रगट की।

सच तो यह है कि चाचा की समझ में अब कुछ नहीं आ रहा। परन्तु जब माँ का पता लगेगा तो वह आँसुओं में ही डूब मरेगी।

सिर हिलाते हुए तत्याना बोली—

लगता है हम सभी लोग अब मृत्यु के निकट हैं।'

'यदि यहाँ रहे तो यह भी हो सकता है। मैं बीबी-बच्चों को जल्दी ही यहाँ से दूर भेज रहा हूँ। तुम्हें भी मैं सलाह देता हूँ कि जमादार मरोजाव से पहले किसी बात की प्रतीक्षा किए बिना तुम यहाँ से दूर चले जाओ। बात ऐसी ही है। बुड्ढे को कुछ मत बतलाना। मुझे क्षमा करो मैं घर जा रहा हूँ। घर पर पत्नी बीमार है।

उसने अपनी लम्बी बाँह से बहन का हाथ पकड़ा और चलते चलते बोला— आजकल सफर भी बड़ा कठिन हो गया है। लोग बड़ी बुरी हालत में पड़े हैं।

ज्येष्ठ अर्तामोनोव अर्ध-निद्रावस्था में रहता था जैसे कि वह और और एक भारी नींद में डूबता जा रहा हो। वह दिन रात अधिकतर बिस्तर में ही पड़ा रहता और शेष समय खिड़की के पास आराम कुर्सी पर बैठा रहता। जब कभी उसकी पत्नी उधर आती। वह उस पर झुककर उसे हिलाती और धीमी आवाज़ में कहती— यहाँ से तुम्हें कहीं और चले जाना चाहिए, इलाज करवाना चाहिए।

'पर हट यहाँ से,' वह अलसभाव से कहता। 'आखिर कहाँ को? मैं तुमसे तंग आ गया हूँ। ज़रा शान्ति से तो बैठने दे।'

अकेले बैठा वह चुपचाप आँगन और बगीचे में तथा घर के आस-पास सब जगह तीज-त्योहार के दिन जैसा लोगों का शोर-शराबा सुनता। परन्तु, कारखाने में एकदम स्तब्धता थी। उसकी अन्तरात्मा का साथी जिसके भ्रम दूर हो चुके थे और जो अपने ममनदी विचारों से अर्तामोनोव को सचेत करता रहता था अब मर चुका था। और यह एक अच्छी ही बात हुई। अब प्योत्र अर्तामोनोव के लिए सोचना भी कठिन था। और वह भी स्वयं सोचना नहीं चाहता था। क्योंकि वह समझने लगा था कि सोचना बेकार है और फिर उसकी समझ में भी कुछ नहीं आता

था कि ये सब लोग याकोव, सस्पाना, अँबाई—सब कहाँ चल गए हैं ?

कभी-कभी वह अपनी पत्नी से पूछ उठता—

"क्या इल्या वापिस आ गया है ?'

नहीं।

अभी नहीं आया ?'

नहीं।

और याकोव ?

' और याकोव भी नहीं।

"तो सब अभी इधर-उधर ही घूम रहे हैं और अन्ध का मिरोश्का[1] ही जोंक की तरह चूस रहा है।

'तुम अब इस बारे में न सोचो।' नताल्या उसे सलाह देती।

'भाग यहाँ से।"

वह वहाँ से हटकर कोने में बैठ जाती और अपनी निस्तेज आँखों से इस वृद्ध पुरुष की ओर निहारती जिसके साथ उसने अपना सारा जीवन गुजारा था। नताल्या का सिर अब हिलने लगा था हाथ काँपने लगे थे, जैसे कि उसके सब जोड़ ढीले हो गए हों। वह चर्बी की एक मामबत्ती के समान पिघल-पिघल कर दुबली होती जा रही थी।

प्योत्र अर्तामानोव अजनबियों के घर में आ जाने पर होने वाले शोर शराबे से जल-सा भुन जाता था। वह उनकी ओर घूरता। उनकी बातों को समझने की कोशिश करता। उस पत्नी का रोना भी सुनाई देता—

---

१ मिरोश्का—प्यार या अपमान में मिरोन का नाम।

"हे परमात्मा ! यह तुम क्या कर रहे हो ? देखते नहीं, वह मालिक है, हम सभी इस घर के मालिक हैं ! तुम मुझे इसे बाहर न जाने दो । इसे इलाज की जरूरत है । इस शहर से जाना चाहिए ! हाँ कम-से-कम हम यहाँ से बाहर तो निकलें ।"

यह मुझे छिपाना चाहती है परन्तु क्या ? प्योत्र पर्तोमानाथ ने सोचा । मूर्ख है हमेशा मूर्ख ही रही । याकोब इसके जैसा ही पैदा हुआ और बाकी भी सब ऐसे ही निकले ! बस इल्या मुझ जैसा है वह आ जाए तो सब-कुछ ठीक-ठाक हो जाए ।

बरसात शुरू हो गई उसके बाद बर्फ भी गिरने लगी । सर्दी जोरों की हो गई और सीं-सीं करते तूफान चलने लगे ।

इस अवर्णनीय समस्या में प्योत्र पर्तोमानाथ को एक सख्त भूख अनुभव हुई और वह कुछ सोच न पाया । उसने अपने को बगीचे के ग्रीष्मकालीन कमरे में पाया । सामने शीशे की दीवारों से पेड़ों की शाखाएँ झूलती रही थीं । उनके लाल-लाल अजीब आसमान को भी देखा जो वृक्षों के बहुत नजदीक ही लटका हुआ-सा दिखाई पड़ रहा था । इतना नजदीक कि उसे हाथ से भी छुआ जा सकता था ।

'कुछ खाना तो चाहिए,' पर्तोमानाथ ने कहा । परन्तु किसी ने उसका जवाब नहीं दिया ।

मकान में नीला अन्धकार छाया हुआ था । उस ग्रीष्म-गृह के सामने दो घोड़े खड़े थे, जिन्होंने अपनी गर्दनें एक दूसरे पर टिकाई हुई थीं । उनमें से एक काला और दूसरा भूरा था । पास में एक आदमी सफेद कमीज पहने बैठा था जो रस्से के एक बड़े गुच्छे को सुलझा रहा था ।

' मतास्या ! सुन रहीं हा ? कुछ खाने को दो ।"

इससे पहले वह जब कभी अपनी अद्धचेतनावस्था से जागता था तो वह पहली पुकार का ही उत्तर लेकर तुरन्त उसके समीप आ जाती थी । परन्तु, आज वह नहीं आई।

'क्या वह नहीं है ? स्पष्ट मर्तामानाव ने सोचा। उसके दिमाग में एक विचार उठा— कहीं वह बीमार तो नहीं ?"

उसने अपना सिर उठाया तो झाड़ियों में से स्नानागार के द्वार के समीप कोई चीज चमकी । फिर उसे लगा कि वह संगीन लगी बन्दूक एक हरी वर्दी वाले फौजी की पीठ पर रखी है । वह पत्ते के झुरमुट से साफ-साफ दिखाई नहीं दे रही थी । तभी आँगन में से कोई चिल्लाया

'क्या साथियो यह क्या मखौल है ? एक तो सुअर भी नहीं पकड़ जाते । और यह मुस गीला हाल का बाहर क्या छोड़ दिया गया है ? तुम ताले लगे स्नानागार में भी घुसना चाहते हो क्या

सफेद कमीज वाले आदमी ने रस्सी का गुच्छा आँगन पुन्ना से जमीन पर गिरा दिया और सिपाही की ओर मुड़कर ऊँचे स्वर में बोला— ऐसा आया है आममान में ! शैतान ने उठाल !

पहले की अपेक्षा आजकल कमाण्डर बहुत हो गए हैं ।

परन्तु इन शैतानों का मुकर्रर कौन करता है ?

ये स्वयं ही बन जाते हैं । भाई ! आजकल सब-कुछ प्राचीनकाल की कहानी-किस्सा की तरह ही हो रहा है ।

तभी एक आदमी घोड़ा के पास आया और उन्हें गर्दन से पकड़ लिया । ज्यप्र मर्तामानाव खूब जोर से चिल्लाया—

'ए ! मेरी पत्नी को तो बुलाओ !

"चुप हो बुड्ढे," उसे जवाब मिला। "ओह अभी भी तुम्हें पत्नी की इच्छा है!"

धाड़े चल गए। वर्तामानाव ने हथेली से चेहरे और दाढ़ी को छुआ। और फिर अपनी ठण्डी उंगली से कानों को छूकर चारों ओर देखने लगा। वह बिना शीशे की खिड़कियों वाले ग्रीष्म-गृह में सब के पत्ते के एक चित्र के समीप लेटा हुआ था। उस चित्र में लाल-लाल सब जंगली बेरियों के गुच्छे की तरह लटक रहे थे। वह किसी कठोर चीज पर लेटा था। वह लोमड़ी की खाल लगा भद्दा-सा सर्दियों का कोट पहिने था जिसके नीचे एक गर्म जैकेट भी थी। परन्तु फिर भी उसे सर्दी लग रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह यहाँ क्यों रखा गया है? हो सकता है घर में त्यौहार के लिए सफाई हो रही हो? परन्तु, कौन-सा त्यौहार? और समीप में ये घाड़े और स्नानागार के पास सिपाही क्यों हैं? और दरवाजे के बाहर ये कौन चिल्ला रहा है, साथियो! तुम सब बेवकूफ के बच्चे हो! क्या मामला है? क्या लोग थक गए हैं? थकना तो अभी नहीं चाहिए! बेवकूफों के बिना ।"

चिल्लाने वाले ये लोग दूर थे परन्तु, फिर भी उस चिल्लाहट से कान बहरे हुए जा रहे थे और सिर घूमने लगता था। उसे ऐसा अनुभव हुआ जैसे कि उसके पाँव हो नहीं हैं। घुटनों से पाँव हिलते ही न थे। दीवार पर सब का पेड़ रगसाज वाल्का चूकिन ने चित्रित किया था। यह आदमी चोर था। उसने बाद में गिरजे में जा चोरी की थी और जेल में पड़े-पड़े मर गया। एक बहुत ऊँचा आदमी जिसने रोएँदार ऊँची टोपी पहिन रखी थी ग्रीष्म-गृह में आया। अपने साथ वह एक भारी ठण्डी छाया और तारकोल की तीव्र गंध भी लाया।

"कौन है? क्या विगान?"

"हाँ और कौन हो सकता है ?'
यह कौन चिल्ला रहा है ?"
'जत्थार का मरोज़ोव ।'
और, ये सिपाही यहाँ क्यों हैं ?'
"लड़ाई है, लड़ाई ।'
थोड़ी देर चुप रह कर, ग्रतामानाव ने पूछा—
तो क्या दुश्मन ही यहाँ तक आ गया है ?
'नहीं । यह तुम्हारे ही खिलाफ़ लड़ाई है, प्योत्र इल्येच् !'

मालिक ने बड़ी कठोरता से कहा—
'बुड्ढा बेवकूफ कहीं का ! मेरे साथ मखौल करता है । मैं कोई तेरा साथी तो हूँ नहीं ।

फिर उसने शान्त उत्तर सुना—
"बस यह आखिरी लड़ाई है । आगे और लड़ाई नहीं चाहते, अब सब साथी हैं । और जहाँ तक बेवकूफी की बात है निःसन्देह मैं बहुत बुड्ढा भी हो चुका हूँ ।'

यह स्पष्ट था कि तिख़ोन मखौल कर रहा था । अब वह बिना किसी परवाह के अपने मालिक के पाँव की ओर बिना टोपी उतारे बैठ गया । आँगन में कोई कटी ऊँची आवाज़ में हुकुम दे रहा था—

दरवाजा आठ बजे के बाद कोई गलियों में न पाया जाए, एक आदमी भी नहीं !'

"और मेरी पत्नी कहाँ गई है ? ग्रतामानाव ने पूछा ।
"रोटी की तलाश में ।
'यह क्या कहा ! क्या रोटी की तलाश करने ?"

'और क्यों नहीं ? रोटी कोई ईंट पत्थर तो है नहीं जो जमीन पर पड़ी मिल जाएगी !'

बगीचे में धीरा अन्धकार और घना होता चला जा रहा था। स्नानागार के पास खड़े फौजी ने जोर से जम्हाई ली। वह अँधेरे में दिखाई नहीं पड़ रहा था। बस उसकी संगीन ही पानी में मछली की तरह चमक रही थी। वह तिखोन से कई तरह के सवाल पूछना चाहता था परन्तु अर्तामानोव चुप रहा। तिखोन से कोई बात हासिल भी तो नहीं होती थी। फिर भी उसके दिमाग से सवाल बाहर को निकल कर आपस में उलझते रहे। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनमें से कौन आवश्यक और सबसे बढ़ कर है। उसकी इच्छा कुछ खाने की थी।

तिखोन बोला—

'मैं बेवकूफ जरूर हूँ परन्तु सचाई को सबसे पहले समझ गया था। देखो, जिन्दगी ने क्या पलटा खाया है। मैं पहले ही कहता था—तुम सबको कठोर कारावास मिलेगा। और ऐसा ही हो गया। तुम्हें बुराई की तरह रगड़ा जा रहा है जैसे कि रंदे से लकड़ी छीली जाती है। प्योत्र इल्यिच! क्या ठीक नहीं। हाँ हाँ... तमाम तेजी से रंदा चलाता रहा—और तुमने उसे मदद की। और यह सब किस लिए? तुम पाप करते गए—पाप करते गए और उन पापों का कोई हिसाब भी है! मैं यह सब देखता था—अचम्भा करता था कि इस सब का कब अन्त होगा? आखिरकार, तुम्हारा ऐसा अन्त आ गया और अब तुमसे उसी तरह बदला लिया जा रहा है गाड़ी का पहिया गुम हुआ।'

क्या बकवास कर रहा है? अर्तामानोव ने सोचा। परन्तु फिर भी उसने पूछा—

"मैं यहाँ क्यों हूँ ?'

"तुम्हें घर से निकाल दिया गया है।

'और मिरोम ?

"उस को निकाल दिया गया है।

"और याकोब ?

वह तो पहले से ही नहीं है।'

'और इल्या कहाँ है ?"

सुना है, वह इन लोगों के साथ है। होना भी चाहिए तभी तुम जिन्दा हो क्योंकि वह इनके साथ है। नहीं तो ।

अवश्य ही बकवास कर रहा है' उसने फैसला किया। प्योत्र अर्तामानोव यह सोच कर चुप हो गया— 'बुड्ढा अफ़स खो बैठा है। यह उम्मीद भी थी।

छोटे-छोटे, क्षीण प्रकाश के तारे आसमान में बिखर हुए थे पहले कभी ऐसे तारे नहीं दिखाई दिए थे। और इन तारों की इतनी अधिक संख्या तो कभी भी नहीं थी।

तिख़ोन ने अपनी टोपी पकड़ी और हाथों में उसे इधर उधर घुमाता हुआ फिर बोला—

तुम्हारी सब घृणापूर्ण मूर्खताएँ अब तुम पर ही बरस रही हैं। भिखमंगे और ग़रीब अपना जीवन सरलता से बिताते हैं।'

इसके बाद उसने दूसरी आवाज़ में पूछा—

"याद है उस छोटे से बच्चे की—उस क्लर्क के लड़के की ?

'क्यों ? उससे क्या ? उस बात को क्यों उठाते हो ?'

"तुमने उसे ऐसे ही मार दिया था जैसे बाज़ार में पिस्सू

ारा। बताओ तो उसे क्यों मारा था ?'

अब वर्तमानाथ की समझ में साफ-साफ आने लगा। न ने ही उस पर आरोप लगा कर गिरफ्तार कराया है। वह बीमार और विवश है। परन्तु वह इस बात से नहीं। उसे इस अमानुषिक मूर्खता पर तो अचम्भा हो रहा । अपनी कोहनियों को सिर के नीचे लगा उसने सिर उठाया र धीमे-धीमे झिड़कता हुआ अफसोस में कहने लगा—

'तू यह सब झूठ बक रहा है। फिर सब अपराधों की वधि भी तो होती है। बस तू मौका पहले ही खो चुका। र इस तेरी अक्ल भी ठिकाने नहीं। तू भूल चुका है कि मने क्या देखा था उस दिन तुमने मुझसे यही कहा था।"

"हाँ-हाँ मैंने क्या कहा था बताओ?' बुड्ढे ने उस टाकत ए पूछा। 'निःसन्देह मैंने नहीं देखा था। परन्तु, मैं सब-कुछ समझ गया था। मैंने कहा जरूर था और बात को छिपा गया कि तुमने क्या किया होगा? मैंने उस समय झूठ कहा था और तुम इस झूठ को सुनकर गए थे। मैं देखता रहा और इन्तजार करता रहा और तुम सब बस-के-बसे हो रहे। असकर्द इत्यच ने ही अपने मुसर को सिखाया था कि वह वास्कीं की सराय का जला दे। तेरा बाप सब जान गया था फिर भी उसने उस शराबी को इतना पिटवाया कि वह मर गया। निकिता इत्यच भी इन सब बातों को जानता था। वह समझदार था और चुप रहता था। परन्तु उसने मुझसे गुस्से में तेरे बारे में सब कह दिया। मैंने उसे बतलाया कि तुम पादरी हो ये सब बातें भुला देनी चाहिए। मैं इन्हें याद रखूँगा। लेकिन फिर तुमने अपने कारनामों से उसे डरा दिया। उसे फाँसी के फंदे पर भेजा और फिर उसे साधुगृह में ही भेज दिया— जाओ हमारे लिए प्रार्थना करो। और वह तुम्हारे लिए प्रार्थना करते हुए भी डरता था—

यही कारण है नहीं कर सका ! और यही कारण है कि उसमें परमात्मा में विश्वास खो दिया ।'

ऐसा प्रतीत होने लगा कि त्रिलोन प्रलय तक ऐसी बातें हो किए जाएगा । वह धीरे-धीरे साफ़ते विचारता बिना किसी ईर्ष्या और क्रोध के कहता जा रहा था । रात के पिछले पहर के बढ़ते हुए घने अन्धकार में वह लगभग अदृश्य बना कहता ही रहा । रात के भींगरों की झनकार में उसके बोलने से मर्तामानाव का कोई स्वर नहीं हुआ । परन्तु अन्त में वह उसके बोझ के नीचे दब कर अचानक अचेत पड़ गया । उसे अब और भी दृढ़ विश्वास हो गया था कि यह असभ्य व्यक्ति बुद्धिहीन हो चुका है । त्रिलोन ने अपने कन्धों से भारी बोझ को उतारते हुए एक लम्बी आह भरी । अपनी नीरस आवाज़ में बीती हुई निरर्थक बातों को खोदता हुआ वह कहता ही गया—

'तुम मर्तामानाओं ने मुझे धर्म और विश्वास से भी वंचित कर दिया है । निकिता इल्यच ने भी तुम्हारी वजह से मेरा विश्वास खा लिया । पहले वह स्वयं परमात्मा पर विश्वास खो बैठा और फिर बाद में मुझे भी वैसा ही बना लिया । तुम सरमायादारों का न कोई परमात्मा है न कोई शैतान । तुम घर में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ रखते हो परन्तु यह तुम्हारा ढोंग है । लोगों को धोखा देने के लिए है । तुम लोगों का क्या विश्वास और क्या धर्म ? यह समझना कठिन है । बस धोखा ही तुम्हारे यहाँ सब-कुछ है । धोखे में ही तुमने सारी जिन्दगी गुजारी । और अब साफ़ है कि तुम्हारा पर्दाफ़ाश हो गया है ।'

बड़ी कठिनाई से अपने शरीर को हिलाकर मर्तामानोव ने अपनी भारी टाँगों को फ़र्श पर नीचे रखा । परन्तु उसके तलवों को सतह की पृथ्वी का कोई अनुभव नहीं हो रहा था । कुछ क्षणमात्र मर्तामानाव को अनुभव हुआ कि उसकी टाँगें टूट गई हैं

और वह हवा में लटका हुआ है। भयभीत होकर उसने तिख़ोन के कन्धों को पकड़ा।

"कहाँ को बस ? " दरबान ने पूछा।

फिर अपने हाथों को हिलाते हुए उसने भद्दे तरीक़े से कहा—"ख़बरदार! जो मुझे छुआ! तुममें अब कोई ताक़त नहीं रही। तेरे बाप में शक्ति थी—परन्तु वह ख़त्म करते-करते ही ख़त्म हो गया। मैं कहता हूँ कि तुमने ही मुझे विश्वासहीन बना दिया—ईश्वर रहित बना दिया। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे मरूँगा। तुम लोगों की नीचता, पशुता और दौलत की चालबाज़ियों को देखते-देखते।"

अर्तामानोव की प्रबल इच्छा कुछ कहने की थी, परन्तु टाँगों की दशा को देखकर वह डर गया था।

क्या सचमुच ही मैं मर रहा हूँ? अभी तो मेरी पचहत्तर की भी उम्र नहीं हुई। हे परमात्मा! वह फिर लेटने की कोशिश करने लगा। परन्तु उसमें टाँगों को उठाने की भी ताक़त नहीं रही थी। उसने तिख़ोन से कहा—

"ज़रा मेरी मदद कर, मेरी टाँगों को।"

उसने अपने पुराने मालिक की मृत टाँगों को एक बेंच पर रख दिया। और फिर उसके समीप ही झुक कर अपनी टोपी को झुकाता हुआ उसके बराबर में बैठ गया। उसके हाथों में कोई चीज़ चमक रही थी। अर्तामानोव ने ध्यान से देखा, वह एक सुई थी जिससे तिख़ोन अधर में अपनी टोपी सी रहा था। अब उसे उसकी मूर्खता पर विश्वास हो गया। उसके ऊपर एक मोटी तितली उड़ रही थी। तभी बाहर बग़ीचे में तीन पीले प्रकाश के स्पन्द दिखे और दूर से किसी की थिरकती हुई आवाज़ भी सुनाई दी— साथियो अब हम पीछे नहीं जा सकते! हमारे लिए कोई जगह नहीं।"

ही कारण है नहीं कर सका। और यही कारण है कि उसने परमात्मा में विश्वास खो दिया।"

ऐसा प्रतीत होने लगा कि मिखान प्रलय तक ऐसी बातें ही किए जाएगा। वह धीरे-धीरे सोचते विचारते बिना किसी ईर्ष्या और क्रोध के कहता जा रहा था। रात के पिछले पहर के गहरे हुए घने अन्धकार में वह लगभग अहप्य बना कहता ही रहा। रात के झींगरों की झंकार में उसके बोलने से अर्तामानोव को कोई डर नहीं हुआ। परन्तु अन्त में वह उसके बोझ के नीचे दब कर अचानक अचेत पड़ गया। उसे अब और भी दृढ़ विश्वास हो गया था कि यह अजय व्यक्ति बुद्धिहीन हो चुका है। तिखोन ने अपने कन्धों से भारी बोझ को उतारते हुए एक लम्बी आह भरी। अपनी नीरस आवाज में बीती हुई निरर्थक बातों को खोदता हुआ वह कहता ही गया—

'तुम अर्तामानोवों ने मुझे धर्म और विश्वास से भी वंचित कर दिया है। निकिता इल्यिच ने भी तुम्हारी वजह से मेरा विश्वास खो दिया। पहले वह स्वयं परमात्मा पर विश्वास खो बैठा और फिर बाद में मुझे भी वैसा ही बना लिया। तुम धनमायावादियों का न कोई परमात्मा है न कोई शैतान। तुम घर में देवी-देवताओं की मूर्तियाँ रखते हो, परन्तु यह तुम्हारा ढोंग है। लोगों को धोखा देने के लिए है। तुम लोगों का क्या विश्वास और क्या धर्म? यह समझना कठिन है। बस धोखा ही तुम्हारे यहाँ सब-कुछ है। धोखे में ही तुमने सारी जिन्दगी गुजारी। और अब साफ है कि तुम्हारा पर्दाफाश हो गया है।

बड़ी कठिनाई से अपने शरीर को हिलाकर अर्तामानोव ने अपनी भारी टाँग को फर्श पर खींच रखा। परन्तु उसके तलवों को लाल फर्श का कोई अनुभव नहीं हो रहा था। फिर अचानक अर्तामानोव को अनुभव हुआ कि उसकी टाँगें टूट गई हैं

और वह हवा में लटका हुआ है। भयभीत होकर उसने तिखोन के कन्धों को पकड़ा।

"कहाँ का बस?" तरखान ने पूछा।

फिर अपने हाथों को हिलाते हुए उसने भद्दे तरीके से कहा—'खबरदार जो मुझे छुआ! तुममें अब कोई ताकत नहीं रही। तेरे बाप में शक्ति थी—परन्तु वह दम्भ करते-करते ही खत्म हो गया। मैं कहता हूँ कि तुमने ही मुझे विश्वासहीन बना दिया—ईश्वर रहित बना दिया। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं कैसे मरूँगा। तुम लोगों की नीचता पशुता और पैशाचिकता की बातवाजियों का दलदल-दलदल।

अर्तामानोव की प्रबल इच्छा कुछ तान का थी परन्तु टाँगों की दशा को देखकर वह डर गया था।

"क्या सचमुच ही मैं मर रहा हूँ? अभी तो मेरी पचहत्तर की भी उम्र नहीं हुई है परमात्मा!" वह फिर लेटने की कोशिश करने लगा। परन्तु उसमें टाँगों को उठाने की भी ताकत नहीं रही था। उसने तिखोन से कहा—

'जरा मेरी मदद कर मेरी टाँगों को।"

उसने अपने पुराने मालिक की मृत टाँगों को एक बेंच पर रख दिया। और फिर उसके समीप ही झुक कर अपनी टोपी को झुकाता हुआ उसके बराबर में बैठ गया। उसके हाथों में कोई चीज चमक रही थी। अर्तामानोव ने ध्यान से देखा वह एक सुई थी जिससे तिखोन अधेरे में अपनी टोपी सी रहा था। अब उसे उसकी मूर्खता पर विश्वास हो गया। उसके ऊपर एक मोसी तितली उड़ रही थी। तभी बाहर मकान में तीन पीले प्रकाश के स्तम्भ दिखे और दूर से किसी को झिड़कती हुई आवाज भी सुनाई दी— 'मालिया अब हम पीछे नहीं जा सकते! हमारे लिए कोई जगह नहीं।'

तिखोन ने उस आवाज को अपनी आवाज से डुबो दिया—

मौर तुम्हारे बाप न मेरे भाई को भी मार दिया था।"

"झूठ बोलता है," प्योत्र अर्तामानोव ने अनिच्छापूर्वक कहा और फिर उसी क्षण आगे पूछ उठा, "कब ?"

'तभी!'

"बेवकूफ! तू क्यों झूठ बोल रहा है ?" अचानक अर्तामानोव न गुस्से म कहा। उसे भूख सता रही थी, जिसके कारण वह शक्तिहीन बना हुआ था, 'अब तू मुझसे क्या चाहता है। क्या तू मेरी आत्मा है जो मेरा न्याय कर रहा है ? इस तीस बरस से भी अधिक समय म क्यों चुप रहा ?"

"चुप रहा, इसका मतलब है कि मैं सोच रहा था !"

'अपने गुस्से को इकट्ठा करता रहा ? क्या ? ओह! तू। हट यहाँ से जा पुलिस म रिपोर्ट कर दे!'

'अब कोई पुलिस नहीं है।"

'जा, उनसे कह कि सारा जीवन इस व्यक्ति ने मुझे खिलाया-पिलाया—और अब इसका न्याय करो। और रिपोर्ट तो तूने पहले ही कर दी होगी। तू मुझसे क्या चाहता है ? अब मुझे देखा, मुझे सता और मुझसे पैसा माँग खूब...।

'तुम्हारे पास अब कुछ भी नहीं रहा है। और, न्याय करने के लिए मैं तुम पर थूकता हूँ। मैं अपना न्याय स्वयं करूँगा। तुम विश्वासघाती घृणित दुष्ट मनुष्य हो! मुझे क्या धमकी दे रहे हो ?'

परन्तु, तिखोन न स्पष्ट रूप से अनुभव किया कि वह किसी प्रकार की धमकी नहीं दे रहा था। तिखोन न फिर धीमे से शिकायत की— तुम आइन के पुत्रों का अब अन्त आ गया है।

मेरे भाई का तुमने क्या मारा ?'

"भाई के बारे में तू झूठ बोल रहा है।'

दोनों वृद्ध पुरुष—पुराना मालिक और नौकर जल्दी-जल्दी एक-दूसरे को टोकते हुए बातें करने लगे।

"मैं झूठ बोलता हूँ ? मैं उस रात उसके साथ था।'

"किसके साथ ?"

"अपने भाई के साथ, जब तेरे बाप ने उसे मारा। मैं भाग गया। तेरे बाप ने उसका खून बहाया। खून का बदला तो खून से ही होना चाहिए ? और नहीं तो उस दिन मरते समय उसे खून थूकने की आवश्यकता ही क्या थी ?"

"अब तू मौका चूक गया।"

"कोई बात नहीं, अब तुम सबको खत्म कर दिया है तुझे दिया है, बस तू ही अकेला असमर्थ बचा हुआ है। और मैं तेरे बराबर में सदा की भाँति तेरे पास रहा हूँ।'

"तू सदा की भाँति बेवकूफ ही है।

अर्वामानोव ने अनुभव किया कि यह पुराना साईं गोदने वाला उस किसी अंधकार पूर्ण कोने में अकेला रहा है जहाँ कुछ भी समझ में नहीं आता और जो भयंकर है। उसने फिर दोहराया—

'तू मौका चूक गया। अपने भाई के बारे में सब झूठ कह रहा है, तेरा भाई न कभी था न कभी हुआ। तेरे पैसों के कभी कुछ नहीं होता।'

"आत्मा तो होती है ?"

"तूने मेरे बेटे हत्या का बहका दिया और उसे उल्टे रास्ते पर डाल दिया !"

"मैंने ? तुम अर्तामानोवों ने ही मेरी बुद्धि का नष्ट कर दिया । निकिता इल्यिच ने मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी ।"

'वह तो कहता था कि तून उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी !

'कितनी बार मैंने चाहा कि तुम्हारे पिता को मार दूँ । मैंने कई बार फावड़ा उसके सिर की ओर उठाया भी मगर तुम तुम बड़े चालाक लोग हो ।'

तू कम है क्या ?'

'तुम्हें सेराफ़िम जैसा आदमी चाहिए था । उसने भी मुझे बहुत भटकाया और गलत रास्ते पर डाला । सच है कि वह किसी का नाराज नहीं करता था, परन्तु, उसका जीवन दूषित था । यह क्या बात है ? जिधर देखो उधर ही चालबाजी और धोखेबाजी ।

"यह कौन जा रहा है ? कि धर ? कोई अंधेरे म जोर से चिल्लाया । 'तुम हरामखोरों का कहा है कि आठ बज क बाद कोई न हिले ?'

तिखोन उठा और दरवाजे की ओर अन्धेरे में गया । अर्तामानोव क्रोध, विस्मय, भूख और थकान स झुका हुआ पड़ा था । उस प्रकाश के तीन मन्द स्पर्शों के बीच बगीचे म एक लम्बी काली मूर्ति दिखाई दी । उसने किसी विनाशकारी भयकर बात की आशा करते हुए अपनी आँखें बन्द कर ली ।

'कुछ मिला ? तिखोन ने पूछा ।

"हा यही सब है ।

यह उसकी पत्नी की आवाज थी । वह कहाँ गई थी क्यों गई थी, मुझे अकेला इस भूख बुड्ढे के साथ क्या छोड़ गई थी ?

अर्तामानोव न अपनी आँखें खोली और कोहनी के बल

सिर हिला कर दरवाजे की ओर देखा, जो वो काली मूर्तियाँ से छिपा हुआ था। अचानक उसे याद आया कि सारी जिन्दगी भर वह इसी बार में सोचता रहा है कि कौन अपराधी है, किसके कारण उसका जीवन इतना गड़बड़, निराश और प्रतारणापूर्ण रहा है। और, अब उसे साफ-साफ दिखने लगा।

उसकी पत्नी पास आई और झुककर धीमे से बोली—

"परमात्मा तेरी बड़ी कृपा है!

तिखोन, बस यही औरत सब बातों के लिए अपराधी है। अर्तामानोव ने बड़ी दृढ़ता के साथ एक हमकी साँस भरते हुए कहा— यह लामची थी और इसने मुझे ऐसा बना दिया। यही बात है। हाँ हाँ।' और फिर वह विजयोल्लास के साथ बोला—"इसी के कारण मेरा भाई निकिता भ्रष्ट हो गया था। तू यह भली भाँति जानता भी है।'

अर्तामानोव बड़ी कठिनाई से साँस ले रहा था। उसे देखते हुए अचम्भा हो रहा था कि उसकी पत्नी किसी भी तरह नाराज नहीं हुई न वह डरी और न रोई। वह उसके सिर के बालों को सहलाती हुई चिल्ला और प्रेम से बोली— चुप रहो, क्या प्यार करते हो। यहाँ, सब हमारे खिलाफ हैं, नाराज हैं।'

"खाने को दे कुछ।

उसकी पत्नी ने खीर का आचार और रोटी का एक बड़ा टुकड़ा उसके हाथ में थमा दिया। खीरा गरम था और रोटी मर्द की तरह उसके हाथों से चिपक गई। अर्तामानोव बड़े विस्मय और विषाद से चिल्लाया— यह क्या है? यह मेरे लिए? बस?

'मैंने ? तुम भर्तामानोवों ने ही मेरी बुद्धि को नष्ट कर दिया। निकिता इल्यच म मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी।"

"वह तो कहता था कि तुम उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी !'

'कितनी बार मैंने चाहा कि तुम्हारे पिता को मार दूँ। मैंने कई बार फावड़ा उसके सिर की ओर उठाया भी मगर तुम तुम बड़े चालाक लोग हो ।

'तू कम है क्या ?"

"तुम्हें सराफ़िम जैसा आदमी चाहिए था। उसन भी मुझे बहुत भटकाया और गलत रास्ते पर डाला। सच है कि वह किसी को नाराज नहीं करता था, परन्तु, उसका जीवन दूषित था। यह क्या बात है ? जिधर देखो उधर ही चालबाजी और धोखबाजी ।

"यह कौन जा रहा है ? कि धर ?' कोई अन्धेरे में जोर से चिल्लाया। "तुम हरामजादों का कहा है कि आठ बज क बाद काई न हिल ?'

तिखोन उठा और दरवाज की ओर अन्धेर में गया। अर्ता मानाव क्रोध, विस्मय दुख और थकान स कुम हुआ पड़ा था। उस प्रकाश क तीन मन्द स्पर्शों के बीच बगीच में एक लम्बी काली मूर्ति दिखाई दी। उसन किसी विनाशकारी भयकर बात की आशा करत हुए अपनी आँखें बन्द कर ली।

'कुछ मिला ?' तिखान न पूछा।

'सो यही सब है।

यह उसकी पत्नी की आवाज थी। वह कहाँ गई थी क्यों गई थी मुझे अकेला इस मूरा बुड्ढे क साथ क्या छोड़ गई थी ?

अर्तामानाव न अपनी आँखें खोली और कोहनी के बल

सिर हिला कर दरवाज की ओर देखा, जो दो काली मूर्तियां से छिपा हुआ था। अचानक उसे याद आया कि सारी जिन्दगी भर वह इसी बार म सोचता रहा है कि कौन अपराधी है, किसके कारण उसका जीवन इतना गड़बड़, निराश और प्रतारणापूर्ण रहा है। और, अब उसे साफ-साफ दिखने लगा।

उसकी पत्नी पास आई और झुककर धीमे स बोली—

"परमात्मा तेरी बड़ी कृपा है।"

'शैतान, बस यही और सब बातों के लिए अपराधी है।' मर्तामानोव ने बड़ी दृढ़ता के साथ एक हल्की साँस भरते हुए कहा— यह सामने थी और इसने मुझे ऐसा बना दिया। यही बात है। हाँ हाँ।' और फिर वह विजयोल्लास के साथ बोला— इसी के कारण मेरा भाई निकिता भ्रष्ट हो गया था। तू यह भली भाँति जानता भी है।'

मर्तामानाव बड़ी कठिनाई स साँस ल रहा था। उसे देखते हुए अचम्भा हो रहा था कि उसकी पत्नी किसी भी तरह नाराज नहीं हुई न वह डरी और न रोई। वह उसके सिर क बालों का थपथपाती हुई चिन्ता और प्रेम से बोली—"चुप रहो, क्यों प्यार करते हो। यहाँ, सब हमारे खिलाफ़ हैं, नाराज हैं।'

"खान को दे कुछ।"

उसकी पत्नी न शोरे का आचार और रोटी का एक बड़ा टुकड़ा उसके हाथ में थमा दिया। शोरा गरम था और रोटी सुई की तरह उसके हाथों स चिपक गई। मर्तामानाव बड़े विस्मय और विषाद स चिल्लाया— यह क्या है ? यह मेरे लिए ? बस ?

"चुप रहो ! परमात्मा के नाम पर चुप ही रहो ।" नताल्या ने धीरे से कहा मेरे पास और कुछ भी नहीं ! देखते नहीं यहाँ फ़ौजी सिपाही ।"

"तू मुझे यही दे रही है । मेरे सब कुछ किए का यही बदला है ? जिन्दगी में मैंने जो मुसीबतें उठाईं, जो चिन्ताओं और भयों को सहा उनका यही फल है ?" अपने हाथ में रोटी को थामे वह बुदबुदाता और सोचता रहा । उसे पता लगा कि कोई असह्य, अपमानजनक और मूल्यपूर्ण बात होने वाली है । और, इस सब के लिए नताल्या अपराधी नहीं !

"मुझे यह नहीं चाहिए ।" कह कर उसने रोटी के टुकड़े को द्वार की ओर फेंक दिया उसका स्वर धीमा तो था, परन्तु उसमें दृढ़ता थी ।

तिखोन ने रोटी को उठा लिया और उसे उलट-पुलट कर साफ किया । नताल्या ने अपने हाथ में रोटी लेकर फुसफुसा कर कहा—"खालो, खालो, नाराज न हो ।"

उसके हाथ को अलग हटाते हुए अर्तामानोव ने ज़ोर से आँखें भींच लीं और गुस्से से दाँत भींच कर बोला—"मुझे नहीं चाहिए । मेरे पास से हट जाओ ।"